।। श्री ।।

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ शोध संस्थान कृत

वित्त एवं वृत्ति प्रबन्ध

(हिन्दी व्याख्या विभूषिता)

प्रणेता :

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ

आमुख

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ शोध संस्थान की स्थापना "The Himalayan Astrological Research Institute" के अन्तर्गत ही की गई है। इस इन्स्टीट्यूट की स्थापना स्वयं आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी के संरक्षणता में उनके पुत्र समान विद्वान शिष्य, आचार्य चक्रधार जोशी जी ने सन् 1946 ई. में देव प्रयाग उत्तर प्रदेश में की थी। इस संस्था के अन्तर्गत एक नक्षत्र वेधशाला तथा एक विशालकाय पुस्तकालय भी बनाया गया। आज भी इस पुस्तकालय में 30000 के लगभग पुस्तकें संग्रहित हैं जिनमें हस्तलिखित "भृगु संहिता" तथा ताड़पत्र एवं ताम्रपत्र में कई ग्रन्थ संस्कृत, तमिल तथा तेलगू भाषा में आज भी संग्रहित हैं। **"प्राच्य विद्या अकादमी"** जिसे हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त थी उसका भी कार्य इसी संस्थान के अन्तर्गत हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत कई महान् ज्योतिष ग्रन्थों का प्रकाशन भी हुआ है जिनमें सन् १९५५ ई. प्रकाशित "ज्योतिस्तत्त्वम्" तथा सन् 1958 ई. में प्रकाशित **"गदावली"** भी है।

विश्व में ज्योतिष पर चल रहे नवीनतम शोध कार्य में भारत के गौरवपूर्ण स्थान को बनाए.रखने के लिए आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ शोध संस्थान का यही प्रयास रहेगा कि इस संस्थान द्वारा नए तथ्यों का अन्वेषण हो। प्रस्तुत कृति इस ससंस्थान की ओर से द्वितीय भेंट रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यों तो यह विषय एक जटिल विषय है तथा इस पर अभी बहुत शोध की आवश्यकता है। हमने इसे अन्तरिम शोध समझ कर ही पाठक समक्ष रखने की चेष्टा करी है। हमारी प्रथम भेंट "शेयर बाजार की तेजी मन्दी तथा ज्योतिष" को देश एवं विदेशों में सराहा जा रहा है।

इस संस्थान के अन्तर्गत ज्योतिषीय गणित, रोग ज्योतिष, अर्धप्रकरण एवं कृषि प्रकरण पर भी कई विद्वान कार्यरत हैं। **"फलित ज्योतिष नूतन परिप्रेक्ष्य"** में विषय पर भी शोध कार्य वर्तमान में चल रहा है। आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ द्वारा रचित 108 खण्डों का "मुकुन्द कोष" (जिसमें 35000 पृष्ठ हैं) के अन्तिम खण्ड पर भी कई विद्वान कार्य कर रहे हैं। इस कोष में से एक खण्ड "लिंग्डानुशासनवर्गः" पूर्व में प्रकाशित हो चुका है। इस कोष के अन्य खण्डों के प्रकाशन पर भी विचार किया जा रहा है। आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ द्वारा रचित "लम्पाक शास्त्र" को भी पाठक समक्ष लाने की चेष्टा करी जा रही है। इस संस्थान के अनेक लक्ष्यों में से एक लक्ष्य आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ द्वारा रचित अन्य अप्रकाशित ग्रन्थों को सुगम तथा नवीनतम शैली में प्रकाशित करना भी शामिल है।

पंडित रमेश चन्द्र शर्मा
निदेशक, आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ शोध संस्थान
जयपुर

प्राक्कथन

धनमाजर्य काकुत्स्थ धन मूल मिदं जगत् ।
अन्तर नाभी जानाति निर्धनस्य भृत्स्य च ।।

गुरू वशिष्ठ ने भगवान राम जी को यही उपदेश दिया था कि इस संसार में धन ही सब कुछ है । निर्धन व्यक्ति और मृत व्यक्ति में विशेष अन्तर नहीं होता है ।

इस संसार को यदि सूक्ष्म द्रष्टि से विश्लेष्ण कर देखा जाए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि आज प्रायः समस्त मनुष्य जाति एक ही पदार्थ के लिए चिन्तित है, अर्थात सुख की प्राप्ति इसी सुख को पाने के लिए मनुष्य दिन रात परिश्रम एवं स्वप्न दोनों लेता रहता है। यदि सूक्ष्मता से देखा जाए तो सुख दो प्रकार का हो सकता है **(1) अध्यात्मिक सुख (2) भौतिक सुख** । आज के इस युग में अध्यात्मिक सुख की अवहेलना कर मनुष्य भौतिक सुख के लिए अपना अमूल्य समय एवं शक्ति का उपयोग कर रहा है। इस भौतिक सुख की कोई सीमा नहीं होती है यह तो एक प्रकार की मृग तृष्णा ही है ।

इस ग्रन्थ में हम इसी भौतिक सुख के विषय में चर्चा कर रहे है। आज संसार में प्रायः सभी मनुष्यों को यह जिज्ञासा रहती है कि वह धनी होगा या नहीं अथवा वह किस व्यवसाय द्वारा अपनी जीविकोपार्जन कर पाएगा। इन समस्याओं का समाधान हमारे आदरणीय ऋषि मुनियों ने ज्योतिष शास्त्र द्वारा ज्ञात कराया। परन्तु प्राचीन काल में जब इन महर्षियों ने इस समस्या का हल खोजा, तब से लेकर आज तक मनुष्य की वृत्ति में फेर बदल होता रहा है। प्राचीन काल से मनुष्य कृषि, व्यापार, सेवा व शिल्प द्वारा अपनी आजीविका चला रहा है परन्तु आज इन के साधनों में बहुत बदलाव आ चुका है।

इस ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी ने आज से सात दशक पूर्व इस विषय में गूढ़ अध्ययन कर अपने विचार प्रकट करे । इनको इस गन्थ में श्लोकों के रूप में रखा जा रहा है । समय के साथ साथ आज इन व्यवसायों के साधनों में भारी फेर बदल होता चला गया है । नये नये व्यवसायों का प्रचलन हो रहा है अतः आज आवश्यकता है कि इन ग्रहों,नक्षत्रों एवं राशि आदि का नुतन परिप्रेक्ष्य में व्यवयायों के अधिपत्य पर विचार करने की।

इस ग्रन्थ में हमने आज के परिप्रेक्ष्य में व्यवसाय या जीविका के सम्बन्ध में विचार करा है। इस विषय पर विस्तार से जानकारी हेतु कोई बृहद ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण वश ही इस ग्रन्थ का निर्माण किया जा रहा है। इसमें हमने आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी के पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ "ज्योतिस्तत्त्वम" "ज्योतिष रत्नाकर" तथा कई अन्य अप्रकाशित ग्रन्थ जैसे "जातक सार" आदि ग्रन्थों की सहायता ली है। हमने इसे सर्व साधारण तक पहुँचाने के लिए साधारण बोल चाल की भाषा का उपयोग किया है।

यह ग्रन्थ को दो अध्यायों में बाटा गया है। **(1) वित्त अध्याय(2) वृत्ति अध्याय।** प्रत्येक अध्याय में कई प्रकरण दिये जा रहे हैं। इस ग्रन्थ में सभी श्लोक आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी द्वारा ही रचित हैं। कुछ स्थानों में अन्य विद्वानों, के भी श्लोंको का समावेश किया गया है। जिनका उल्लेख उनके साथ ही करा गया है। इस शोध कार्य के लिए हमने 4000 के लगभग कुण्डलियों का अध्ययन कर नवीन व्यवसायों पर ग्रहों नक्षत्रों आदि का प्रभाव जानने की चेष्ठा करी है। इस ग्रन्थ में प्रायः सभी सफल एवं धनी प्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डलियों को भी उदाहरण के रूप में लिया गया है। यह कुण्डलियाँ हमने कई प्राचीन पत्र, पत्रिकाओं से भी ली है । इनकें अतिरिक्त सैकड़ों उदाहरण हमारे सम्पर्क में आये व्यक्तियों की कुण्डलियों द्वारा दिया गया है । इस कार्य के लिए हमने देश विदेश के कई ज्योतिष शोध संस्थानों से भी सहायता ली है। हम इन सबका व्यक्तिगत रूप से भी आभार प्रकट कर रहे हैं। व्यवसायों को चुनने के लिए हमने कुछ नवीन पद्धतियों का भी वर्णन किया है। इसमें हमने कारकांश कुण्डली द्वारा व्यवसाय जानने पर विशेष अध्ययन करा है। इसी प्रकार शनि द्वारा भी व्यवसाय जानने के लिए हमने गहन अध्ययन कर पाठक समक्ष कुछ विचार रखें हैं। इस कार्य में हमें कई विद्वानों का भी सहयोग प्राप्त हुआ है। तथा हम आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ शोध संस्थान में अन्य विषयों में शोध कर रहे विद्वानों का भी आभार प्रकट करते हैं। आप सभी महानुभावों की सहायता से यह कार्य पूर्ण हो सका।

हम अपने पाठकों से इस प्रकार क्षमाप्रार्थी हैं कि इस पुस्तक में जहां कहीं किसी प्रकार की त्रृटि रह गई हो उसको शुद्धकर व हमें सूचित करके अनुगृहीत करेंगे।

विनीत :
शैलेन्द्र शर्मा

जयपुर– १९९८

अनुक्रमाणिका

(वित्त अध्याय)

1.	व्यवसाय एवं ग्रह नक्षत्र	1
2.	राशियों के अधिपत्य	13
3.	पंचम भाव प्रकरण	18
4.	धन भाव प्रकरणं	23
5.	धनभाव गत ग्रह फल	38
6.	धन भाव तथा राशि फल	58
7.	लाभ भाव प्रकरण	70
8.	लाभ भाव तथा शुक्र	80
9.	लाभ भावगत राशि फल	85
10.	भाग्य भाव प्रकरण	96
11.	धन योग प्रकरणं	106
12.	लग्नानुसार धन योग	125
13.	धन प्राप्ति के स्रोत, समय एवं मात्रा	137
14.	धन लाभ दिशा परिज्ञान	141
15.	धन लाभ समय परिज्ञान	143
	(वृत्ति अध्याय)	
16.	वृत्ति अध्याय	145
17.	दशमस्थ द्विग्रह फल	163
18.	जीविकोपार्जन के अन्य योग	167
19.	कारकांश कुण्डली द्वारा आजीविका विचार	174
20.	आत्म कारक ग्रह द्वारा फल विचार	177
21.	आत्म कारक ग्रह युति फल	184
22.	कारकांश लग्न से दशम भाव फल	186
23.	शनि एवं आजीविका	188
24.	नक्षत्र एवं आजीविका	205
25.	शनि भाव स्थिति द्वारा विचार	212
26.	दशमेश स्थिति द्वारा आजीविका विचार	224
27.	व्यवसाय में सफलता तथा असफलता के कारण एवं निवारण	229
28.	सांझे का व्यापार	243

वित्त अध्याय

ॐणमो अरहंताणां, ॐणमो सिद्धाणां,
ॐणमो आयरियाणां, ॐणमो उवज्झायाणां
ॐणमोलोए सव्वसाहूणं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।।

1

व्यवसाय एवं ग्रह नक्षत्र

लग्नाब्ज्यो र्बलवशात्पदसद्य कर्म्म यत्तत्सवभाव जनितं तदधीशवृद्धया।
वृद्धिर्भवेदितरथाऽपचितिर्निरूक्ता कर्म्म स्वनाथशुभखेचर युक्तदृष्टम्।।

चन्द्रमा तथा लग्न इन दोनों के मध्य जो अधिक बली हो वह कर्म स्थान कहलाता है। इस कर्म स्थान के स्वभाव के समान ही मनुष्य कर्म करता है। कर्म स्थान के स्वामी की वृद्धि से कर्म की वृद्धि होती है तथा कर्म स्थान के स्वामी की हानि से कर्म की हानि होती है। यदि यह स्थान अपने स्वामी या शुभग्रह से दृष्ट हो तो मनुष्य की जीविका सुखमय होती है।

चेदे कास्मिन्खेचरे मित्रराशौ जातो जन्मी चान्यजीवी प्रसूतौ।
कोणः कोणेऽर्थेअंगपे खे क्षयेऽघैः स्यादाजीवी पुरूषो नीचवृत्त्या।।

जिस के जन्म समय में मित्रराशि में एक ही ग्रह हो तो इस योग में उत्पन्न प्राणी किसी अन्य से जीविका पाने वाला होता है। त्रिकोण या धन भाव में शनि, दशम में लग्नेश और अष्टम में पाप ग्रह हो तो उक्त योग में उत्पन्न मनुष्य नीच कर्म करने से जीविका अर्जित करता है।

व्यवसायों को जानने के लिए हमें कुण्डली में सर्वाधिक बलवान ग्रह जो लग्न या लग्नेश अथवा दशम व दशमेश पर प्रभाव डाल रहा हो उस के बल स्वरूप के अनुसार व्यवसाय या जीविका का पता चलता है। प्रत्येक ग्रह का अपना स्वरूप होता है। उसी अनुसार जातक जीविका अर्जित करता है।

शैवो भिषद् नृपतिरध्वरकृत्प्रधानों व्याघ्रो भृगो दिनपतेः किल चक्रवाकः।
शास्त्रांगना रजक कर्षक तोयगाः स्यु रिन्दोः शशश्च, हरिणश्च वकश्च कोरः।।

शिवोपासक, वैद्य, राजा, यज्ञ कर्त्ता प्रधान ये सब सूर्य की वस्तुएं हैं चन्द्रमा की वस्तुओं में शासक, स्त्री, धोबी, किसान, नाविक, आदि हैं।

**भौमो महान सगतायुध भृत्सवर्ण कारजकुटक्कुशिवा कपिग्रधचोराः।
गोपज्ञशिल्पगण कोतम विष्णुदासा स्ताक्ष्यः किकि दिविशुकौ शशिजोबिडालः।।**

रसोई बनाने वाला, सिपाही, चोर यह मंगल के अधिपत्य हैं। ज्वाला, कारीगर, ज्योतिषी, श्रेष्ठजन, विष्णुभक्त ये सब बुध के अधीन हैं

**दैवज्ञ मंत्री गुरू विप्रयतीशुमुख्यापारावलः सुर गुरोस्तुरगश्च हंसः।
गानी धनी विटवणिङ्न्नटतन्तुवाय वेश्यामयूर महिषाश्च भृगोशुको गौः।।**

बृहस्पति के अधिपत्य के ज्योतिषी, मंत्री, गुरू, ब्राह्मण, सन्यासी तथा शुक्र के अधिपत्य में संगीत जानने वाले, धनी व्यामिचारी, वैश्य, नृत्य करने वाले, जुलाह आदि होते हैं।

**तैलक्रयी, भृतक नीच किरातकाय स्कारश्च दन्तिकरटाश्च पिकाः शने स्युः।
यौद्धाहि तुण्डिकरवराज कोकोष्दसर्प घ्वान्तादयो मशकमत्कुणाकृम्युलूकाः।।**

शनि के अधिपत्य में तेली, नौकर, आदिवासी, लुहार आदि होते हैं। राहू के अधिपत्य, बौद्ध धर्म को मानने वाले, हाथी, गधा तथा नीच प्रकृति के लोग एवं कार्य होते हैं।

गृहों की वृत्ति तथा अधिपत्य एवं अधिकर क्षेत्र आज के समय में बहुत विस्तृत तो गया है। नये नये व्यवसाय एवं वस्तु आज चलन में आ गई है। जिनको हम अपने पाठकों के लाभार्थ यहां प्रत्येक ग्रहों के अधिकार क्षेत्र में प्रस्तुत कर रहें हैं।

सूर्य के व्यवसायः- राजकीय सेवा, शासक, डाक्टर, हार्ट स्पेशलिस्ट, वैद्य, दवाई, कैमिस्ट, पैतृक व्यवसाय, रसायन, सोने का व्यापार रत्नों में माणिक का व्यापार, ऊन का व्यवसाय, लकड़ी का व्यापार, फर्नीचर या फर्नीशिंग, वायुयान की नौकरी जैसे कि पायलट आदि, बैक अफसर, दूतावास की नौकरी, वन विभाग की नौकरी, अनाज के व्यापारी, फल के व्यापारी, मेवों के व्यापारी, पत्थर का कार्य, चावल उद्योग, नारियल का व्यापार, विदेशी मुद्रा विभाग, मौसम विभाग, खगोल शास्त्री, सर्कस के ट्रेनर, नाटक कम्पनी के मालिक, फिल्म निर्देशक, सुनार।

चन्द्रमा :- चांदी, मोती, पानी से प्राप्त वस्तुओं के व्यापार आयात, निर्यात का व्यापार या नौकरी, डेयरी उद्योग, रेडी मेड वस्त्र, प्लास्टिक, खाने की वस्तुओं आदि के व्यापार अचार, चटनी, मुरब्बे, जैम का व्यापार, पानी के जहाज की नौकरी, वाटर वर्क्स डिपार्टमेन्ट की नौकरी, यार्न (धागा) धोबी, ड्राइक्लीनिंग, कैटरिंग सेवा, फूल उद्योग, सजावट का कार्य, स्वीमिंग पूल का व्यवसाय या नौकरी, खेती, स्त्री की नौकरी, मशरूम उद्योग, सुगन्धित जलीय पदार्थ, नमक के व्यापारी, कोल्ड ड्रिंक, मिनरल वाटर, नर्स, हाऊस कीपर्स, आदि की नौकरी, होटल के बैरा तथा वह नौकरी या व्यवसाय जिस में यात्रा करनी पड़े।

मंगलः- भूमि सम्बधिंत व्यवसाय, तावें का व्यवसाय, बल्ड बैंक की नौकरी,पेशेवर रक्त देने वाला, बीड़ी, सिगरेट की दुकान, साईकिल की मरम्मत या स्कूटर, कार, मैकेनिक, गैराज, मोटर, पार्टस का कार्य, पुलिस, फौज सिक्योरिटी, फायर ब्रिगेड की नौकरी, लोहे का व्यापार या कार्य, रसायन, खनिज, होटल, व्यवसाय, ढ़ाबा, ईटों के भट्टे, नौकरी, बिजली के समान, शस्त्रों का व्यापार या निर्माण, मैडिकल उपकरण होटल में शैफ(रसोइया) लाल रंग की वस्तुओं का व्यापार, चाय कौफी का व्यापार, चोरी या झूठ बोल कर वृत्ति करना जुआ या लौटरी या नकली डाक्टर बन कर, डैन्टिस्ट, सर्जन, हार्डवेयर का कार्य मेटलर्जिस्ट, नाई की दुकान,

बुधः- ट्रेडिंग व्यवसाय, आढ़त सेल्समैन, बैक में क्लर्क, अकाउन्टेन्ट, अध्यापक, सेक्रेटरी, पोस्टमैन, टाइपिस्ट, पुस्तक व्यवसाय, चित्रकार, शिल्पकार, लेखन, प्रकाशन, प्रिटिंग, प्रैस, संवाददाता, जिल्दसाज, टेलिफोन, ऑपरेटर, एस.टी.डी., पी.सी.ओ. का व्यवसाय, कम्पयूटर का कार्य, कोरियर कम्पनी, फाईनेन्स कम्पनी, ब्याज से वृत्ति, सम्पादन, इन्श्योरेंस का कार्य, आडिटिंग, कैशियर, सेल्स टैक्स इन्कम टैक्स की नौकरी, स्टेशनरी एवं गिफ्ट शॉप, रेडियो, वायर लैस, तारघर, टेलिफोन, आयतित वस्तुओं का व्यापार, केलकुलेटर, कम्पयूटर, वीडियों, प्लेयर, आदि, सिलाई के धागे का व्यापार, गणित का अध यापक ज्योतिषी, वकील, सेल्स मैनेजर, बर्तन का व्यवसाय, अगरबत्ती, साबुन, पान मसाला, मुर्गी पालन, आयुर्वेद, चिकित्सा, कपड़े की रंगाई छपाई आदि, कारपेट उद्योग, कशीदे का कार्य अनुवाद कार्य, शेम्पू टूथ पेस्ट, सौन्दर्य प्रसाधन का कार्य, चित्रकला एवं पन्ना का व्यापारी तथा हरे रंग की वस्तुओं का व्यापार।

गुरूः- जज, मिनिस्टर, उच्च पद, कैशियर, अध्यापक, बैंक, कोर्ट, सरकारी, संस्थान ज्योतिषी, बड़े उद्योगों में मैनेजर, मेनेजमेन्ट कन्सलटेंट, मन्दिर के पुजारी, समाज सेवी, मठाधीश, धर्मोपदेशक, बड़े वकील, स्टाक एक्सचेंज, भवन निर्माण, टेंट हाऊस, बैन्ड, वाहन व्यवसाय, अच्छे कर्मो से जीविका पाने वाला। बड़े प्रकाशक, ट्रेवल एजेन्ट, अनाज की दुकान, स्पोंटस के समान की दुकान, जूतों की दुकान, होलसेल की दुकान।

शुक्रः- रेशमी वस्त्र का व्यवसाय, बाटिक शॉप, ड्रेस डिजाइनर, मंहगे वस्त्रों की दुकान, ब्यूटी पार्लर, स्त्रीयों से सम्बन्धित कार्य, आरामदेह एवं एश्वर्य प्रदान करने वाली वस्तुओं का व्यापार, मनोरंजन पार्क, सेक्स चिकित्सक, सौन्द्रर्य प्रसाधन, स्त्री रोग डाक्टर, फोटोग्राफी, संगीतज्ञ, म्यूजिक कम्पनी, वीडियो पार्लर, वीडियोग्राफी, फिल्म उद्योग, नाटक, टी.वी. सीरियल, मॉडलिंग, गायन, विदेशी शराब की दुकान, मैरिज ब्यूरो, मंहगे फर्नीशिंग व फर्नीचर फैन्सी वस्तुओं की दुकान, हैट व टोपी का कार्य, फूलों की दुकान, चाय बगान, चांदी का व्यापार, खिलौने की दुकान या र्निमाण, इन्टीरियर डेकोरेटर, कवि, कार किराये में देना, हीरे के व्यापारी, महिला कालेज या लड़कियों का स्कूल, घी का व्यापार, दही का व्यापार, गाय, भैंस का व्यापार, इत्र का व्यापार, रेल्वे डिर्पाटमेन्ट, एयरलाइन्स की नौकरी, लेडीज़ हौजरी, ग्लास एवं माइका का व्यापार, रूई का व्यापार, पेन्ट का व्यापार।

शनिः- चमडे का व्यापार, लोहे का व्यापार, तेल का व्यापार, सीसे का व्यापार,कोयले का व्यापार, कुकिंग गैस, प्रिटिंग इंक का कार्य, पैट्रोल, डीजल का व्यापार, काले रंग की वस्तुएं, खनिज पदार्थ, एवं खदान, ऊन का व्यापार, मोटे अनाज का व्यापार, रबर व वेस्ट प्लास्टिक का कार्य, प्लेस मैन्ट का व्यापार, ट्रेड यूनियन, मजूदर, ठेकेदार, प्लम्बर, चौकिदार, मजदूर, खेती, जमीनदार व भूमि विक्रेता, छोटे कार्य, आर्किटेक्ट, ठेकेदार, बर्फ की फैक्ट्री, या दुकान,मिस्त्री का कार्य, घड़ी साज, कुली, माली, चपरासी, चन्दा वसूली, कबाड़ी का कार्य, हड्डियों का व्यापार ग्राम प्रधान, शेयर का व्यापार,

राहुः- सट्टा, जुआ, विषैले पदार्थ, शराब का व्यापार, गलत कार्य, मछली का व्यापारी, कम्बल का व्यापारी, मांस की दुकान, मच्छरों को मारने की दवा या अगरबत्ती, काला बाजारी, जिला परिषद, म्युनिसिपैलिटी, राजनीति, रेल्वे कर्मचारी, कमीशन एजेंट, रबड़ का व्यापारी, बिजली का समान, बर्फ का व्यापार, पुराने कपड़ों का व्यापार, सीसे का व्यापार, सपेरा, जहर उतारने वाले, बहेलिया (पक्षी पकडने वाले), दादा (पितामह) से धन प्राप्त कर व्यापार करना, विदेश व्यापार, पुराने वाहन, खरीद बेचने का व्यापार, हाथी, ऊँट की सवारी करवाने का कार्य।

★★★★★★★

2

राशियों के अधिपत्य

ये येषां द्रव्याणामृमधिपातयो राशयः समुद्दिष्टाः।
मुनिभिः शुभाशुभार्थं तानागमतः प्रवक्ष्यामि।।

मैं मुनियों द्वारा राशि का अधिपत्य के शुभाशुभ फल के लिए उनके द्रव्य के बारे में कहता हूँ।

वस्त्राविककुतुपानां मसूरगोधूमरालकयवानाम्।
स्थल सम्भवौषधीनां कनकस्यच कीर्त्तितो मेषः।।

ऊनी वस्त्र, कम्बल, ऊन, गेहूँ, मसूर, जौ, स्थलजन्य औषधि तथा सुवर्ण यह मेष राशि के अधिपत्य है।

गविवस्त्र कुसुम गोधूम शालि यवमहिषसुत मितनयास्युः।
मिथुनेऽपिधान्य शारुदवल्ली शालूक कपीसाः।।

वस्त्र, पुष्प, गेहूँ, जौ, भैंस, बैल, ये सब वृष राशि के द्रव्य हैं शरद ऋतु में होने वाले अन्न, कपास, आदि मिथुन राशि के द्रव्य हैं।

कर्किणि कोद्रवकदली दूर्वाफलकन्दपत्र चोचानी।
सिंहे तुषधान्यर साः सिंहादीनां त्वचः सगुडाः।।

कोदो, केला, दूध, जायफल, कन्दमूल ये कर्क राशि के द्रव्य हैं गुड़, भूसे वाले अन्न, रस पदार्थ मृग छाल ये सिंह राशि के द्रव्य है।

षष्ठेऽतसीकलाय कुल्थ गोधूममुग्द निष्पावाः।
सप्तम राशौ माषा गोधूमाः सर्षपाः सयवाः।।

अलसी, मटर, कुल्थ, गेहूँ, मूंग, मोठ ये सब कन्या राशि के द्रव्य हैं उड़द, गेहूँ, जौ ये तुला राशि के द्रव्य हैं।

अष्टम राशाविक्षुः सैक्यं लोहान्यजाविंकं चापि।
नवमे तु तुरगलवणाम्बरास्त्रतिलधान्य मूलानि।।

गन्ना, गुड़, मीठे पदार्थ, लोहा, ऊन ये सब वृश्चिक राशि के द्रव्य हैं। उड़द, गेहूँ, सरसों, जौ, आदि धनु राशि के द्रव्य हैं।

मकरेतरूगुल्मांद्यं सैक्येक्षुसुवर्ण कृष्ण लोहानि।
कुम्भे सलिलजफल कुसुम रत्नचित्रणि रूपाणि।।

वृक्ष पदार्थ, मीठे पदार्थ, गन्ना, सोना तथा काले रंग की वस्तुएं मकर राशि के द्रव्य हैं कुम्भ राशि के द्रव्य में जल से उत्पन्न वस्तुएं, रत्न, फल, पुष्प, विचित्र रूप वाले पदार्थ होते हैं।

मीने कपाल सम्भव रत्नाम्बुभ्दवानि वज्राणि।
स्नेहाश्च नैकरूपा व्याख्याता मत्स्यजातं च।।

जल से उत्पन्न वस्तुएं, गजमुक्ता, गोरोचन हीरा, घी, तेल, मछली ये सब मीन राशि के द्रव्य हैं।

प्राचीन काल में व्यापार विशेषतः इन्हीं वस्तुओं का हुआ करता था अतः हमारे ऋषि मुनियों ने इन्हीं द्रव्यों का वर्णन करा है। परन्तु आज के समय में नयी नयी वस्तुओं के आ जाने पर इन राशियों के अधिपत्य सूचि बहुत ही विस्तृत हो गई हैं। यहाँ पर हम इन सभी राशियों के अधिपत्य में आने वाले द्रव्य तथा कार्यक्षेत्र का वर्णन करने हैं।

मेष

द्रव्यः- गोला–बारूद, बिजली के समान, माचिस, तेजाब, मशीनरी, लोहा, स्टील, ट्रेक्टर, बस, मोटरकार, ऊनी, शाल, ऊनी वस्त्र, पशमीना,

आज़ीविकाः- सेना की नौकरी, सर्जन, नाई, पुलिस विभाग, दर्जी, बेकरी, घड़ी का कार्य, कैमिस्ट, कारपैन्टर, फायरमैन, स्टीलमिल, मकैनिक, ईटों का भटट्टा, चूने का कार्य, खेल का समान, फैक्ट्री में कार्य, लाल रंग की वस्तुएं

वृष

द्रव्य :- नमक, शक्कर, चीनी, रूई, दूध, घी, सूत एवं सूती वस्त्र, सफेद फूल, गाय, बैल, इन्सूलेशन का समान, काँच का समान, सिल्क के कपड़े,

आजीविका :- मँहगें वस्त्र का व्यवसाय, सौन्दर्य प्रसाधन, हीरा उद्योग, शेयर ब्रोकर, बैंक कर्मचारी, कैशियर, नर्सरी, खेती, बागान, संगीत, नाटक, फिल्म, टी.वी. कलाकार, पेन्टर, कैमिस्ट, ड्रैस डिजाइनर, एग्रीकल्चर व रैवेन्यू विभाग की नौकरी, महिला विभाग की नौकरी, सेल्स टैक्स व इन्कम टैक्स विभाग की नौकरी, आइसक्रीम पार्लर, ब्याज से धन कमाने का कार्य,

मिथु

द्रव्य :- पुस्तक, कम्प्यूटर, समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं, कैलेण्डर, माइक्रोस्कोप, दूरबीन, पैराशूट, टेलीफोन, टेलीप्रिन्टर, फैक्स मशीन, पेजर, मोबाईल फोन, हवाई जहाज, रेलवे, कार टैक्सी, हरे रंग की वस्तुएं, कैलकुलेटर, ऐनक, चश्में, कॉन्टेक्ट लैंस, डायरी लेखन सामग्री, रोप वे, प्रकाशन, एडवरटाईजिंग, वाल पेपर, स्कूल, कोचिंग क्लास, सूटकेस, ट्रंक आदि।

आजीविका :- लाईब्रेरियन, लेखाकार, इंजीनियर या ऑपरेटर, टेलिफोन ऑपरेटर, सेल्स मैन, आढ़तिया, शेयर ब्रोकर, दलाल, सम्पादक, संवाददाता, अध्यापक, इंजीनियर, गाइड, उद्योगपति, दुकानदार, रोड़वेज की नौकरी, ट्यूशन, सैक्रेटरी, साईकिल की दुकान, अनुवादक, कोरियर सेवा, चतुराई से किये जाने वाला कार्य, स्टेशनरी की दुकान।

कर्क

द्रव्य :- आयुर्वेद का सामान, जड़ी बूटी, फूलों के जड़ पौध, किराने का सामान, दूध तथा पनीर, चाय कॉफी, पत्ता गोभी, रबर, मशरूम, चांदी, घास, फल, खुशबू वाली पत्तियां, नारियल।

आजीविका :- कैटरिंग सेवा, रेस्टोरेन्ट, चाय कॉफी की दुकान, नारियल पानी की दुकान, फल व जनरल स्टोर, पानी से सम्बन्धित कोई भी वस्तु पुराने वस्त्र या कीमती पुरानी वस्तुओं की दुकान, अस्पताल की नौकरी, पानी के जहाज के नौकरी, या मौसम विभाग, जल विभाग, जल सेना की नौकरी, आयात निर्यात का कार्य, गोता खोर या ड्रिलिंग का कार्य, दूध, दही, लस्सी की दुकान, कोल्ड ड्रिंक की दुकान, यार्न मर्चेन्ट प्लास्टिक का कार्य,

सिंह

द्रव्य :- ताम्बा, सोना, सोने के जेवर, सुनहरी रंग की वस्तुएं, दवाई, केसर, बादाम,

आजीविका:- उच्च पदाधिकारी, राज्य एवं बड़े संस्थान, सुनार, सट्टा, सेल्स मैनेजर, शेयर ब्रोकर, बैंक की नौकरी, वकालत, औषधी व दवाई का व्यापार, ऊन व गर्म कपड़ों का व्यापार, फर्नीचर व लकड़ी का व्यापार, वन्य सामग्री, फल, मेवों का व्यापार, पायलट, एवं पैतृक व्यवसाय।

कन्या

द्रव्य:- किताब एवं पत्रिकाएं, लेखन सामग्री, टेली प्रिन्टर, फैक्स मशीन, टेलीफोन।

आजीविका:- अध्यापक, दुकान, रिसेप्शनिस्ट, सैक्रेट्री, जिल्दसाजी, खजांची, रेडियो टी. वी. उदघोषक, सम्पादक मिथुन राशि की आजीविका को देखें, सर्वेयर, टेली शौपिंग।

तुला

द्रव्य:- रूई, रेशम, बासमती चावल, नाइलोन, पोलिएस्टर, डिब्बे बन्द खाने की वस्तु, सरसों का तेल

आजीविका:- जज, मैजिस्ट्रेट, वकील, परामर्शदाता, फिल्म, नाटक, टी. वी. से सम्बन्ध, मॉडल, इन्टीरियर डैकोरेटर, फोटोग्राफर, फर्नीचर की दुकान, सेल्समैन।

वृश्चिक

द्रव्य :- विस्फोटक पदार्थ, गोला बारूद, तेज हथियार, शराब, रसायन, तिलहन, खाद्य तेल, मिठाई, लोहा, पैट्रोलियम पदार्थ, तेजाब, बेहोश करने वाले रसायन

आजीविका :- बीमा की नौकरी, रसायन उद्योग या रसायन विज्ञान के अध्यापक, शराब की फैक्ट्री, इंजीनियर, मोटर मेकेनिक, आटोमोबाइल, वर्कशाप, कलपुर्जो की दुकान या फैक्टी, श्रमिक विभाग में कार्य, सैनिक, दांतो के डाक्टर, सर्जन, जासूस, खाद्यान का कार्य, लोहे या स्टील का कार्य, तम्बाकू या सिगरेट का कार्य, नाई की दुकान, मिठाई की दुकान, कैमिस्ट शॉप, पुलिस फायर ब्रिगेड, आदि की नौकरी,

धनु

द्रव्य :- नमक, आलू, सफेद धान्य, सब प्रकार के क्षार रस, पाट, शस्त्र, रबड़ ।

आजीविका :- बैंक की नौकरी, अध्यापन, किसी धार्मिक संस्थान से सम्बन्ध, आडिट का कार्य, कम्पनी सेक्रेट्री, ठेकेदार, सट्टा व्यापार, प्रकाशन, सम्पादन, विज्ञापन से सम्बन्धित कार्य, होल सेल, किराना , सेल्समैन, जूते की दुकान या फैक्ट्री

मकर

द्रव्य:- कासा, ताम्बा, जस्ता, टिन, शीशा, वृक्षपदार्थ, मीठे पदार्थ,

आजीविका:- बैंक या फाइनेन्स विभाग में कार्य, म्यूनिसिपैलिटी की नौकरी, होलसेल का व्यापार, जमीन जायदाद में पैसे लगाने वाला तथा, लकड़ी का व्यापार, खेती व बाग बगीचों का कार्य, खान खनिज, राजनीति,

आजीविका:- नेवी की नौकरी या मर्चेन्ट नेवी, शिपिंग या क्लियरिंग एजेन्ट, कस्टम विभाग का कार्य, बड़ा व्यापार, या उच्च पदासीन, लाईजन का कार्य, समाज सेवी, डाक्टर, नर्स, साधु, जेलर या जेल में कार्य, फिल्म निर्माण,

3

पचम भाव प्रकरण

धनमाजर्य काकुत्सथधन मूल मिदं जगत।
अन्तरं नाभी जानाति निर्धन्स्य मृत्स्य च।।

गुरू वशिष्ठ ने भगवान राम को उपरोक्त श्लोक द्वारा यह समझाया कि इस संसार में धन ही सब कुछ है। निर्धन व्यक्ति एवं मृत व्यक्ति में विशेष अन्तर नहीं होता।

धन की आवश्यकता तथा महत्व को प्राचीन काल से ही माना गया है। इसी लिए तो निम्नलिखित श्लोकों में चाणक्य ने कहा है

यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थस्तस्य बान्धवाः।
यस्यार्थः स पुमांल्लोके यस्यार्थः स च जीवति।।

अर्थात जिस मनुष्य के पास धन रहता है उसीके मित्र होते हैं। जिसके पास अर्थ रहता है उसी के बन्धु होते हैं। जिस मनुष्य के पास धन रहता है वह पुरूष गिना जाता है और जिसके अर्थ है वही जीता है।

आज के युग में धन का महत्व और भी बढ़ चुका है। आज यदि हम ज्योतिषियों से यह पूछें कि आपके पास अपना भविष्य जानने वालों का संर्वाधिक प्रश्न कौन सा होता है तो हम पायेंगे कि धन का प्रश्न ही सबसे अधिक पूछा जाता है। यह जानने की तीव्र इच्छा हर प्राणी में पाई गई है। इसको जानने के लिए ही हमारे ऋषि मुनियों ने कुण्डली में धन स्थान को देखने को कहा है।

धीस्वःयपुण्यानि मदाम्बुमूर्ति खस्थानानि सन्मध्यमवित्तदानि च।
एतानि सर्वाणि सदोत्तरोत्तरं क्रमात्स्मृतानि प्रबलानि पण्डितः।।

पंचम, द्वितीय लाभ तथा नवम् ये धनप्रद उत्तम स्थान माने जाते हैं। सप्तम चतुर्थ, लग्न तथा दशम ये धनप्रद मध्यम स्थान माने जाते हैं। इनको क्रम से उत्तरोत्तर प्रबल धनप्रद मानना चाहिए।

विद्वान लेखक ने पंचम भाव को सबसे प्रबल धन प्रद भाव माना है। पंचम भाव धन भाव तथा लाभ भाव से केन्द्र में है एवं भाग्य व लग्न से त्रिकोण में होने के कारण इसका महत्व बढ़ जाता है। अतः कुण्डली में धन योगों में पंचम भाव एवं पंचमेश का विशेष महत्व पाया गया है। अधिकतम महाधनी व्यक्तियों की कुण्डलियों में पंचमेश को केन्द्र या त्रिकोण में देखा जा सकता है। सर्व प्रथम देखे कुण्डली नं 1।

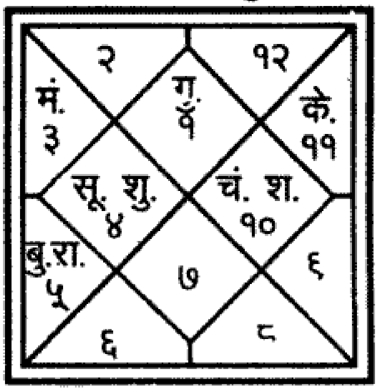

कुण्डलो नं १
(श्री जे. आर. डी टाटा)

यह श्री जे. आर. डी टाटा की कुण्डली है। इसमें पंचम भाव में सिंह राशि है तथा पंचमेश चतुर्थ स्थान केन्द्र में धनेश शुक्र के साथ स्थित है।

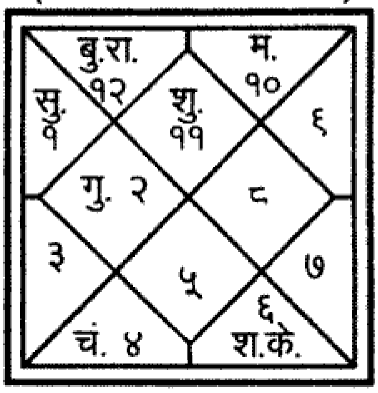

कुण्डली नं २
(श्री घनश्याम दास बिरला)

आइये, कुण्डली नं 2 का भी अध्ययन करते हैं। यह श्री घनश्याम दास जी बिरला की कुण्डली है। इस कुण्डली में चन्द्रमा से पंचम भाव का स्वामी मंगल चन्द्र लग्न से केन्द्र में अर्थात् सप्तम भाव में उच्च राशि गत होकर स्थित है। यह पंचमेश उच्चराशि गत धनेश एवं धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

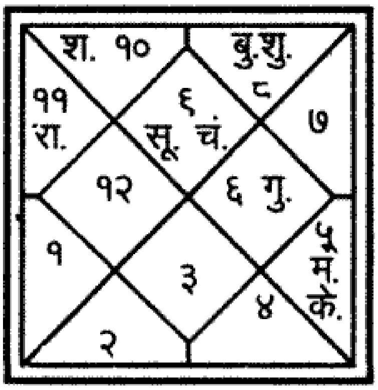

कुण्डली नं ३ (श्री धीरूभाई अम्बानी)

आइये अब एक और वर्तमान में महाधनी व्यक्तियों में से एक श्री धीरूभाई अम्बानी जी की कुण्डली को भी देखें। इस कुण्डली में लग्न एवं चन्द्र लग्न से पंचम भाव का स्वामी मंगल है तथा यह नवम भाव अर्थात त्रिकोण में स्थित है। यहां पर पाठक इस बात को समझें कि कुण्डली

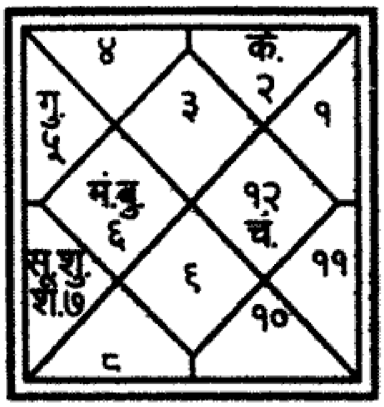

कुण्डली नं. ६
(श्री बिल गेटस)

कुण्डली नं. 6 के जातक का जन्म 28 अक्टूबर 1955 को वाशिंगटन में हुआ। आप विश्व में कम्प्यूटर के बेताज बादशाह माने जाते हैं। आप अमरीका के धनी व्यक्तियों में से एक माने जाते हैं आप की कुण्डली में अनेकों धन योग उपस्थित हैं। यहां पर पंचम भाव में शुक्र तुला राशि का है तथा शनि लाभ भाव में नहीं है परन्तु पंचम में उच्च राशि का होकर शुक्र के साथ स्थित है। यह उपरोक्त योग को पूर्ण दर्शा रहा है तथा पंचम भाव सम्बन्धित कई योगों को दर्शा रहा है।

पंचम भाव अचानक धन प्राप्ति से भी सम्बन्ध रखता है। सट्टा, जुआ, शेयर बाजार, लॉटरी आदि से धन प्राप्ति के लिए कुण्डली में पंचम भाव तथा पंचमेश का विचार करना चाहिए। पंचम भाव में स्थित चन्द्रमा को लाभ भाव में स्थित शुक्र होने पर अचानक धन लाभ कहा गया है। इसी प्रकार पंचम भाव में कन्या राशि का राहु के होने पर भी अचानक धन लाभ होता है। पंचमेश ग्रह की दशा में अचानक धन लाभ होता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

4

धन भाव प्रकरण

स्वे खलैः संयुते द्रष्टे तत्पतावबले अंगपे।
साद्ये त्रिक नो सुखेन जीवनं दुरितेऽर्थपे।।

सवोच्चेऽधेक्षित संयुक्ते-ऽबले अंगेशे सपामरे।
सहायो जीवनोपायेऽनान्योऽथान्त्येऽरिपेसके।।
किमु साही कुवृत्तिः स्याद्वसतिर्नुः परालये।।

अर्थात द्वितीय भाव में कई पापग्रह स्थित हो तथा वे पाप द्रष्ट हों एवं धनेश निर्बल हों एवं त्रिक स्थान में पाप युक्त लग्नेश हो तो उक्त योगों में आजीविका सुखमय नहीं होती है। द्वितियेश पापग्रह हो और वह सर्वोच्च राशि में हो तथा पाप ग्रहों से युक्त, द्रष्ट हो। लग्नेश निर्बल हो तथा पाप युक्त हो तो उक्त योगों में पुरूष के जीवनोपाय में अन्य सहायक नहीं होते हैं। व्यय भाव में षष्ठेश हो और वह सूर्य अथवा राहु से युक्त हो तो ऐसा व्यक्ति निन्दित वृत्ति वाला होता है।

त्रिकोण भे त्र्यंगिबलं स्वभेऽर्द्धमधीष्टगेहे त्रिगुष्टमांशम।
समेऽष्टमांश सखिभेअंगितुल्यं नीच क्षगें खं रिपुभेनृपांशम्

दतांश तुल्य त्वधिशत्रुराशा वर्थाथपाल्लाभनिकेतनेशात।
स्वकारकार्याथ गृहेक्षकेतैर्नभश्चरेन्द्रैद्राविणस्य चिन्ता।।

मूल त्रिकोण राशि में धन दाता गृह हो तो त्रिपाद बल, स्वराशि में अर्द्ध बल, अधिमित्र राशि में तिगुना अष्टमांश बल, समराशि में अष्टमांश बल, नीचराशि में शून्य बल शत्रु राशि में षोडशांश बल होता है। धनेश, लाभेश, गुरू, धनभाव एवं लाभ भाव से युक्त या द्रष्ट ग्रहों से धन का विचार करना चाहिए।

विद्वान ग्रन्थकार ने धन प्रदान करने वाले ग्रहों को बलानुसार विचार करने को कहा है। यह भी हमें स्मरण रखना चाहिए कि धन विचार करते समय जातक की आयु, जाति, वृत्ति, कुल, परिवार, देश एवं परिस्थितियों पर भी विचार करना चाहिए। क्योंकि कई बार देखने में पाया गया है कि एक साधारण परिवार में जन्में व्यक्ति तथा धनी परिवार में जन्में व्यक्ति को एक जैसे बली ग्रह की दशा में धन की मात्रा में अन्तर देखा गया है। यह अन्तर परिस्थितियों के कारण ही होता है।

जीवे वित्तानिकेते सदद्दष्टे प्रचराथर्म।
कल्याणा द्रविणस्था दद्युश्चेद्विविधार्थम।।

धनभाव में गुरू हों तथा वह शुभ ग्रह से द्रष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति धनी होता है। धन भाव में कई शुभ ग्रह होने पर भी धन प्राप्त होता है।

स्वशाद्धनेशे धनपे च कण्टकेऽथोच्चे हितर्क्षे सबले धर्निधप।
धर्म्माय खस्थऽथ धनाधिनायके सिंहासनांशेऽथ निजर्क्षगामिषु।।

चतुर्षु खेटेंष्वथ लोहितद्युतिमांशु योगेऽथ सदीक्षिते विदि।
कोशेऽथ लब्धौधनपे फलाधिपेऽर्थायेऽथवा कण्टकगौ च, च ताबुभो।।

पूज्ये पोष्ये स्वोच्चराशौ स्वराशौ वा अथायार्थपौ सांसंस्थौ।
लेखानाथे लाभगेऽथोच्च माप्ते सौम्ये राहौ रैगतेऽंगेऽगंये वा।।

धनेश जिस स्थान में हो उसके द्वितीय स्थान का स्वामी एवं लग्नेश ये दोनों केन्द्र में हो

- धनेश अपनी उच्च राशि या मित्र राशि में हो तथा नवम, एकादश या दश भाव में हो।
- अपनी राशि में चार ग्रह हों।
- चन्द्रमा या मंगल का योग हो।
- धन में बुध हो तथा वह शुभ द्रष्ट हो।
- लाभ में धनेश और धन या लाभ में लग्नेश हो।
- धन में सर्वोच्य राशिगत या स्वराशिगत गुरू मंगल हो।
- धन में लाभेश तथा धनेश हो और लाभ में लग्नेश हों।
- सर्वोच्चराशि में शुभ ग्रह हो, द्वितीय में राहु और लग्न में लग्नेश हो तो इन योगों में उत्पन्न व्यक्ति धनी होता है।

धनी या धन पाने के कई योग होते हैं जिनका वर्णन हम धन योग विचार में करेंगे। पाठक यह बात को समझ लें कि लाभ, दशम, चतुर्थ, लग्न, पंचम और द्वितीय इन स्थानों के स्वामी का भाग्येश से कुण्डली में जितने अधिक योग होते हैं उतने ही अधिक धन योग होते हैं उतना ही अधिक वह व्यक्ति धनी होता है। इन भावों का आपस में सम्बन्ध होना आवश्यक है। इनको समझने के लिए हम कुछ महाधनी करोड़पति व्यक्तियों की कुण्डलियों का अध्ययन करते हैं।

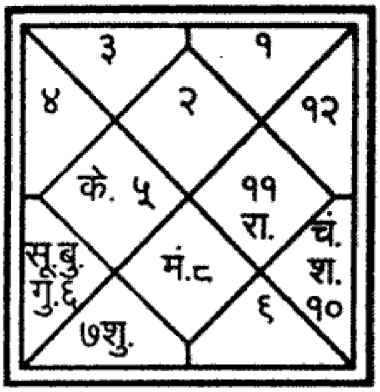

कुण्डली नं ७

कुण्डली नं. 7 का जातक एक अति निर्धन अध्यापक के घर पैदा होकर एक महाधनी व्यक्ति बना। कुण्डली में उपरोक्त दिये गए क़ई योगों को देखा जा सकता है। चार ग्रह स्वराशि के होकर बैठें हैं, धनेश उच्च का होकर पंचम भाव में स्थित है। धनेश पंचमेश लाभेश, चतुर्थेश एक साथ पंचम भाव में है।

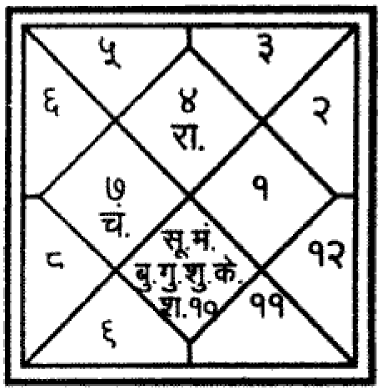

कुण्डली नं ८

कुण्डली नं. 8 का जातक एक निर्धन किसान के घर पैदा होकर आज बहुत सम्पत्ति वाला धनी व्यक्ति है। यहां पर सात ग्रह एक साथ सप्तम भाव में एकत्रित हैं। यहां पर पंचमेश एवं दशमेश मंगल ग्रह हैं तथा वह उच्च का होकर सप्तम भाव में स्थित है। इसका सम्बन्ध धनेश, लाभेश, नवमेश, से हो रहा है। यह एक उत्तम योग है।

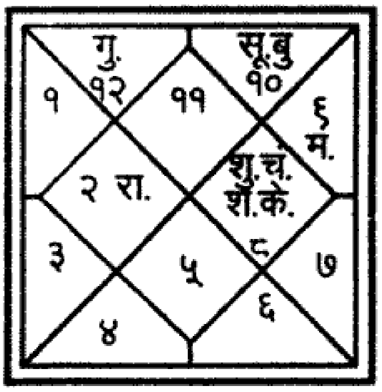

कुण्डली नं ६

कुण्डली नं. 9 उद्योगपति श्री विष्णु हरी डालमिया जी की है। यहां पर स्वराशि का गुरू धन स्थान में है। यह गुरू लाभेश भी है अतः यह अपने आप में एक धनी योग होता है। दशमेश लाभ स्थान में होकर लाभेश एवं धनेश को देख रहा है तथा यह गुरू अपनी नवम पूर्ण द्रष्टि से कुण्डली के दशम भाव को देख रहा है।

जहां पर लग्नेश, शनि, भाग्येश एवं चतुर्थेश शुक्र बैठे हैं। अतः इन सभी धनप्रद स्थानों में घनिष्ठ सम्बन्ध बना हुआ है।

कुण्डली नं १०

कुण्डली नं 10 आगा खां की है। यहां पर भी पूर्ण विचरित कई योग देखने को मिल रहे हैं जैसे कि धन स्थान में बुध शुभ युक्त है। धनेश धन स्थान में लाभेश से युक्त है। धनेश से द्वितीय स्थान का स्वामी शनि लग्न से केन्द्र में है। लग्नेश लाभेश, धनेश एवं पंचमेश में सम्बन्ध बने हुए हैं। इन सभी योगों के कारण ही आप एक धनी मानी व्यक्ति बने।

धनलाभ योग

निधानों भज्ञौ वा निधननिलये निर्मललखगा धनायेशो केन्द्रेऽथ विभवप आये भवविभौ।
धने वा ऽवाप्तिशे गुरूतनयकेन्द्रे खलखग उपान्त्यगारस्थे कथयतु धनप्राप्ति बुधवरः।।

- अर्थात धन भाव में बुध तथा शुक्र हो
- अष्टम में शुभ ग्रह और केन्द्र में धनेश तथा लाभेश हो
- लाभ में धनेश तथा धन में लाभेश
- त्रिकोण या केन्द्र में लाभेश हो तथा एकादश में पाप ग्रह हो तो उक्त योगों में उत्पन्न व्यक्ति धनी होता है।

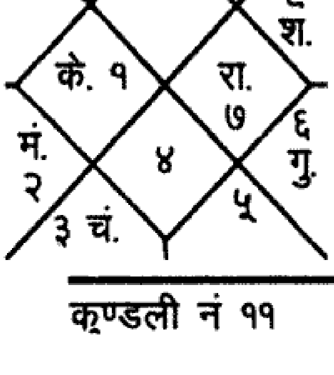

कुण्डली नं ११

कुण्डली नं 11 के जातक का जन्म 11 मार्च 1957 को हुआ था। जातक पाकिस्तान में एक मात्र हिन्दु मंत्री है। जातक की कुण्डली में धनी होने के योग विराजमान हैं। धन भाव में बुध तथा शुक्र की स्थिति, लाभ भाव में धनेश एवं लग्नेश जो कि पाप ग्रह हैं, केन्द्र त्रिकोण में लाभेश की स्थिति यह सब इस जातक के धनी होने को दर्शा रहे हैं

बिना परिश्रम के धन लाभ :

धनाधिपे अंगेगेहगे कलेवरेशि कोशगे।
धनस्य लब्धिरीरिता तनुभृताम यत्नतः।।

लग्न में धनेश तथा धन में लग्नेश हो तो बिना यत्न (प्रयास) के धन लाभ होता है।

लग्नेशे द्रव्यराशिस्थे द्रव्येशे लाभ राशिगे।
लब्धेशे वा विलग्नस्थे बहुनिध्यादिक भवेत।।

धन भाव में लग्नेश एवं लाभ भाव में धनेश तथा लाभेश लग्न में हो तो गड़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

गड़े हुए धन का विचार वैसे तो चतुर्थ भाव से करना चाहिए यहां इसको लाने का लेखक का अभिप्राय बिना परिश्रम से धन प्राप्त करने से है। अचानक धन प्राप्ति के लिए पंचम भाव का विशेष महत्व होता है। पाठक यह समझ लें कि यदि कुण्डली में लग्नेश लाभ भाव में लाभेश लग्न या धन भाव में तथा धनेश लग्न में हो या यह तीनों भावेश एक साथ इन तीनों भाव में हो या इन तीनों भावों तथा भावेश का आपस में सम्बन्ध बन रहा हो तो बिना परिश्रम से धन लाभ होता है। तथा इन्हें लॉटरी आदि भी लगती है।

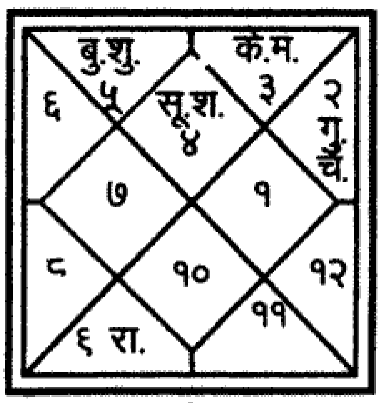

कुण्डली नं १२

कुण्डली नं 12 के जातक का जन्म 10–8–1917 को विदेश में हुआ था। इन्हें सन् 1961 में 90000 अमरीकन डालर की लॉटरी लगी थी। उस समय यह राशि बहुत मानी जाती थी। यह आज के समय में कई करोड़ रूपये के बराबर समझें। इस कुण्डली में यहां पर बताए गए सभी योग पूर्ण बैठते हैं। देखें लग्न में धनेश, (सूर्य) लाभ भाव में लग्नेश (चन्द्र) तथा धन भाव में लाभेश (शुक्र) यह तीनों भाव एवं भावेशों का राशि परिवर्तन का उत्तम उदाहरण है। इस जातक को कुण्डली में अन्य धन योग भी उपलब्ध हैं।

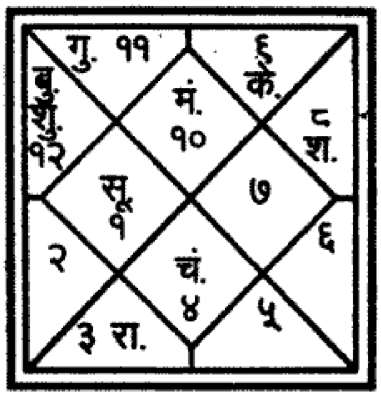

कुण्डली नं १३

कुण्डली नं 13 की जातिका वर्तमान ब्रिटेन की मलिका क्वीन एलीजाबेथ द्वितीय की है। यह कुण्डली महाधनी एवं बिना परिश्रम के धन प्राप्ति का उत्तम उदाहरण है। यहां पर लग्नेश एवं धनेश एक ही ग्रह हैं। वह है शनि जो कि लाभ स्थान में है। लाभेश मंगल उच्च का होकर लग्न में स्थित है। अतः यहां पर तीनों भावों व भावेशों का राशि परिवर्तन हो रहा है।

स्वोपार्जित धन प्राप्ति योग

द्रव्याधिपे देहपयुक्तदृष्टे स्वबाहुवीर्य्येण समेति वित्तम्।
कुम्भेयमेऽब्जेऽजेगृहे ह्रयेऽर्कैमृगे भृगो भृर्गा स्वं स्वपितुर्न।।

धन स्थान का स्वामी यदि लग्नेश से युक्त वा द्रष्ट हो तो अपने बाहुबल द्वारा धन पाता है। कुम्भ में शनि, मेष में चन्द्रमा धनु में सूर्य तथा मकर में शुक्र हो तो ऐसा जातक अपने पिता का धन उपभोग नहीं करता है तथा अपने आप धन कमाता है।

इसके अतिरिक्त यदि धनेश लाभेश एवं लग्नेश से युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो भी वह निज धन अर्जित करता है। ऐसे व्यक्ति मध्यामवस्था में धन को पाते हैं। धनेश जिस राशि में हो तथा वह लग्नेश से युक्त हो तथा उस राशि का स्वामी लग्न में हो तो अन्तत्यावस्था में धन प्राप्त होता है।

कुण्डली नं 14 सेठ सर हुक्म चन्द जी की है। यह कुण्डली स्वार्जित धन मध्यावस्था में कमाने का उत्तम उदाहरण है। यहां पर लग्नेश बुध, धनुश, शुक्र तथा लाभेश चन्द्रमा एक साथ लाभेश भाव (केन्द्र स्थान) में बैठे हैं। इस कुण्डली में पाठक पूर्व में दिये गए धन योगों को भी देख सकते हैं।

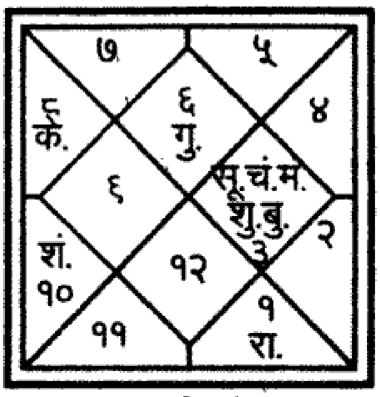

कुण्डली नं १४

मध्यमावस्था में स्वार्जित धन कमाने वालों का एक और उत्तम उदाहरण पूर्व में दी गई कुण्डली नं 5 जो कि कम्प्यूटर के बेताज बादशाह श्री गेटस् की कुण्डली को फिर से देखें। इसमें लग्नेश बुध व लाभेश मंगल की युति चतुर्थ (केन्द्र) में हो रही है तथा धनेश चन्द्र जो कि दशम (केन्द्र) भाव में है। उससे द्रष्टि सम्बन्ध बना हुआ है। आपसे भी इसी अवस्था में स्वार्जित धन कमा कर अमरीका के धनी व्यक्ति बन गए हैं।

कुण्डली नं 15 के जातक का जन्म अप्रैल माह 1950 में हुआ तथा इस जातक ने भी अपने बल बूते पर बहुत धन कमाया। यहाँ पर धन स्थान एवं लाभ का स्वामी गुरू लग्नेश शनि द्वारा द्रष्ट है तथा इसकी युति योग कारक शुक्र से है। आप आज एक बड़ी दवाईयों की कंपनी को चला रहे हैं इस कुण्डली में गुरू लाभेश एव धनेश होकर लग्न में स्थित है तथा लग्नेश शनि द्वारा द्रष्ट है। यह ग्रह केन्द्र में स्थित है। अतः मध्यमावस्था में धन कमाने के योग पूर्ण बने हैं।

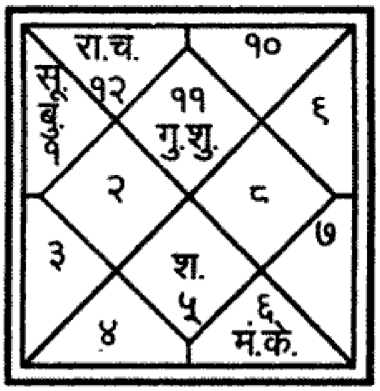

कुण्डली नं १५

भाई से धन प्राप्ति

देहार्थपावनुजगौ नरद्रष्ट युक्तो युक्तेक्षितौ सहजपेन विशेषितांशे।
उर्जान्वितौ किमुदयाधिभुवेक्षितादयो सोत्थेशकारकखगौ। द्रविणालयस्थौ।

वैशेषिकांश उत विक्तविभौवपुःस्थे सोत्थालयेशसहितेऽथ धनाधिनाथे।
द्रष्टेयुतेऽनुज भपेन च कारकेण सांर समेति मनुजोनिजसोदराणाम्।।

–तृतीय भाव में लग्नेश तथा धनेश हो तथा वे बलवान या वैशैषिकांश में होकर तृतीयेश से द्रष्ट वा युक्त हो तो

–धन भाव में तृतियोश तथा भ्रातृकारक ग्रह मंगल हो तथा वह लग्नेश से द्रष्ट होकर वैशेषिकांश में हो तो इन योगों में उत्पन्न व्यक्ति अपने भाई के धन को पाता है।

तृतीय एवं एकादश द्वारा भाई का विचार करना चाहिए। तृतीय स्थान से छोटे भाई तथा एकादश द्वारा बड़े भाई का विचार करना चाहिए। षष्ठ स्थान तथा बुध से चचेरे भाई का विचार करना चाहिए। पाठकों से यह निवेदन है कि वह बुध का सम्बन्ध तृतीय एवं एकादश भाव से होने पर तथा उपरोक्त योग होने पर भाई की जगह बहिन द्वारा धन लाभ समझें।

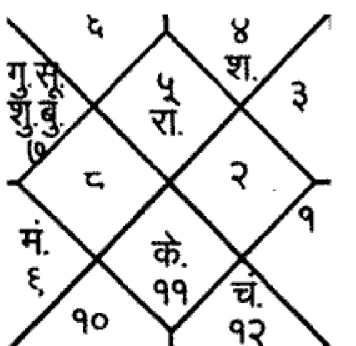

कुण्डली नं १६

कुण्डली नं 16 के जातक को अपनी बड़ी बहन द्वारा धन लाभ हुआ था इनको अपनी बड़ी बहन की सारी जायदाद की प्राप्ति हुई। यहां पर उपरोक्त दिये गए योग को समझे। तृतीय भाव में तृतीयेश शुक्र तथा लग्नेश सूर्य की युति है तथा लाभेश व धनेश बुध के साथ भी युति बनी है। एकादश भाव के स्वामी बुध होने के कारण ही इन्हें बड़ी बहन द्वारा लाभ मिला।

भाई से धन प्राप्ति के और भी कई योग होते हैं।

- धन स्थान, भाग्य स्थान, चतुर्थ स्थान का सम्बन्ध मंगल, तृतीय एवं एकादश स्थान के स्वामी से होने पर भी भाई या बहिन द्वारा लाभ होता है।
- धनेश लग्न में हो एवं तृतीयेश की इनसे युक्ति या द्रष्टि हो या कोई अन्य सम्बन्ध हो।
- चतुर्थ भाव में मंगल हो या चतुर्थेश मंगल के साथ हो तथा तृतीयेश एवं धनेश का इस से सम्बन्ध हो तृतीयेश गुरू के साथ धन भाव में हो एवं लग्नेश का इन से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध हो।
- नवमेश एवं तृतीयेश एक साथ तृतीय, धन या भाग्य भाव में हो।
- नवमेश व तृतीयेश एक साथ होने तथा शुभ ग्रह द्वारा द्रष्ट होने पर भ्राता से कुछ न कुछ सहयोग अवश्य मिलता है।

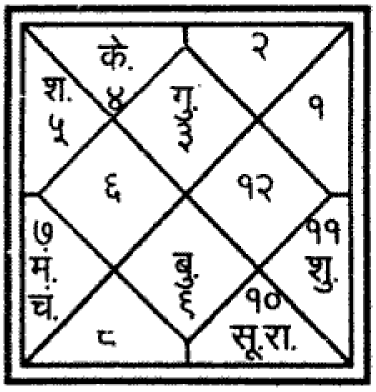

कुण्डली नं १७

कुण्डली नं 17 एक स्व. महाराजाधिराज की है। इनको अपने बड़े भाई से सहायता व धन प्राप्त हुआ था। इस कुण्डली में भ्राता का कारक मंगल एकादश भाव का स्वामी है। अतः बड़े भाई को दर्शा रहा है। इसकी युति धनेश चन्द्रमा से पंचम भाव में है। नवमेश जोकि तृतीय भाव में स्थित इन दोनों ग्रहों की अपनी तृतीय पूर्ण द्रष्टि से देख रहा है। तृतीयेश एवं भाग्येश में राशि परिवर्त्तन भी हो रहा है अतः यह योग पूर्ण बन रहा है।

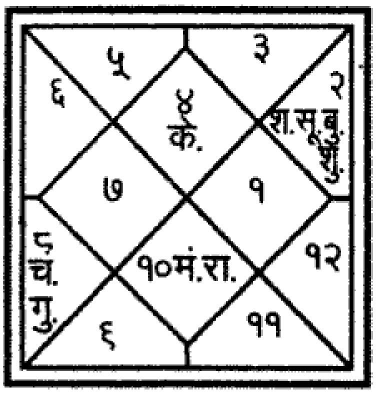

कुण्डली नं १८

कुण्डली नं 18 के जातक की आयु अभी अधिक नहीं है। मात्र 26 वर्ष की है (जातक का जन्म जुलाई 1971) इस जातक को अपने चचेरे भाई द्वारा धन लाभ हुआ है। यहां पर तृतीयेश, धनेश एकादशेश एक साथ एकादश में हैं तथा भाग्येश गुरू एवं लग्नेश चन्द्रमा के साथ द्रष्टि सम्बन्ध बना हुआ है।

जसा कि पूर्व में कहा गया है कि षष्ठेश एवं बुध से चचेरे भाई का विचार करना चाहिए। यहां पर षष्ठेश तथा नवमेश एक ही ग्रह गुरू है इसका सम्बन्ध लग्नेश चन्द्र तथा धनेश शुक्र व तृतीयेश बुध एवं लाभेश शुक्र द्वारा बना हुआ है। यहां पर लग्नेश चन्द्रमा कहने को तो नीच राशि में है। परन्तु इसको नीच भंग योग प्राप्त है। तथा यह तीनों शुभ ग्रहों द्वारा प्रभावित है अतः जातक को चचेरे भाई से धन लाभ के लिए कुछ योगों को और ध्यान में रखना चाहिए।

– षष्ठ भाव में चन्द्रमा तथा लग्नेश बली हो एवं गुरू केन्द्र त्रिकोण में हो।

– षष्ठेश एवं नवमेश में राशि परिवर्त्तन हो तथा किसी एक ग्रह के साथ बुध हो तो भी चचेरे भाई से लाभ होता है।

पिता से धन लाभ

द्रष्टान्विते तात पकारकाभ्यां स्वेशे ससारे जनकात्सकाशत।
वित्तस्यलब्धिः कथिताऽहिमांश विलातलागारगतेऽपितद्वत।।

– बलवान धनेश दशमेश तथा पितृकारक सूर्य से द्रष्ट या युक्त हो

– चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो इस योग में उत्पन्न व्यक्ति पिता से धन प्राप्त करता है।

पाथपुरस्थोविधुतो विभाकरोऽम्बुपेक्षितः स्वस्यपितुधनप्रदः।
पुराधिपेनान्वितवीक्षिते र वौ देहे सरवेशे पितृ कोशवान्नरः।।

– चन्द्रमा से चतुर्थ या प्रथम में सूर्य हो तथा सुखेश से द्रष्ट हो।

– लग्न में सूर्य हो तथा दशमेश से युक्त हो एवं लग्नेश से युक्त या द्रष्ट हो तो इन योगों में उत्पन्न व्यक्ति पिता के कोश को प्राप्त करता है।

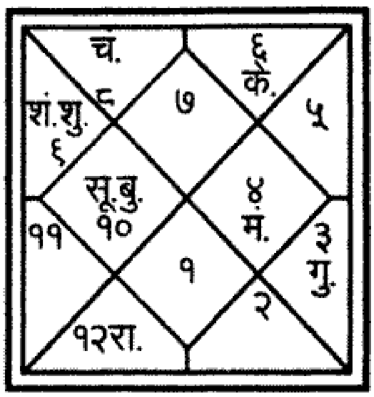

कुण्डली नं १६

कुण्डली नं 19 एक करोड़पति व्यक्ति की है इनको अपने पिता से सदैव सहायता मिली तथा पैतृक धन भी प्राप्त हुआ। यहां पर धनेश मंगल तथा दशमेश चन्द्रमा का राशि परिवर्तन है तथा धनेश मंगल तथा दशम भाव को पितृ कारक सूर्य की दृष्टि है। इसके अतिरिक्त बुध भाग्येश होकर भी देख रहा है। यहां पर पिता से धन प्राप्त करने वाले कई योगों को देखा जा सकता है।

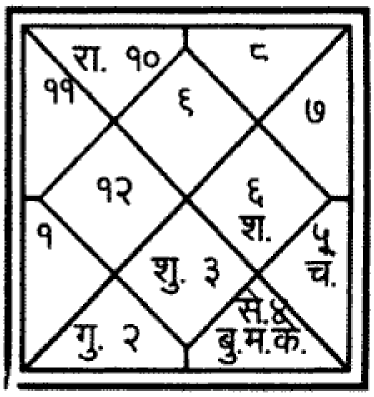

कुण्डली नं २०

कुण्डली नं 20 एक अन्य महाधनी व्यक्ति की है। आपको भी पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हुई। आपने अपने बल से इस सम्पत्ति को और बढ़ाया है। इस कुण्डली को देखने पर तो यह नहीं कहा जा सकता है कि इस जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। परन्तु साथ में में दी गई नवांश कुण्डली का अध्ययन करने पर पैतृक सम्पत्ति पाने वाले सभी योगों को देखा जा सकता है।

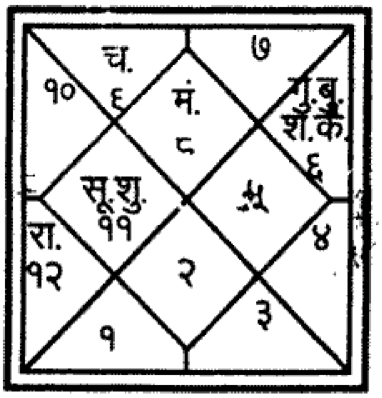

नवांश कुण्डली

यहां पर पाठकों से यही निवेदन करते हैं कि यदि हमें सटीक फलादेश करना हो तो मात्र जन्म कुण्डली देख कर ही फलादेश न कहें अपितु नवांश कुण्डली, चन्द्र लग्न तथा अन्य ग्रह बल को विचार कर है फलादेश कहें। आइये अब यहां पर दी गई नवांश कुण्डली को देखें इसमें सूर्य चतुर्थ भाव में ही। जन्म कुण्डली से धनेश शनि, दशमेश बुध तथा चतुर्थेश गुरू की युति लाभ भाव में होने से पिता से धन लाभ को दर्शा रहा है।

पुत्र से धन प्राप्ति

सहः समेते वसुपे सुतेशतत्कारकाभ्यां सहितेक्षिते वा।
विशेषितांशे पुरपाल ओजःसमन्विते सारमुपैति सुनोः।।

– बलवान धनेश यदि पंचमेश तथा पुत्रकारक गुरू से युक्त व द्रष्ट हो

– वैशेषिकांश में बलवान लग्नेश हो तो इन योगों में पुत्र द्वारा धन लाभ होता है।

पंचमेश, धनेश, गुरू, नवमेश, का पंचम भाव, नवम भाव एवं धन भाव में किसी भी प्रकार का सम्बन्ध होने पर पुत्र द्वारा धन एवं सहायता प्राप्त होती है। कई जातकों में यहाँ तक देखा गया है कि पुत्र द्वारा उनका भाग्योदया हुआ है। यदि धनेश पंचमेश भाग्य भाव में एक साथ हो एवं गुरू की द्रष्टि इन पर या लग्नेश पर पड़नें पर भाग्योदय पुत्र के द्वारा होता है।

पंचमेश या गुरू के भाग्य भाव में होने पर भी पुत्र द्वारा सहायता या धन प्राप्त होता है और यदि इन का सम्बन्ध धनेश से हो जाए तो यह निश्चित ही हो जाता है।

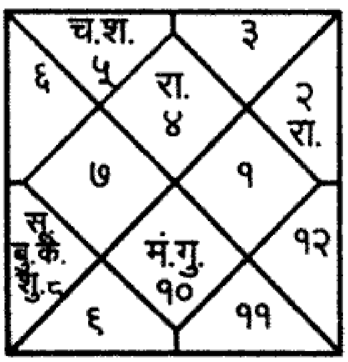

कुण्डली नं २१

कुण्डली नं. 21 का जातक एक धनी व्यक्ति है। इनका पुत्र बहुत ही होशियार एवं व्यवहार कुशल व्यक्ति है। इस जातक को अपने पुत्र द्वारा बहुत लाभ मिला। पुत्र इन्हें सदा ही सहयोग प्रदान करता रहा। यहां पर देखें धनेश सूर्य पंचम भाव में स्थित है। पंचमेश उच्च राशि का हो सप्तम भाव में पुत्रकारक एवं नवमेश गुरू के साथ स्थित है। पंचमेश मंगल की अष्टम पूर्ण द्रष्टि धनभाव में पड़ रही है। यह कुण्डली पुत्र द्वारा धनलाभ का उत्तम उदाहरण है।

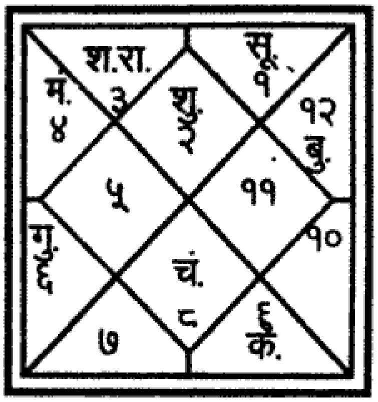

कुण्डली नं २२

कुण्डली नं 22 के जातक का जन्म अप्रैल माह सन् 1946 में हुआ था। इस जातक ने अपने जीवन मे बहुत धन कमाया परन्तु धन का नुकसान भी बहुत हुआ। व्यापार भी कई प्रकार के करे सभी व्यापार में बहुत नुकसान हुआ। आज इस जातक के पुत्र द्वारा इन्हें धन मिल रहा है। अब यह जातक पुनः धनी व्यक्तियों में कहा जा सकता है। यहां पर धनेश एवं पंचमेश एक ही ग्रह बुध है तथा यह बुध एकादश भाव में बैठा है। वहां से इस बुध की पूर्ण द्रष्टि पंचम भाव में स्थित पुत्रकारक एवं भाग्येश गुरू पर पड़ रही है। तथा इन दोनों ग्रहों का आपस में राशि परिवर्त्तन भी है। यह कुण्डली पुत्र द्वारा धन लाभ का एक अच्छा उदाहरण है।

स्त्री से धन प्राप्ति :

कलत्रत्कार कयोस्तथैव अर्थ कलत्रान्लभते हि नरः।
सतां ग्रहेऽर्थमन्दिरे बलान्विते बहुग्रहे।
तदा भवेच्छरीरिणों नितम्बिनी धनान्विता।।

– सप्तमेश और स्त्रीकारक ग्रह (शुक्र) से युक्त या द्रष्ट बलवान धनेश हो।

– धन में शुभ ग्रह की राशि हो और उसमें बलवान बहुत ग्रह हो तो इन योगों में स्त्री द्वारा धन प्राप्त होता है।

सप्तम भाव को जाया भाव भी कहते हैं। इसका तथा स्त्री कारक शुक्र का सम्बन्ध धन, लाभ एव भाग्य से होने पर स्त्री से धन लाभ होता है। चतर्थेश के सप्तम भाव में होने तथा सप्तमेश के चतुर्थ में होने पर स्त्री द्वारा भू सम्पत्ति

मिलती है। यदि उपचय स्थानों में शुक्र का सम्बन्ध धनेश तथा लग्नेश से हो तो भी स्त्री द्वारा धन प्राप्त होता है। वैसे भी यदि यह सम्बन्ध न हो परन्तु शुक्र कुण्डली में उपचय स्थान या सप्तम भाव में हो तो भाग्योदय विवाहोपरान्त ही होता है। सप्तमेश तथा नवमेश में सम्बन्ध होने पर भी स्त्री द्वारा लाभ होता है। चतुर्थ स्थान का स्वामी सप्तम भाव में हो तथा शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो स्त्री द्वारा भूमि या मकान का लाभ होता है।

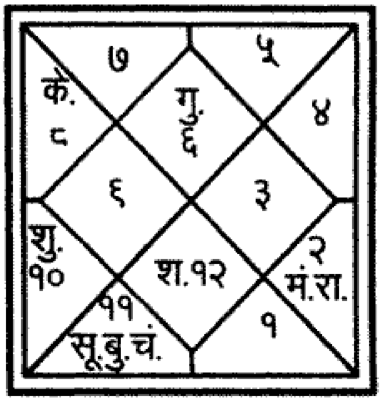

कुण्डली नं २३

कुण्डली नं 23 के जातक की पत्नी बहुत धनी परिवार की इकलौती पुत्री थी। इस जातक को अपनी स्त्री की ओर से उनकी पैतृक सम्पत्ति मिली। यहां पर धनेश स्त्री कारक ग्रह शुक्र ही है जो कुण्डली में पंचम भाव में स्थित है। सप्तमेश गुरू लग्न में स्थित होकर धनेश एवं भाग्येश शुक्र को पंचम पूर्ण द्रष्टि से देख रहा है। यह योग कितना पूर्ण फल दे रहा है।

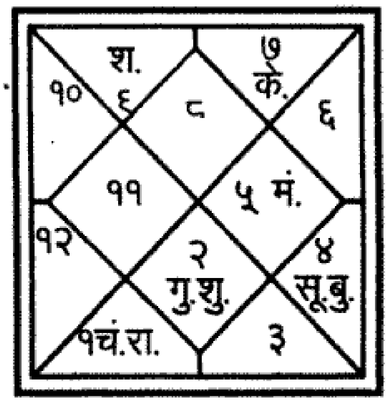

कुण्डली नं २४

कुण्डली नं 24 स्व. श्रीमती कैनेडी जो बाद में विश्व के सबसे धनी व्यक्ति श्री ओनासिस की पत्नी बनी तथा इनको श्री ओनासिस की मृत्यु पश्चात बहुत धन सम्पत्ति मिली। इस कुण्डली में गुरू धनेश एवं पंचमेश होकर सप्तम भाव में स्थित है। सप्तमेश शुक्र उसी भाव में इस गुरू से युक्त है। अतः यह योग पूर्ण बना हुआ है।

कुण्डली नं 25 के जातक का जन्म मार्च 1950 में हुआ है। यह जातक एक करोड़पति उद्योगपति का दामाद है। इस जातक को अभी तक अपने ससुराल से धन लाभ एवं सहायता मिलती रहती है। यहां पर धनेश एवं भाग्येश शुक्र है जो स्त्री कारक भी है। इसकी युति सप्तमेश गुरू से पंचम भाव में हो रही है।

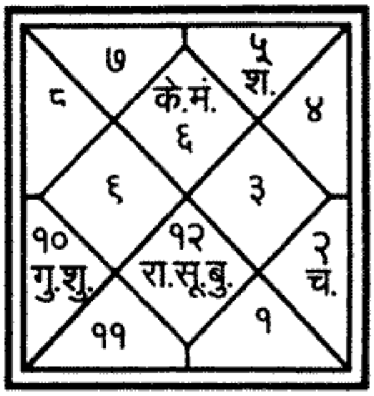

कुण्डली नं २५

यह युति लाभ स्थान को भी देख रही है। तथा गुरू की पंचम एवं नवम् पूर्ण द्रष्टि भाग्य भाव व लग्न को पड़ रही है। यह स्त्री द्वारा धन प्राप्त करने का एक और उत्तम उदाहरण है।

★★★★★★★

5

धनभाव गत ग्रह फल

धन भाव तथा सूर्य

दर्व्येऽर्के मुखरूग्युतो वसुमतिडदण्डेन वित्तक्षयो
वर्षे वाणयभोन्मिते स्वभ उत्तोच्चर्क्षे ने दोषो भवेत।
सोग्रे स्वल्पकृती सरूड्. नयनरूग्भाग्भव्य द्रष्टेधनी
दोषदीश्च हरेत्सुखं नयनयोः स्वर्क्षोच्चगेऽव्यर्थयुक।।

वित्ते ब्रन्धेसंयुते बोधनेने द्रव्यस्वामी जायते वातवाणी
स्वोच्चेऽर्थेऽर्के ज्ञानवान्राजयोगश्चक्षुः सौख्यं शास्त्र वेत्ता च वाग्मी।
द्रव्यगृहे सति भास्कर वीक्षिते पितृधनःपितृ नाश्करश्च हि
स्वपराक्रमजीविचतुष्पदात्सुखाकरोपि।।

धन भाव में सूर्य हो तो 25 वें वर्ष में राज दण्ड से धन नाश होता है। यदि यह सूर्य स्वराशि या उच्च राशि गत हो तो यह दोष नहीं होता। पाप युक्त होने पर नेत्र रोगी बनता है। शुभ द्रष्ट होने पर धनी तथा नेत्र रोग से दूर रहता है। धन भाव गत सूर्य बुध के साथ हो तो धनी तथा अच्छे वचन वाला होता है। यदि यह सूर्य उच्च का हो तो यह राजा के समान धनी एवं प्रतिष्ठित बनाता है। धन भाव में सूर्य की द्रष्टि होने पर पिता का धन प्राप्त करता है ; अपने पराक्रम से जीविका करने वाला तथा चौपायों से धन पाता है।

कई ग्रन्थकारों तथा विद्वानों ने धन स्थान के सूर्य को धन के लिए उत्तम नहीं माना है।

"विगत विद्या विनय वित्तं स्खलित वाच धनगतः"।

\- (मंत्रेश्वर)

फल दीपिकाकार अनुसार धन भाव का सूर्य धन के लिए अनिष्टकारक होता है। यहां पर विशेष ध्यान देने की यह है कि जैसा कि हमारे ग्रन्थकार ने कहा है कि स्वराशि एवं उच्च राशि गत सूर्य दोषों को दूर कर देता है अतः इस प्रकार का सूर्य राजकीय सेवा या सरकार द्वारा धन लाभ करवाता है।

"त्यागी धातु द्रव्यवान इष्टशत्रु वाग्मी वित्तस्थानगे चित्रभानौ"।

(वैद्यनाथ)

वैद्यनाथ अनुसार धन स्थान से सूर्य मनुष्य को त्यागी, मूल्यवान धातु (सोना चांदी) का स्वामी एवं धनी बनाता है। ऐसा व्यक्ति व्यवहार कुशल तथा शत्रुओं का मन जीतने वाला होता है।

अनुभव में यह पाया गया है कि यदि धन स्थान में मेष सिंह व धनु राशि का सूर्य होने पर वह व्यक्ति सदा आगे पढ़ना चाहता है। इसके लिए स्वार्थी भी हो जाता है। कर्क वृश्चिक तथा मीन का सूर्य व्यक्ति को उच्च अधिकारी बनाता है। इन राशि में स्थित सूर्य पर गुरू की द्रष्टि इन्हें उच्च पद पर ले जाती है। धनभाव में वृष कन्या या मकर राशि का सूर्य होने पर धन नहीं टिकता। सूर्य की द्रष्टि यदि धन भाव पर पड़ती है तो वह व्यक्ति अपने पिता से धन पाता है। धन स्थान यदि सिंह राशि का हो या सिंह राशि के सूर्य द्वारा द्रष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति सरकार से धन प्राप्त करता है या जानवरों, सोने, ऊन आदि से धन प्राप्त करता है।

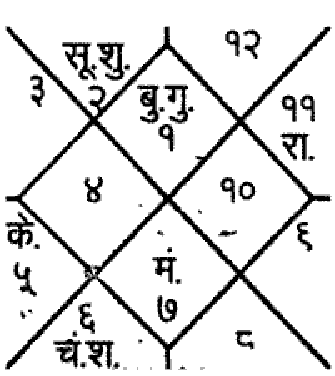

कुण्डली नं २६

कुण्डली नं 26 के जातक का जन्म 1–6–1952 में हुआ। यह जातक धनी है परन्तु इसका धन नहीं टिक पाता। इसको बहुत परिश्रम के बाद धन प्राप्त होता है और बुरो व्यसनों में पड़कर नष्ट हो जाता है। जातक जवाहरात का व्यापारी है। इस कुण्डली में सूर्य वृष राशि का है तथा मंगल द्वारा द्रष्ट होने के कारण धन को टिकने नहीं दे रहा है। कुण्डली में धन योगों की कमी नहीं है।

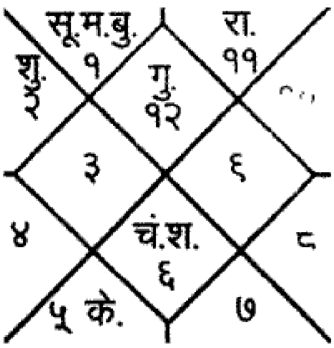

कुण्डली नं २७
(आन्ध्र के मुख्यमंत्री
श्री चन्द्रबाबू नायडू)

कुण्डली नं 27 आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चन्द्रबाबू नायडू की है। यहां पर उच्च का सूर्य धन भाव में स्थित है। यह योग उच्च अधिकारी या मुख्यमंत्री बनने का उत्तम उदाहरण है। यहाँ पर मंगल भाग्येश होकर स्वराशि में स्थित है।

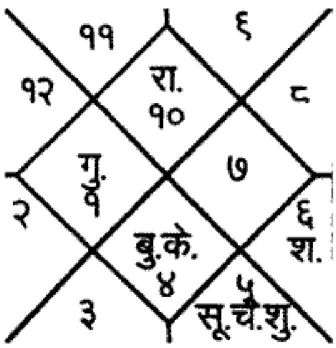

कुण्डली नं २८

कुण्डली नं 28 के जातक का जन्म 21–8–1952 को हुआ है। यह जातक एक जौहरी एवं रत्नों का व्यापारी है। यहां पर अष्टम भाव में सिंह राशि के सूर्य की पूर्ण द्रष्टि धन भाव में पड़ रही है। जिसके कारण जातक के पास पैतृक धन सम्पत्ति है। यह जातक सरकारी विभागों में सप्लाई का कार्य भी करता था।

ग्रन्थकार ने सूर्य की द्रष्टि धन भाव में होने पर चतुष्पद के सुख का भी वर्णन करा है। आज के युग में चतुष्पद के सुख का कोई महत्व नहीं रह गया है। परन्तु यदि किसान, भूमिपति एवं ग्रामीण व्यक्तियों की कुण्डलियों में यह द्रष्टि पड़ रही हो तो यह फल पूर्ण हो जाता है।

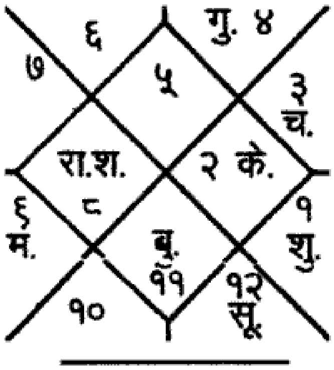

कुण्डली नं २९

कुण्डली नं 29 के जातक का जन्म 20 मार्च 1956 को हुआ। जातक बहुत भू सम्पत्ति का मालिक है तथा जयपुर के पास एक स्कूल भी चला रहा है। इस व्यक्ति के पास पशुधन की कमी नहीं है। जातक के घर में गाय भैंस भी है। अतः यहाँ पर अष्टम भाव में स्थित सूर्य की द्रष्टि धन भाव पर पड रही है।

धन भाव तथा चन्द्रमा

स्वेऽब्जेऽल्पसन्तोष करो धनी, बहुप्रताप वाञ्छोभनवान्नृपालयात्।
वर्षे पुराण प्रमिते चमूपतेर्योगो भवेतत्र खलग्रहान्विते।।

रौप्य कांचन युक्त च मणी रत्नधनं भवेत कपूर चन्दन मोदी धने कुमुदवान्धवे
द व्ये चन्दे धनी लोके दृष्टिभिर्वाविलोकिते।

धन भाव में चन्द्रमा हो तो वह व्यक्ति अल्प सन्तोष करने वाला, धनी एवं बहु प्रतापी होता है। ऐसे व्यक्ति को 18वें वर्ष में राज दरबार से सेनापति का योग होता है। द्वितीय भाव में चन्द्रमा होने पर सोने चान्दी मणिरत्न आदि से धनी तथा कपूर चन्दन तथा गन्ध वाली वस्तुओं से धन कमाना है। चन्द्रमा की द्रष्टि धन भाव में पड़ने पर भी मनुष्य धनी होता है।

धन भाव में चन्द्रमा की स्थिति प्रायः सभी विद्वान गण उत्तम मानते हैं। धन भाव का चन्द्रमा मनुष्य को धनी बनाता है। परन्तु यह चन्द्रमा बली होना चाहिए अर्थात् शुक्ल पक्ष को सप्तमी से लेकर पूर्णिमा तक हो तथा अपनी राशी का या वृष राशि का हो तो जातक को महाधनी बनाता है। परन्तु यह चन्द्रमा मनुष्य को कामी भी बनाता है।

कामी कान्तः चारूवाग इंगितज्ञः विद्याशीलो वित्तवान वित्तगेन्दौ
(वैद्यनाथ)

वैद्यनाथ के अनुसार भी धन भाव में चन्द्रमा व्यक्ति को कामी बनाता है। इसके अतिरिक्त ग्रन्थकार ने कहा है कि 18वें वर्ष में सेनापति बनाता है। इस पर हमें सन्देह है। पाठक इसको अपने अनुभव में अवश्य देखें क्योंकि भृगुसूत्र में भी यही बात कही गई है। आज के समय में सेना में नौकरी आई. एम. ए. या एनडीए में प्रवेश से भी लिया जा सकता है। धन भाव में चन्द्रमा की स्थिति या द्रष्टि पड़ने पर सोना चान्दी मणिरत्न आदि युक्त होना से सम्बन्धित एक जातक की कुण्डली पर ध्यान डालें। यह जातक एक धनी व्यक्ति है तथा सोने चान्दी जवाहरात का कार्य करता है। इनकी कुण्डली सं 30 को देखें।

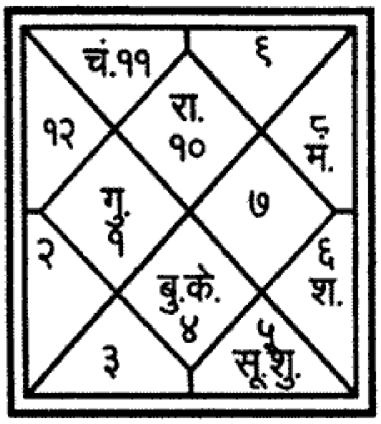

कुण्डली नं ३०

कुण्डली नं ३० के जातक का जन्म अगस्त 1952 को हुआ। जातक सोने चान्दी, जवाहरात का व्यापारी है। यहां पर चन्द्रमा धन भाव में स्थित है। अपनी राशि का सूर्य चन्द्रमा तथा धन भाव को देख रहा है तथा इस सूर्य के साथ शुक्र भी है। यहां पर कई ग्रहों के प्रभाव से जातक इस कार्य को कर रहा है।

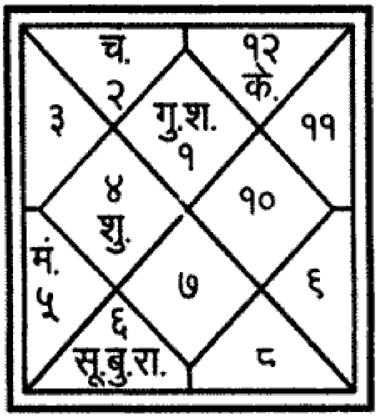

कुण्डली नं ३१

कुण्डली नं 31 के जातक का जन्म 21–9–1940 को हुआ। यह जातक धनी व्यक्ति है। इस जातक ने कई व्यापार करे और आज भी कई व्यापार कर रहा है। जातक ने अगर बत्ती का व्यापार करा तथा काफी धन कमाया। जातक आज भी सुगन्धित वस्तुओं से सम्बन्धित कार्य करता है जैस कि इत्र, परफ्यूम, खुशबू वाले तेल आदि। इसके अतिरिक्त जातक भूमि जायदाद का भी कार्य करता है। यहां पाठक गणों को अपने अनुभव मे यह भी बताते हैं कि चन्द्रमा के कारण धन स्थिर नहीं रहता।

धन भाव तथा मंगल

कृषि को विक्रयीभोगी प्रवास्यरूणादद्व्यवान।
धातुवादी मनेर्नाशी द्यूतकरः भौमेअर्थे।।

धन स्थान में मंगल हो तो मनुष्य खेती करने वाला होता है, क्रय विक्रय करने वाला, परदेश में रहने वाला, लाल रंग के द्रव्य से युक्त, धातु, जुआ आदि से धन कमाने वाला होता है।

''द्वव्ये भौमेऽथवा दष्टे अर्थहानिः प्रजायते''

धन स्थान में मंगल की स्थिति या द्रष्टि धन नाश भी करती है।

धन भाव में मंगल का प्रभाव अच्छा नहीं माना जाता है। हमारे अनुभव में धन भाव में यदि अकेला मंगल हो तो यह जातक आलसी प्रकृति का तथा काम से जी चुराने वाला होता है। फल दीपिकाकार के अनुसार धन स्थान का मंगल धनहीन तथा कुत्सित व्यक्तियों की नौकरी करता है।

''वचसि विमुखो र्निविद्यार्थः कुजे कुजनाश्रितः''

यह बात तो सही है कि धन भाव में मंगल होने पर धातु सम्बन्धित कार्य या जुआ लॉटरी सट्टा आदि में मनुष्य को अवश्य लाता है हमने कई जातकों को यह शौक अवश्य करते देखा है। जहां तक प्रश्न है कृषि से लाभ इसके लिए हम कह सकते हैं कि जातक भूमि से सम्बन्धित कोई ने कोई कार्य करके धन लाभ अवश्य करता है। परदेश वास के विषय में यह तो निश्चित है कि जातक अपने जन्म स्थान से दूर ही धनोपार्जन करता है। मंगल के क्रूर प्रभाव के कारण धन हानि चोरी द्वारा, आग द्वारा, मुकदमों द्वारा होती है। मंगल यदि मेष सिंह या धनु राशि का हो तो जातक शीघ्र धनी बनने के चक्कर में जुआ, सट्टा आदि में पड़ जाता है। मकर राशि का मंगल धनी बनाता हे।

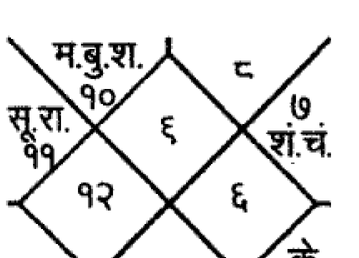

कुण्डली नं ३२

कुण्डली नं 32 एक धनी जमींदार की है। आप का जन्म मार्च 1896 में हुआ था। आप एक धनी जमींदार थे तथा खेती से बहुत आय थी। आप पर खून का मुकदमा भी चला था। बाद मे आप इस मुकदमें में निरपराधी सिद्ध हुए थे। यहां पर उच्च का मंगल धन स्थान पर है। जिसके कारण आप धनी थे। मंगल के कारणवश आपको खेती से धन लाभ होता था तथा मुकदमे में धन नाश भी हुआ।

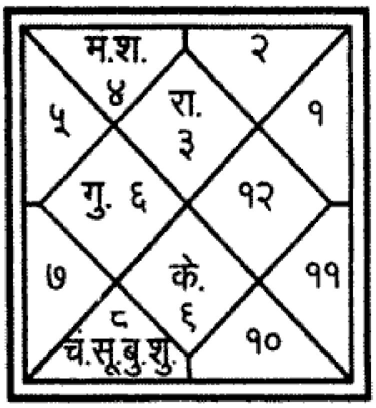

कुण्डली नं ३३

कुण्डली नं 33 के जातक का जन्म दिसम्बर 1945 को हुआ। जातक साधारण नौकरी करता है। जातक पर एक मुकदमा भी चल रहा है जिसके कारण वश धन नाश हो रहा है। इस कुण्डली में धन भाव में कर्क का मंगल है। जिस कारण वश जातक साधारण स्तर का है। जातक को जुए का भी शौक है तथा कई बार वह हार जाता है। जिसके कारण वह झगड़ा कर बैठता है। जातक का धन नाश जुए तथा मुकदमों पर होता रहता है। जातक नौकरी के साथ–साथ प्लाट बेचने का कार्य भी करता है।

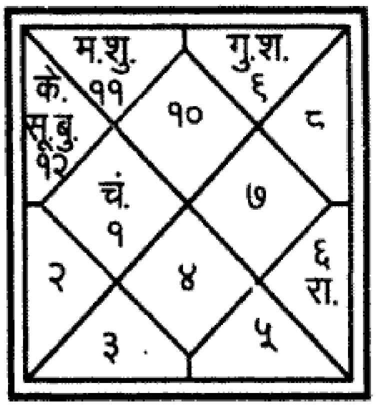

कुण्डली नं ३४

कुण्डली नं 34 के जातक का जन्म मार्च 1960 में हुआ। जातक को लॉटरी का शौक लगा तथा काफी नुकसान उठाया। जातक की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। जातक ने बिजली के सामान का कार्य करा पर उसमें नुकसान हुआ। जातक वर्तमान में जमीन की दलाली कर रहा है। यह सब मंगल के धन स्थान में होने के कारण ही यह जातक कर रहा है। जातक मंगल की महादशा में चल रहा है।

धन भाव तथा बुध

स्वे कोविदे जन्मनिकोविदः स शास्त्रश्रुतीनां तनुभूसमृद्धिः।
संकल्पसिद्धया सहितोऽर्थशाली गुणान्वितः सदगुणवानरः।।

धन भाव में बुध वेद शास्त्रों तथा विद्यापूर्ण होता है। संकल्प सिद्धि से युक्त धनी होता है। 15 वें वर्ष में बहुत विद्या व लाभ पाता है।

**वाणिज्ये ऽतिरूचिर्विशालनयनः सम्पूर्णगात्रो
धन धान्याढयो विदितो जनेषु सकलैर्भोगैर्विलासैयुर्तः।
सौख्यं स्यादतुंलं धनस्य विधिंनां युक्तश्चिरायुभवेद्यस्य
प्राणभृतो जनौ परिजने राज्येन संवीक्षिते।।**

धन भाव यदि बुध से द्रष्ट हो तो व्यापार में अति रूचि रखने वाला होता है। वह मनुष्य धन धान्य युक्त, प्रसिद्ध, सम्पूर्ण भोग विलास से युक्त होता है। धन का बहुत सुख मिलता है तथा भाग्यशाली होता है।

द्वितीय भाव में बुध के होने पर व्यक्ति अपनी बुद्धि एवं चतुरता से धन कमाता है। धन भाव का बुध सभी विद्धानों ने अच्छा कहा है। धन स्थान में बुध होने पर यदि जातक का सारा धन नष्ट भी जाए तो पुनः धन वापस आ जाता है। 15 वें वर्ष में धन लाभ एवं ज्ञान लाभ के विषय में भृगु सूत्र में भी कहा गया है।

''पंचदशवर्षे बहु विद्यावान् धनवान लाभप्रदः''

हमने कई जातक से इस बुध को धन भाव में होने पर पूछा तो ज्ञात हुआ कि इनको अपने विद्यार्थी जीवन में इस अवस्था पर अच्छे अंक प्राप्त हुए थे एक जातक ने बताया कि इन्हें इस आयु पर साइंस टेलेन्ट की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाया तथा वजीफा मिला था। यह बात तो निश्चित है कि धन स्थान का बुध अपनी बुद्धि द्वारा धन दिलवाता है चाहे वह व्यक्ति व्यापार करे या दलाली का कार्य करे या शिक्षा से धन अर्जित करे या कविता पाठ से या भाषण देकर उस व्यक्ति को बुद्धि का प्रयोग तो करना ही पड़ता है।

**धनभावे चंदपुत्रे धन धान्यादि पूरितः।
शुभकर्मा सुखी नित्यं राज्य पूज्यश्च जायते।।**

(काशीनाथ)

काशिनाथ के मतानुसार भी जातक धनधान्य से युक्त, शुभकर्म करने वाला राजमान्य तथा सुखी होता है।

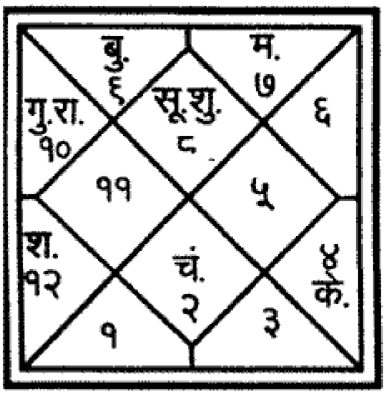

कुण्डली नं ३५

कुण्डली सं 35 विख्यात स्व. श्री सी. आर. राजागोपालाचारी की है। आप भारत के गवर्नर जनरल रह चुके हैं। यहां पर बुध धन भाव में स्थित है। यह बुद्धि एवं धन का सर्वोत्तम उदाहरण है।

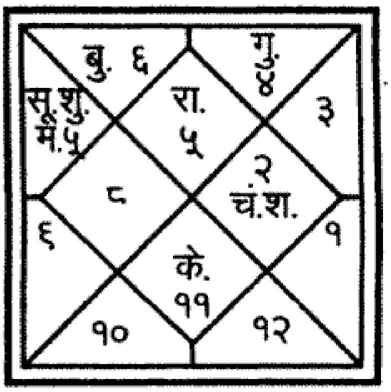

कुण्डली नं ३६

कुण्डली नं 36 के जातक का जन्म 27–10–1942 को हुआ। जातक एक अप्रवासी भारतीय है। जातक आस्ट्रेलिया में व्यापार कर रहे हैं। यहां पर उच्च राशि का बुध धन भाव में स्थित है। यह जातक धनी के साथ साथ उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति है।

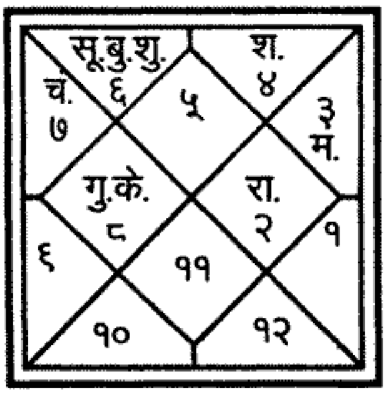

कुण्डली नं ३७

कुण्डली नं 37 के जातक का जन्म सितम्बर 1947 को हुआ। यहां पर धन भाव में उच्च का बुध है। यह जातक विदेश में कई वर्ष रहा तथा बहुत धन एकत्रित करा। यह व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त भी है। तथा धनी भी है। वर्तमान में व्यापार कर रहा है। अतः यह भी इस योग का उत्तम उदाहरण है।

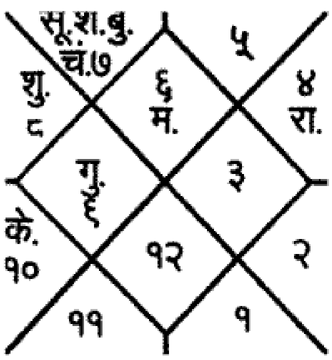

कुण्डली नं ३८

कुण्डली नं 38 भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी जी की है। यहां पर धन स्थान में बुध है। उत्तम विद्या, उत्तम वाणी के धनी श्री तिवारी जी इसी बुध के कारण भाषण द्वारा सब का मन मोह लेते हैं। आपको धन की कोई कमी नहीं है। अतः यह भी एक उत्तम उदाहरण है।

धन भाव तथा गुरू

पोष्यालयस्थे पविपाणिपूजिते तदेष्टभाषी वसुशेमुषीयुत।
सांवत्सरे पोडशसम्मिते बहु प्रावल्यवान धान्य धनैधयान्वितः।।

स्वोच्चे स्वभेऽर्थी सखलेऽनृतप्रियः स्याहुर्वचो वञ्चनतस्करो भवः।
विद्यान्तरयोऽधरराशिसंस्थिते तस्मिन्न सात्पुष्कर चारिणा युते।।

धन भाव में गुरू हो तो धनी, बुद्धिमान तथा अभीष्ट वचन बोलने वाला होता है। 16वें वर्ष में धन धान्य की प्राप्ति होती है। यह गुरू यदि उच्च राशिस्थ या स्वराशिस्थ हो तो बहुत धनी होता है। परन्तु शत्रु राशि या पाप युक्त हो तो दुष्ट वचन बोलने वाला तथा विद्याध्यन में बाधा पड़ती है तथा धन नाश भी होता है।

गुरू को धन का कारक भी माना जाता है तथा कारक ग्रह के उस भाव में बैठने पर भाव फल का नाश माना जाता है अतः धन की द्रष्टि से धन भाव का गुरू उत्तम नहीं माना गया है। हमारे मत से गुरू की स्थिति धन भाव में विशेष शुभ नहीं है। यह अलग बात है कि ऐसा जातक दरिद्र नहीं होता परन्तु बहुत धनी भी नहीं होता। गुरू की स्थिति से अधिक शुभ इसकी धन भाव में द्रष्टि होती है। यह द्रष्टि अति धन देने वाली होती है। हमने अपने अनुभव में कई जातकों को कुण्डली में इस द्रष्टि के शुभ परिणाम देखे हैं।

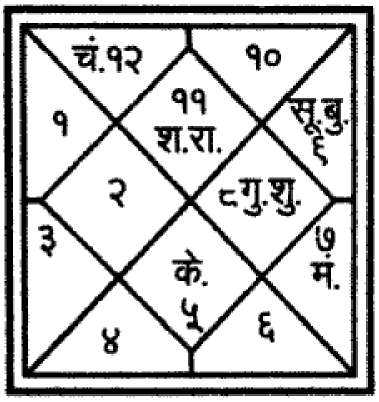

कुण्डली नं ३९

कुण्डली नं 39 पाकिस्तान के कायदे आजम स्व. श्री जिन्ना की है। इस कुण्डली में दशम भाव में गुरू स्थित है तथा इसकी पंचम पूर्ण द्रष्टि धन भाव में पड़ रही है। श्री जिन्ना बहुत धनी व्यक्ति थे। वैसे कुण्डली में अनेकों धन योग भी उपस्थित हैं परन्तु यहां पर मात्र गुरू की द्रष्टि के विषय में ही कहा गया है धन भाव को देखने वाले गुरू की दशा अन्तरदशा में धन प्राप्ति होती है।

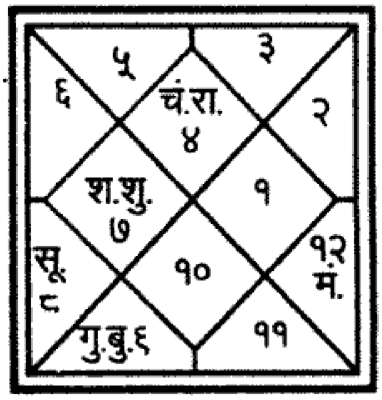

कुण्डली नं ४०

कुण्डली नं 40 प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री राज कपूर की है। आप एक धनी व्यक्ति थे। आपकी कुण्डली में गुरू की द्रष्टि षष्ठ भाव में स्थित होकर (नवम द्रष्टि) धन भाव में पूर्ण द्रष्टि पड़ रही है। इस गुरू की अन्तरदशा में इनको सदा ही धन की प्राप्ति हुई।

धन भाव में गुरू यदि नीच व शत्रु या पाप युक्त होने पर धन की कमी तथा विद्या में भी बाधा होती है। धन भावस्थ गुरू के होने पर पिता का सुख भी कम प्राप्त होता है। यहां पर एक बात विशेष कही जा सकती है कि धन भाव का गुरू मनुष्य को बोलने से धन प्राप्त करवाता है जैसे कि काव्य रचना करने वाले, अध्यापक, देवालय या धर्म संस्था में कार्य करने वाले या कानूनी कार्य करने वाले व्यक्ति भी हो सकते हैं।

''वाग्मी भोजनसाखांश्च सुमुखो वित्ते धनीकोविदः''

फलदीपिका्कार के अनुसार भी धन भाव में गुरू व्यक्ति को बोलने में कुशल बनाता है। हमने कई प्रोफेसर एवं अध्यापको की कुण्डली में धन भाव में गुरू को पाया है। परन्तु सभी की कुण्डलियों में यह गुरू या तो उच्च राशि का है या फिर स्वराशी का है। इस प्रकार के गुरू की धन भाव में द्रष्टि पड़ने पर भी अध्यापन क्षेत्र में कार्यरत कई जातकों को देखा है।

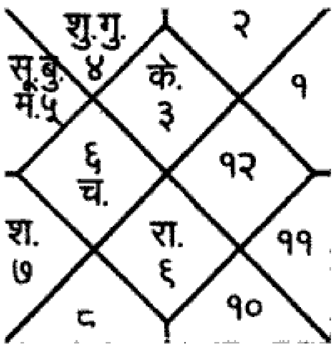

कुण्डली नं ४१

कुण्डली नं 41 के जातक का जन्म अगस्त माह 1955 को हुआ। जातक के धन भाव में उच्च राशि का गुरू स्थित है। यह जातक एक कॉलेज में प्रोफेसर कार्यरत है। इस जातक ने आरम्भ में कई वर्षों तक संघर्ष करा तथा नौकरी बहुत देरी से लगी। जातक साधारण धनी है।

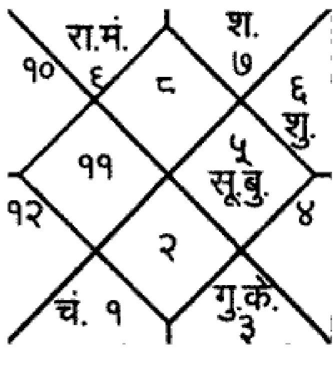

कुण्डली नं ४२/४३

कुण्डली नं 42/43 का जातक एक स्कूल का अध्यापक है। यहां पर गुरू की द्रष्टि धन भाव में पड़ रही है। गुरू इस कुण्डली में धनेश भी है। यह जातक साधारण धनी है इस जातक को गुरू की दशा अन्तरदशा में धन की प्राप्ति होती रही है।

कई ग्रन्थों में धन स्थान के गुरू के विषय में कहा गया है कि यह गुरू विचित्र धन वाला होता है। ज्योतिष रत्नाकार के अनुसार भी यही फल कहा गया है।

द्वितीय गोभार्गव एवधत्ते धनं विचित्र सुजनानुरक्तम्।
सुवर्णमुक्तामणिवस्त्रलाभं विमुक्त रोगं हस्तपापचेष्टम।।

अर्थात द्वितीय भाव में स्थित गुरू व्यक्ति को विचत्र धन वाला तथा स्वर्ण मोती मणि वस्त्रादि को प्राप्त करवाने वाला होता है। इससे मिलती जुलती बात मान सागरी से भी पता चलता है। इनके अनुसार ऐसा व्यक्ति मोतियों का व्यापारी भी होता है और धन कमाता है।

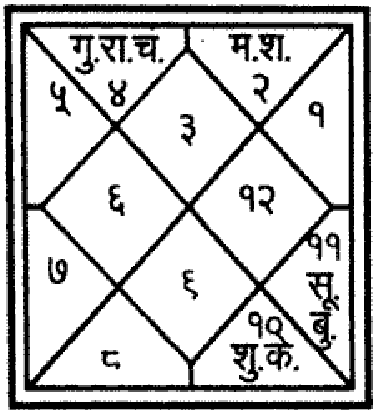

कुण्डली नं ४४

कुण्डली नं 44 का जातक एक व्यापारी है। इस जातक का जन्म 10 मार्च 1944 को हुआ था। यह जातक धनी तो है परन्तु इसके धन कमाने के तरीके बड़े ही विचित्र प्रकार के होते हैं। यह जातक कई बार अपना व्यवसाय भी बदल चुका है।

यह कभी बहुत धनी हो जाता है तो कभी यह साधारण अवस्था में भी आ जाता है। यहां पर धन भाव में उच्च का गुरू है। इस जातक ने आरम्भ में अध्यापन कार्य भी करा था परन्तु इसके पश्चात व्यापार आरम्भ करा। यह व्यक्ति बोलने में बहुत ही चतुर है। अतः धन स्थान में गुरू की स्थिति अति शुभ भी नहीं कही जा सकती। यदि गुरू धन भाव में हो तथा बुध द्वारा द्रष्ट हो तो वह व्यक्ति धनी नहीं होता।

धन भाव तथा शुक्र

धिष्ण्येऽर्थे ऽर्थकुटुम्बवान्विनयवान्नेत्रे विलासार्थवा
नन्येषामुपकारकृत्सकरूणः स्वास्यः सुभोजी भवेत।
अर्थे शुक्रे वीक्षिते वा धन वाश्च बहुश्रुतः
मुखै च लछिता वाणी सभायां पड़ता तथा।

धन स्थान में शुक्र धनी कुटुम्बवान तथा विनयवान बनाता है। ऐसा व्यक्ति उपकार करने वाला, सुन्दर मुख व सुन्दर भोजन करने वाला होता है। धन भाव में शुक्र की द्रष्टि या युक्ति मनुष्य को धनी तथा बहुत शास्त्रों को जानने वाला बनाता है। यह व्यक्ति सभाओं में भाषण देने में चतुर होता है।

धन भाव में शुक्र की स्थिति सभी ग्रन्थकारों ने उत्तम मानी है। यह बात भी सत्य है कि धन भाव में शुभ प्रभाव रहने पर मनुष्य धनी होता है। शुक्र के धन भाव में रहने पर वह मनुष्य विद्या या स्त्री द्वारा धन प्राप्त करता है। कई शास्त्रकारों की कुण्डली में धन भाव में शुक्र देखा गया है। ऐसा जातक स्त्री द्वारा या पराये धन से अपने को धनी बनाता है। पराशर के अनुसार ऐसे व्यक्ति को विविध रीतियों से धन प्राप्त होता है।

''भृगुनन्दनो वा नानाविधं धनचयं कुरूते धनस्थः''

धन भाव में शुक्र होने पर धन की कमी नहीं रहती है परन्तु धनार्जन कई स्रोतों से होता है। यदि मेष सिंह व धनु राशि में शुक्र हो तो जातक को नौकरी द्वारा मिलता है। ऐसा जातक लॉटरी, सट्टा रेस आदि से धन कमाने को लालायित रहता है तथा धन भी प्राप्त करता है। धनभाव में तुला रहने पर भी जातक इन कार्यों से धन कमाता है। कई सट्टा करने वाले तथा शेयर ब्रोकरों की कुण्डलियों में तुला राशि धन भाव में पायी गई है। श्री हर्षद मेहता की कुण्डली में भी धनभाव में तुला राशि देखी जा सकती है। इनकी कुण्डली हम इस पुस्तक में अन्यत्र स्थान में दे रहे हैं।

मिथुन तुला व कुम्भ राशि का शुक्र धन भाव में होने पर व्यापार से धन कमाने के योग होते हैं। इसी प्रकार वृष कन्या या मकर राशि का शुक्र होने पर नौकरी के योग बनते हैं। यह जातक सरकारी नौकरी भी करते हैं।

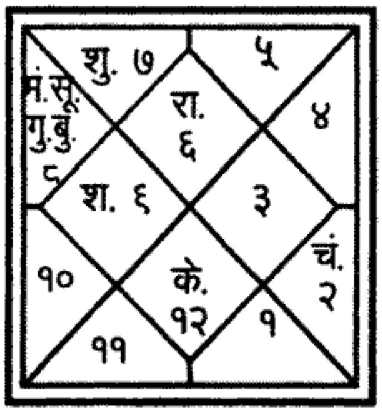

कुण्डली नं ४५

कुण्डली नं 45 के जातक का जन्म दिसम्बर 1959 में हुआ। यह जातक एक बहुत ही धनी व्यक्ति है। इस कुण्डली में धन भाव में तुला राशि का शुक्र है। यह जातक एक व्यापारी है। यह हीरे का कार्य करता है। इस जातक के आय के कई स्रोत भी है। इस जातक ने शेयर बाजार से भी धन कमाया था। आज भी इस जातक की रूचि शेयर बाजार में है

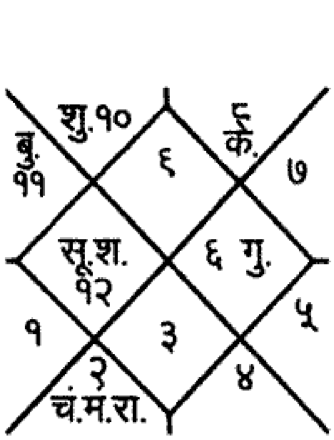

कुण्डली नं ४६

कुण्डली नं 46 का जातक रक्षा मंत्रालय में उच्च पदस्थ है। यहां पर धन भाव में मकर राशि का शुक्र स्थित है। जैसा कि पूर्व में भी कहा गया है कि मकर राशिस्थ शुक्र सरकारी नौकरी से धन लाभ करवाता है।

धन स्थान में शुक्र यदि पापग्रहों से युक्त या द्रष्ट हो तो धन नाश योग भी बनते हैं। हमने अपने अनुभव से कई इस योग में उत्पन्न जातकों को धन हानि होते पाया है। जैसा कि ज्योतिष रत्नाकर में भी कहा गया है।

"शत्रु क्रूरयुति द्रष्टे धनहानिः प्रजापते राजतश्चौरतो"

जहां तक प्रश्न है कि धन हानि राजा या चोर द्वारा हो सकती है। इस विषय में पाठक अनुभव करके ही निर्णय लें परन्तु यहां पर हम यह अवश्य कहना चाहेगें कि यदि मंगल द्वारा द्रष्ट या युक्त हो तो चोरी या आग द्वारा धन हानि हो सकती है। इसी प्रकार सूर्य की युति व द्रष्टि हो तो सरकार द्वारा धन हानि हो सकती है। राहु व शनि के प्रभाव से नीच प्रकृति के लोगों से धन हानि कही जा सकती हैं।

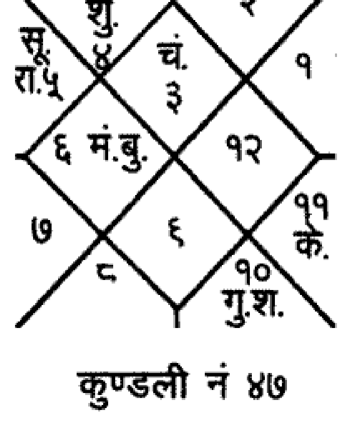

कुण्डली नं ४७

कुण्डली नं 47 का जातक का जन्म सितम्बर 1961 को हुआ। जातक एक निर्यात व्यापारी है। जातक को अभी कुछ समय पहले एक विदेशी युवक द्वारा धन हानि हुई थी। इस कुण्डली में शुक्र धन भाव में कर्क राशि में है तथा शनि द्वारा द्रष्ट है। शनि विदेशी लोगों का भी प्रतिनिधित्व करता है। इस लिए इस जातक का विदेशी व्यक्ति से धन हानि हुई

धन भाव तथा शनि

द्वितीय भाव स्थितः सूर्यसुतः प्रसूते धनैविहीनं बहुशत्रु भाजम।
नीच प्रसंगी नाना प्रकारैर्व्यसनैः समेतं कृशं विवर्ण गतिवंचित च।।

काष्टांगराल्लोहधनः कुकार्य्यद्धन संचयः।
नीच विद्यानुरक्तश्च दीनो वा मन्दगो धनै।।

द्वितीय भाव में स्थित शनि धन से विहीन करता है। इसके बहुत शत्रु होते हैं नीच जनो के संग रहने वाला तथा कई बुरे व्यसनों तथा बुरे वर्ण वाला गति रहित होता है। ऐसा मनुष्य लोहे से धनी होता है। काष्ठ अंगार और कुकार्यों से धनी होता है। ऐसा व्यक्ति नीच विद्या वाला तथा दुखी रहता है।

धन भाव में शनि की स्थिति शुभ नहीं मानी जाती है। उच्च या स्वराशि का शनि धन तो देता है परन्तु यह धन झूठ बोलकर, ठग कर या फिर गलत कार्यों से आता है। सट्टा शेयर आदि से भी धन की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति अपने जन्म स्थान से दूर किसी शहर में धन कमाता है। इस शनि के कारण जातक लकड़ी, कोयला, लोहा, चमड़ा, विदेश व्यापार, शेयर बाजार आदि से धन दिलवाता है। यदि शनि शत्रु या नीच राशि में हो तो धन हानि अवश्य होती है। यहां पर हमारा अनुभव है कि शनि के धन भाव में किसी भी राशि में होने पर कभी न कभी जातक को धन हानि अवश्य होती है। ढुण्ढीराज के अनुसार ऐसा व्यक्ति अपने जीवन के उत्तरार्ध में विदेश अवश्य जाता है तथा धन लाभ करता है।

"देशान्तरे वाहन राजमानो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ"

यह पाठकों को अपने अनुभव पर अवश्य देखना चाहिए कि इस प्रकार का शनि यदि धन भाव में हो तो क्या जातक विदेश जा रहा है या नहीं। यहां पर हमारा अनुभव यह है कि ऐसा जातक विदेश जाए या न जाए परन्तु अपने जन्म स्थान से दूर अवश्य धन कमाता है। कई जातकों की कुण्डली में शनि धन भाव में होने पर विदेश गमन भी देखा गया है।

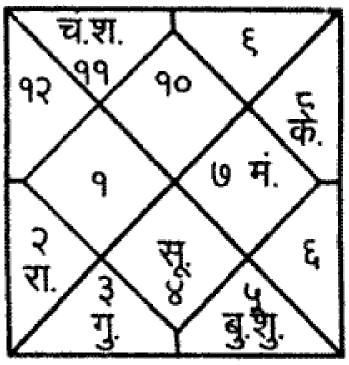

कुण्डली नं ४८

कुण्डली नं 48 के जातक का जन्म अगस्त 1965 में हुआ। यह जातक एक निर्यातक है। इस जातक को कई बार विदेश जाता पड़ता है। यह जातक अपने जन्म स्थान से दूर अपना व्यापार कर रहा है। इनके धन भाव में शनि अपनी राशि कुम्भ में स्थित है तथा शुभ ग्रहों द्वारा द्रष्ट है। जातक धनी है परन्तु कई बार जातक को धन हानि भी बड़ी मात्रा में उठानी पड़ी।

धन भाव में शनि यदि वृष कन्या या मकर राशि का हो तो उस व्यक्ति को अपने श्रम तथा उद्योग से उपजीविका निर्वाह करनी पड़ती है। तुला तथा कुम्भ राशि का शनि होने पर यह व्यवित्त स्वयं का कार्य करने वाला होता है। इन्हें ब्याज से धन लाभ भी होता है। यह व्यक्ति दूसरों का धन हड़प करने की प्रवृत्ति वाले होते हैं। मेष मिथुन सिंह तथा धनु राशि का शनि होने पर उस व्यक्ति का धन संचय नहीं हो पाता। घर परिवार तथा जमीन आदि की खरीददारी में धन व्यय होता है। यह लोग मीठा बोलकर अपना कार्य कर लेते हैं। शनि के होने के कारण व्यवसाय में लोहा कोयला, लकड़ी, खनिज पदार्थ, धातु, पत्थर, चूना आदि के कार्य से लाभ मिलता है। आज कल शेयर निर्यात आदि से भी धन प्राप्ति होती है।

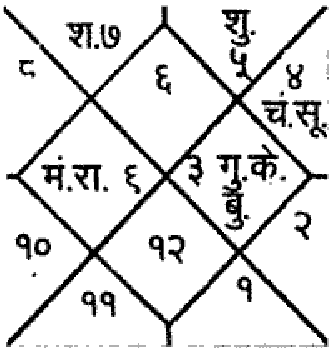

कुण्डली नं ४६
(हर्षद मेहता)

कुण्डली नं 49 प्रसिद्ध शेयर ब्रोकर श्री हर्षद मेहता की है। इस कुण्डली में धन भाव में तुला राशि का शनि है। यह कुण्ऱ्ली यहां पर दिये गये सभी योगों को पूर्णतः सत्य साबित करती है। वैस कुण्डली में कई अन्य धन योग भी हैं।

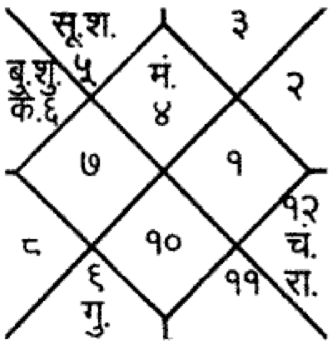

कुण्डली नं ५०

कुण्डली नं 50 के जातक का जन्म सितम्बर 1949 में हुआ। यह जातक लोहे का व्यापार करता है। इसको इस व्यापार में कई बार हानि भी उठानी पड़ी। यह जातक विदेश तो एक बार भी नहीं गया है परन्तु यह व्यापार अपने जन्म स्थान से बहुत दूर कर रहा है। यहां पर धन भाव में सूर्य व शनि की उपस्थिति धन नाश को बता रही है।

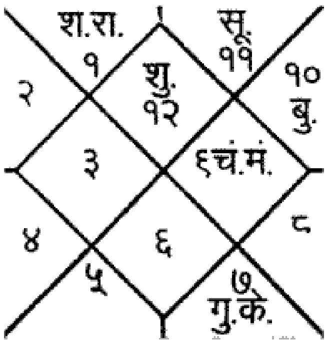

कुण्डली नं ५१

कुण्डली नं 51 के जातक का जन्म फरवरी 1911 को हुआ था। यह जातक लकड़ी का नक्काशीदार फर्नीचर का व्यापार करता है। इनकी कुण्डली में धन भाव में शनि व राहु की युति इस बात को दर्शा रही है। कुण्डली में कई धन योग हैं।

धनभाव तथा राहु केतु

सुतानां शोको वाच्यो निर्धनो मत्स्यमांसधनो नखर्चर्वादि।
विक्रमी जीविका चौर कृत्याच राहौ द्रव्यगते नरः।।

कुटुम्बयातो जनने कबन्धखेटो विधत्ते द्रविणक्षति नुः।
नीच प्रसंगी प्रभवेत्स दुष्टजनश्च सौभाग्यसुखच्युतः स्यात्।।

यदि राहु धन भाव में हो तो उस मनुष्य को पुत्र का शोक, धन की कमी, मछली मांस आदि बेचने वाला, नख तथा चर्म आदि व्यापारी तथा चौर कर्म से जीविका करता है। धन भाव में केतु धन की हानि करता है। ऐसा मनुष्य नीच प्रकृति के लोगों के संग रहता है तथा वह सुखी नहीं रहता।

राहु व केतु की धन भाव में स्थिति अधिकांश विद्वान शुभ नहीं मानते। परन्तु वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कुम्भ का राहु अशुभ फल भी नहीं देता। मानसागरी के अनुसार भी धन भाव में राहु मत्स्य, मांस के व्यापार से धनवान होता है तथा चोरी करने वाला नीच जनों के संग रहने वाला होता है।

राहौ धनस्थे कृत्तचौर वृत्तिः सदा ऽवलिप्तो बहुदुख भोगी।
मत्सयेन मांसेन सदाधनी च सदा वसेन नीच ग्रहे मनुष्यः।।

जहां तक प्रश्न है कि मछली आदि के व्यापार से धन प्राप्ति होना यह सदा आवश्यक नहीं है कि राहु केतु के धन भाव में होने पर ही ऐसा फल मिलेगा।

हमारा मानना है कि राहु यदि अकेले धन भाव में बैठा हो तो वह शनि के अनुसार धन प्राप्ति करवाता है।

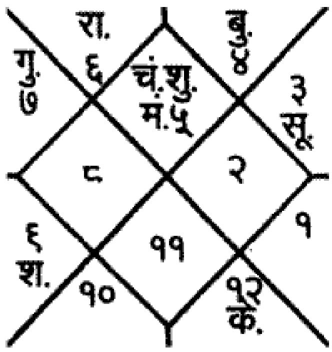

कुण्डली नं ५२

कुण्डली नं 52 के जातक का जन्म जुलाई 1959 में हुआ। इस जातक के धन भाव में कन्या का राहु है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या कुम्भ का राहु धन के विषय में अशुभ फल नहीं देते हैं। यह जातक एक व्यापारी है। तथा भूमि का व्यापार करता है। इसके अतिरिक्त यह जातक लोहे का भी व्यापार करता है। यहां पर राहु अकेला है। अतः शनि का कार्य कर रहा है।

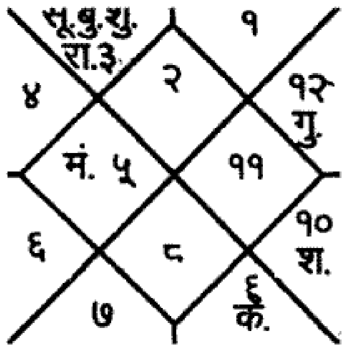

कुण्डली नं ५३

कुण्डली नं 53 के जातक का जन्म जुलाई 1963 में हुआ। यह जातक एक धनी परिवार में पैदा हुआ है तथा व्यापारी है। इस जातक ने छोटी सी आयु में अच्छा धन कमा लिया है। वर्तमान में जातक पुरानी कार–स्कूटर आदि का क्रय–विक्रय करता है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि राहु पुराने वस्त्र, मोटर कार आदि पर भी अधिकार रखता है यहां पर यह सत्य निकला है। परन्तु यहां पर एक विशेष ध यान देने की बात यह है कि राहु यहां पर अकेला नहीं है अतः कई ग्रहों के प्रभाव के कारण धन प्राप्ति कई स्रोतों से हो सकती है।

★★★★★★★

6

धन भाव तथा राशि फल

धनगत मेष राशि

भवेन्नरो भूरिकुटुम्बयुक्तः पूर्णः प्रभूतैर्विविधैर्हिरण्यैः।
तुयर्याधिनयुक्तो बहुकोविदज्ञोदैवाधिकः प्रीतिपरः स्वगेऽजे।।

धनभाव में मेष राशि हो तो कई प्रकार के धन से परिपूर्ण, कुटुम्ब युक्त, चतुष्पदों से युक्त, भाग्य शाली तथा कई विद्याओं का जानने वाला होता है।

धन भाव कुटुम्ब स्थान भी कहलाता है। यहाँ पर मेष राशि होने पर जातक बड़े कुटुम्ब वाला होता है। मेष राशि होने के कारण जानवरों से धन लाभ भी प्राप्त होता है या फिर बुद्धि द्वारा एवं कई विद्याओं का ज्ञान होने के कारण वश भी धन लाभ होते पाया गया है।

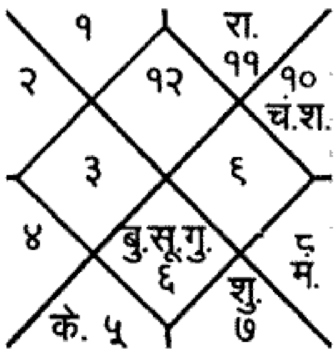

कुण्डली नं ५४

कुण्डली न. 54 के जातक का जन्म सितम्बर-1933 में हुआ। इस जातक के धन स्थान में मेष राशि है। यह जातक राजस्थान में रहता है तथा भेड़, बकरी का व्यापार करता है। यहाँ पर चतुष्पदों से लाभ वह भी भेड़ पालन से लाभ होना इस बात को पूर्ण कर रहा है। पाठक गणों को केवल किसी एक बात को पकड कर फला देश नहीं करना चाहिए। यह धन लाभ विद्या से भी हो सकता है।

धन गत वृष राशि

विन्देत वित्ते वृषभभिधाने कृषिप्रयत्नेन जनो हिरण्यम्।
स्वर्णान्नमुक्तामणितुर्य्यपादैर्नित्यं मनुष्यो विभवं तदानीम।।

धन भाव में वृष राशि हो तो मनुष्य कृषि द्वारा, सुवर्ण, अन्न, मोती, मणि, तथा चतुष्पदों से ऐश्वर्य प्राप्त करता है।

यहाँ पर कृषि का मतलब मात्र कृषि करने से नहीं है अपितु भूमि जनित पदार्थों से धन लाभ भी माना जा सकता है। इनके अतिरिक्त सिनेमा कोर्ट कचहरी आदि से भी धन लाभ होता है। हमने कई हाई कोर्ट के वकीलों तथा जजों की कुण्डली में धन भाव में वृष राशि देखी है।

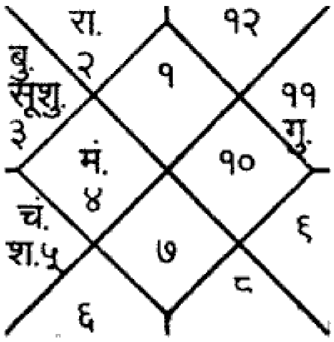

कुण्डली नं ५५

कुण्डली न. 55 एक बहुत ही मशहूर बैरिस्टर की है। आपका जन्म 11–7–1861 में हुआ था। आप की कुण्डली में धन भाव में वृष राशि है। अतः कचहरी आदि से धन प्राप्त होता था।

कुण्डली नं ५६

कुण्डली न. 56 प्रसिद्व फिल्म डायरेक्टर सत्यजीत रे की है। इस कुण्डली में धन भाव में वृष राशि है। वृष राशि का स्वामी शुक्र है इसलिए सिनेमा क्षेत्र से धन लाभ होता है।

धन गत मिथुन राशि

कामाभिधाने जनने निधाने नितम्बिनीजं प्रचूरं धनं नुः।
रौप्याश्वचामी करजं च सख्यं स्यात्साधुलोकैः करूणाधिकः सः।।

धन भाव में मिथुन राशि होने पर स्त्रीयों से धन लाभ होता है। चान्दी सोने आदि से भी धन लाभ होता है। अच्छी संगत रखने वाला तथा दयावान होता है।

इनके अतिरिक्त धन भाव में मिथुन राशि होने पर जातक अपनी बुद्धि तथा लेखन से भी धन प्राप्त करता है। कई लेखकों की कुण्डली में मिथुन राशि धन भाव में देखी गई है। सरकार से भी धन लाभ हो सकता है। ब्याज आदि से भी धन लाभ हो सकता है।

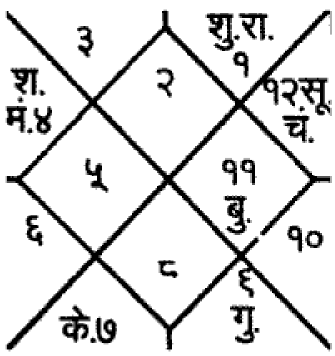

कुण्डली नं ५७

कुण्डली न.57 के जातक का जन्म मार्च 1948 में हुआ। यह जातक कालेज में प्रोफेसर है। यहाँ पर धन भाव में मिथुन राशि है अतः जातक बुद्धि द्वारा धन प्राप्त करता है।

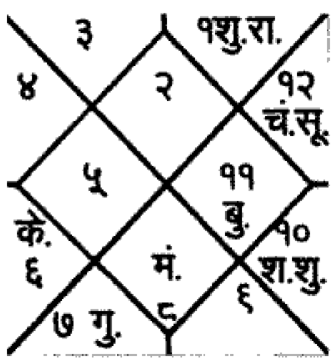

कुण्डली नं ५८

कुण्डली न.58 के जातक का जन्म 11 मार्च 1975 में हुआ था। आप संस्कृत के अद्वितीय विद्वान थे। आप पटना के कालेज में संस्कृत के प्रोफेसर थे।

धन गत कर्क राशि

पाथोभवं पादपजात मृक्थंन्यायार्जित कर्किणि कोशयाते।
अभीष्ट भोज्यं दयिताभवं सत्सुखं प्रमोदस्तनुसम्भवानाम्।।

धन भाव में कर्क राशि के रहने पर जल व वृक्ष से उत्पन्न पदार्थो से धन लाभ न्याय से उपार्जित धन की प्राप्ति होती है। स्त्री से उत्पन्न सुख तथा पुत्रों का सुख होता है।

कर्क राशि के धन भाव में रहने पर जातक का धन स्थिर नहीं रहता। इनको संगीत नृत्य आदि से भी धन लाभ होते देखा गया है। जहाँ तक प्रश्न है न्याय से उपार्जित धन का यह फल प्रायः सत्य ही देखा गया है। कई जजों की कुण्डली में भी कर्क राशि धन भाव में पाई गई है।

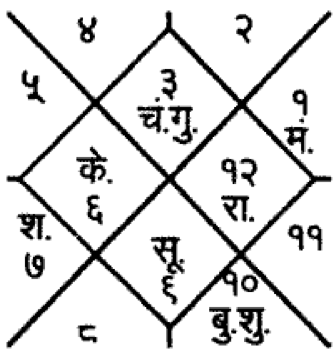

कुण्डली नं ५६

कुण्डली न.59 एक भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश की है। यहाँ धन भाव में कर्क राशि है। अतः यह भी एक उत्तम उदाहरण हो सकता है। वैसे इस कुण्डली में न्यायाधीश बनने के कई अन्य योग भी हैं।

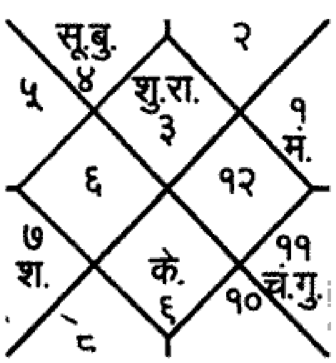

कुण्डली नं ६०
(भूतपूर्व केन्द्रीय संचार मंत्री श्री सुखराम)

कुण्डली न. 60 भूतपूर्व केन्द्रीय दूर संचार मन्त्री श्री सुखराम की है। इन की कुण्डली में धन भाव में कर्क राशि है। आप के हिमाचल प्रदेश में सेबों के कई बाग है। यह कुण्डली वृक्ष से धन प्राप्ति का उत्तम उदाहरण है। यहां पर धन भाव में चतुर्थेश बुध के होने तथा मंगल लाभेश की दृष्टि पड़ने पर भी भूमि जन्य लाभ कहा जा सकता है।

धनगत सिंह राशि

पंचानने पोष्यगतेः स्वकीय पराक्रमोपार्जित मृकथमस्य।
स्यातस्वापतेयं वनजं समस्तलोकोपकार प्रवणः सदैव।।

सिंह राशि यदि धन में हो तो वन से अपने बाहुबल से धन लाभ करता है। ऐसा मनुष्य परोपकारी भी होता है।

हमारे विचार से ऐसे व्यक्ति समाजिक कार्य में दक्ष होते हैं। यह लोग अपने पराक्रम एवं बाहुबल द्वारा धन लाभ करते हैं। सिनेमा, नृत्य, संगीत आदि से भी धन लाभ होता देख गया है। आज़ कल फाईनेंस कम्पनी या बैंक आदि की नौकरी या फिर ब्याज एवं लीजिंग कम्पनी आदि से भी धन लाभ होता है।

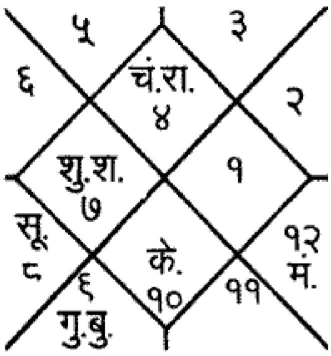

कुण्डली नं ६१
(फिल्म अभिनेता
स्व. श्री राजकपूर)

कुण्डली न.61 प्रसिद्व फिल्म अभिनेता व निर्माता निर्देशक श्री राज कपूर की है। यहाँ पर सिंह राशि है अतः जातक ने धन अपने बाहुबल द्वारा ही अर्जित करा। चतुर्थ में स्थित शुक्र व शनि की तुला राशि में युति सिनेमा से लाभ कहती है।

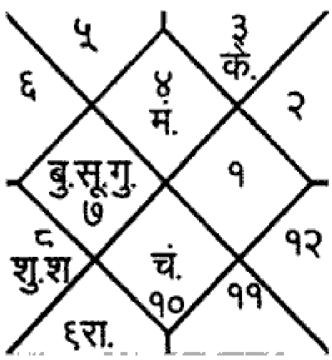

कुण्डली नं ६२

कुण्डली न. 62 का जन्म 23.10.1898 को हुआ यह जातक एक बैंक में प्रबन्ध निदेशक रहा। यहाँ पर धन भाव में सिंह राशि होने पर बैक से सम्बन्ध बना रहा है। चतुर्थ से सूर्य दशम भाव को देख रहे हैं अतः बैंक व उच्च पद दर्शा रहे हैं।

धनगत कन्या राशि

कन्यात्मके कोशगते सकाशा द्वसुन्धरेशाद्वसुलाभमेति।
बाजीभपूर्वैर्माणि मौक्तिकोत्थं वित्तं तथा रौप्य सुवर्णजातम्।।

धन भाव में यदि कन्या राशि हो तो राजा से धन लाभ होता है। हाथी, घोडों से धन लाभ सोने चान्दी मोती आदि से लाभ। हमारे अनुभव में कन्या राशि होने पर सरकारी नौकरी से धन लाभ भी देखा गया है अधिकतर ऐसे व्यक्ति लेखा विभाग प्रकाशन विभाग आदि में कार्य करते देखे गए है। व्यापार द्वारा भी धन लाभ होता है। कई कमीशन एजेंट आदि की कुण्डलियों में भी धन भाव में कन्या राशि पाई गई है। यदि कुण्डली में गुरू निर्बल हो तो प्रायः यह लोग अनिश्चितता में रहते हैं।

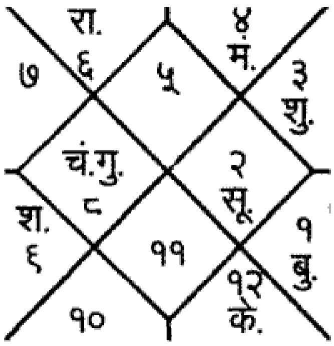

कुण्डली नं ६३

कुण्डली न. 63 के जातक का जन्म मई 1959 में हुआ। यह जातक एक कमीशन एजेंट है; यह जातक शेयरों की दलाली भी करता है। यहाँ पर धन भाव में कन्या राशि है। कन्या राशि का स्वामी बुध होता है अतः कमीशन व क्रय विक्रय द्वारा लाभ भी होता है।

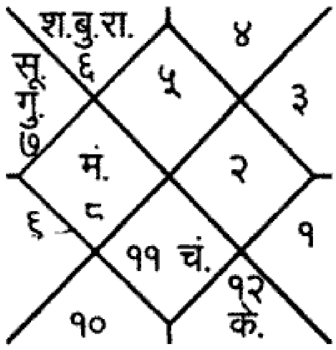

कुण्डली नं ६४

कुण्डली न.64 का जातक एक सरकारी उच्च पदस्थ अधिकारी है। यहाँ पर धन भाव में कन्या राशि है। यहाँ पर नीचभंग राज योग भी है। जिस कारण वश सरकारी नौकरी व उच्च पद की प्रप्ति होती है।

धनगत तुला राशि

तुलाधरे द्रव्यमुपागते धनं पूण्योदभवं संगरपूर्व सम्भवं।
नयार्जितं स्वं गुरू लब्धशेषकं भवेत्प्रधानः प्रतिमः कलेवरी।।

तुला राशि धन भाव में होने से न्याय द्वारा उपार्जित धन पुण्य से उत्पन्न धन गुरू के द्वारा प्राप्त धन होता है।

तुला राशि के धनगत होने पर जातक मेनेजमेन्ट का कार्य बडे अच्छे ढ़ग से करने वाले पाए गए हैं। हमने कई जातकों की कुण्डली में धनगत तुला राशि देखी है। शेयर बाजार में ब्रोकर या शेयर बाजार से सम्बन्ध रखने वाले कई जातकों की कुण्डली में भी तुला राशि को पाया गया है। वैसे हमने अनुभव में यह भी पाया है। कि यह जातक अपनी बुद्दि द्वारा धनर्जित करने है।

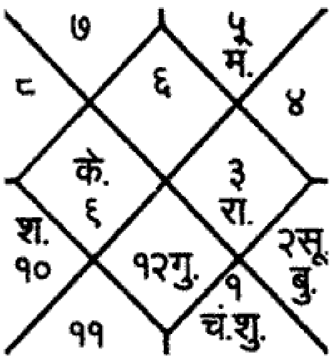

कुण्डली नं ६५

कुण्डली न. 65 का जातक एक मैनेजमेन्ट (एम.बी.ए.) की डिग्री प्राप्त व्यक्ति है। इनका जन्म मई 1963 को हुआ यह जातक एक उच्च पदस्थ नौकरी करते है। यह जातक फाईनेंस का भी कार्य करता है।

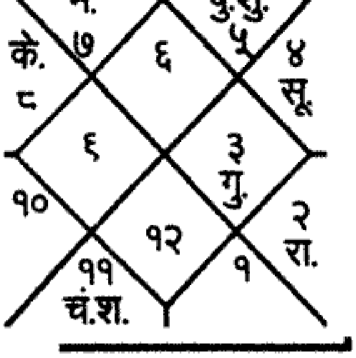

कुण्डली नं ६६

कुण्डली न.66 के जातक का जन्म अगस्त 1965 को हुआ। यह जातक शेयर ब्रोकर है। तथा स्टाक एक्सचेंज में निदेशक है। जातक मेनैजमेन्ट में निपुण है। गुरू दशम भाव में स्थित है। जिस कारणवश यह शेयर बाजार से भी जुड़ा हुआ है। दशम भाव में स्थित गुरू ज्योतिषी भी बनाता है

धनगत वृश्चिक राशि

भृंगे स्वगे मृन्मयमश्मजं धनं मुक्ताधरापण्यकसस्यकर्म्मजम्।
नितम्बिनीमारपरो विचित्रकवाक्यः सुभक्तक्सुरामृतान्धसाम्।।

धन भाव में वृश्चिक राशि होने पर मिट्टी तथा पत्थर से धन लाभ होता है। भूमि, दुकान, आदि से भी धन लाभ होता है।ऐसा जातक स्त्री आसक्त होता है।

धनभाव में वृश्चिक राशि होने पर जातक भूमि से सम्बन्धित कार्य करते हुए हमने कई कुण्डलियों में देखा है। कई जातक को प्रतिनिधी का कार्य भी करते पाया है। कई डाक्टरों की कुण्डलियों मेंवृश्चिक राशि धन भाव में देखी गई है। व्यापारियों में धन भाव में तुला राशि होती है।

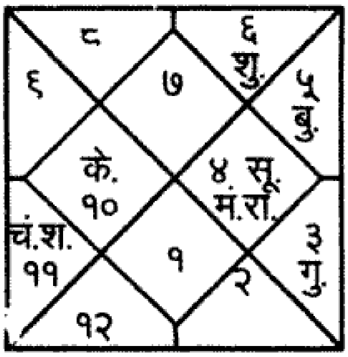

कुण्डली नं ६७

कुण्डली न.67 के जातक का जन्म सन 1906 को हुआ। आप एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त डाक्टर रही है। यहाँ पर धन भाव में वृश्चिक राशि है। यह कोई आवश्यक नहीं है। कि धन में वृश्चिक होने पर ही डाक्टर बन जाते है। परन्तु दशम भाव में मंगल का प्रभाव तथा शनि मंगल का सम्बन्ध डॉक्टर बनाता है।

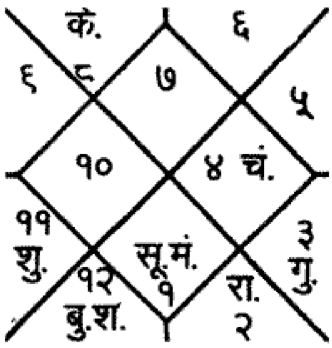

कुण्डली नं ६८

कुण्डली न. 68 के जातक का जन्म अप्रैल 1966 को हुआ। यह जातक जल विभाग में पानी के कुएं आदि खोदने का ठेकेदार है। अतः यहाँ पर भी भूमि से धन लाभ होता नजर आ रहा है।

धनगत धनु राशि

सारंगराशौ परिवार संश्रिते पश्वादिजं धर्म्म विधान सम्भवं।
तथा यशस्यं विविधंस्थिरं धनं रसोभ्दवं जन्म भृतामुदाहृतम्।।

धन भाव में धनु राशि होने पर धर्म से उत्पन्न धन, पशुओं से उत्पन्न, धन कीर्ति से उत्पन्न धन, रस पदार्थो से उत्पन्न धन लाभ होता है।

जिन जातकों के धन भाव में धनु राशि होती है। उनको न्याय एवं इमादारी से धन प्राप्त होता है। ऐसे जातक अपने साहस का उपयोग कर धनी बनते देखे गये है।

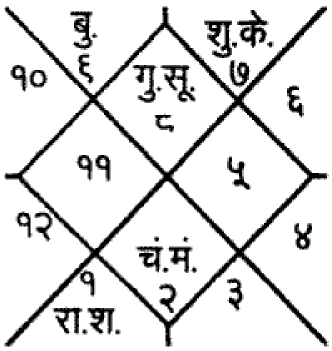

कुण्डली नं ६९

कुण्डली न.69 का जातक फौज में लेफ्टिनेन्ट जनरल रह चुका है। यहाँ पर धन भाव में धनु राशि है। इस जातक ने न्याय एवं अपनी साहस द्वारा धन प्राप्त करा है। यहां पर दशम भाव को मंगल की पूर्ण दृष्टि पड़ रही है।

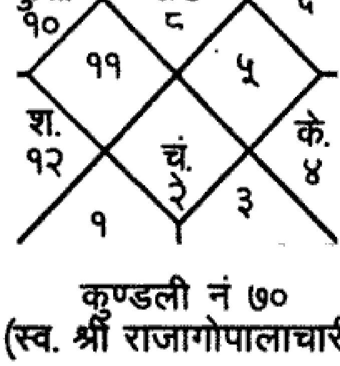

कुण्डली नं ७०
(स्व. श्री राजागोपालाचारी)

कुण्डली न.70 स्व श्री सी. आर. राजा गोपालाचारी जी की है। आप भारत के गवर्नर जनरल रह चुके हैं। आप के धन भाव में धनु राशि है। यह कुण्डली न्याय से उपार्जित धन प्राप्ति का उत्तम उदाहरण है।

धनगत मकर राशि

यदा निधाने हरिणानने नुर्जनौ प्रपंचै र्विविधैरूपायैः।
सेवाभवं भूपजनस्य वित्तं विदेश संगाच्च कृषि क्रियाभिः।।

धन भाव में मकर राशि हो। तो कई उपायों से, राजा से, विदेश वास से या कृषि कार्यो से धन लाभ होता है।

ऐसा जातक कई प्रकार की क्रियाओं द्वारा धन प्राप्त करता है। इन जातकों को विदेश से भी धन प्राप्ति होती है। यह जातक सरकार द्वारा या बड़े उद्योग घरानों में भी नौकरी करते पाए गए हैं। कई कृषि कार्य करने वाले भी इस के अन्तर्गत देखे गए हैं।

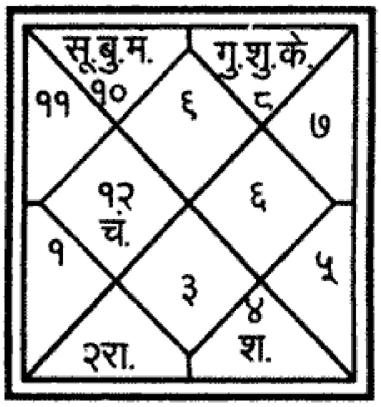

कुण्डली नं ७१

कुण्डली न. 71 के जातक का जन्म जनवरी 1947 में हुआ। यह जातक एक सरकारी कम्पनी में डायरेक्टर है। इन के धन भाव में धनु राशि है। पचंमेश मंगल धन भाव में उच्च राशि में स्थित है।

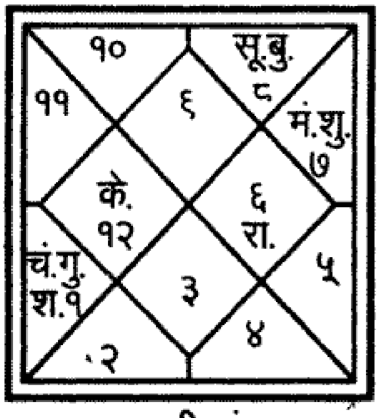

कुण्डली नं ७२

कुण्डली न.72 के जातक का जन्म दिसम्बर 1940 में हुआ। यह जातक कई प्रकार के कार्य कर चुका है। इनको खेती से अच्छी आमदनी होती रहती है। कभी यह चुनाव लड़ते हैं। तो कभी यह एक्सपोर्ट का कार्य भी करते हैं। इन्होंने नौकरी भी करी वह छोड दी थी। इनके धन स्थान में मकर राशि होने पर प्रपंच तथा अनेक उपायों से धन लाभ होता रहता है।

धनगत कुम्भ राशि

हृद्रोगभे धान्यनिकेतनस्थे महाजनोत्थं द्रविणम् प्रभूतम्।
परोपकारैः फलपुष्पजातं स्यात्साधुभोज्यं सलिलोत्थितं स्वम्।।

धन में कुम्भ राशि हो तो महाजनों से उत्पन्न धन की प्राप्ति, परोपकार से बहुत धन, फल, पुष्प, भक्षणीय द्रव्य एवं जल से उत्पन्न धन होता है।

व्यापारियों की कुण्डलियों में धन भाव में कुम्भ राशि बहुत देखी जा सकती है। कई होटल आदि चलाने वालों की कुण्डली में भी कुम्भ राशि पाई गई है। यहाँ पर धन प्राप्ति न्याय के रास्ते से कम तथा झूठ या बढा चढा कर बोलने या फिर दूसरे रास्तों से धन की प्राप्ति अधिक देखी गई है।

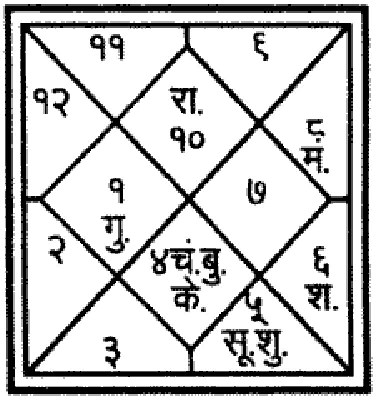

कुण्डली नं ७३

कुण्डली न. 73 के जातक का जन्म अगस्त 1952 में हुआ। यह जातक एक फल व्यापारी है। यह जातक धन कमाने के लिए किसी भी प्रकार का कार्य कर सकता है। इनके धन भाव में कुम्भ राशि है। कई बड़े उद्योग पति की कुण्डली मे धन भाव में कुम्भ राशि देखी जा सकती है।

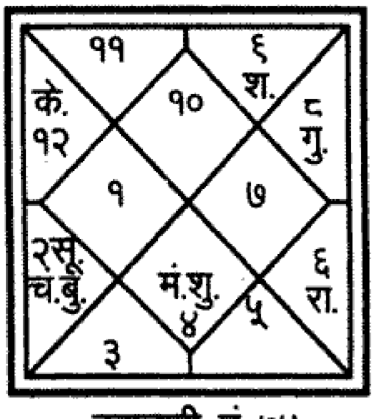

कुण्डली नं ७४
(उद्योगपति अनिल अम्बानी)

कुण्डली न.74 का जातक प्रसिद्ध उद्योगपति अनिल अम्बानी है। इनकी कुण्डली में धन भाव में कुम्भ राशि है। कुम्भ राशि मशीनरी द्वारा भी धन प्राप्त करवाती है। अतः फैक्टरी आदि से धन लाभ होता है।

धनगत मीन राशि

धनस्थाने पृथुरोमराशौताताम्बिकोपार्जितमर्थमेति।
प्रभूतविद्यानियमोपवासैवित्तं निधेः संगमसंम्भवं चः।।

धन भाव में मीन राशि है। तो माता पिता के उपार्जित धन की प्राप्ति होती है। विद्या तथा नियम उपवासों से एवं निधि के संगम से धन पाता है। ऐसे जातक अपनी पैतृक सम्पति उच्च शिक्षा या उच्चकार्य शैली द्वारा धन पाते है। इनको ऊँचे ऊँचे संबंधो द्वारा भी लाभ मिलता है। धार्मिक कार्य से भी धन लाभ, ईमानदारी से धन की प्राप्ति होती है इन जातकों को खजाना भी प्राप्त हो सकता है।

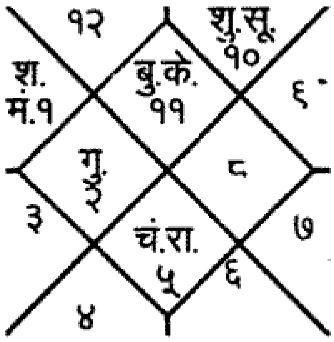

कुण्डली नं ७५

कुण्डली न. 75 के जातक का जन्म फरवरी 1942 में हुआ। यह जातक अपने संबंधों से लोगों के काम करवाता है। इस जातक की केन्द्र सरकार में उच्च पदों के व्यक्तियों से जान पहचान के कारण लोगों के सभी प्रकार के कार्य करवाता है। इस प्रकार कार्य करके धन लाभ पाता है।

★★★★★★★

7

लाभ भाव प्रकरण

भावाः समग्रा भवभेऽधिवीर्य्ये शुभा भवेयुर्भवभावनाथे।
षडीवर्य्ययुक्ते सुशुभं ध्रुवं किं तत्रैकखेटे रसवर्ग शुद्धे।।

कुण्डली में यदि सभी भावों की अपेक्षा लाभ भाव के अधिक बली होने पर सर्व भाव शुभ हो जाते है। लाम स्थान का स्वामी यदि षडबली हो या लाभ भाव में कोई शुभ ग्रह जो कि बली हो तथा वहाँ स्थित हो जाए तो उत्तम फल होता है।

लाभ के संबंध में शुभ या अशुभ फल जानने की प्रत्येक व्यक्ति को जिज्ञासा होती है।

"यच्छुभाशुभ जिज्ञासा नृणां स्वाभाविकी मता।"

यही बात पराशर मुनी ने उपरोक्त श्लोक में कही है। अतः लाभ भाव व लाभेश के बली होने पर या लाभ में उच्च ग्रह होने पर पूर्ण लाभ समझना चाहिए।

लाभेशे नीचभेऽस्ते वा त्रिके पाप समन्विते।
कृते भूरिप्रयत्नेऽपि नैव लाभः कदाचन।।

पराशर मुनी के अनुसार लाभेश यदि नीच, अस्त या फिर दुष्ट स्थानों में हो तो मनुष्य अति प्रयत्न करने पर भी लाभ अर्जित नहीं कर पाता है।

फल निर्देशः सौम्यदृष्टे विशेषतावाप्यः।
क्रूरैश्च सनुपघतो मिश्रै मिश्रस्तदापुसाम।।

सारावलीकार के अनुसार उपरोक्त श्लोक में भी यही कहा गया है। कि लाभ भाव में शुभ ग्रहों की द्रष्टि लाभ में शुभ फल देती है। तथा पाप ग्रहों की द्रष्टिअशुभ फल देती है। आगे भी कल्याण वर्मा यही कहते है।

सर्वग्रहयुत दृष्टे बहुप्रकारेण निर्दिशेद्वित्तम।
बलवान्यस्तत्र भवेदति रिक्तं सप्रयच्छतिच।।

यदि लाभ भाव को सभी ग्रह देख रहे हो तो धन लाभ कई स्तोत्रों से होगा। इन में से सबसे बली ग्रह का प्रभाव सर्वाधिक होगा।

लाभगारे शोभनाकाशवासः सद्वित्तं स्यात्तत्र पापाभिधानः।
वाच्यं पापोर्ज्जितं स्वापतेयं मिश्रैमिश्रं स्वापतेयं प्रदिष्टम्।।

लाभ भाव में शुभ ग्रह हो तो उस मनुष्य को शुभ कर्मो द्वारा लाभ होता है। यदि पाप ग्रह हो तो पाप कर्म द्वारा लाभ होता है।

यदि लग्नेश व लाभेश दोनों ग्रह मित्र हो तों अच्छे कर्मो द्वारा धन लाभ कहना चाहिए। इसी प्रकार लग्न से चतुर्थ भाव तक शुभ ग्रह हो तो प्रथमावस्था में लाभ कहना चाहिए। चतुर्थ से अष्टम भाव तक शुभ ग्रह हो तो मध्यमावस्था में लाभ कहना चाहिए। और यदि अष्टम से द्वादश सभी शुभ ग्रह हो तो वृद्वावस्था में लाभ होता है। यदि इन स्थानों में नीच कोई ग्रह या पाप ग्रह हो तो उस अवस्था में धन हानि भी समझनी चाहिए।

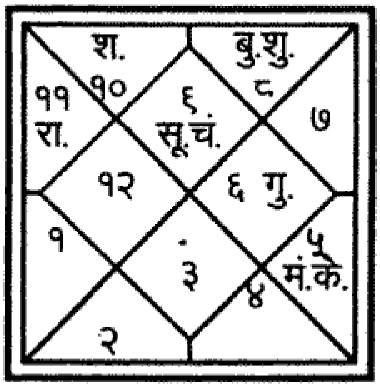

कुण्डली नं ७६

कुण्डली न. 76 पूर्व में भी दी जा चुकी है। यह कुण्डली श्री धीरूभाई अम्बानी रिलायंस ग्रुप के स्वामी की है। आप का जन्म दिसम्बर 1932 को हुआ। आप एक साधारण परिवार में जन्में तथा अभी कुछ वर्षो से सन् 80 के दशक से ही देश के प्रमुख उद्योगपतियों में आ गए। यहाँ पर देखें तो लाभ भाव में शुभ कर्त्तरी योग बना हुआ है। अर्थात यह भाव दोनों और से शुभ ग्रहों से घिरा हुआ है। लाभ भाव का ऐसा होना लाभ भाव को बली बना रहा है। चलित में लाभेश लाभ भाव में आ गया है। इस लाभ भाव को स्वराशि का शनि जो कि धनेश व तृतियेश है। देख रहा है।

अतः स्व राशि के ग्रहों द्वारा द्रष्ट होना भी लाभ में वृद्वि करता है। यहाँ पर सभी शुभ ग्रह तृतीयवास्था में स्थित है। यह भी स्पष्ट हो रहा है। कि जातक की वृद्वावास्था उसकी युवावस्था से अधिक सुखी होती है।

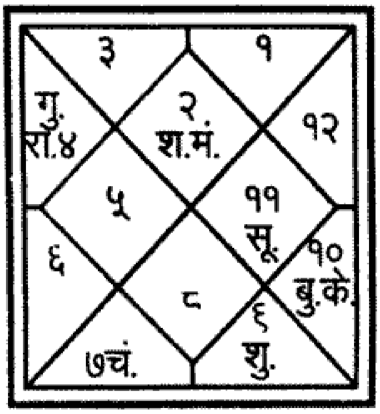

कुण्डली नं ७७
(बॉम्बे डाईंग के स्वामी
श्री नुसली वाडिया)

कुण्डली न.77 श्री नुसली वाडिया की है। आप का जन्म फरवरी 1944 में हुआ। आप एक महाधनी व्यक्ति हैं तथा बाम्बे डांइग समूह के स्वामी है। आप बचपन से ही धनी परिवार के थे आप की कुण्डली में लाभेश उच्च का होकर तृतीय स्थान में है। यह लाभेश लाभ भाव को देख रहा है। अतः लाभ भाव बली हो रहा है।

यादृग्वर्णः खेचरो लाभगेहेतादृग्वर्णप्राप्तिरूक्ता सुधीन्द्रै।
किं तद्वर्णै र्मानुषैमित्र वर्गैवित्तं सौख्यं जायते चैंतनानाम्।।

लाभ स्थान में जो ग्रह हो उस के वर्ग के पदार्थ से धन लाभ होता है। या फिर उस वर्ग के मनुष्य तथा मित्र वर्ग के मनुष्यों से धन लाभ होता है।

लाभ भाव तथा सूर्य

उपान्त्यभावस्तपनेन युक्तो निरीक्षितस्तत्र गणोऽस्य यद्वा।
प्राप्तिर्ध नानां बहुधा चतुष्पान्मही पतस्तस्कर वर्गतश्च।।

यदि लाभ भाव में सूर्य हो या लाभ भाव सूर्य से द्रष्ट हो तो चतुष्पद, राजवर्ग, चोर वर्ग से धन लाभ होता है।

लाभ भाव में सूर्य या किसी भी अन्य ग्रह की उपस्थिति लाभ की द्रष्टी से अच्छी मानी गई है। परन्तु यही सूर्य या मंगल, राहु आदि पुत्र के लिए कष्टकारक होते है। जीवनाथ ने भी इसी बात की पुष्टी करी है।

यदा लाभस्थानं गत वतिखौ यस्य सततं
धनानामाधिक्यं क्षितिपतिकृपातस्त नुभृतः।
प्रतापाग्नौ शश्वत पतति रिपुवृंद च परितः
स्वपुत्रात संतापों भवति बहुधा वाहन सुखम्।।

अर्थात जातक के जन्म समय में एकादश भाव का सूर्य होने पर पूर्ण धन लाभ होता है। इस सूर्य के प्रतापाग्नि द्वारा शत्रुओं का नाश होता है। वाहन का सुख प्राप्त होता है परन्तु अपने पुत्र से कष्ट होता है।

यह कष्ट कई प्रकार का हो सकता है। पुत्र पिता का कहना न माने या धन नष्ट करें या फिर पुत्र की सदा चिन्ता लगी रहे। इस प्रकार इस भाव में धन को छोड़ अन्य बातों के लिए भी पापी ग्रह चिन्ता के कारण बन सकते है। जैसे कि बड़े भाई या बहिन के लिए भी कष्ट कारक हो सकता है। यदि यह सूर्य पुरूष राशि में हो तो बड़ें भाई से झगड़ा आदि भी हो सकता है। धन आदि के लिए सभी विद्वानों का मत प्रायः शुभ ही है। हमारे विचार से सूर्य के होने पर उच्च पदस्थ व्यक्तियों से लाभ होता है। सरकार द्वारा भी धन लाभ होता है।

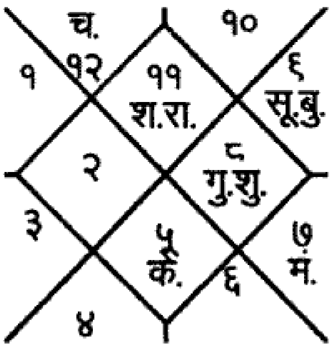

कुण्डली नं ७८

कुण्डली न. 78 पाकिस्तान के कायदे आजम श्री मुहम्मद अली जिन्नाह की है। यहाँ पर एकादश भाव में सूर्य कि उपस्थिति। इस बात को पूर्ण दर्शा रही है। कि आपका राज्य सत्ता लाभ होना है। नैपोलियन की कुण्डली में भी एकादश भाव में सूर्य मंगल के साथ है।

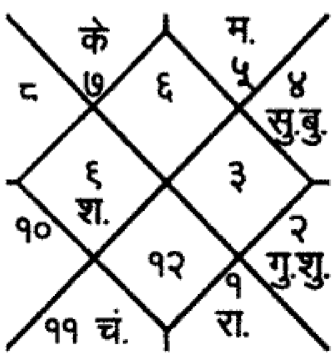

कुण्डली नं ७६

कुण्डली न.79 के जातक का जन्म जुलाई 1929 को हुआ। यह जातक एक बहुत ही धनी बैरिस्टर है। तथा सासंद भी रह चुका है। यहाँ पर एकादश भाव में सूर्य इनका राज्य से धन लाभ को दर्शा रहा है। कई उच्च राजनीतिज्ञों की कुण्डली में एकादश भाव में सूर्य देखा जा सकता है।

श्री अन्नादुराई की कुण्डली में एकादश भाव में सिंह राशि का सूर्य स्थित है। श्री मुरली मनोहर जोशी की कुण्डली में एकादश भाव में सूर्य है। आइये अब अन्य कुण्डली को देखें। यह श्री एच.डी.देवेगोड़ा जी की है।

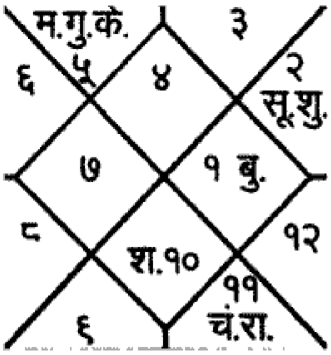

कुण्डली नं ८०

कुण्डली न.80 श्री एच.डी.देवेगौडा की है। यहाँ पर एकादश भाव में सूर्य शुक्र के साथ स्थित है। यहाँ पर राज्य से लाभ को यह पूर्ण दर्शा रहा है। इसी प्रकार श्री रामकृष्ण हेगड़े की कुण्डली में भी एकादश भाव का सूर्य सिंह राशि का होकर बैठा है।

लाभ भाव तथा चन्द्रमा

आयः समेतः शशिनेक्षितो वा तत्रेन्दवर्गः करिकामिनीतः।
जलाशयद्वित्त विवृद्धिरिन्दौ पूर्णे कृशें स्वस्य विनाशनं स्यात।।

लाभ स्थान यदि चन्द्रमा से द्रष्ट या युक्त हो या लाभ स्थान में चन्द्रमा का वर्ग हो तो हस्ती, स्त्रीयों तथा जलाशय से धन लाभ होता है। परन्तु क्षीण चन्द्रमा होने पर धन हानि भी होती है।

हस्ती का मतलब यहाँ पर श्रेष्ठ जनों से है। वह चाहे उच्च पदाधिकारी हो या मंत्री हों। प्रायः सभी विद्वानों ने चन्द्रमा की लाभ भाव में स्थिति उत्तम ही बताई है। आचार्य वराहमिहिर के अनुसार

''ख्यातों भावगुणान्वितो भगवते''

अथार्त एकादश भाव में चन्द्रमा होने पर मनुष्य बहुत प्रसिद्व होता है। तथा समस्त प्रकार का लाभ प्राप्त होता है। हमारे अनुभव से इस व्यक्ति को भूमि एवं जल से लाभ होता है। स्त्री द्वारा भी इनको लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति भूमि व्यापार द्वारा भी धन लाभ करते हैं। ऐसे व्यक्ति व्यापार द्वारा भी धन लाभ करते हैं। ऐसे व्यक्ति को धन जनता के सम्पर्क द्वारा भी हो सकता है।

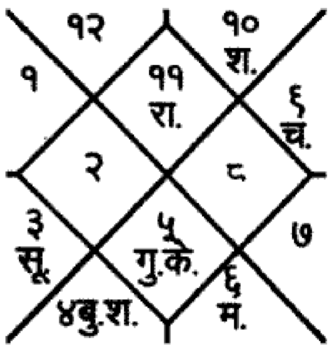

कुण्डली नं ८१

कुण्डली न. 81 का जातक एक मध्यम वर्गीय परिवार से संबंध रखता है। परन्तु इस जातक का विवाह एक भूतपर्व राजा की पुत्री से हुआ। इस कुण्डली में एकादश भाव में चन्द्रमा है अतः स्त्री द्वारा धन लाभ कहा जा सकता है। जैसा कि हमने अनुभव में पाया है कि कई जमीनदारो या बडे कृषकों की कुण्डली में लाभ भाव में चन्द्रमा पाया गया है। इसके लिए पाठक पूर्व में दी गई कुण्डली न.29, कुण्डली न.32, तथा कुण्डली न.54 का देखे इन सभी जातकों को कृषि द्वारा अच्छा लाभ मिलता है।

लाभ भाव तथा मंगल

द्रष्टे युते भूतनयेन लाभे तत्रार वर्गे किमु कष्टतोऽर्थः।
शस्त्रानलस्वर्णमणि प्रजातं कृष्युदभवं मंत्रिसहोत्थजं स्वम्।।

लाभ भाव में मंगल हो या मंगल द्वारा द्रष्ट हो तो कष्ट से धन लाभ अथवा शस्त्र अग्नि सुवर्ण तथा मणिजन्य एवं कृषिजन्य लाभ होता है। भाई या मंत्री द्वारा भी लाभ होता है।

मंगल यदि स्त्री राशि में स्थित हो, तो धन तो मिलता है। परन्तु कष्ट अधिक होता है। अधिकतर विद्वानों ने मंगल का फल उत्तम ही कहा है। धन लाभ मंगल ग्रह के अनुसार ही होता है। जैसे कि फौज या पुलिस की नौकरी, ठेकेदार या सिविल इन्जीनियर की नौकरी। यह जातक प्रायः धनी ही पाए गये है। यह लोग ऊँची सोसाईटी में घूमते नजर आएंगे। भाई द्वारा लाभ भी होता है। दोस्तों से लाभ कम हानि अधिक देखी गई है। इन जातकों को वाहन सुख अच्छा है। मेष, सिंह व धनु राशि में यदि मंगल हो तो जुए, सट्टे आदि से लाभ भी देखा गया है। पुंजराज के अनुसार

"भूमि सुतेऽग्निशस्त्र जनिता यात्रा धनैः साहसैः।
स्वर्णैर्वा मणि भूषणेषु नितरां द्रव्यागमंः संवदेत्।।

अर्थात मंगल के होने पर यात्रा, साहस, शस्त्र, सोने, जवाहरात के व्यापार से धन मिलता है।

यहाँपर हम पाठक गणों के समक्ष दो जातकों की कुण्डलियां दे रहे है। एक सेना में कर्नल रह चुके हैं। तथा दूसरे बिजली के समान को बेचने का व्यापार करते हैं।

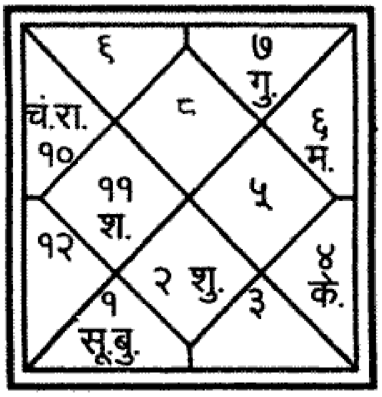

कुण्डली नं ८२

कुण्डली न.82 एक व्यापारी की है। यह जातक बिजली के सामान का व्यापार करता है। यहाँ पर मंगल जो कि आग व बिजली का कारक ग्रह है। वह एकादश भाव में स्थित है। जिस कारण वश अपने कारकत्व के अनुसार धन लाभ करवा रहा है। यहां मंगल लग्न का स्वामी भी है। लग्न का भी वृत्ति एवं वित्त में प्रभाव पड़ता है।

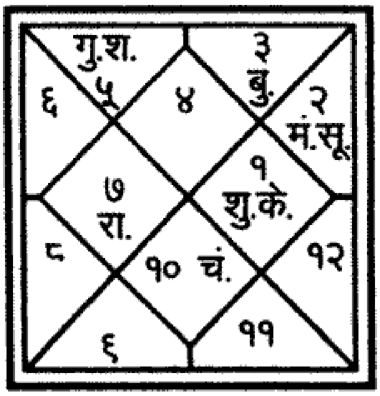

कुण्डली नं ८३

कुण्डली न.83 एक रक्षा विभाग के कर्नल की है। इस कुण्डली में दशम भाव का स्वामी होकर मंगल एकादश भाव में बैठा सेना की नौकरी दर्शा रहा है। सूर्य के साथ होने के कारण उच्च पद भी बता रहा है। अतः यह जातक साहस कार्य करके ही धन लाभ पा रहा है।

एक अन्य जातक की कुण्डली को देखें (कुण्डली न. 84) इस जातक का जन्म अक्टूबर 1969 को हुआ। इस कुण्डली (कुण्डली न. 84) का जातक एक बहुत ही बड़ी माचिस बनाने वाली कम्पनी के वितरण का व्यापार कर रहा है। इस कुण्डली में लाभ भाव में उच्च राशिगत मंगल है।

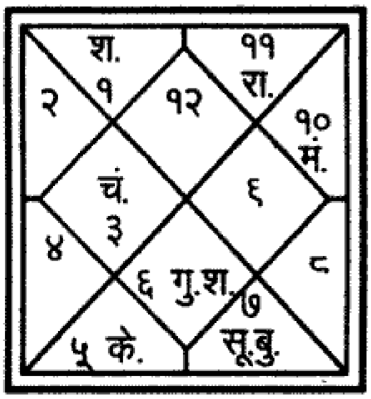

कुण्डली नं ८४

यहाँ पर मंगल कितने स्पष्ट रूप से इनको अग्नि द्वारा लाभ पहुचा रहा है। मंगल इस कुण्डली में धनेश एवं भाग्येश है। इस प्रकार धन लाभ इसके द्वारा होना और दृढ़ बनाता है।

लाभ भाव तथा बुध

भवे विदा युक्तविलोकिते तद्वर्गेऽत्र विद्यांग जबन्धुवर्गे।
स्वाप्तिः कलाकौशलसप्तिकाव्यैः कांस्यदिभिर्वा मतियोगतः स्यात्।।

अर्थात लाभ भाव में बुध के होने पर या द्रष्ट होने पर विद्या, बुद्वि, कला, कौशल, बन्धु, काव्य, घोड़ा, कांस्य या व्यापार द्वारा धन कमाता है।

भृगुसूत्र के अनुसार भी बुध का एकादश भाव से सम्बन्ध लेखक, शिल्प एवं व्यापार से होता है।

''.....बहुमंगल प्रदः शिल्पलेखन व्यापार योगे अनेक प्रकारेण धनवान..............................''

इन्हीं सूत्रों में बुध का मित्र राशि व स्व राशि में होने से अच्छे व शुभ कार्यो द्वारा धन लाभ होता है। परन्तु पाप राशि गत बुध के होने पर बुरे मार्गो से धन लाभ होता है। वृहतजातक के अनुसार तो जातक जन्म से ही धनी होता है। तथा चमत्कार चितांमणी जैसे ग्रन्थ तो यह तक कहते है। कि यदि बुध एकादश में नहीं है। तो धन की प्राप्ति भी नहीं होती पर इसमें हमें संदेह लगता है। बुध यदि एकादश स्थान में कर्क वृश्चिक या मीन राशि का होने पर जातक निज का व्यापार या सैल्फ एम्लायड रहता है। मिथुन, तुला या कुम्भ का बुध एकादश भाव में होने पर शिक्षा द्वारा लाभ देता है। वृष, कन्या, मकर का बुध होने पर सहित्य व कला से धन लाभ होता पाया गया है।

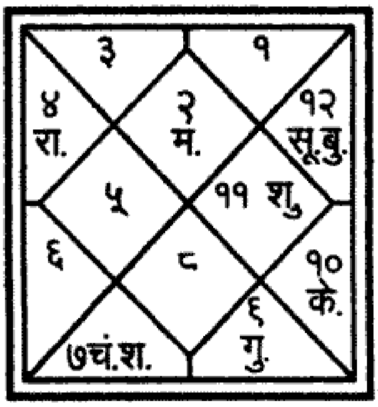

कुण्डली नं ८५

इस कुण्डली नं 85 के जातक का जन्म मार्च 1925 में हुआ। जातक के एकादश भाव में मीन राशि का बुध है। जिसके प्रभाव से जातक का स्वतन्त्र व्यवसाय तथा सैल्फ एम्प्लायड है। जातक एक फोटोग्राफर है। यहां पर दशम भाव में शुक्र यह व्यवसाय करवा रहा है।

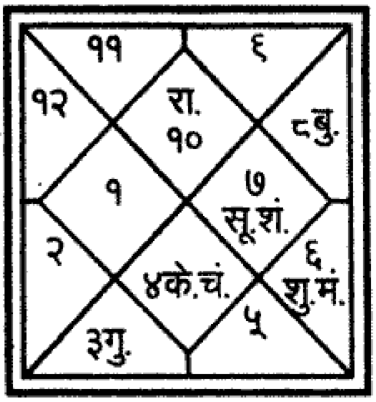

कुण्डली नं ८६

कुण्डली न. 86 के जातक का जन्म नवम्बर 1953 का है। यह जातक एक डाक्टर है। इसका स्वयं का क्लीनिक है। अतः बुध यहाँ पर वृश्चिक राशि का होकर निज का व्यवसाय बता रहा है। यह जातक डाक्टरी के अतिरिक्त अन्य व्यवसाय भी कभी कभी करता रहता है।

इस संदर्भ में हम पाठकों को यह भी बताना उचित समझते हैं कि प्रायः बुध सूर्य या शुक्र के साथ ही कुण्डली में देखने को मिलता है। बुध एवं शुक्र सूर्य के आस पास ही रहते हैं। हमें एकादश भाव में बुध की इन से युति का भी प्रभाव देखने को मिल सकता है।

लाभ भाव तथा गुरू

लब्धिस्थले लेख पुरोहितेन युक्तेक्षिते तत्र तदीयवर्गे।
गोदन्तिमगांगेयतुरंगयज्ञक्रियादि भिर्भूपतितोऽर्थ लाभः।।

लाभ स्थान में गुरू होने या द्रष्ट होने पर स्वर्ण, हाथी, घोड़ा, यज्ञ आदि क्रियाओं से धन लाभ मिलता है। तथा राजा द्वारा भूमि तथा ज्ञान से भी धन लाभ

प्रायः सभी ग्रन्थकारों ने गुरू की एकादश भाव में उपस्थिति धन लाभ के लिए उत्तम मानी है। परन्तु चमत्कार चितांमणी के अनुसार शुभ फल नहीं होता है। यहाँ पर हम पाठकों को यह भी बताना उचित समझते है। कि गुरू के एकादश में होने पर कोंट कचहरी के कार्य, बैंक, या पब्लिक सैक्टर में कार्य भी होते पाया गया है। यदि इस बृहस्पति पर बुध का प्रभाव हो तो ऐसे जातक को हमने फाइनेंस का व्यापार भी करते पाया है। तथा कई जातको को उच्च पदों में मात्र गुरू के होने पर पाया है।

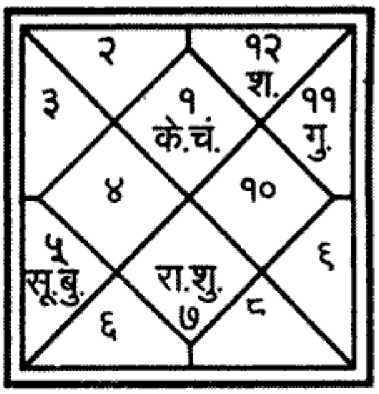

कुण्डली नं ८७

कुण्डली न. 87 के जातक का जन्म सन् 1938 में हुआ। इस जातक के एकादश में गुरू है। यह जातक चीफ इंजीनियर के पद से सेवानिवृत हुआ यहाँ पर भाग्येश दशमेश का राशि परिवर्त्तन योग भी बना हुआ है।

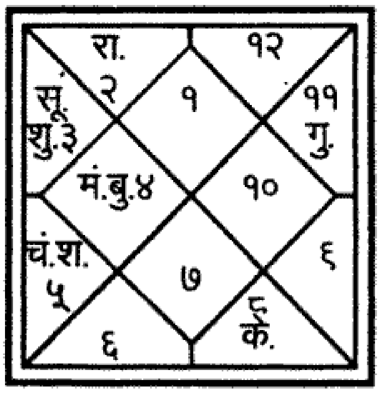

कुण्डली नं ८८

कुण्डली न. 88 के जातक का जन्म सन् 1891 में हुआ था। आप एक बहुत ही जाने माने वकील रह चुके हैं, यहाँ पर भी गुरू एकादश भाव में है। गुरू के अधिकार क्षेत्र में कोर्ट, कचहरी भी आते हैं।

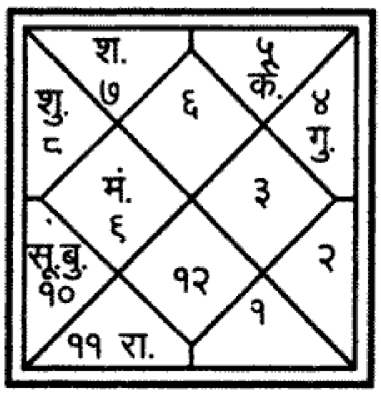

कुण्डली नं ८६

कुण्डली न. 89 श्री सी.डी.देशमुख की है। आप भूतपूर्व गवर्नर रिजर्व बैंक भी रहे हैं। इनकी कुण्डली में कर्क राशि का गुरू एकादश में है। तथा पंचम भाव के बुध की पूर्ण द्रष्टि इस गुरू पर पड़ रही है। अतः इन का संबंध फाइनेंस तथा बैंक के कार्य को दर्शाता है।

लाभ भाव तथा शुक्र

मनोरथे भार्गव नन्द नेनेक्षिते युतेऽ त्रास्य गणे स्वलब्धि।
गमागमैर्वार वधु जनैर्वा मुक्ता फलै रौप्य करत्नपूर्वैः।।

लाभ स्थान में शुक्र हो या द्रष्ट हो या वर्ग हो तो चान्दी, मोती, से धन लाभ होता है। आने जाने के कार्य से तथा वैश्याजनों से लाभ मिलता है।

इस श्लोक में आचार्य मुकुन्द दैवज्ञजी ने वैश्याजनों से धन लाभ भी कहा है। इस ओर से लाभ के विषय में मात्र कल्याण बर्मा ने और कहा है।

" वैश्य स्त्री संयोगैः गमागमने धन भवति पुसांम्।"

अन्य ग्रन्थकार एकादश में शुक्र होने पर जातक नाच गाने का शौकीन तथा इस ओर से धन लाभ भी कहते है। हमने कई फिल्मी कलाकारों की कुण्डली का अध्ययन कर यह पाया है। कि एकादश स्थान पर शुक्र की द्रष्टि या युति या वर्ग प्रायः होता है। कुण्डली न. 90 मिस यूनीवर्स रह चुकी सुष्मिता सैन की है। जिसमें शुक्र नीच राशि का होकर एकादश भाव में स्थित है।

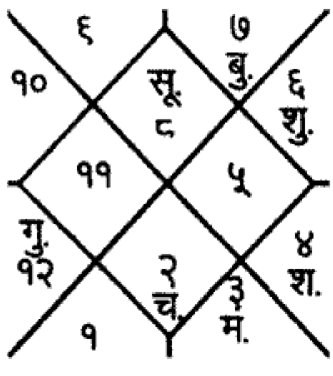

कुण्डली नं ९०

कुण्डली न. 90 सुष्मिता सैन की है। आप मिस यूनिवर्स तथा फिल्मी कलाकार भी है। यहाँ नीच राशि का शुक्र एकादश भाव में है। जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से दिख रहा है। इस शुक्र को धनेश गुरू की दृष्टि पड़ रही है। इसलिए इस ओर से धन भाव और पक्का बनता है।

शुक्र के एकादश स्थान पर होने से स्त्री द्वारा भी धन लाभ होता है। अथार्त विवाह से भी धन लाभ होता है। व्यापार में सक्षम भी होता है। कल्याण वर्माजी के अनुसार तो शुक्र के एकादश में होने पर इमारतें बनाने से भी लाभ कहा है।

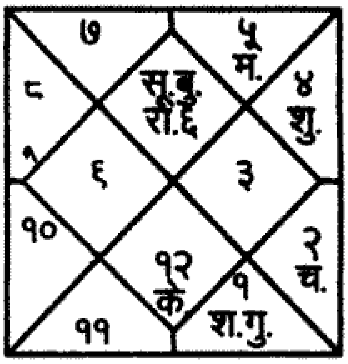

कुण्डली नं ९१

इस कुण्डली न. 91 के जातक का जन्म सितम्बर 1940 को हुआ। यह जातक कपड़े का व्यवसाय करता है। यहाँ पर शुक्र एकादश भाव में स्थित है। यह जातक कपड़े के अतिरिक्त चांदी के गहने भी निर्यात कर रहा है। अतः यहाँ पर शुक्र का प्रभाव पूर्ण रूप से पड रहा है। वृष राशि का चन्द्रमा तथा कर्क का शुक्र आपस में राशि परिवर्त्तन कर रहे है।

लाभ भाव तथा शनि

एकादशे सौरिसमेत दृष्टे गणोऽत्रतस्य द्विपगोलुलायैः।
गन्धर्वशस्त्रैः कृषिलोहनीलैर्यद्वा पुरग्राम गणैर्धनाप्तिः।।

लाभ भाव में शनि की युति द्रष्टि या वर्ग होने पर हाथी, घोडा, भैंस, शस्त्र, लोहा, खेती नील, नगर व ग्राम समूह से लाभ मिलता है।

लाभ स्थान में पाप ग्रह के होने से शुभ फल प्राप्त होते हैं। शनि की यहाँ पर स्थिति प्रायः सभी ग्रन्यकार उत्तम ही कहते हैं। सन्तान पक्ष को छोड धनलाभ आदि में यह उत्तम मानी जाती है। तुला मकर या कुम्भ राशि का शनि अच्छा फल देता है।

बह्वायुः स्थिर विभवः शूरः शिल्पाश्रे विगतयोग।
आयस्थे भानुसुते धन जन संयदयुक्तो भवति।।

कल्याण वर्मा के अनुसार तो शनि लाभ भाव में होने से शिल्प द्वारा अपनी आजीविका कमाता है। जैसा कि आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी ने कहा है कि लोहा से भी धन लाभ होता है। इस संदर्भ में हम पाठक गणों को यह कहना चाहेगें कि आज के युग में फैक्ट्री का कार्य या बड़े उद्योगे को भी लोहे से संबंध माने क्योकि कई उद्योगपतियों की कुण्डली में शनि का प्रभाव देखने को मिलता है। उदाहरण कुण्डली नं 92 भी एक बड़े उद्योगपति की है जो कि लोहा, एल्यूमिनियम आदि का कार्य करता था तथा इन के कारखानों में हजारों की संख्या में मजदूर कार्यरत थे।

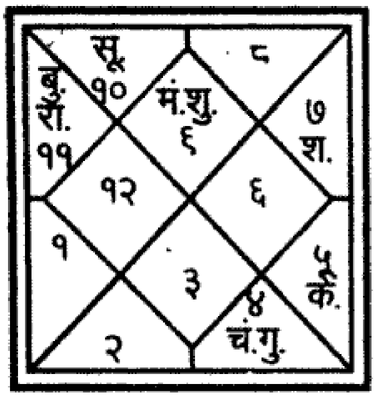

कुण्डली नं ९२

कुण्डली नं 92 के जातक का जन्म जनवरी 1896 को हुआ था। आप एक बहुत ही बड़े उद्योगपति रहे। आपके लौहे, एल्यूमिनियम के कारखाने, खाने थी। कई हजार लोग इनके यहां कार्य करते थे। यहां पर एकादश भाव में उच्च राशि का शनि जो कि धनेश एवं तृतीयेश है। शनि यहां पर अपना कारकत्व पूर्ण रूप से दिखा रहा है।

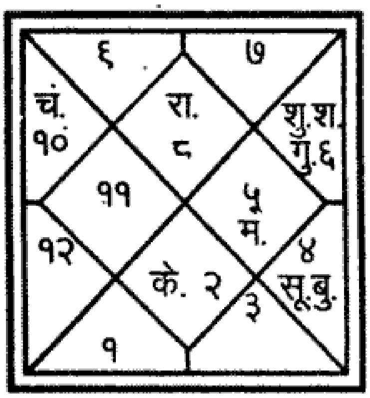

कुण्डली नं ९३

कुण्डली नं 93 के जातक का जन्म फरवरी 1863 को हुआ था। आप एक बहुत ही बड़े कार बनाने वाले उद्योगपति थे। यहां पर शनि जो कि खान, लोहा, मशीनरी, मजदूरों का कारक है वह एकादश भाव में स्थित है। धनेश गुरू भी स्थित हैं जिस कारण धन इनसे होता है।

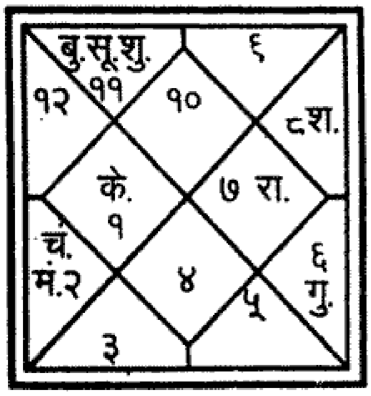

कुण्डली नं ९४

कुण्डली नं 94 के जातक का जन्म मार्च 1957 को हुआ। इस जातक का सिक्योरिटी सर्विस तथा नौकरी दिलाने वाली कम्पनी है। यहां पर एकादश भाव में शनि स्थित है यह आजकल के नये व्यवसाय प्लेसमेंट की कम्पनी का प्रतिनिधित्व कर रहा। यह अतिआवश्यक हो गया है कि हमें आजकल नए व्यवसायों में इन ग्रहों का अधिपत्य का पता चलाना चाहिए। शनि का अधिपत्य मजदूर वर्गों पर है तथा उस से सम्बन्धित यह व्यापार भी शनि के अधिकार क्षेत्र में आता है।

आजकल पैट्रौलियम, कुकिंग गैस भी शनि के अधिकार में ही माने जाते हैं। शनि के अधिकार क्षेत्र में शेयरों का काम भी होता है। एकादश भाव में उच्च का शनि सट्टे से लाभ करवाता है। यहां पर हम एक शेयर ब्रोकर की कुण्डली दे रहे हैं जिसके एकादश भाव में शनि है। देखें कुण्डली नं 95।

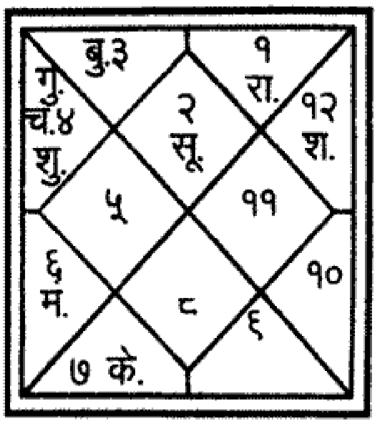

कुण्डली नं ६५

कुण्डली नं 95 के जातक का जन्म 1967 को हुआ है। यह जातक एक शेअर ब्रोकर है। यहां पर शनि नवमेश व दशमेश होकर लाभ भाव में है। शनि के अधिकार क्षेत्र में शेयर भी आते हैं। गुरू जो कि स्टॉक एक्सचेंज का कारक ग्रह है उसकी दृष्टि भी यहां पर है तथा उसकी राशि भी इस भाव में होने पर शेयर ब्रोकर का कार्य कर रहा है

लाभ भाव तथा राहु

फणीशे फलभावस्थे समृद्धो देह सम्भवैः।
धनैर्धान्यैः सुसम्पन्नौ मानवो जायते तदा।।

लाभ भाव में राहु धन धान्य से समृद्ध बनाता है।

जैसा कि पूर्व में भी लिखा जा चुका है कि एकादश भाव में पाप ग्रहों का होना धन लाभ के लिए अच्छा होता है। इसी प्रकार राहु का भी होना अच्छा धनदायक माना है। एकादश का राहु प्रायः विदेशियों तथा नीच जाति के लोगों से धन लाभ करवाता है।

हमने कई निर्यातकों की कुण्डली में एकादश में राहु पाया है। यह राहु यदि मेष, वृष, मिथुन, कन्या आदि का हो तो सट्टे आदि से भी धन लाभ करवाता है। यह बात तो प्रायः देखने को मिलती है कि जिस जातक के एकादश में राहु होता है उनके मन में सदा शीघ्र धनी होने की अभिलाषा रहती है।

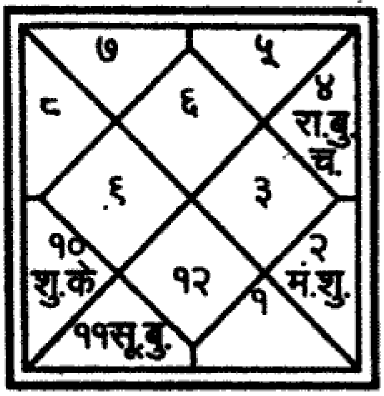

कुण्डली नं ९६

कुण्डली न. 96 के जातक का जन्म मार्च 1944 में हुआ। यह जातक कई वर्षों से विदेश अमरीका में रह रहा है। यहां पर एकादश भाव में राहु है। अतः विदेश में भी आजिविका होना राहु के ही कारण बना।

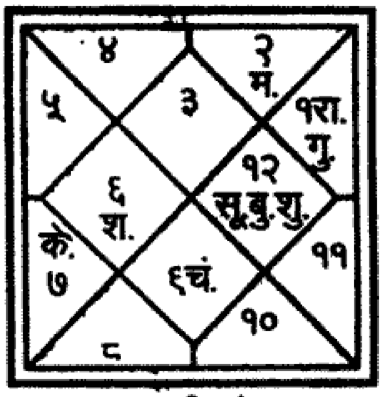

कुण्डली नं ९७

कुण्डली नं 97 प्रसिद्ध सेठ रामकृष्ण डालमियां जी की है। आपकी कुण्डली में एकादश भाव में गुरू के साथ राहु है राहु के ही कारण आप का विदेश में भी व्यापार था।

कुण्डली नं 98 के जातक का जन्म जुलाई 1953 को हुआ यह जातक एक इंजीनियर है तथा ठेकेदारी का काम करता है। राहु के कारण इन्हें मजदूर वर्ग द्वारा धन लाभ हो रहा है। केतु का फल प्रायः राहु जैसे ही होता है। कई बार ऐसे जातकों को लॉटरी या सट्टे में अच्छा धन मिलता है। शेयर बाजार से जुड़े लोगों की कुण्डली में भी एकादश भाव में केतु को पाया गया है। अतः केतु की स्थिति लाभ कारक ही होती है।

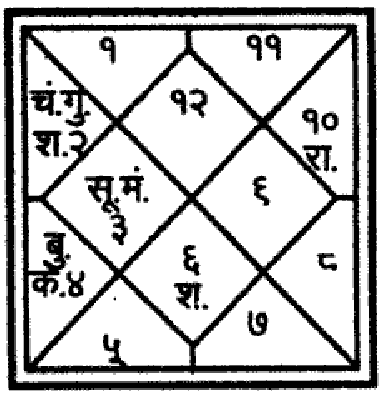

कुण्डली नं ९८

8

लाभ भावगत राशि फल

लाभ गत मेष फल

उपान्त्य गेहो पगतेऽजसंचिह्नते पुंसा यदा जन्मनि लाभमादिशेत।
तुर्य्याधिजं मानव नाथ सेवया जातं प्रभूतं परदेश सेवनात्।।

लाभ भाव में मेष राशि होने से राज्य सेवा या उच्च पदासीन व्यक्तियों से लाभ होता है। परदेश जाकर लाभ या चतुष्पदों से भी धन लाभ होता है। यदि व्यापार करते है। तो बिजली या अग्नि से संबंधित व्यापार से भी धन प्राप्त होता है।

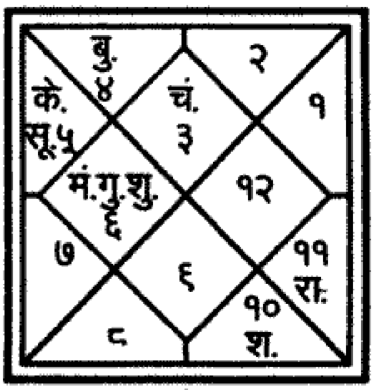

कुण्डली नं ६६

कुण्डली न. 99 का जातक बिजली का सामान बेचने का व्यापार करता है। यहाँ पर एकादश भाव में मेष राशि है। मेष राशि का स्वामी मंगल होने के कारण तथा इसकी पूर्ण द्रष्टि एवं एकादश भाव में पड़ने से इस क्षेत्र से लाभ कमाने के प्रबल योग बनते हैं।

लाभ गत वृष फल

फलागमे यस्य जनौ [illegible] वस्य लाभं प्रवदेद्विशिष्ट जम।
सदेव गौधर्म्मकृतेः कृ[illegible]था सकाशत्स्व कलत्र साधुतः।।

वृष राशि के लाभ भाव में होने से अच्छे रास्ते, से पत्नि द्वारा, या महिलाओं द्वारा खेती द्वारा, सज्जनों के संग द्वारा, धन, लाभ होता है।

यहाँ पर मनोरंजन के क्षेत्र से व विलासिता की सामग्री या डेयरी द्वारा भी धन लाभ हो सकता है।

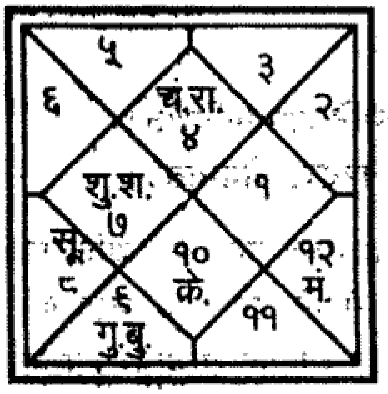

कुण्डली नं १००

कुण्डली न. 100 प्रसिद्ध फिल्म कलाकार स्व श्री राजकपूर की है। यहाँ पर एकादश भाव में वृष राशि है। दशम भाव को शुक्र पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा एकादश भाव में शुक्र की राशि है। इस कारण वश आपको सिनेमा में प्रसिद्धि मिली तथा लाभ अर्जित करा।

लाभ गत मिथुन राशि

मनोरथस्यो नर युग्मांसंचिज्ञतस्तदा प्रकुर्यादतिलाभमंगीनाम्।
बहुप्रसिद्धि वसनार्थभोजन पानोदभवं स्त्री जनवल्लभं तथा।।

अर्थात लाभ भाव में मिथुन राशि होने पर वस्त्र, द्रव्य, भोजन तथा पेय पदार्थ जन्य बहुलाभ तथा स्त्रियों का प्रिय होता है।

हमारे अनुभव में कमीशन व सेल्स का काम करने वाले, अकाउन्ट का कार्य करने वाले या ट्रेडिंग का व्यवसाय व कम्प्यूटर व लेखन प्रिंटिग के कार्य से भी धन लाभ होना पाया गया है।

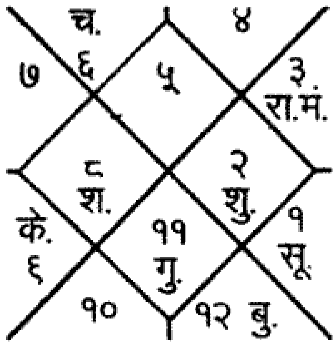

कुण्डली नं १०१

कुण्डली न. 101 एक ऐसे व्यक्ति की है। जो कि इडियन एयर लाइन्स में अकाउन्ट के अधिकारी रहे है। यहाँ पर लाभ भाव में मिथुन राशि है। इस कारण वश इनको अकाउन्टस से लाभ मिला। धनभाव में भी बुध की ही राशि है। इसलिए एकाउन्टस से धन लाभ बन रहा है। बुध को नीच भंग राज योग भी है।

लाभ गत कर्क राशि

लब्धौ कुलीरे जनने जनानां लब्धिर्भवेत्सज्जन संगमेन।
कृषेश्च सेवाजनिता प्रभूता शास्त्राच्च भाण्डाद्वसनादपीह।।

लाभ भाव में कर्क राशि हो तो सज्जनों के संग से, कृषि से, नौकरी द्वारा, भाण्ड विद्या से शास्त्रों से तथा वस्त्रों से भी धन लाभ होता है। हमारे अनुभव में पेय पदार्थ, सामाजिक सेवा, अध्यापन तथा लाईजन का कार्य करने से भी लाभ होता है।

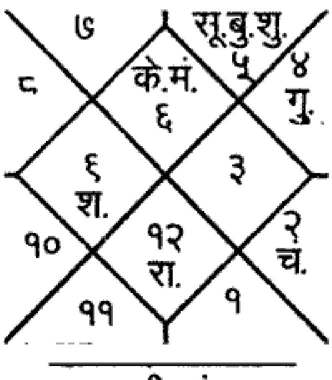

कुण्डली नं १०२

कुण्डली न. 102 ऐसे जातक की है। जो कि व्यापारी है यह जातक पेन्टस का व्यापार करता है। एकादश भाव में कर्क राशि है इस का स्वामी चन्द्र है जो कि जलीय पदार्थो पर आधिपत्य रखता है। पेन्टस भी जलीय पदार्थो में आता है।

लाभ गत सिंह राशि

प्रप्तिगंते पंच्वन स्वे बहुनां सदा जनानां, वधवन्धनाद्यौः।
व्यापार तो वा परदेशवासाद भवेत्सुलाभो जनितस्य पुंसः।।

लाभ भाव में सिंह राशि हो तो नित्य बहुत जनों के वध से, बन्धन से, व्यापार से तथा परदेश के वास से धन लाभ होता है।

यहाँ पर वध व बंधन कहा गया है। इसको हमने परखने के लिए कई कुण्डलियों का अध्ययन करा तथा कई कुण्डलियों में यह सत्य पाया तो हम यह कह सकते हैं। ऐसे जातक दण्ड देने वाली अधिकारी हो सकते हैं। परन्तु कुछ बुरे ढ़ंग से समाज में पैसा कमाने वाले लोगों की कुण्डली में भी इसको पाया। अतः इसकी सत्यता को परखने के लिए पाठक स्वयं अनुभव से जान पाएगें।

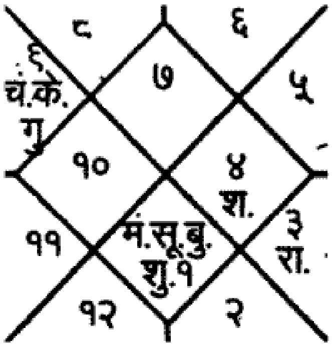

कुण्डली नं १०३

कुण्डली न. 103 हिटलर की है। यहाँ पर लाभ भाव में सिंह राशि है। अतः पाठक इस कुण्डली के अध्ययन से ही उपरोक्त श्लोक का अर्थ पूर्ण निकाल पाएगे।

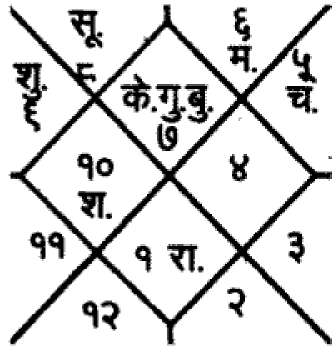

कुण्डली नं १०४

कुण्डली न. 104 स्व श्री चर्चिल की है। यहाँ पर एकादश भाव में सिंह राशि है। आपके अधिकारो के बारे में क्या वर्णन करें। यहाँ पर पाठकों को यह कहना चाहेगे कि मात्र सिंह राशि से ही कोई व्यक्ति उच्च पदासीन नहीं होता अपितु कुण्डली में अन्य योग भी देखने चाहिए।

लाभगत कन्या राशि

यदाऽधिकागारगता ऽगंनाख्या लाभं विधत्ते विनयेन वेदात्।
शास्त्रादुपायै बहुभिश्च साधुनीत्यादभुते नोत विवेकतोऽपि।।

लाभ भाव में कन्या हो तो विनय से, वेद से, शास्त्रों से, बहुत उपायों से उत्तम नीति से, अद्‌भुत कार्यो तथा विवेक से धन लाभ होता है।

प्रायः यह पाया गया है कि जिन व्यक्यिों की कुण्डली में लाभभाव में कन्या राशि होती है वह लोग अपनी बुद्वि के कारण वश ही लाभ कमाते हैं। कई लेखकों, संत महात्माओं, उच्च पदाधिकारियों, जज आदि की कुण्डली में ऐसा पाया गया है।

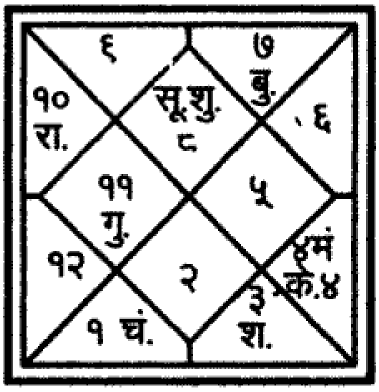

कुण्डली नं १०५

कुण्डली न. 105 के जातक का जन्म नवम्बर 1915 में हुआ। आप एक जर्ज रह चुके हैं। यहाँ पर कन्या राशि का एकादश भाव में होना उत्तम नीति एवं बुद्वि से धन लाभ दर्शा रहा हैं।

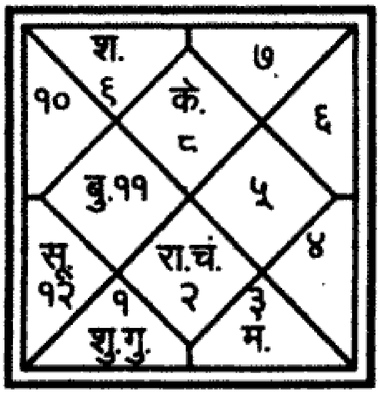

कुण्डली नं १०६

कुण्डली न. 106 के जातक का जन्म मार्च 1929 को हुआ। आप एक बहुत प्रसिद्व पत्रकार रह चुके हैं। कन्या राशि का एकादश भाव में होना समाचार पत्र व लेखन,अकाउन्टस एडवर्टाइजिंग, बीमा, व अध्यापन, व्यापार आदि दर्शाता है।

लाभ गत तुला राशि

भवेवणिग्भे जनने विचित्रैररण्यजैः सज्जनसेवया च।
सदा स्तुतं श्रेष्ठतमं प्रभूतं लभेत लाभं विनयेन जन्मी।।

लाभ में तुला हो तो विचित्र वस्तुओं से धन लाभ, वनजन्य पदार्थों, सज्जनों के यहां नौकरी से , विनय से, व्यापार से, अत्यंत लाभ मिलता है।

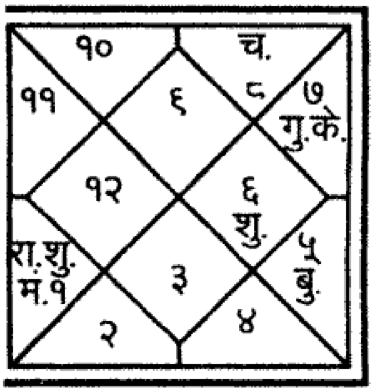

कुण्डली नं १०७

कुण्डली न. 107 के जातक का जन्म अगस्त 1911 में हुआ। जातक एक व्यापारी है। जैसे कि कहा गया है। कि वन जन्य पदार्थो द्वारा भी लाभ होता है। तो यह जातक कॉफी का बहुत बड़ा व्यापारी रह चुका है। यहां पर लाभ भाव में तुला राशि हैं अतः व्यापार से धन लाभ बनता है।

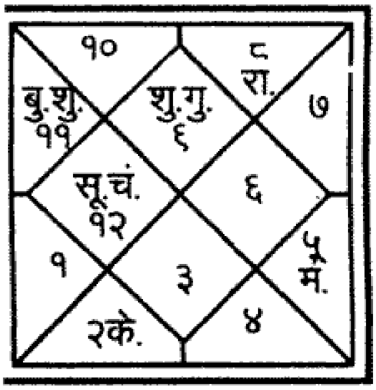

कुण्डली नं १०८

कुण्डली न. 108 के जातक का जन्म मार्च 1901 में हुआ। जातक एक सिनेमा स्टूडियो का मालिक था तथा फिल्मों में फाइनेंस भी करता रहा। यहाँ पर जैसा कहा गया है कि विचित्र वस्तुओं से धन लाभ तो जिस समय उन्होने यह व्यापार किया तब सिनेमा स्टूडियों भी विचित्र वस्तुओं में ही माने जाते थे। तुला राशि के एकादश भाव में होने से सिनेमा, मनोरंजन आदि से भी धन लाभ कहा जा सकता है।

इसी प्रकार स्त्रीयों या शुक्र से संबधित अन्य वस्तुओं द्वारा भी धन लाभ होता है। हमने कई कपडे के व्यापारियों की कुण्डली में लाभ भाव में तुला राशि पाई है।

लाभ गत वृश्चिक राशि

अयानयाते यदि भृगंसंज्ञे नरस्य लाभः प्रभवेत्परस्य।
पैशुन्य संच्जातविकारतोऽघाच्छलेन पद्बोत्त्म भाषणेन।।

लाभ भाव में वृश्चिक राशि होने पर पराई भेद नीति जन्य विकार से, पाप से, छल कपट से, अथवा उत्तम भाषण द्वारा धन का लाभ होता है।

आज के युग में हमने तो प्रायः इन्हीं लोगों को जिनके लाभ भाव में वृश्चिक राशि हो या ऐसे भी कह सकते है। कि मकर लग्न वाले जातकों को सफल पाया है। जहाँ तक प्रश्न छल कपट वा झूठ बोल कर लाभ कमाने का है। तो आज कल इसके अतिरिक्त हो क्या रहा है। चाहे व्यापार हो या राजनीति या धर्म शास्त्र की बात हो सब जगह इसी का बोल बाला है। अतः जो आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी ने उपरोक्त श्लोक में कहा है कि छल कपट या झूठ व उत्तम भाषणों से धन लाभ होता है वह सत्य ही है। कई वकीलों कि कुण्डली में भी हमने इसे पाया है। तथ्यों को न बतलाकर अपनी बात को मनवाना इस पेशे के अन्तर्गत आता है। इसी प्रकार उत्तम वाणी, भाषण या बोलकर भी लाभ कमाने वाले व्यवसायों में भी वृश्चिक रशि पाई जाती है। कई ज्योतिषी एवं तांत्रिकों की कुण्डली में भी यह राशि देखने को मिलती है।

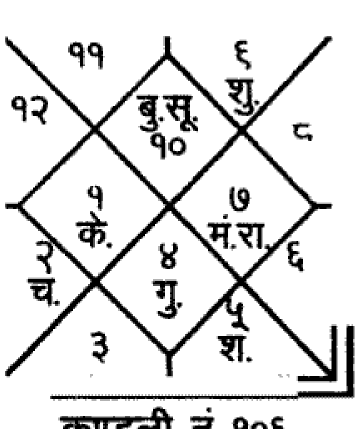

कुण्डली नं १०९

कुण्डली न. 109 एक बडे ही प्रतिष्ठित वकील की है। यहां पर लाभ भाव में वृश्चिक राशि का होना इनके तर्क वितर्क के भाषण क्षमता को बताता है। आप इस पेशे में बहुत प्रसिद्ध हुए। यहां पर गुरू की दृष्टि भी लाभ भाव में पड़ रही है।

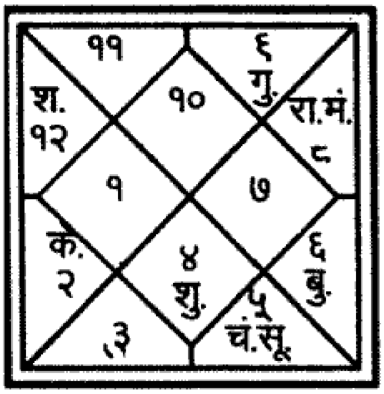

कुण्डली नं ११०

कुण्डली न. 110 के जातक का जन्म सितम्बर 1937 में हुआ। जातक एक व्यापारी है। इस जातक ने कई व्यापार बदले तथा कई लोगों का धन हड़प किया तथा कई स्थानों में व्यापार करा है। यहाँ पर एकादश में राहुमंगल वृश्चिक राशि में है। आजकल प्रापर्टी एजेन्ट बने हुए हैं। यहां पर मंगल जो कि चतुर्थेश भी है इस व्यवसाय को सत्य बना रहा है।

लाभगत धनु राशि

तुरंगजंधेऽधिक धामयाते सुसेवया पौरूषतः क्षितीशैः।
पुष्पाम्बरैः शस्त्रभवैरूपायैः स्वाप्ति विंला सान्भजते जनुष्मान।।

लाभ भाव में धनु राशि होने पर सुन्दर सेवा, फूलों तथा वस्त्रों से, पुरूषार्थ से राजा से तथा शस्त्र जन्य उपायों से लाभ होता है।

जहाँ तक प्रश्न उठता है पुरूषार्थ का तो इसको हमने सत्य ही पाया है। कई ऐसे व्यक्तियों जिनकी कुण्डली में एकादश भाव में धनु राशि है हमने अपने ही दम से ऊचाईयों में जाते देखा है। यहां पर हँम पाठको को यह और बताना चाहेगें। कि आजकल राजा का मतलब वह सरकार माने। हमारे अनुभव में धनु राशि के इस भाव में होने पर सरकारी नौकरी या बड़े संस्थानो की नौकरी भी पाई गई है।

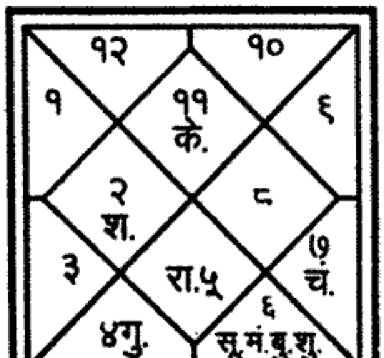

कुण्डली नं १११

कुण्डली न. 111 प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन की है। इनकी कुण्डली में एकादश भाव में धनु राशि है। आप भी अपने बल बूते पर इतनी ऊँचाई पर पहुचें। इस कुण्डली में धन भाव में मीन राशि है अतः गुरू का प्रभाव भी जातक पर पड़ता है।

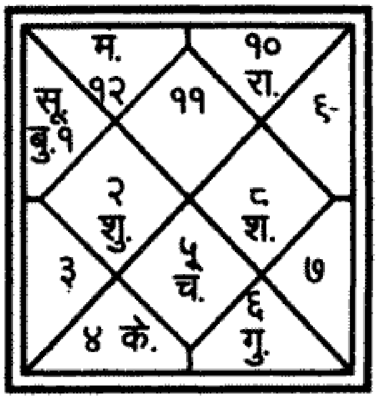

कुण्डली नं ११२

कुण्डली न. 112 प्रसिद्ध करोड़पति डाक्टर टी.एम.पाई की है। आपने भी अपने ही पुरूषार्थ द्वारा इतना नाम व धन अर्जित करा। यहां पर लाभ भाव में धनु राशि है तथा यही राशि धन भाव में है तथा अपने स्वामी द्वारा द्रष्ट है।

लाभ गत मकर राशि

क्रूरंग वक्त्रे लभनालयंगते द्रव्यस्य लाभो जलयान संश्रयास।
विदेशवासान्नरनाथ सेवानाद् व्ययात्मकः प्राज्यतरः स मानुषे।।

यदि लाभ भाव में मकर राशि हो तो जलयान से, विदेशयान से या राज्य सेवा से धन लाभ होता है।

हमने कई शिपिंग कम्पनी में कार्यरत या मर्चेन्ट नेवी या भारतीय नौसेना में कार्यरत व्यक्तियों की कुण्डली में इस को परखा है। इसके अतिरिक्त कई निर्यातकों की कुण्डली में भी इसको पाया है।

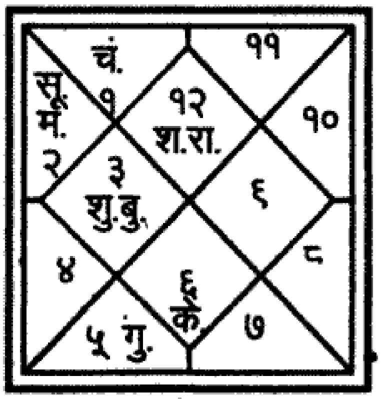

कुण्डली नं ११३

कुण्डली न. 113 के जातक का जन्म मई 1968 को हुआ। यह जातक वर्तमान मे एक निर्यातक है। इनकी कुण्डली में एकादश भाव में मकर राशि है। इनका व्यापार विदेशों में फैला हुआ है। तथा स्वयं कई बार विदेश रहकर भी आए है।

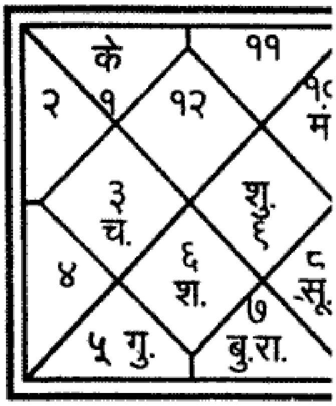

कुण्डली नं ११४

कुण्डली न. 114 के जातक का जन्म नवम्बर 1920 को हुआ। जातक भारतीय नौ सेना में उच्च पदाधिकारी रह चुके हैं। जातके भारतीय नेवी से रिटायर होकर मर्चेन्ट नेवी में चले गए थे तथा कई वर्ष वहाँ कार्य किया।

लाभगत कुम्भ राशि

अवाप्तियाते घटरू पराशै विद्यान याम्यां द्रविणस्य लाभः।
कुकर्म्म संगात्सुमभागमेन दानेना पुण्येन च विक्रमेण।।

कुम्भ राशि के लाभ भाव में होने पर विद्या तथा नीति से, कुकर्म करने वालों की संगति से, सुन्दर समागम से, दान से, पुण्य रो या पराक्रम से लाभ मिलता है।

हमने अपने अनुभव में पाया है कि कुम्भ राशि के एकादश भाव में होने पर उच्च शिक्षा द्वारा भी धन लाभ लेते पाया है तो दूसरी ओर मजदूरी करते हुए भी देखा है। कई धनी जातको की कुण्डली में भी इसको पाया गया है।

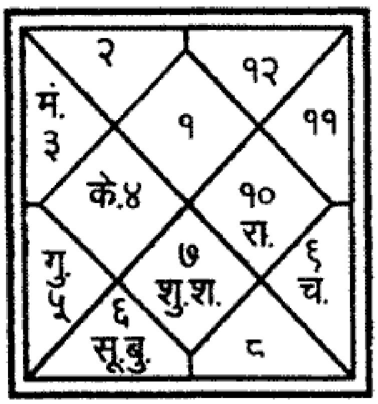

कुण्डली नं ११५

कुण्डली न. 115 एक सुप्रसिद्ध जज की है। आप बहुत विद्वान तथा उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति है। यहाँ पर एकादश भाव में कुम्भ राशि है। तथा यह भाव गुरू द्वारा द्रष्ट है। गुरू जो कि कानून का कारक भी है। शनि का भी प्रभाव इसके साथ होने पर व्यक्ति इस क्षेत्र में सफल होता है।

लाभ गत मीन राशि

मनोरथे नीरनिकेतभे यदाऽनेकाप्तिरूक्ता कुशलै विचंक्षणैः।
हितोम्दवा भूपति मान सम्भवा स्नें होम्दवावाथ विचित्रवाक्यजा।।

लाभ भाव में मीन राशि हो तो मित्र जन्य, राजसम्मान, स्नेह जन्य या विचित्र वाणी द्वारा धन लाभ होता है।

इस प्रकार के जातकों को प्रायः हमने साझे का व्यापार अपनों के साथ करते हुए भी देखा है। ऐसे लोग बातों में निपुण होते है। तथा इस निपुणता के कारण धन कमाते हुए देखा गया है।

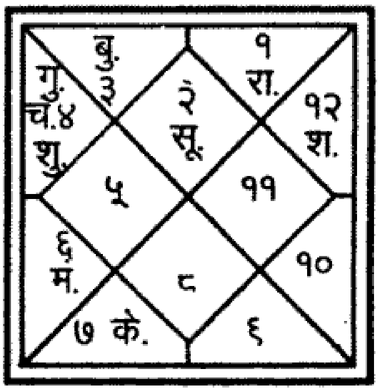

कुण्डली नं ११६

कुण्डली न. 116 के जातक का जन्म जून 1967 में हुआ। यह जातक अपने मित्र के साथ साझे में व्यापार करता है। यह शेयरों का ब्रोकर भी हैं। इस जातक में वह सभी गुण उपस्थित हैं जो कि इस श्लोक में कहे गए हैं।

9

भाग्य भाव प्रकरण

भाग्यं विचिन्त्यं सकलं विहाय जन्तोर्विशेषेण बुधैः प्रयत्नात्।
आयुश्च वंशो जनको जनित्री भवन्ति धन्या विधिना युतेन।।

अर्थात कुण्डली के समस्त भावों को छोड़कर सर्व प्रथम भाग्य भाव पर विचार करना चाहिए क्योंकि भाग्यवान पुरूष से आयु कुल, पिता एवं माता धन्य होते हैं।

तनुगृहावा तुहिनांशुराशेनिकेतनं यन्नवमं तदेव।
विधर्गृहं वा बलन्वास्तयोर्यस्य भान्नियत्या भवनं विचिन्त्यम्।।

जन्म लग्न या चन्द्र लग्न इन दोनों में जो भाव बली हो उससे नवम भाव को भाग्य स्थान माने।

पराक्रमस्थः प्रतिभालस्थः पौरोपगः प्राणयुतः खपान्थः।
येषाजनौपुर्ण्यगृहं प्रपश्येच छेष्ठा नरास्ते कथिताः कवीन्द्रैः।।

जिस मनुष्य के जन्म समय में तृतीय भाव या पंचम भाव या लग्न में बलवान कोई ग्रह उपस्थिति हो तथा वह भाग्य भाव को देख रहा हो तो उस मनुष्य को भाग्यवान समझें व श्रेष्ठ कहें।

पंचम एवं लग्न से भाग्य भाव को देखना तो मात्र गुरु (बृहस्पति) ही हो सकता है। अतः यह भी कहा जा सकता है कि उच्च व स्वराशि का गुरूलग्न या पंचम भाव में होने पर व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। भगवान राम चन्द्र जी की जन्म कुण्डली में उच्च राशि का गुरू लग्न में है तो भरत जी की कुण्डली में उच्च राशि का गुरू पंचम भाव में है। भगवान कृष्ण जी की कुण्डली में कन्या राशि का गुरू पंचम भाव में स्थित है। इसी प्रकार अन्य महान व्यक्तियों की कुण्डलियों में नवम भाव पर शुभ द्रष्टि या युति देखने को मिल सकती है।

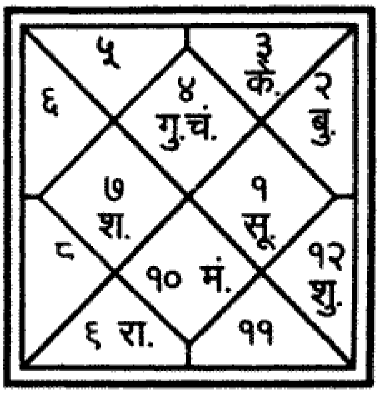

कुण्डली नं ११७

कुण्डली न. 117 भगवान रामचन्द्रजी की है। इस कुण्डली में पांच ग्रह उच्च राशि में हैं। तथा एक स्वराशि में है। यह योग ही अपने आप में महान है परन्तु यहाँ पर नवम भाव का स्वामी गुरू उच्च राशि का होकर नवम भाव को देख रहा तथा नवम भाव में उच्च राशि भाव में उच्च राशि का शुक्र स्थित है। इस प्रकार नवम् भाव पर शुभ प्रभाव पड़ रहा है।

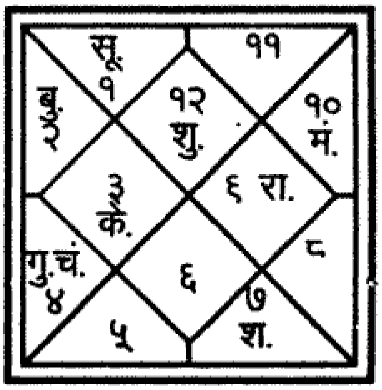

कुण्डली नं ११८

कुण्डली न. 118 आदर्श भ्रातृ प्रेमी कैकयी पुत्र श्री भरतजी की है। यहाँ उच्च राशि का गुरू पंचम भाव में स्थित है। तथा इस गुरू की पंचम पूर्ण द्रष्टि नवम् भाव को पड़ रही है। इसके अतिरिक्त तृतीय भाव में स्थित बुध की भी द्रष्टि नवम भाव में पड़ रही है।

भाग्येश मंगल उच्च राशि में होकर लांभ भाव में विराजमान है। इस प्रकार नवम् भाव बली बना हुआ है। यहाँ पर यदि चन्द्र लग्न से भी नवम स्थान का देखे तो वह भी उतना ही बलवान है।

तपः स्थितौदीक्षण देहयौवा को मांसलः पुष्करगः सहोत्थे।
स्वोच्चस्थितो वा स्वभगोऽपि येषांश्रेष्ठा मनुष्यः परिकीर्त्ति तास्ते।।

जिस मनुष्य के जन्म समय में नवम में नवमेश तथा लग्नेश हो या तृतीय भाव में कोई भी उच्चराशि या स्व राशि का ग्रह हो तो भी मनुष्य को भाग्यवान कहा जा सकता है।

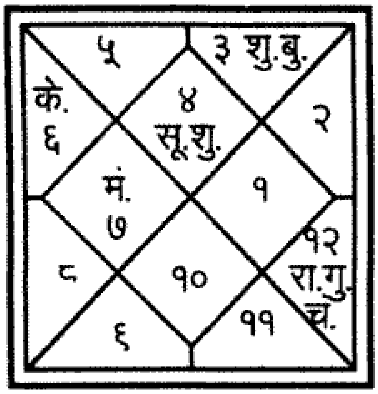

कुण्डली नं ११६

कुण्डली न. 119 लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी की है। इस कुण्डली में नवम गुरू व लग्नेश चन्द्रमा स्थित है। यह योग अपने आप में श्रेष्ठ माना जाता है। तथा तिलक जी की श्रेष्ठता में किसको संदेह है।

नवम स्थान यदि शुभ ग्रहों तथा अपने स्वामी से द्रष्ट हो तो मनुष्य के लिए भाग्यप्रद होता है। नवमेश की आक्रान्त राशि के स्वामी को भाग्यकर्त्ता, नवमेश को भाग्य का उपभोक्ता तथा नवम से पचंम भाव के स्वामी को भाग्योत्पादक कहा जाता है। कई ग्रन्थकारों का मत है कि नवम स्थान अपने स्वामी से युक्त या द्रष्ट हो तो स्वदेश में ही भाग्य को प्राप्त होता है। नवम स्थान अन्य ग्रहों से युक्त द्रष्ट हो तो परदेश में भाग्य को प्राप्त होता है। भाग्य भाव में उच्च राशि का सूर्य या उच्च राशि का गुरू होने पर भी हमने कुछ जातकों को विदेश जाते हुए देखा है।

भाग्येश निजभेधने तनयभेकेन्द्रेऽथवादीक्षणे
स्वंर्क्षोच्चस्थखगेऽथ वा मतिसुखेऽथेन्दोः क्षयारस्तारिगैः।
सत्खेटैरथ जीवजन्मतनुपै केन्द्राश्रितैर्मानवः
सदभाग्यो नवमे हितोच्चगृहगः पापोऽपि भाग्यप्रदः।।

नवम, पंचम, द्वितीय या केन्द्र में षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम स्थान में शुभ ग्रह हों तो भी भाग्यवान कहें। केन्द्र में गुरू जन्म राशि का स्वामी तथा लग्नेश के होने पर भी मनुष्य भाग्यवान होता है। नवम भाव में उच्च राशि या स्वराशि का पाप ग्रह भी भाग्य को बढ़ाता है।

चन्द्रमा से षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम में शुभ ग्रह होने पर चन्द्र लग्नाधि योग कहलाता है। ऐसे ही ग्रह लग्न से षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम होने पर लग्नाधियोग कहते हैं। यह योग धन कारक एवं भाग्य कारक होते है। इस विषय में हम आगे धन कारक योग प्रकरण में चर्चा करेंगे।

भाग्येश का भाव फल

1. लग्न में यदि भाग्येश स्थित हो तो वह व्यक्ति राजकार्य करने वाला तथा अपने ही दम पर धन व यश कमाता है। ऐसे व्यक्ति को सेल्फ मेड कहा जाता है। देखें कुण्डली नं 2 जो कि श्री घनश्याम दास बिरला जी की है। इस कुण्डली मे नवमेश शुक्र लग्न में स्थित है। जैसा कि सर्वविदित है कि बिरला जी ने इतना बड़ा औद्योगिक साम्राज्य केवल अपने ही दम से बनाया था।

2. धन भाव में यदि भाग्येश स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति विख्यात, सुशील, वात्सल्य तथा उसका पिता बहुत धनी होता है तथा पैतृक धन को पाता है। परन्तु यदि इसमें बुरा प्रभाव पड़ रहा हो तो धन को नष्ट भी करता है। ऐसे कई जातकों की कुण्डली पूर्व में दी जा चुकी है जिनके धन भाव में भाग्येश स्थित हैं। देखें कुण्डली नं 11 तथा कुण्डली नं 20 इन दोनों कुण्डली के जातको को पैतृक धन प्राप्त हुआ तथा इनके पिता बहुत धनी व्यक्तियों में माने जाते थे। इसका एक और उदाहरण देखें कुण्डली नं 120।

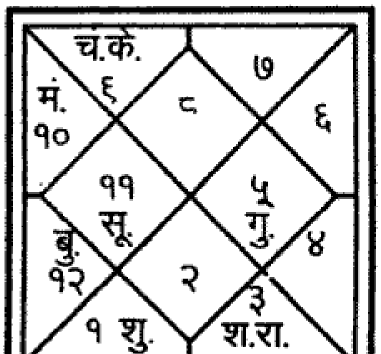

कुण्डली नं १२०

कुण्डली नं 120 श्री माधव राव सिंधिया जी की है। आप ग्वालियर राज्य घराने में हुए। आप एक प्रसिद्ध एवं धनी व्यक्ति भी है। आपको ही सारी पैतृक सम्पत्ति मिली। यहां पर धन भाव में भाग्येश स्थित है।

3. तृतीय भाव में भाग्येश के होने पर जातक लोगों में प्रिय, विधि के विधान में तत्पर, धनवान, गुणवान होता है। ऐसा जातक अपने भाषणों तथा कलम द्वारा भी प्रभावित करता है। यह एक अच्छा लेखक भी हो सकता है। इसका परिवार सुख सम्पन्न होता है तथा अपने सहभागियों द्वारा धन भी पाता है। परन्तु यदि इस भाव पर पाप प्रभाव पड़ता है तो इस लेखन पर आंच भी आ सकती है।

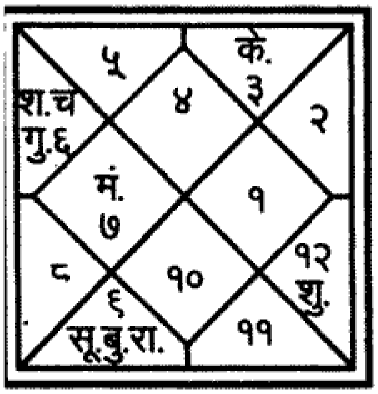

कुण्डली नं १२१

कुण्डली नं. 121 स्व. पं मदन मोहन मालवीय जी की है। आप महान विद्वान, देश सेवक व समाज सेवक रहे। आपके कहने मात्र से ही लाखों का दान लोग कर दिया करते थे। तृतीय भाव में गुरू चन्द्र के बैठने से भी आपकी प्रसिद्धि और बढ़ी।

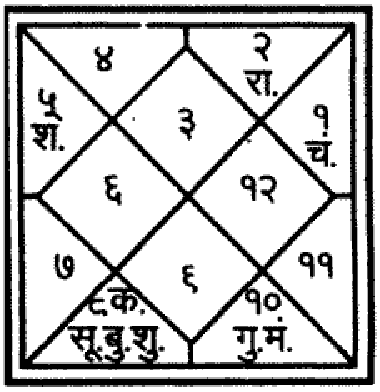

कुण्डली नं १२२

कुण्डली नं 122 प्रसिद्ध कथावाचक स्व. पं. राधेश्याम जी की है। इस कुण्डली मे कई लोग लग्न को कर्क मानते हैं। परन्तु यदि मिथुन लग्न से देखें तो आपके तृतीय भाव में शनि भाग्येश स्थित है। जैसा कि सभी जानते हैं आपकी वाणी सुनने के लिए दूर दूर से लोग एकत्रित हुआ करते थे। आपकी लोखन शक्ति भी अपरम्पार रही।

4. चतुर्थ भाव में नवमेश के होने पर जातक बहुत भूमि का स्वामी होता है। देश विदेश में भ्रमण करने वाला, विख्यात, शास्त्रों को जानने वाला, जमीन जायदाद के कार्य करने वाला या सेना पुलिस में कार्य करने वाला तथा माता बहुत भाग्यशाली व धनी होती है। इस जातक को पैतृक अचल सम्पत्ति भी मिलती है। परन्तु पाप प्रभाव होने पर विपरीत फल भी मिलते हैं।

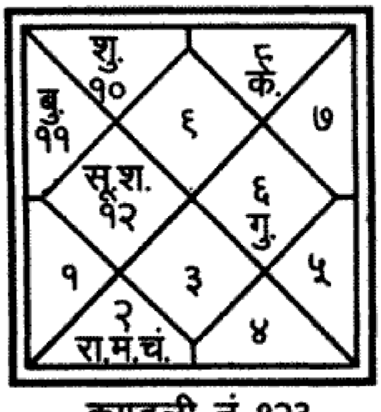

कुण्डली नं १२३

कुण्डली नं 123 का जातक रक्षा विभाग में कार्य करता रहा पर वह सैनिक नहीं था परन्तु बाद में यह जातक बहुत ही बड़ा इमारत एवं मकान आदि का व्यापारी बना तथा अच्छा धन अर्जित किया। यहां पर नवमेश के चतुर्थ भाव पर होने से जमीन जायदाद का कार्य बना।

5. पंचम भाव में नवमेश के होने पर भाग्यशाली एश्वर्यवान होता है। इस जातक को पुत्रों से लाभ होता है तथा इसके पुत्र महान होते हैं।

6. षष्ठ भाव में यदि नवमेश स्थित हो तो अधर्म से तथा मुकदमे झगड़े आदि से धन पाता है यदि यहां पर इस नवमेश पर पाप प्रभाव हो तो इस में धन का भी नाश करता है। पिता द्वारा लिया गया ऋण भी चुकाना पड़ता है।

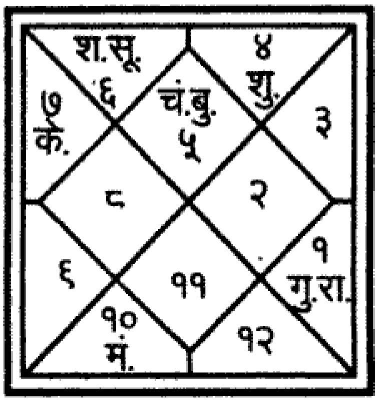

कुण्डली नं १२४

कुण्डली नं 124 हमने ज्योतिष रत्नाकर नामक ग्रन्थ से ली है। इस जातक का जन्म संवत 1849 में हुआ था। इस जातक को ससुराल पक्ष की ओर से आमदनी तो हुई परन्तु इन्हें ऋण भी चुकाना पड़ा। इनकी कुण्डली में नवमेश मंगल षष्ठ भाव में स्थित है।

7. सप्तम भाव में नवमेश होने से स्त्री द्वारा लाभ मिलता है। जातक विदेश से भी लाभ कमाता है। वह जो कार्य करना चाहता है उसकी सिद्धि भी होती है। ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है। परन्तु पाप प्रभाव पड़ने पर विपरीत फल भी मिलते हैं।

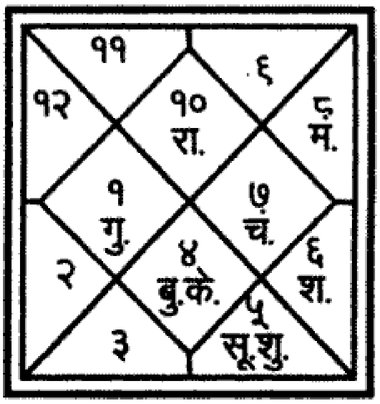

कुण्डली नं १२५

कुण्डली नं 125 के जातक का जन्म अगस्त 1952 में हुआ। यह जातक जयपुर में हीरों का व्यवसाय करता है। इस जातक की पत्नी बहुत धनी परिवार से है तथा जातक को ससुराल पक्ष से बहुत लाभ मिला। जातक हीरों के व्यापार के लिए विदेश जाता रहता है। यहां पर नवमेश बुध सप्तम में है।

8. अष्टम भाव में नवमेश होने से भाग्य में कमी आती है। जितना कार्य करता है उससे कम ही फल प्राप्त होते हैं। इस जातक को बड़े भाई का

सुख प्राप्त नहीं होता। यदि यह नवमेश पाप ग्रह हो तथाअष्टम में भी पाप प्रभाव हो तो इस जातक के कन्धों पर भारी जिम्मेवारी पड़ती है। पिता के लिए भी अष्टम भाव में नवमेश का होना शुभ नहीं माना गया है।

कुण्डली नं १२६

कुण्डली नं 126 के जातक का जन्म अगस्त 1932 में हुआ था। इस जातक के जन्म एक सप्ताह के अभ्यन्तर पिता की मृत्यु हो गई। बड़े भाई का सुख भी इन्हें प्राप्त न हुआ तथा बचपन से ही इन पर भारी जिम्मेदारी पड़ गई थी। पूरा जीवन कष्ट से ही काटा जा रहा है। जितना परिश्रम यह करते हैं उतना उन्हें फल नहीं मिल रहा है। यहां पर नवमेश तथा अष्टमेश शनि ही है जो कि अष्टम भाव में स्थित है परन्तु मंगल की पूर्ण अष्टम द्रष्टि से जो कि षष्ठमेश भी है पड़ने के कारण पाप प्रभाव बढ़ा रही है।

9. नवम भाव में नवमेश होने पर जातक का पिता समृद्ध होता है अर्थात जातक भाग्यवान एवं धनी होता है। जातक विदेश में धन कमाता है एवं नाम भी कमाता है। देखें श्री बालगंगाधर तिलक की कुण्डली यहां पर नवमेश नवम भाव में ही स्थित है।

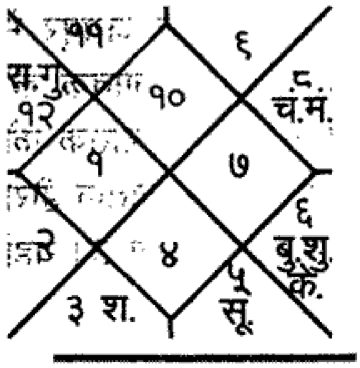

कुण्डली नं १२७

कुण्डली नं 127 एक उच्च शिक्षा प्राप्त तथा "सर" की उपाधि प्राप्त व्यक्ति की है। यहां पर नवम भाव में भाग्येश बुध उच्च का होकर स्थित है। यहां पर साथ नीच भंग प्राप्त शुक्र है जो कि इस कुण्डली में योग कारक ग्रह है उससे इसकी युति इस भाव को बहुत सशक्त कर रही है। जातक विदेश रहा तथा अच्छा नाम अर्जित किया।

10. दशम भाव में नवमेश यदि हो तो ऐसा जातक बहुत प्रसिद्ध तथा शक्तिशाली होता है। वह उच्च पद प्राप्त करता है।तथा जातक बहुत प्रसिद्ध तथा शक्तिशाली होता है। वह उच्च पद प्राप्त करता है। इस जातक को किसी भी वस्तु की कमी नहीं रहती है। यह जातक अच्छे कर्मों द्वारा धन कमाता है।

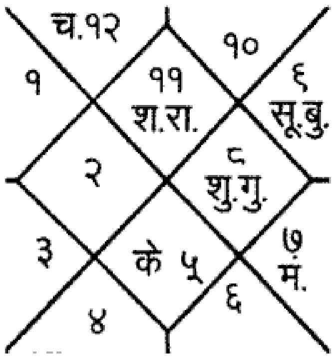

कुण्डली नं १२८

कुण्डली नं 128 पाकिस्तान के प्रथम प्रधा.. मंत्री श्री जिन्ना की है। यहां पर नवमेश दशम भाव पर है तथा दशमेश नवम भाव पर है। यह राशि परिवर्तन इनकी कुण्डली को और सशक्त बना रहा है।

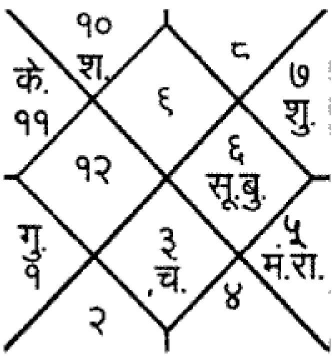

कुण्डली नं १२६

कुण्डली नं 129 पूर्व प्रधान मंत्री श्रीलाल बहादूर शास्त्री जी की है। यहाँ पर नवमेश दशम स्थान में स्थित है। तथा दशमेश बुध जो कि उच्च का होकर दशम में ही स्थित है यह योग इतना सशक्त हुआ कि एक निर्धन परिवार में जन्मा व्यक्ति भारत का प्रधान मंत्री बना।

11 एकादश भाव में नवमेश हो तो जातक बहुत धनी होता है। ऊँचे पद वालों का मित्र व उन से लाभ पाने वाला शुभ कर्म करने वाला प्रसिद्ध होता है। उसके पिता बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति होते हैं।

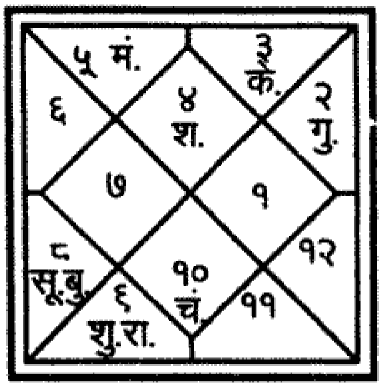

कुण्डली नं १३०

कुण्डली नं 130 स्व श्रीमति इन्द्रिरा गांधी जी की है। यहाँ पर नवमेश एकादश भाव में स्थित है। नवमेश भाव का फल पूर्णतः इस कुण्डली में देखा जा सकता है।

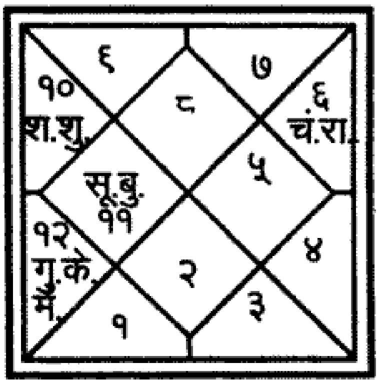

कुण्डली नं १३१

कुण्डली नं 131 रूस के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री कोसीगन की है। आप ही ने भारत और पाकिस्तान के मध्य ताशकंद समझौता करवाया था। यहाँ पर नवमेश चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है।

12 द्वादश भाव में नवमेश होने पर मिश्रित फल देखे गए हैं। कई ग्रन्थकार तो यहां पर नवमेश की स्थिति को बुरा मानते हैं। उनके अनुसार जातक निर्धन होता है। उसे सफलता नहीं मिलती। हमारे अनुभवानुसार तथा इस ग्रन्थ के प्रणेता आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ अनुसार भी व्यय भाव में उच्च, स्वराशि, मित्र राशि का नवमेश यश, कीर्ति व धन प्रदान करता है। ऐसा जातक विदेशों में मान सम्मान पाता है। या बहुत बड़े उद्योग द्वारा भी धन प्राप्त करता है। ऐसा जातक व्यय भी करता है। तथा धननाश भी हो जाता है।

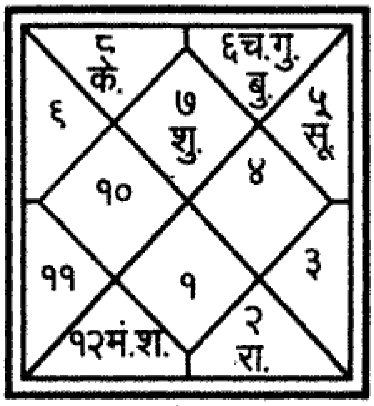

कुण्डली नं १३२

कुण्डली नं 132 स्व श्री अन्नादुरई जी की है आप डी. एम . के पार्टी को जन्म देने वाले तमिल नाडू के सबसे लोकप्रिय नेता रहे। यहाँ पर नवमेश उच्च का होकर द्वादश भाव में बैठा है। नवमेश का मात्र द्वादश भाव में होने से भाग्यहीन नहीं होता श्री पी.वी.नरसिम्हा राव जी की कुण्डली में भी नवमेश व्यय भाव में देखा जा सकता है।

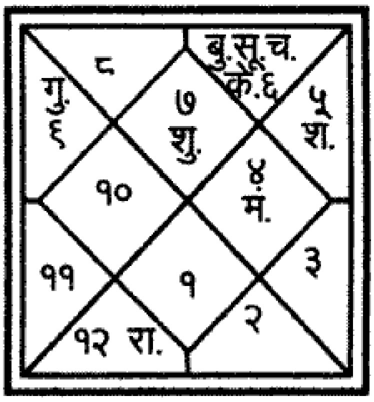

कुण्डली नं १३३

कुण्डली नं 133 के जातक का जन्म सितम्बर 1949 को हुआ। यह जातक एक बहुत ही बड़ा उद्योग पति है। यहाँ पर भाग्येश उच्च का होकर व्यय भाव में स्थित है। जैसा कि कहा गया है कि ऐसा जातक धनी व बडे उद्योग लगाता है।

10

धन योग प्रकरणं

लग्नाधियोग

**सौम्यः समैरूपचयालपगै र्विलग्नाद बह्वर्थवान हिमकराद धनवों स्तथैव।
एकेनचाल्पविभवस्त्वथ मध्यवित्तो द्वाम्यादिमं प्रबलतोऽपर केष्वसत्सु।।**

लग्न से उपचय स्थान में सब शुभ ग्रह हों तो अन्य अशुभ योगों के होते हुए भी मनुष्य बहुत धनी होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा से भी उपचय स्थानों में सभी शुभ ग्रह हों तो भी धनी होता है। लग्न तथा चन्द्रमा से उपचय स्थान में एक शुभ ग्रह हो तो अल्प धनी दो शुभ ग्रह हो तो मध्यम धन देने वाला होता है।

उपरोक्त श्लोक से इस बात की पुष्टि होती है कि धन के सन्दर्भ में लग्न कि विशेष भूमिका होती है। जन्म लग्न व चन्द्र लग्न दोनों को भलि भांति देखकर ही विद्वान फलादेश कहते हैं। जैसा कि उपरोक्त कहा गया है कि इन दोनों लग्नों में से किसी भी एक लग्न से उपचय स्थान अर्थात 3, 6, 10, 11 वें भाव में शुभ ग्रह होने पर सभी प्रकार के अशुभ योग निष्फल हो जाते हैं। उसी प्रकार यदि इन लग्नों पर पापी ग्रह का प्रभाव हो या यह निर्बल हो तो धन योग होने पर भी पूर्ण फल नहीं दे पाते हैं।

धन का जन्म लग्न व चंद्र लग्न से घनिष्ठ संबंध पाया गया है। तभी तो शास्त्रों में लग्नाधियोग व चंद्रलग्नाधियोग को महत्व पूर्ण माना गया है।

**विलग्नतो वीतमलै रूजावधुविनाश गैर्नान्वितलोकितैः खलैः।
नाग्नेय खेटैर्वसुधातलो पर्गैर्लग्नाधियोगो मुनिमिर्निगद्यते।।**

लग्न से षष्ठ सप्तम एवं अष्टम भाव में शुभ ग्रह हो तथा वह पाप ग्रहों से युक्त या द्रष्ट न हो तथा चतुर्थ स्थान में भी कोई पाप ग्रह न हो ता इस प्रकार के योग को लग्नाधियोग कहा जाता है।

जिस प्रकार जन्म लग्न से षष्ठ सप्तम तथा अष्टम में शुभ ग्रह होने पर लग्नाधियोग कहा जाता है उसी प्रकार चंद्रमा से षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम में शुभ ग्रह होने पर तथा इन पर पाप ग्रहों का प्रभाव न होने पर चंद्रलग्नाधियोग कहा जाता है। यह दोनो योग मनुष्य को धनवान कीर्तिवान एवं गुणवान बनाते हैं। सारावलीकार के अनुसार भी इन दोनों के महत्व को समझने का प्रयास करे।

गणेत्तमे लग्ननवाशं कोग्दमें निशाकरश्चापि गणेत्तमेंऽथवा।
चतुर्ग्रहै चंद्र विवर्जितैस्तदा निरीक्षितः स्यादधमोद् भावों नृपः।।

अर्थात लग्न के नवांश का स्वामी शुभ एवं उत्तम वर्गों (षडवर्ग) में स्थित हो या चंद्रमा षडवर्गो में उत्तम हो या लग्न को चंद्रमा के अतिरिक्त चार ग्रह देखते हो तो गरीब घर में भी जन्मा व्यक्ति राजा के समान होता है। इस संबंध में पूर्व में दी गई कुण्डली नं 8 को देखें जहां पर लग्नाधियोग बना है तथा इस पर पाप प्रभाव होने पर जातक गरीब परिवार में जन्म लेकर भी महाधनी बना। चन्द्राधियोग के लिए कुण्डली नं 134 को देखें।

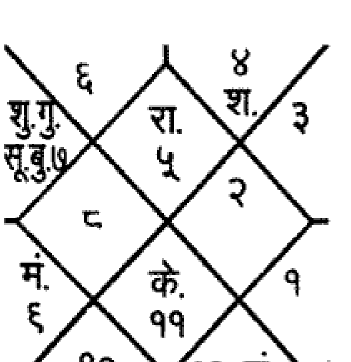

कुण्डली नं १३४

कुण्डली न.134 एक ऐसे जातक की है। जिसको अपनी बड़ी बहन द्वारा काफी धन व सम्पति मिली वैसे भी इस जातक ने अपने जीवन में बहुत धन अर्जित करा। यहां पर चंद्रमा से अष्टम भाव में तीनों शुभ ग्रह स्थित हैं। तथा चंद्रमा से चतुर्थ में पाप ग्रह भी नहीं है। परन्तु चंद्रमा पर मंगल की द्रष्टि अवश्य पड़ रही है। यह कुण्डली चंद्रलग्नाधियोग का एक उत्तम उदाहरण है।

मारारिमृत्युषु शुभैः शशिनौऽधियोग सेनेशमंत्री नृपजन्मभवेत्सवीर्य्यैं।
एश्वर्यसौख्यसहिता निहतारिपक्षावीतामया गतभयाविपुलायुषः स्युः।।

चंद्रमा से यदि बलवान शुभ ग्रह षष्ठ सप्तम एवं अष्टम में से किसी भी एक स्थान में हो तो उक्त योग में सेना के स्वामी का जन्म होता है। यदि उक्त तीनों में से किसी दो में जन्म हो तो राजमंत्री का जन्म होता है। तीनों में होने पर राजा का जन्म होता है। इन सभी योगों में जन्मा व्यक्ति ऐश्वर्य तथा सुख से भरपूर रहता है।

उपरोक्त चंद्रलग्नाधियोग का फल जातक को अवश्य मिलता है। यह फल निर्भर करता है कि यह योग कौन से पक्ष में बना है। अतः चंद्रमा के बल का इसमें बहुत महत्व होता है। जैसे कि कृष्ण पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की पचंमी तक चंद्रमा क्षीण रहता है। इसी प्रकार यह भी देखना चाहिए कि दिन का जन्म है या रात का जन्म है क्योकि दिन के जन्म में शुक्ल पक्ष का चंद्रमा अशुभ फल करता है। तथा रात के जन्म में शुक्ल पक्ष का चंद्रमा शुभ फलदेता है। इस से विपरीत फल कृष्ण पक्ष के चंद्रमा का होता है।

सुनफा, अनफा एवं दुरुधरा योग

यह तीनों योग चंद्रमा को लग्न मान कर ही माने जाते हैं। इन योगों का धन, मान, यश आदि पर स्थूल परिणाम देखने को मिलता है। इन योगों के परिहार भी है। यदि चंद्रमा से दूसरे भाव में सूर्य को छोड़ कोई अन्य ग्रह हो तो उसे सुनफा योग कहते है। इसी प्रकार चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य को छोड़ कोई भी ग्रह हो तो उस को अनफा योग कहते है। यदि चंद्रमा से दोनों ओर कोई ग्रह हो तो उसे दुरुधरा योग कहते हैं।

योगोभवेद्यदिजनौ सुनफाभिधानः प्रज्ञाधिकः सुकृतवान सचिवः कृती सः।
ख्यातोजनेषु सकलेषु सदा विशाल कीर्तिर्धनेन सहितः स्वाभुजार्ज्जितेन।।

जिस पुरुष के जन्म समय में सुनफा योग होता है। वह मनुष्य बुद्विमान, मंत्री प्रसिद्ध होता है। वह व्यक्ति अपने बाहुबल से धन कमाता है।

योगेऽनफाख्ये जनितो विनीतः सद्वाग्विलासः शुभशीलयुक्तः।
प्रभुः सदामन्मथतुष्ट चेता गुणैः समेतः समुदारकीर्तिः।।

अनफा योग में जो उत्पन्न हो वह नर्म स्वभाव का उत्तम वाणी सुखी तथा उदार होता है।

योगोजनौ दौरूधराभिधानः सीमन्तिनीसक्तमना मनुष्याः।
नित्यं हतारातिजनः शुभार्थ सत्कुंजरेलाहय सौख्य युक्तः।।

जिसके जन्म में दुरूधरा योग हो वह मनुष्य शौकीन प्रकृति, शत्रुओं का नाश करने वाला धनी, नौकर चाकर युक्त तथा कई वाहनों, पशुओं का स्वामी होता है।

यहां पर पाठक गणों को हम केमदुम योग के बारे में भी बताना उचित समझते हैं। जब चन्द्रमा के दोनों ओर कोई भी ग्रह न हो तो उसे केमदुम योग करते हैं। इस योग में जन्मे जातक को भाग्यहीन माना जाता है। यह जातक अपने जन्म स्थान से दूर वास करता है। दास, उत्तम धन व स्त्री सुख कम ही मिलता है। इस योग का परिहार भी होता है।

1. यदि चन्द्रमा से या लग्न से केन्द्र में कोई भी ग्रह स्थित हो तो यह योग भंग हो जाता है।
2. चन्द्रमा के साथ कोई शुभ ग्रह हो तथा गुरू उसे देख रहा हो।
3. केन्द्र स्थित शुक्र को गुरू देख रहा हो।
4. चन्द्रमा केन्द्र में हो और गुरू देख रहा है।

इन योगों के होने पर केमद्रुम योग भंग हो जाता है अर्थात कुछ बुरा प्रभाव कम कर देता है। यदि यह भंग नहीं हो रहा है तो राजा के घर जन्मा व्यक्ति भी रंक बन जाता है। केमद्रुम भंग के योग को समझने के लिए कुण्डली नं 1 व कुण्डली नं 2 जो कि हमारे देश के सबसे दो धनी लोगों की है। 1. जे. आर. डी. टाटा की तथा दूसरी श्री घनश्याम दास बिरला जी की है। इन दोनों कुण्डलियों में केमद्रुम योग हैं परन्तु इन दोनों में ही यह योग भंग है। दोनों कुण्डलियों में केन्द्र में गुरू व शुक्र स्थित है दुरूधरा योग की कुण्डली के लिए देखें कुण्डली नं 3 जो कि एक और महाधनी व्यक्ति रिलायंस कम्पनी के स्वामी श्री धीरूभाई अम्बानी की है। यहां पर चन्द्रमा के दोनों ओर सूर्य को छोड़ ग्रह स्थित है। यह इस योग का उत्तम उदाहरण है।

खेशेऽब्जान्मुखकेन्द्रकोण ग्रहगे रत्नव्रजैमण्डितः
कौवित्तभरणान्वितो जलगतोऽब्जाक्रान्तराशीश्वरः।
कुर्याद्वस्तिमुखं विचित्रभवनं पुण्यं मुदं भूमिपाद
द्रव्यं सन्ततिकामिनी हितयशोमुक्तादिकं किंकरम्।।

जन्म चन्द्र राशि से दशम स्थान का स्वामी यदि जन्म लग्न से द्वितीय केन्द्र या त्रिकोण में हो तो वह व्यक्ति धनी, भूषण, रत्नों आदि से युक्त होता है। यदि चन्द्र राशि का स्वामी चतुर्थ स्थान में हो तो राजा या सरकार द्वारा लाभान्वित होता है। उसके विचित्रगृह होते हैं तथा कीर्त्ति युक्त होता है।

इस योग को समझने के लिए कुण्डली न. (1) व कुण्डली न. (3) को पुनः देखें। यहाँ पर श्री टाटा की कुण्डली में चंद्रराशि का स्वामी शनि है जो कि चंद्र से युक्त हो कर केन्द्र से दशम में स्थित है। कुण्डली न. (3) जो कि श्री धीरूभाई अम्बानी जी की है इसमें चंद्रमा राशि का स्वामी गुरू है जो कि लग्न से दशम भाव में स्थित है। इस प्रकार यह योग धनी योगों में सर्वोपरि माना जा सकता है।

गज केसरी योग

योगोऽसो गजकेसरी शशभृतः केन्द्रस्थ इन्द्रार्च्चितः
किं द्रष्टे हिमभान्सि हेभ्न्गुरू भैर्मूढाधरो नैस्तथा।
मर्त्यस्तत्र भवो भवेद गुणयुतस्तेजो ऽर्थधान्यान्वितो
मेधावी वसुधाधिभूप्रियकरः प्राहुस्त्विति प्राक्तनाः।।

जिस स्थान में चंद्रमा हो उस से केन्द्र स्थान में गुरू हो अथवा नीच राशि एवं अस्तगत सहित हो तथा वह गुरू शुक्र व बुध द्वारा द्रष्ट होने पर गजकेसरी योग बनता है। इस योग में जन्मा व्यक्ति गुणी धनी उच्च पदाधिकारी राजा व मंत्री होता है।

यह योग प्रायः सभी धनी गुणी उच्च पदाधिकारी की कुण्डली में देख सकते है पुनः देखे कुण्डली न. (1) तथा कुण्डली न. (3) जहाँ पर यह बना हुआ है। प्रायः सभी राजनीतज्ञों की कुण्डली में यह योग देखने को मिलता है। इसको समझने के लिए देखें कुण्डली न. 135।

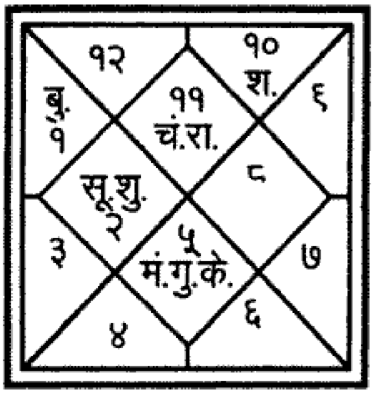

कुण्डली नं १३५

कुण्डली न. 135 हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री एच. डी. देवेगोडा जी की है। यहाँ पर चंद्रमा लग्न में स्थित है। तथा इससे सप्तम भाव में गुरू स्थित है। यह गज केसरी योग बन रहा है। इस कुण्डली में आपको कई धन योग देखने को मिल सकते हैं। यहां चंदा गुरू के साथ मंगल होने पर धनवान योग बनता है। जिसका वर्णन हम धन भाव प्रकरण में कर चुके है।

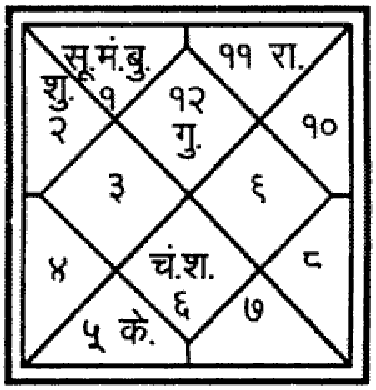

कुण्डली नं १३६

कुण्डली न. 136 आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चन्द्रबाबू नायडू जी की है। इस कुण्डली में भी गज केसरी योग बना हुआ है। हमारे अनुभव में यह देखने में आया है कि जिन जातको के केन्द्र में चंद्रमा व गुरू के एक दूसरे के आमने सामने आने पर जो गज केसरी योग बनता है। वह जातक निर्धन परिवार में जन्म लेकर भी एक उच्च पद या बड़ा व्यापारी या मंत्री अवश्य बनता है।

इस योग के अतिरिक्त चंद्रमा से त्रिकोण में आया गुरू भी इसी प्रकार के फल को देता है। पाठक इस तथ्य का जानने के इस ग्रन्थ में दिये कुण्डलियों का अध्ययन करके स्वयं इस तथ्य को अनुभव करें वैसे भी चंद्र से त्रिकोण में गुरू बुध हो तथा इससे त्रिकोण में मंगल होने पद **शारदा योग** बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति मंत्री होता है।

कला।

इस योग में यदि लग्न या चंद्रलग्न से द्वितिय या पंचम में गुरू हो तथा वह बुध, शुक्र से द्रष्ट, या गुरू इन की राशि में स्थित हो तो कलानिधि योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक बहुत ही गुणी तथा राजा से सम्मानित होता है। या राजा समान होता है। इस योग को समझने के लिए भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई की कुण्डली को देखें।

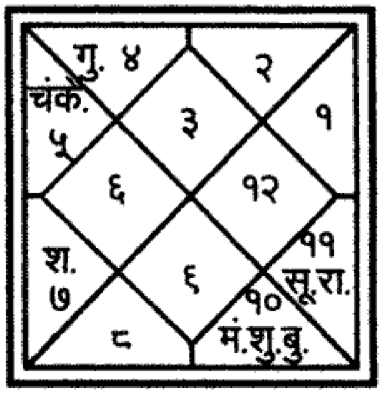

कुण्डली नं १३७

कुण्डली न. 137 भूतपूर्व मंत्री स्व. श्री मोरारजी देसाई की है। यहाँ पर लग्न से द्वितीय स्थान में गुरू है। तथा यह गुरू बुध व शुक्र द्वारा द्रष्ट है। यह कला निधि योग है। इस योग को और समझने के लिए इन्दिरा गांधी जी की कुण्डली को देखें।

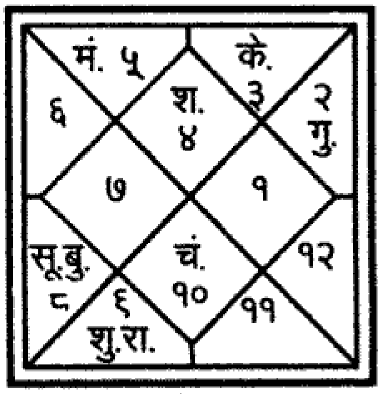

कुण्डली नं १३८

कुण्डली न. 138 स्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी जी की है। यहां पर चंद्रमा से पंचम स्थान में गुरू शुक्र की राशि में स्थित है। इस गुरू को पंचम भाव स्थित बुध पूर्ण द्रष्टि से देख रहा है। अतः यह कलानिधि का उत्तम उदाहरण है।

पारिजात योग

लग्नेश की राशि का स्वामी जिस राशि में या जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि उच्च का होकर केन्द्र, त्रिकोण में बैठा हो उसे पारिजात योग कहते है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति निर्धन परिवार में जन्म लेकर मध्य तथा अन्त्य अवस्था में सौख्यवान तथा राजा द्वारा पूजा जाता है। यह योग भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री पी.वी.नरसिम्हा राव जी कि कुण्डली में देखा जा सकता है।

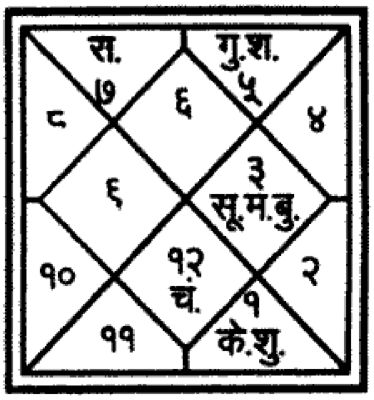

कुण्डली नं १३६

कुण्डली न. 139 भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव जी की है। यहां पर लग्नेश बुध है। तथा यहां दशम भाव मिथुन राशि है जिस का स्वामी भी बुध ही होता है जो कि स्वराशि में दशम भाव में है। यह परिजात योग बन रहा है।

श्रीनाथ योग

स्वोच्चे कान्ता भावपे कर्म्मयाते युक्ते तीर्थस्वामिना खेशी योगः।
श्रीनाथाख्यः सत्यप्रदोऽसौ भवोऽस्मिन्मर्त्यः पृथ्वीपालकः शक्रतुल्यः।।

सप्तमेश अपनी उच्च राशि में स्थित होकर दशम स्थान में हो तथा दशम स्थान का स्वामी नवमेश से युक्त हो तो इस योग में उत्पन्न व्यक्ति राजा या राजा के समान होता है।

यह योग किसी निर्धन के भी पड़ा हो तो वह राजा या सरकार में सर्वोच्च पद पाता है। इस योग को समझने के लिए हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्व. श्री लाल बहादुर शात्री जी की कुण्डली को पुनः देखें। यह योग पूणर्तः धनु लग्न में ही बन पाएगा क्योंकि सप्तमेश उच्च का होकर दशम स्थान में स्थित होना मात्र इसी लग्न में हो सकता है। इस योग को प्रत्यक्ष रूप से फलित होते हुए तो श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की कुण्डली में हीं देखा जा सकता है। देखें कुण्डली नं 140।

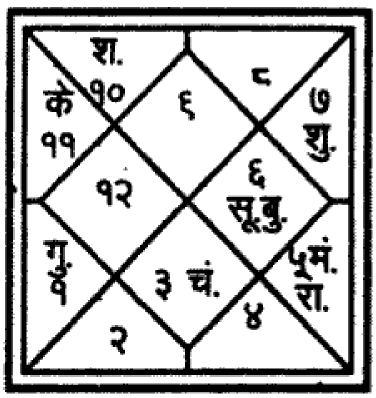

कुण्डली नं १४०

कुण्डली नं 140 हमारे भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की है। इस कुण्डली में सप्तमेश बुध उच्च राशि में होकर दशम भाव में बैठा है तथा इसकी युति नवमेश सूर्य के साथ बनी है।

यही "श्री नाथ योग" होता है। एक गरीब परिवार में जन्म लेकर भारत का प्रधान मंत्री बनाने वाला कोई साधारण व्यक्ति नहीं हो सकता। वैसे तो आप की कुण्डली में कई अन्य योग भी है जिनके कारणवश आपका नाम अमर रहेगा।

लक्ष्मी योग

यदि जन्म लग्न का स्वामी बलयुक्त होकर मूल त्रिकोण राशि में हो तथा नवमेश केन्द्र या परमोच्च राशि में हो तो लक्ष्मी योग बनता है। इस योग में जन्मा व्यक्ति भी राजा होता है तथा धनी होता है। धन भी इतना होता है कि उसका नाम विश्व के महाधनियों में आ जाए।

इस योग का सबसे उपयुक्त उदाहरण तो विश्व के कम्प्यूटर किंग माइक्रोसोफ्ट कम्पनी के स्वामी श्री बिल गेटस की कुण्डली ही है। देखें कुण्डली नं 141।

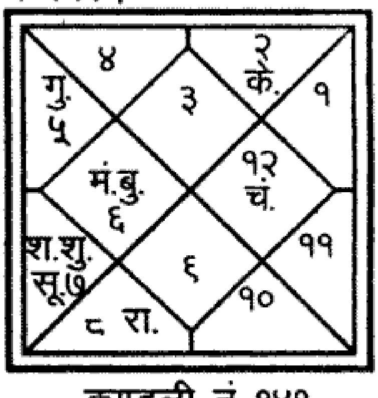

कुण्डली नं १४१

कुण्डली नं 141 अमरीका का वर्त्तमान में सबसे धनी व्यक्ति माइक्रोसोफ्ट कम्पनी के स्वामी श्री बिल गेटस की है। आप मात्र 40 वर्ष की आयु में ही विश्व के महाधनी व्यक्तियों में हैं। एक साधारण परिवार में जन्मे श्री गेटस एक कम्प्यूटर कम्पनी की स्थापना कर विश्व में सबसे बड़ी कम्प्यूटर कम्पनी के स्वामी बने। इस कुण्डली में लग्नेश उच्च राशि का होकर चतुर्थ स्थान में है तथा नवमेश उच्च राशि का होकर पंचम भाव में स्थित है। यह एक लक्ष्मी योग बना। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति महाधनी बनता है।

विपरीत राज योग

यदि द्वादश भाव का स्वामी षष्ठ, अष्टम भाव में हो या अष्टम भाव का स्वामी षष्ठ, द्वादश भाव में हो या षष्ठ भाव का स्वामी अष्टम या द्वादश में हो तो इस योग के कारण मनुष्य महाधनी बनता है। यह योग प्रायः सभी धनी व्यक्तियों की कुण्डली में देखा जा सकता है। देखें कुण्डली नं 3 श्री धीरूभाई अम्बानी जी की कुण्डली में षष्ठेश शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। वैसे भी शुक्र का द्वादश भाव में बैठना अच्छा होता है। श्री घनश्याम दास बिरला जी की कुण्डली नं 2 मे देखें तो द्वादश भाव का स्वामी शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह भी विपरीत राज योग कहलाता है। कुण्डली नं 4 को भी देखें। यहां पर अष्टम भाव का स्वामी शनि द्वादश भाव में स्थित है। आइये इस योग को समझने के लिए एक अन्य कुण्डली का अध्ययन करते हैं।

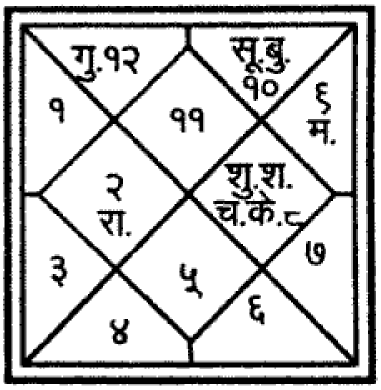

कुण्डली नं १४२

कुण्डली नं 142 प्रसिद्ध महाधनी व्यक्ति श्री विष्णु हरि डालमिया जी की है। आपका जन्म जनवरी 1928 में हुआ। यहां पर अष्टम भाव का स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह विपरीत राज योग है। प्रायः इस योग में उत्पन्न व्यक्ति व्यापारी होता हैं पर इस का मतलब यह नहीं लेना चाहिए कि अन्य लोगों की कुण्डली में यह नहीं पाया जाता। यह एक उत्तम धन योग होता है। यह योग आपको श्री मोरारजी देसाई जी की कुण्डली में भी मिलेगा। देखो कुण्डली नं 137

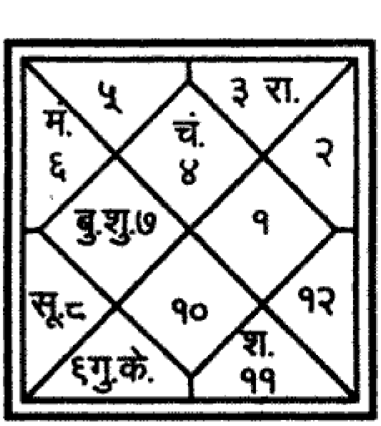

कुण्डली नं १४३

कुण्डली नं 143 स्व. पं. जवाहर लाल नेहरू जी की है यहां पर षष्ठ भाव का स्वामी गुरु षष्ठ भाव में ही है तथा अष्टम भाव का स्वामी अष्टम भाव में ही है अतः यह कुण्डली भी विपरीत राज योग में ली जा सकती है। जहां तक धन का प्रश्न है, नेहरू जी का जन्म ही धनी

परिवार में हुआ था।

इस योग के विषय में हम पाठकों को यह बताना भी चाहेंगे कि प्रचुर धन प्राप्ति के लिए इन भावों के स्वामी को निर्बल एवं पाप प्रभाव में होना आवश्यक है। जिस प्रकार शुभ भावों को बली होना आवश्यक है उसी प्रकार इन तीनों भावों के स्वामी को निर्बल होना भी उत्तम है। इसको समझने के लिए एक कुण्डली का अध्ययन करते हैं।

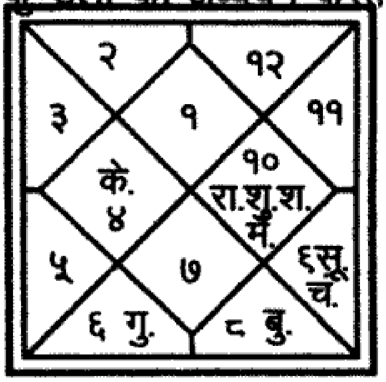

कुण्डली नं १४४

कुण्डली नं 144 एक महाधनी व्यक्ति की है। इस कुण्डली में बुध दो अशुभ स्थान तृतीय व षष्ठ भाव का स्वामी होकर अष्टम भाव में स्थित है। यह बुध अपने शत्रु की राशि में भी स्थित है तथा केतु द्वारा पाप प्रभाव में है। षष्ठम भाव में स्थित है अतः यहां पर दो त्रिक स्थानों के स्वामी विपरीत राज योग बना रहे हैं। यदि तीनों स्थानों के स्वामी ऐसा योग बनाते है तो और धन प्राप्त होता है।

पंच महा पुरुष योग

स्वर्क्षोच्चगाः केन्द्रगताः कुजाद्यावीर्य्यैरूपेता क्रमशः प्रदिष्टाः।
योगा मुनीन्द्रैं रूचभद्रहंसा मालव्यकाख्यः शशनामधेयः:।।

बलवान भौम आदि पांचों ग्रह अपनी राशि या उच्च राशि के होरक केन्द्र स्थान में स्थित हो तो क्रम से रूचक, भद्र, हंस, माजण्य और शश योग बनता है।

इस योग में सूर्य तथा चन्द्रमा को छोड़ अन्य पांच ग्रहों में से भी एक ग्रह योग बना रहा है तो हम कह सकते हैं कि यह महा पुरुष योग है, यदि दो ग्रह बना रहे हैं तो दो ग्रहों का महा पुरुष योग बना है इस योग में चार ही महा पुरुष

योग बन सकते हैं। प्रत्येक ग्रह के अनुसार भिन्न भिन्न योग फल होता है।

रूच योग फल

**सेनाश्वाधिपतिर्धनी रूचभवः शीलेन कीर्त्यो युतो
मर्त्येशः किमु तत्समः सह नभोऽगाब्दायुषा स्यात्सुखी
भास्वतुल्यरूचिः सुकोमल तनु लविण्युक्त मंत्र विच्छास्त्रगो
बलवांस्त पोजपकरो दानी जितारातिकः।।**

रूचक योग (केन्द्र में स्वराशि या उच्च का मंगल) में उत्पन्न व्यक्ति धनवान, सेना तथा धोड़ों को स्वामी कीर्ति से युक्त राजा या राजा के तुल्य अत्यन्त कोमल शरीर, सौन्द्रर्य युक्त मंत्र तथा शास्त्रों का ज्ञाता होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति शत्रुओं को वश में करने वाला होता है।

इस योग को समझाने के लिए हमें सरदार वल्लभ भाई पटेल जी की कुण्डली का अध्ययन करना चाहिए आपकी कुण्डली में एक नहीं तीन तीन महापुरूष योग है। यहां रूचयोग मंगल के द्वारा सप्तम भाव में बन रहा है। अन्य दो शश व मालव्य योग भी बन रहे है।

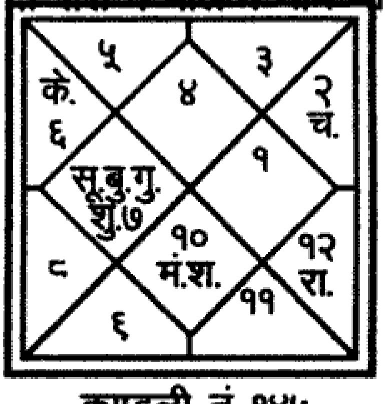

कुण्डली नं १४५

कुण्डली न. 145 स्व. सरदार बल्लभ भाई पटेल जी की है। यहां पर सप्तम भाव स्थित मंगल रूच योग को बना रहा है। इस कुण्डली में शुक्र द्वारा मालव्य योग भी बन रहा है। तथा शनि द्वारा शश योग भी बनता है। आपकी महानता पर क्या लिखें।

भद्रयोग फल

**शार्दुलतुल्यपनो धनवान यशस्वी मानी मतंग जगतिः शुभ वृत्त बाहुः।
बन्धुपकारनिरतो नृपतिर्बृहद्धी जींवेत्स भद्र जनितः शरदामशीतिः।।**

भद्र योग (केन्द्र में स्वराशि या उच्च राशि का बुध) में उत्पन्न व्यक्ति धनी,

विद्वान, यशस्वी, मानी, मस्त चाल वाला, उत्तम चरित्र, उपकार करने वाला होता है।

यह योग हमने प्रायः कई महान लेखकों या महाधनी व्यक्ति की कुण्डली में भी देखे है। यह योग होने पर व्यक्ति नाम अवश्य कमाता है। इस योग को आप स्व श्री लाल बहादुर शास्त्री की कुण्डली न. 140 में देखें कुण्डली न. 141 में श्री बिल गैट्स की कुण्डली में भी यही योग देखा जा सकता है।

हंस योग

हंसोदभवः स्मरसमो निपुणः सुपादो हंसस्वरोऽस्त्रवदनोन्नत तनासिकश्च। गौरांग एति गगनेभमिता द्वमायु श्लेष्मा सुखी तनय शास्त्र गुणांग नाढयः।।

हंस योग (केन्द्र में उच्च राशि या स्व राशि का गुरू) होने पर कामदेव तुल्य शरीर वाला, हंस के समान स्वर वाला, प्रवीण, सुन्दर पाद वाला, गौर वर्ण तथा धनी, नामी पुरूष होता है। यह योग यदि लग्न में पड़ता है तो अच्छा फल मिलता हैं। इस योग को समझने के लिए हम भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री वी. पी. सिंह की कुण्डली को देखें।

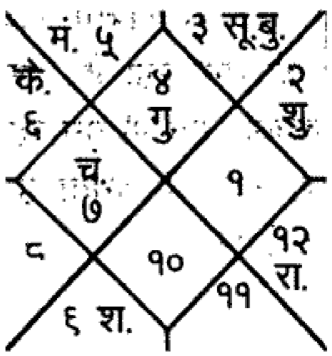

कुण्डली नं १४६

कुण्डली नं 146 भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री वी. पी. सिंह जी की है। इस कुण्डली मं उच्च राशि का गुरू लग्न में स्थित है। यह हंस योग का उत्तम उदाहरण है।

यह हंस योग कहलाता है। ऐसा गुरु लग्न में होने के कारण पंचम, सप्तम व नवम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। अतः यह योग अति उत्तम बना है। वैसे यह योग भगवान रामचन्द्र जी की कुण्डली में भी देखा जा सकता

है।

मालव्य योग

मालव्य जो बुधवरः परदारगामी योषास्वभावललितांग विलोचनश्च।
उत्साह शक्ति गुणयान सुतार्थदार तेजोयुतोऽगतुरगोन्मितमायुरेति।।

मालव्य योग (स्वराशि या उच्च राशि का शुक्र केन्द्र) में उत्पन्न व्यक्ति श्रेष्ठ, मनोहर शरीर परस्त्रीगामी, धनी एवं तेज युक्त होता है। यह योग आपको पंडित जवाहर लाल जी की कुण्डली में भी देखने को मिलेगा। इस योग में कई प्रसिद्ध फिल्म कलाकार भी हुए हैं देखें कुण्डली नं 100 जो कि श्री राजकपूर जी की है। यहां पर भी शुक्र अपनी राशि में केन्द्र में स्थित है। तथा साथ मे उच्च राशि का शनि एक अन्य महापुरूष योग "शश" योग बना रहा है।

शश योग

इस योग में उत्पन्न व्यक्ति बहुत भूमि का स्वामी होता है। वह मंत्री या उच्च अधिकारी व धनी होता है। ऐसा व्यक्ति अपने वचन कार्य में तत्पर होता है। इस व्यक्ति का तेजस्व सभी जगह पाया जाता है। बोलने में कुछ कटु होता है परन्तु बड़ा ही पक्का होता है। यह योग जानने के लिए देखों कुण्डली नं 147।

कुण्डली नं १४७

कुण्डली नं 147 श्री टी. एन. शेशन जी की है। यहां पर लग्न में शनि स्वराशि का है। अतः शश योग को बना रहा है। इस कुण्डली में एक अन्य योग मालव्य भी बन रहा है। दशम भाव में स्वराशि का शुक्र यह योग बना रहा है। श्री राज कपूर जी की कुण्डली में भी यही दोनों योग बने हैं।

इन योगो को पाठक भली भांति समझ गए होंगे। कुण्डली में यह योग जितनी अधिक मात्रा मे होंगे उतना ही अधिक प्रसिद्ध व धनी वह व्यक्ति होगा। अब आपके समक्ष हम भगवान रामचन्द्र जी की कुण्डली को रखते हैं यहां पर चारों केन्द्र स्थानों में उच्च राशि के ग्रह स्थित है अतः इस कुण्डली से इन योगों की पूरी कसौटी हो रही है।

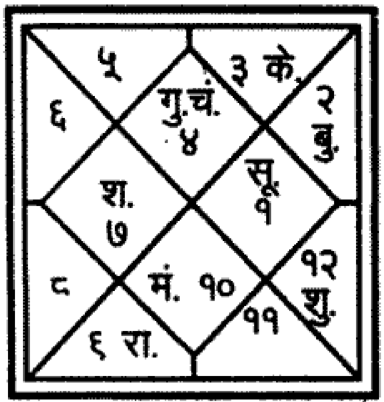

कुण्डली नं १४८

कुण्डली नं 148 भगवान रामचन्द्र जी की है। यहां पर हंस योग, शश योग, रूच योग बन रहा है। इस कुण्डली मं पांच ग्रह उच्च राशि में स्थित है। तथा चन्द्रमा स्वराशि में स्थित है। इस प्रकार की कुण्डली देखने को नहीं मिल पाती है। जब दो उच्च ग्रह आपस में एक दूसरे से केन्द्र में हो तो उन्हें कारकाख्या योग कहा जाता है। यह भी एक धन योग है।

समस्त साम्राज्याधिप योग

एकोऽपि केन्द्रेऽर्थभावांकपानां जनौ निशानायकतः स्वयं चेत।
वाग्मी भवागारविभुः समस्त साम्राज्यनाथत्व मुपैति जन्मी।।

यदि जन्म समय में चन्द्रमा से द्वितीय एकादश तथा नवम इन तीनों स्थान के स्वामी के मध्य में कोई एक ग्रह भी केन्द्र में हो तथा स्वयं गुरू यदि लाभेश हो तो वह प्राणी समस्त साम्राज्य के स्वामित्व को पाता है।

यह योग आपको पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जिन्ना की कुण्डली में मिलेगा या फिर श्री एच. डी. देवेगौड़ा भूतपूर्व प्रधानमंत्री जी की कुण्डली में भी देखा जा सकता है। या औरंगजेब की कुण्डली में भी देखा जा सकता है।

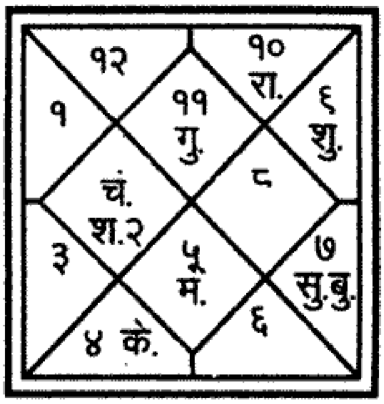

कुण्डली नं १४६

कुण्डली नं 149 श्री औरंगजेब की है। यहां पर चन्द्रमा से नवम एवं एकादश स्थान का स्वामी शनि तथा गुरू दोनों केन्द्र स्थान में स्थित है। तथा एकादश भाव का स्वामी स्वयं गुरू है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति राजा या सरकार में सर्वोच्च पद पाता है।

11

धनयोग प्रकरण

धन दायक योग

1. तुला या वृष राशि का शुक्र पंचम में हो तथा लाभ में शनि हो तो महाधनी होता है। यह योग आपको मिथुन एवं मकर लग्न की कुण्डली के जातक में देखने को मिलेगा।
2. पंचम भाव में सूर्य सिंह राशि का हो तथा लाभ भाव में गुरू हो तो महाधनी होता है। यह योग मात्र मेष लग्न के लिए ही है।
3. पंचम भाव में चन्द्रमा हो तथा स्वराशि में गुरू हो।
4. चारों केन्द्र स्थान में शुभ ग्रह हो।
5. लाभ भाव में शनि तथा कर्क राशि में बुध हो।
6. सिंह राशि सूर्य लग्न में हो तथा वह गुरू व मंगल से युक्त हो।
7. लग्न में स्वराशि का गुरू हो तथा वह चन्द्रमा और मंगल से युत हो।
8. लग्न में स्वराशि का बुध हो तथा शुक्र शनि युक्त या द्रष्ट हो।
9. लग्न में कर्क राशि का चन्द्रमा हो तथा वह मंगल व गुरू से द्रष्ट हो।
10. स्वराशि का मंगल लग्न में हो और वह बुध शुक्र या शनि से युक्त हो।
11. लग्न में स्वराशि का शुक्र हो और वह बुध तथा शनि से द्रष्ट हो या युक्त हो।
12. कन्या में राहु शुक्र शनि एवं मगल एक साथ हो।
13. धन भाव में शनि हो तथा बुध से द्रष्ट हो।
14. लाभ में शनि हो तथा कर्क राशि का चन्द्रमा पंचम भाव में हो।
15. धन में गुरू हो तथा वह शुभ ग्रह से द्रष्ट हो।
16. धन भाव में बहुत शुभ ग्रह हो।
17. धनेश जिस स्थान में हो उससे द्वितीय स्थान का स्वामी और लग्नेश ये दोनों केन्द्र में हो।

18. धन भाव में बुध शुभ ग्रहों से द्रष्ट हों।
19. धन स्थान में गुरू मंगल हो।
20. धन भाव में लाभेश तथा धनेश हो और लाभ में लग्नेश हो।
21. धन, लग्न व लाभ इन के स्वामियों का आपस में किसी भी प्रकार का सम्बन्ध बनने पर धनी होता है।
22. लग्न में बुध तथा शुक्र हो तथा धन स्थान में गुरू हो तो धनी हौता है। वैसे भी धन स्थान में गुरू का सम्बन्ध अवश्य धनकारी होता है।
23. द्वितीयेश एवं नवमेश केन्द्र गत होने पर जातक धनी होता है। इन पर शुभ प्रभाव अधिक होने पर बहुत धनाढ़्य होता है।
24. द्वितीयेश एवं पंचमेश चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो मनुष्य आजन्म धनी रहता है।
25. यदि चन्द्र व बुध सप्तम भाव में हो तथा गुरू व शुक्र अष्टम भाव में हो तो यह लग्नाधियोग बनता है तथा ऐसा जातक बहुत धनी होता है।
26. द्वितीय, एकादश, पंचम तथा नवम भाव के स्वामी एक साथ होने पर या द्रष्ट होने पर भी धनी बनता है।,
27. द्वितीयेश तथा पंचमेश या द्वितीयेश एकादशेश का राशि परिवर्तन धन देता है।
28. द्वितीयेश एवं लाभेश एक साथ लग्न में हो तो भी महाधनी बनता है।
29. चन्द्रमा यदि सप्तमेश हो कर द्वितीय भाव में स्थित हो तो जातक धनी होता है तथा डूबा धन वापस पाता है।
30. दशमेश यदि मिथुन या कन्या राशि में केन्द्र त्रिकोण में स्थित हो तो जातक धनी होता है।
31. गुरू धन भाव में, बुध शुक्र चतुर्थ भाव में तथा चन्द्र मंगल सप्तम भाव में होने पर महाधनी होता है।
32. दशम भाव में लग्नेश तथा लग्न में सूर्य हो तथा वह शुभ द्रष्ट हो तो धनी होता है।
33. द्वितीय भाव में चन्द्र गुरू हो तथा भाग्येश की इन पर द्रष्टि हो तो सरकार द्वारा बहुत धन व सम्मान मिलता है।
34. यदि गुरू व शुक्र बुध से एकादश स्थान में स्थित हो तो जातक अपने पिता से अधिक धन कमाता है।

35. इसी प्रकार का फल तब भी मिलता है यदि सूर्य धन भाव में हो तथा द्वादशेश पंचम भाव में हो।
36. पंचम तथा लाभ भाव में शुभ ग्रह होने पर भी धनी होता है।
32. लग्नेश के बलवान होने पर धन की कमी नहीं रहती। अतः लग्नेश बली होना चाहिए।
38. शनि तुला या वृष राशि का हो तथा शुक्र द्वारा द्रष्ट हो तो भी धनी होता है।
39. यदि धनेश, भाग्येश एवं लाभेश चन्द्रमा से केन्द्र मे हो तथा गुरू द्वारा द्रष्ट हो तो बहुत धनी होता है।
40. यदि भाग्येश पंचम भाव में गुरू द्वारा द्रष्ट हो तो धनी एवं भाग्यशाली होता है।
41. एकादश, नवम, लग्न तथा धन भाव के स्वामी जिस कुण्डली में उच्च राशि के हो तथा वैशेषिकांश में हो तो वह जातक टाटा, बिरला जैसा धनी होता है।
42. स्वराशि गत या उच्चराशि गत केन्द्र त्रिकोण या अष्टम में हो तो धनी होता है।
43. व्यय भाव मे बलवान गुरू, बुध, पूर्ण चन्द्रमा तथा शुक्र हो तो मनुष्य बहुत धन संग्रह करता है।
44. लाभेश केन्द्र या त्रिकोण में रहने पर भी धनी होता है।
45. चार ग्रह स्वराशि में या वे उच्च में हो तथा दो स्वराशि में हो तो महा धनी होता है।
46. मंगल भाग्य भाव में हो तथा शुक्र द्वारा द्रष्ट हो तो सम्पत्ति व धन के लिए मुकदमा अवश्य होता है।
47. लग्नेश तृतीयेश तथा गुरू जिस कुण्डली में उच्च के होगें वह जातक धनी होता है।
48. भाग्येश यदि तृतीय भाव में हो तथा गुरू द्वारा द्रष्ट हो तो भी धनी होता है।
49. एकादश भाव में शुक्र तथा भाग्येश होने पर धनी होता है।
50. पंचम भाव में शुक्र ग्रह की राशि हो तथा शुभ ग्रह से युक्त हो एवं लाभ में चन्द्र मंगल हो तो महाधनी होता है।
51. द्वितीयेश यदि द्वितीय भाव में या दशम भाव में हो तो जातक निधर्न परिवार में जन्म लेने पर भी बड़ा भाग्यशाली होता है।

कुण्डली मे उपरोक्त दिये गए योग जितनी अधिक मात्रा में उपलब्ध होगें। जातक उतना अधिक धनी होगा।

12

लग्नानुसार धन योग
मेष लग्न

मेष लग्न के लिए सूर्य सबसे अधिक धन कारक ग्रह होता है। शनि भी धन कारक होता है। शुक्र यदि शुभ प्रभाव में हो तो यह भी धन कारक हो सकता है। यदि इन लग्न वालों का शुक्र बलवान हो तो इन्हें स्त्री द्वारा धन प्राप्ति होती है। क्योंकि शुक्र यहां पर द्वितीय तथा सप्तम भाव का स्वामी होता है।

1. सूर्य तथा चन्द्रमा एक साथ होने पर राज योग बनाते हैं। अतः धनी होता है।
2. पंचम भाव में सूर्य तथा लाभ में गुरू होने पर महाधनी होता है।
3. चतुर्थ भाव गुरू मंगल का योग होने पर धन की प्राप्ति होती है। मंगल यहां पर नीच भंग राज योग बना रहा है।
4. मंगल शुक्र एक साथ सप्तम भाव में होने पर स्वयं का कमाया हुआ धन तथा भाग्य बनाता है।
5. लग्न में सूर्य तथा चतुर्थ में चन्द्रमा राजयोग बनाता है।
6. पंचम भाव में चन्द्रमा हो तथा नवम भाव में गुरू हो तो भी धन मिलता है।
7. धन भाव में गुरू शुक्र एवं बुध हो।
8. सूर्य बुध और शुक्र यदि एकादश भाव में हो अपनी दशा भुक्ति में धन देते हैं।
9. धन भाव में शुक्र एवं शनि हो तथा दशम भाव में गुरू के होने पर धनी होता है।
10. शुक्र द्वादश भाव में होने पर भी धनी रहता है। यहां पर द्वितीयेश का द्वादश में होने पर भी यह धनदायक है।
11. लग्न में सूर्य तथा चतुर्थ में गुरू धन भाव में शुक्र तथा तृतीय भाव में बुध होने पर जातक जन्म से ही धनी होता है।

वृष लग्न

वृष लग्न के लिए सूर्य, बुध एवं शनि धन कारक ग्रह है। सूर्य एवं बुध की युति इस लग्न वालों के लिए धनदायक है। शुक्र भी कोई बुरा फल नहीं देता। षष्ठ भाव में शुक्र होने पर भी शुभ फल ही देखे गए हैं। शुक्र बलवान होकर षष्ठ भाव से सम्बन्ध होने के कारण मौसी द्वारा लाभ मिलता है।

1. लग्न में बुध शुक्र एवं शनि होने पर धनी होता है।
2. लग्न में शुक्र सप्तम में बुध तथा एकादश भाव में शनि होने पर धनी होता है।
3. गुरू एवं बुध की युति या द्रष्टि भी होने पर धनी होता है परन्तु मंगल से द्रष्ट नहीं होना चाहिए।
4. लाभ भाव में या लग्न में या षष्ठ भाव में शुक्र होने पर इसकी दशा भुक्ति में धन पाता है।
5. धन भाव में बुध एवं शुक्र हो तथा अष्टम भाव में गुरू होने पर बहुत धनी होता है।
6. चन्द्रमा के लग्न में होने पर धनयोग नहीं होता है। पाठक ध्यान दें कि यह चन्द्रमा उच्च राशि में है फिर भी धन नहीं दे रहा है।
7. सूर्य बुध की युति पंचम भाव में हो तो यह अपनी दशा भुक्ति में धन दायक होते हैं।
8. पंचम भाव में बुध एवं गुरू हो तथा एकादश में चन्द्र मंगल की युति बहुत धनी बनाती है।
9. धन भाव में बुध होने पर सट्टे द्वारा या शेयर के द्वारा धन पाता है।
10. लग्न में मंगल तथा सप्तम में चन्द्र गुरू होने पर बहुत धनी होता है। यह व्यक्ति शेयरों द्वारा भी धन कमाता है।
11. पंचम भाव में राहु, शनि शुक्र तथा मंगल के होने पर बहुत धनी होता है।

मिथुन लग्न

शुक्र, बुध, चन्द्रमा तथा गुरू इस लग्न वालों के लिए धन दायक ग्रह होते हैं। शनि यदि कुण्डली में स्वराशि या मित्र राशि का होकर बैठा हो तो धन कारक होता है। उच्च का शनि होने पर अवश्य धन देता है।बुध के बलवान होने पर माता से धन मिलता है।

1. यदि चन्द्र, मंगल, तथा शुक्र धन भाव में हो तो शुक्र की दशा धन कारक होती है।
2. चतुर्थ में बुध तथा दशम में गुरू धनवान बनाता है।
3. शनि नवम भाव में हो तथा चन्द्र, मंगल एकादश भाव में हों।
4. पंचम भाव में शुक्र हो तथा लाभ भाव में शनि भी धनी बनाता है।
5. लग्न में बुध हो तथा वह शुक्र, शनि द्वारा युक्त या द्रष्ट हो।
6. धन भाव में गुरू, चन्द्र हो या फिर गुरू धन भाव में हो तथा शुभ ग्रहों से द्रष्ट होने पर बहुत धनी बनाता है।
7. धन भाव में गुरू, मंगल का योग धनी बनाता है। और यदि चन्द्रमा इसमें आ जाए ता महाधनी योग बन जाता है।
8. यदि मंगल धन भाव में हो तथा अष्टम भाव में चन्द्र शनि हो तो मंगल की दशा धन दायक होती है।
9. चन्द्रमा लाभ भाव में हो तथा मंगल धन भाव में होने पर सट्टे द्वारा धन कमाता है। इस जातक का धन कभी होता है तो कभी नहीं
10. दशम भाव में चन्द्र मंगल का योग होने पर धनी होता है।
11. चन्द्रमा, शुक्र एवं बुध की युति चतुर्थ भाव में होने पर जातक आजन्म धनी रहता है।

कर्क लग्न

सूर्य उच्च का या स्वराशि का होने पर धन कारक होता है, चन्द्रमा, मंगल बहुत धन कारक होते हैं। गुरू भी धन कारक होता है।

1. लग्न में चन्द्र, गुरू, मंगल का योग होने पर बहुत धनी होता है। या चन्द, गुरू ही लग्न में हो तो भी धनी होता है।
2. मात्र चन्द्रमा लग्न में हो तथा यह चन्द्रमा मंगल तथा गुरू से द्रष्ट हो तो भी धनी होता है।
3. पंचम भाव में सूर्य शुक्र हो तथा धन भाव में चन्द्र मंगल गुरू हो या योग हो तो भी धनी होता है।
4. सूर्य, मंगल दशम भाव में होने पर धनी होता है।
5. चन्द्र बुध तथा शुक्र एकादश भाव में हो गुरू लग्न में तथा सूर्य दशम में होने पर महा भाग्य योग बनता है।
6. शुक्र धन भाव में हो तथा सूर्य दशम में होने पर महाधनी बनता है। यह जातक शेयर बाजार से भी धन कमाता है।
7. बुध, शुक्र यदि द्वादश भाव में हो तो शुक्र की दशा धन दायक होती है।
8. चन्द्रमा लग्न में तथा सूर्य दशम में होने पर राज योग बनता है।
9. धन भाव में शुक्र हो तथा लाभ भाव में सूर्य व चन्द्रमा होने पर धनी होता है।
10. धन भाव में बुध हो तथा अष्टम में गुरू शुक्र होने पर धनी होता है।
11. चतुर्थ भाव में शुक्र एवं शनि हो तथा लग्न में चन्द्रमा गुरू होने पर भी धनी होता है।

सिंह लग्न

इस लग्न वालों के लिए सूर्य, मंगल तथा बुध धन दायक ग्रह है। शनि इस लग्न के लिए धन कारक हो सकता है। यदि यह मंगल के साथ द्वादश भाव में स्थित हो तो अपनी दशा अन्तरदशा में धन दायक होता है। शनि यहां पर षष्ठेश होकर द्वादश भाव में स्थित होने पर विपरीत राज्य योग द्वारा धन कारक होता है। इसकी युति योगकारक ग्रह मंगल के साथ द्वादश भाव में होने पर धन कारक होती है।

1. लग्न में सूर्य, मंगल, गुरू होने पर महाधनी होता है।
2. सूर्य, मंगल एवं बुध की युति इस लग्न वालों के लिए धन दायक होती है।
3. सूर्य, मंगल एवं बुध यदि लग्न में हो तो बुध की दशा में बहुत धन प्राप्त होता है।
4. धन भाव में बुध हो तथा लग्न या लाभ में सूर्य होने पर बहुत धनी होता है।
5. धन भाव में शनि व बुध होने पर भी महाधनी होता है। इस जातक को ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है।
6. पंचम भाव में गुरू मात्र से ही धनी होता है यदि लग्न, धन या लाभ में सूर्य, बुध की युति हो तो बहुत धनी होता है।
7. यदि गुरू नवम भाव में हो मंगल दशम भाव में हो तथा बुध एवं शुक्र लग्न या धन भाव में हो तो महाधनी होता है।
8. गुरू एवं शुक्र की युति पंचम भाव में होने पर धनी होता है।
9. दशम भाव में मंगल के होने पर सट्टे या शेयर से धन पाता है। यदि इसके साथ राहु भी हो तो राहु की दशा में शेयर बाजार से धन कमाता है।
10. धन भाव में बुध एवं शुक्र की युति हो तथा गुरू केन्द्र में होने पर बहुत धनी होता है।
11. तृतीय भाव में शुक्र हो तथा नवम भाव में मंगल के होने पर धन सम्बन्धी मुकदमा होता है तथा अन्त में धनी ही रहता है।

कन्या लग्न

इस लग्न वालों को शुक्र सर्वाधिक धन देने वाला ग्रह होता है। शुक्र द्वितीय तथा नवम भाव का स्वामी होता है। यदि शुक्र बलवान हो तो पिता से धन मिलता है। हमने स्त्री द्वारा भी धन पाते देखा है। सूर्य यदि शुक्र या चन्द्रमा से प्रभावित हो रहा है तो इसकी दशा भी धन देने वाली होती है। बुध की दशा भी धन कारक होती है। चन्द्रमा यदि बली हो तो इसकी दशा में धन मिलता है।

1. लग्न में शुक्र बुध के होने पर धन लाभ होता है।
2. लग्न में बुध तथा सप्तम भाव में शुक्र होने पर महाधनी योग बनता है।
3. लग्न में राहु शुक्र मंगल एवं शनि होने पर महाधनी होता है।
4. धन भाव में शनि होने पर तथा दशम भाव में गुरू एवं एकादश में चन्द्र सूर्य होने पर शेयर बाजार से धन कमाता है। मात्र उच्च का शनि धन या एकादश में होने पर शेयर बाजार से सम्बन्ध होता है।
5. पंचम भाव में शनि व लाभ में चन्द्रमा होने पर भी धनी होता है।
6. पंचम भाव में मंगल तथा लाभ में चन्द्र गुरू होने पर महाधनी होता है।
7. लग्न में बुध हो तथा शुक्र कुण्डली में शनि द्वारा युक्त हो या द्रष्ट होने पर धनी होता है।
8. लाभ भाव में चन्द्रमा लग्न मे बुध तथा धन भाव में शुक्र होने पर महाधनी होता है।
9. कन्या लग्न में बुध, शुक्र की युति यदि लग्न या दशम में हो जाए तो महाधनी होता है। इसी प्रकार चन्द्र शुक्र की युति भी केन्द्र स्थान में होने पर धनी बनाती है।
10. धन भाव या नवम भाव में शनि हो तथा शुक्र द्वारा द्रष्ट या युक्त हो तो धनी होता है।
11. पंचम में शनि व लाभ भाव में बुध होने पर भी धनी होता है।

तुला लग्न

तुला लग्न में जन्म लेने मात्र से ही प्रायः भाग्यशाली एवं धनी होता है।

तुलायां जायमानास्तु पुरूषो धनवान भवेत।
भाग्यवांश्चभवत्ये नवांशयो नास्थिवै ध्रुवम।।

(भावार्थ रत्नाकर)

इस लग्न में हमने भी प्रायः बड़े—बड़े व्यापारी या उच्च पदासीन यक्तियों तथा महाधनी व्यक्तियों का जन्म पाया है। इस लग्न वालों के लिए ानि सर्वाधिक धन देने वाला ग्रह होता है। बुध भी यदि कुण्डली में शुभ हो तो मच्छा धन प्रदान करता है। सूर्य यदि धनदायक ग्रहों के साथ सम्बध बना रहा ो तो धन के सम्बन्ध में शुभ फल प्रदान करता है।

मंगल धन सम्बन्धी फल दायक होता है। यदि बलवान हो तो स्त्री से न पाता है।

. लग्न में शुक्र हो तथा बुध एवं शनि द्वारा युक्त हो या द्रष्ट हो तो धनी होता है अथवा लग्न में शुक्र, सूर्य एवं बुध होने पर भी महाधनी होता है।

. तुला लग्न की कुण्डली में सूर्य शनि तथा बुध का कोई भी सम्बन्ध मंगल से होने पर वह मंगल बहुल धनकारी होता है।

. यदि सूर्य, शनि तथा बुध मंगल या चन्द्रमा से युक्त हो तो उत्तम राज योग बनता है।

लग्न में शनि तथा दशम में चन्द्रमा होने पर राज योग होता है।

अष्टम में गुरू, नवम में शनि तथा एकादश मे मंगल तथा बुध के होने पर एक प्रभावशाली राजयोग बनता है।

लग्न में बुध एवं शुक्र हो तथा धन भाव में गुरू के होने पर महाधनी होता है।

मात्र शनि के लग्न में होने पर ही जातक साधारण परिवार में जन्म लेने पर भी अच्छा स्तर बना लेता है।

दशम भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल की युति धनी बनाती है।

पंचम में शनि तथा लाभ भाव में बुध के होने पर धनी होता है।

10. नवम भाव में सूर्य तथा दशम में चन्द्रमा के होने पर शेयर बाजार से धन कमाता है।
11. धन भाव में चन्द, मंगल हो तथा दशम भाव में गुरू होने पर महा धनी होता है। मात्र चन्द्र मंगल होने पर ही धनी होता है। वैसे मंगल को धन भाव में निष्फल माना गया है। परन्तु चन्द्रमा के होने के कारण ऐसा नहीं हो रहा है।

वृश्चिक लग्न

इस लग्न वालों के लिए सूर्य चन्द्र गुरू धन देने वाले ग्रह होते हैं। मंगल व शनि अपनी स्थिति के अनुसार ही फल देते हैं।

1. वृश्चिक लग्न की कुण्डली में बुध एवं बृहस्पति का योग धनी बनाता है।
2. बुध व गुरू पंचम भाव में हो तथा चन्द्रमा के एकादश भाव में होने पर धनी बनाता है।
3. लग्न में मंगल हो तथा वह बुध शुक्र या शनि से युक्त हो।
4. धन स्थान में गुरू मंगल हो।
5. नवम भाव में चन्द, गुरू, केतु के होने पर गुरू की दशा में प्रसिद्धि तथा अधिकार मिलता है। मात्र चन्द्र गुरू होने पर ही धनी बनता है। यह जातक शेयर्स, कपड़ा कारखानों से धन भी कमाता है।
6. पंचम भाव में गुरू के होने तथा एकादश भाव में चन्द्र या मंगल के होने पर भी धनी बनता है।
7. धन भाव में बुध गुरू से होने पर धनी होता है।
8. इस लग्न की कुण्डली वालों के केन्द्र त्रिकोण में सूर्य चन्द्र की युति धनी बनाती है।
9. धन भाव में शुक्र हो तथा अष्टम में बुध हो तो भी धनी बनता है।
10. लाभ भाव में सूर्य एवं बुध की युति धन देती है।
11. तृतीय में शनि नवम में चन्द्र गुरू की युति होने पर धनी बनता है।

धनु लग्न

इस लग्न के लिए सूर्य तथा मंगल धन देने वाले ग्रह होते हैं। सूर्य बुध की युति होने पर बुध भी धन देने वाला ग्रह होता है। गुरू भी अपनी दशा भुक्ति में धन कारक होता है। इस लग्न वालों का शनि धन भाव तथा तृतीय भाव का स्वामी होता है। इस प्रकार इस जातक को छोटे भाई या बहिन से धन मिल सकता है।

1. धन एवं लाभ स्थान में शनि तथा अष्टम भाव में बुध धनी बनाता है।
2. लग्न में चन्द्र, मंगल, गुरू की युति महाधनी बनाती है।
3. सूर्य तथा शुक्र नवम भाव में हो तथा शनि एकादश भाव में होने पर धनी बनता है।
4. पंचम भाव में गुरू तथा एकादश भाव में बुध या शुक्र के होने पर भी धनी होता है यदि यह दोनों ग्रह हो तो महाधनी होता है।
5. दशम भाव में सूर्य बुध की युति धनी बनाती है।
6. सूर्य के पंचम भाव में होने पर धनी होता है। यदि इस सूर्य को गुरू की द्रष्टि पड़ रही हो तो महाधनी बनता है।
7. एकादश भाव में शुक्र, शनि की युति धनी बनाती है। यह व्यक्ति सट्टे से धन कमाता है।
8. लग्न में गुरू हो तथा पंचम भाव में चन्द्रमा होने पर महाधनी बनता है।
9. लग्न में गुरू और शनि हो तथा चतुर्थ में सूर्य के होने पर जन्म से ही धनी होता है।
10. धन भाव में मंगल होने पर धनी बनता है। यदि लग्न में बुध शुक्र हो तो भी धनी बनता है।
11. कुण्डली में सूर्य गुरू की युति केन्द्र त्रिकोण में होने पर धनी बनाती है।

मकर लग्न

इस लग्न की कुण्डली मे मंगल शुक्र तथा शनि धन देने वाले ग्रह होते हैं। इस लग्न वाला व्यक्ति प्रायः अपने आप ही धन कमाते हैं या फिर नीच प्रकृति वाले व्यक्तियों से धन पाते हैं।

1. पंचम भाव में शुक्र तथा लाभ में शनि धनी बनाता है।
2. लग्न में गुरू तथा लाभ में मंगल एवं शुक्र के होने पर गुरू की दशा में भाई से धन पाता है।
3. इसी प्रकार लग्न में सूर्य, चन्द्र तथा बुध हो तथा लाभ में मंगल, शुक्र होने पर भी भाई से धन पाता है।
4. शनि यदि दशम भाव में हो तो महाधनी होता है।
5. यदि लग्न में बुध तथा शुक्र हो पंचम में चन्द्रमा हो तथा यह चन्द्रमा गुरू द्वारा द्रष्ट हो तो महाराज योग बनता है।
6. यदि सूर्य या चन्द्रमा अष्टम भाव में शुक्र से युक्त हो तो यह जातक बाल्यकाल से धनी होकर स्त्री आसक्त होने से धन नाश करता है।
7. यदि कुण्डली में शुक्र, शनि एक साथ केन्द्र, त्रिकोण में हों तो धनी बनता है।
8. लग्न में मंगल, गुरू तथा सप्तम में चन्द्रमा महाधनी बनाता है।
9. शनि, मंगल की युति भी महाधनी बनाती है यह युति दशम, एकादश या लग्न में हो तो।
10. मकर लग्न की कुण्डली में राहु यदि पंचम भाव में हो तो जुआ, लॉटरी, सट्टे आदि से धन कमाता है। यदि द्वादश भाव में राहु एवं गुरू हो तो भी राहु की दशा योग कारक होती है।
11. पंचम भाव में शुक्र तथा लाभ में शनि हो तो महाधनी होता है इस शुक्र को गुरू की द्रष्टि भी होनी चाहिए।

कुम्भ लग्न

इस लग्न की कुण्डली में शुक्र, शनि तथा गुरू धन देने वाले ग्रह होते हैं। बुध भी कई बार धन दायक होता है। परन्तु गुरू धन तथा लाभ भाव का स्वामी होता है। अतः भाई द्वारा लाभ हो सकता है।

1. सूर्य, बुध तथा गुरू तृतीय भाव में होने पर राजनीतिक शक्ति प्रदान करता है।
2. यदि धन भाव में शुक्र हो तथा अष्टम में बुध हो तो महाधनी बनता है।
3. सूर्य, बुध या मंगल, शुक्र की युति भी धनी बनाती है।
4. दशम भाव में सूर्य, गुरू या शनि, गुरू की युति भी धनी बनाती है।
5. गुरू इस कुण्डली में धन, लग्न या लाभ में होने पर धन देता है। मंगल की इससे युति भी लाभ देने वाली होती है।
6. धन भाव में चन्द्र, गुरू हो तथा यह शुक्र द्वारा द्रष्ट हो तो यह व्यक्ति सरकार से सम्मान पाता है तथा धनी होता है।
7. पंचम भाव में बुध गुरू हो तथा एकादश भाव में चन्द्र, मंगल रहने पर महाधनी होता है।
8. नवम भाव में शुक्र तथा शनि के रहने पर बहुत धनी होता है।
9. यदि शनि एवं शुक्र एकादश भाव में हो तो शुक्र की दशा में धन की प्राप्ति होती है।
10. केन्द्र त्रिकोण में मंगल गुरू की युति होने पर शीघ्र धनी बनता है।
11. बुध गुरू तथा शुक्र का सम्बन्ध यदि बन रहा हो तो महाधनी बनता है। यह यदि धन स्थान में एक साथ हो तो महाधनी होता है।

मकर लग्न

इस लग्न की कुण्डली मे मंगल शुक्र तथा शनि धन देने वाले ग्रह होते हैं। इस लग्न वाला व्यक्ति प्रायः अपने आप ही धन कमाते हैं या फिर नीच प्रकृति वाले व्यक्तियों से धन पाते हैं।

1. पंचम भाव में शुक्र तथा लाभ में शनि धनी बनाता है।
2. लग्न में गुरू तथा लाभ में मंगल एवं शुक्र के होने पर गुरू की दशा में भाई से धन पाता है।
3. इसी प्रकार लग्न में सूर्य, चन्द्र तथा बुध हो तथा लाभ में मंगल, शुक्र होने पर भी भाई से धन पाता है।
4. शनि यदि दशम भाव में हो तो महाधनी होता है।
5. यदि लग्न में बुध तथा शुक्र हो पंचम में चन्द्रमा हो तथा यह चन्द्रमा गुरू द्वारा द्रष्ट हो तो महाराज योग बनता है।
6. यदि सूर्य या चन्द्रमा अष्टम भाव में शुक्र से युक्त हो तो यह जातक बाल्यकाल से धनी होकर स्त्री आसक्त होने से धन नाश करता है।
7. यदि कुण्डली में शुक्र, शनि एक साथ केन्द्र, त्रिकोण में हों तो धनी बनता है।
8. लग्न में मंगल, गुरू तथा सप्तम में चन्द्रमा महाधनी बनाता है।
9. शनि, मंगल की युति भी महाधनी बनाती है यह युति दशम, एकादश या लग्न में हो तो।
10. मकर लग्न की कुण्डली में राहु यदि पंचम भाव में हो तो जुआ, लॉटरी, सट्टे आदि से धन कमाता है। यदि द्वादश भाव में राहु एवं गुरू हो तो भी राहु की दशा योग कारक होती है।
11. पंचम भाव में शुक्र तथा लाभ में शनि हो तो महाधनी होता है इस शुक्र को गुरू की द्रष्टि भी होनी चाहिए।

कुम्भ लग्न

इस लग्न की कुण्डली में शुक्र, शनि तथा गुरू धन देने वाले ग्रह होते हैं। बुध भी कई बार धन दायक होता है। परन्तु गुरू धन तथा लाभ भाव का स्वामी होता है। अतः भाई द्वारा लाभ हो सकता है।

1. सूर्य, बुध तथा गुरू तृतीय भाव में होने पर राजनीतिक शक्ति प्रदान करता है।
2. यदि धन भाव में शुक्र हो तथा अष्टम में बुध हो तो महाधनी बनता है।
3. सूर्य, बुध या मंगल, शुक्र की युति भी धनी बनाती है।
4. दशम भाव में सूर्य, गुरू या शनि, गुरू की युति भी धनी बनाती है।
5. गुरू इस कुण्डली में धन, लग्न या लाभ में होने पर धन देता है। मंगल की इससे युति भी लाभ देने वाली होती है।
6. धन भाव में चन्द्र, गुरू हो तथा यह शुक्र द्वारा द्रष्ट हो तो यह व्यक्ति सरकार से सम्मान पाता है तथा धनी होता है।
7. पंचम भाव में बुध गुरू हो तथा एकादश भाव में चन्द्र, मंगल रहने पर महाधनी होता है।
8. नवम भाव में शुक्र तथा शनि के रहने पर बहुत धनी होता है।
9. यदि शनि एवं शुक्र एकादश भाव में हो तो शुक्र की दशा में धन की प्राप्ति होती है।
10. केन्द्र त्रिकोण में मंगल गुरू की युति होने पर शीघ्र धनी बनता है।
11. बुध गुरू तथा शुक्र का सम्बन्ध यद्रि बन रहा हो तो महाधनी बनता है। यह यदि धन स्थान में एक साथ हो तो महाधनी होता है।

मीन लग्न

इस लग्न वालों को चन्द्र, मंगल गुरू तथा बुध धन देने वाले ग्रह होते हैं। इनकी दशा अन्तर दशा धन कारक होती है।

1. चन्द्र, मंगल, गुरू के लग्न में होने पर महाधनी होता है।
2. चन्द्र, मंगल, बुध यदि मकर राशि में हो तो भी बहुत धन पाता है।
3. यदि चन्द्रमा धन भाव में हो तथा मंगल पंचम भाव में हो तो चन्द्रमा की दशा में बहुत धन पाता है।
4. चन्द्रमा यदि द्वादश भाव में हो तो धन नहीं देता।
5. शनि द्वादश भाव में शुभ फल देता है।
6. मंगल यदि लाभ भाव में हो तो व्यक्ति धनी होता है इसे अपने भाई का धन भी मिलता है।
7. यदि नवम भाव में मंगल तथा तृतीय भाव में शुक्र हो तो धन सम्बन्धी मुकदमे से धन को पाता है।
8. नवम भाव में गुरू मंगल हो तो शीघ्र धनी होता है।
9. पंचम में चन्द्रमा हो तथा लाभ में शुक्र, शनि या मंगल के होने पर भी धनी होता है।
10. पंचम भाव में चन्द्र गुरू हो तथा एकादश में मंगल होने पर महाधनी होता है।
11. लग्न में मंगल शनि के होने पर भी धनी योग बनता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

13

धन प्राप्ति के स्रोत, समय एवं मात्रा

धन प्राप्ति के स्रोतों के कुछ योग पाठक पूर्व में धन भाव प्रकरण में पढ़ चुके हैं। यहां पर हम कुछ अन्य योग का वर्णन कर रहे हैं।

निज धन (स्वयं द्वारा कमाया धन)

1. लग्न तथा एकादश भाव का आपस में सम्बन्ध होने पर स्वयं अपने बाहुबल द्वारा धन पाता है।
2. यदि लग्नेश के नवांश का स्वामी धनेश से युति कर केन्द्र त्रिकोण में हो तो निज धन पाता है।
3. लग्नेश धनेश तथा लाभेश में सम्बन्ध बनने से जातक अपने ही दम से धन कमाता है। यह योग पाठक पूर्व में दिये गए धनी व्यक्तियों की कुण्डलियों में देख सकते हैं।

पुत्र द्वारा धन प्राप्ति

1. द्वितीय भाव के स्वामी तथा पंचम भाव के स्वामी का आपस में किसी प्रकार का भी सम्बन्ध हो तो पुत्र द्वारा धन लाभ कहना चाहिए।
2. पंचमेश तथा नवमेश का सम्बन्ध होने पर भी पुत्र द्वारा धन एवं भाग्य बनता है।
3. पंचमेश का लाभ भाव में होना लाभेश से राशि परिवर्तन होने पर भी पुत्र द्वारा धन लाभ होता है।

4. बृहस्पति का सम्बन्ध धन भाव पंचम भाव या नवम भाव से होने पर भी पुत्र द्वारा लाभ मिलता है। वृश्चिक लग्न वाला की कुण्डली में गुरू इन भावों में हो तो पुत्र द्वारा धन लाभ अवश्य होता है।

भ्राता द्वारा धन लाभ

1. तृतीयेश, एकादशेश, धनेश का आपस में सम्बन्ध होने पर भाई द्वारा धन लाभ होता है।
2. लग्नेश, द्वितीयेश एवं तृतीयेश के एक साथ होने पर भाई द्वारा धन लाभ होता है।
3. तृतीयेश और भ्रातृकारक ग्रह धन भाव में हो तथा लग्नेश से द्रष्ट हो या वैशेषिकांश में हो तो भाई द्वारा धन पाता है।
4. नवमेश शुभ युक्त या द्रष्ट होकर तृतीय भाव में होने पर भी भाई द्वारा भाग्योन्नति होती है।
5. तृतीय स्थान से छोटे भाई तथा एकादश स्थान से बड़े भाई का विचार करना चाहिए तृतीयेश एवं तृतीय में स्त्री ग्रह होने पर बहिन द्वारा भी धन प्राप्ति कही जा सकती है।

चचेरे भाई बहिन द्वारा धनलाभ

1. षष्ठ भाव एवं बुध द्वारा चचेरा भाई का विचार किया जाता है।
2. यदि लग्नेश बली हो तथा षष्ठ भाव में कोई शुभ ग्रह हो एवं गुरू केन्द्र त्रिकोण में होने पर चचेरे भाई से धन लाभ कहा गया है।
3. नवम भाव का स्वामी बुध के साथ छठे भाव में हो तथा षष्ठेश नवम भाव में होने पर भी चचेरे भाई से धन लाभ कहा गया है।

पिता से धन प्राप्ति

1. बलवान धनेश, दशमेश, लाभेश एवं सूर्य का आपस में सम्बन्ध बनने पर पिता से धन लाभ होता है।
2. धन भाव में द्वितीयेश व सूर्य होने पर पिता से धन पाता है।
3. सूर्य के दशमस्थ होने पर जातक को पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है। यदि सूर्य उच्च का हो अर्थात कर्क लग्न वाले जातक के दशम भाव में सूर्य होने पर सुगमता से पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है।
4. भावार्थ रत्नाकर के अनुसार यदि सूर्य और नवमेश दोनों व्यय भाव में हो तो पिता से लाभ होता है।
5. गुरू एवं व्ययेश दोनों ही व्यय भाव में हो तो पिता भाग्यशाली होता है।

स्त्री द्वारा धन लाभ

1. सप्तमेश और नवमेश के सम्बन्ध होने पर स्त्री द्वारा धन प्राप्ति होती है।
2. द्वितीय स्थान में सप्तमेश के होने पर तथा शुक्र की इस पर युति या द्रष्टि होने पर भी स्त्री द्वारा धन लाभ होता है।
3. सप्तमेश और द्वितीयेश लाभ स्थान में होने पर भी स्त्री द्वारा धन-कहा गया है।
4. सप्तमेश तथा शुक्र के चतुर्थ भाव में होने पर भी स्त्री द्वारा लाभ कहा गया है।

माता से धन लाभ

1. चन्द्रमा तथा चतुर्थेश का सम्बन्ध धन भाव से होने पर माता से धन लाभ होता है।
2. यदि धनेश चतुर्थेश एक साथ लग्न में हो तो माता से धन लाभ होता है।

3. मेष लग्न की कुण्डली में धन भाव में चन्द्रमा के होने पर भी माता से धन की प्राप्ति होती है। दशम भाव में चन्द्रमा के रहने पर भी माता से लाभ कहा गया है।

अचानक धन प्राप्ति

1. पंचम भाव में स्थित चन्द्रमा पर शुक्र की द्रष्टि अचानक धन दिलवाती है।
2. द्वितीयेश पंचमेश का राशि परिवर्तन भी अचानक धन दिलवाता है।
3. द्वितीयेश लग्नेश तथा लाभेश एक दूसरे के भावों में होने पर भी अचानक धन प्राप्ति होती है।
4. लग्नेश धन भाव में हो, धनेश लाभ में हो तथा लाभेश लग्न में होने पर गढे हुए धन की प्राप्ति होती है।
5. धनेश के अष्टम भाव में होने पर भी अचानक धन की प्राप्ति होती है।
6. अचानक धन प्राप्ति में नवम, पंचम तथा राहु की भी विशेष भूमिका पाई जाती है।
7. यदि एकादशेश चतुर्थ में हो तथा शुभ युक्त या द्रष्ट हो तो भी गड़ा हुआ धन पाता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

14

धन लाभ दिशा परिज्ञान

वाच्या धनप्राप्ति र्विबुधैरूपान्त्याधिनाथदिग्भाग उतायराशेः।
दिग्भागतो वाऽखिलखेट मध्येबली ग्रहोयस्तु तदीय दिक्तः।।

अर्थात लाभ भाव के स्वामी की जो दिशा हो या लाभ स्थित राशि की जो दिशा हो अथवा कुण्डली में सबसे बली ग्रह की जो दिशा हो उस दिशा से धन की प्राप्ति होती है।

तत्खोचर दाये वित्ताप्ति कथितव्या।
तत्तत्पुष्कर गानामाशा स्वेव धनाप्तिः।।

जन्म समय में जो ग्रह धन देने वाले हो उन ग्रहों की दिशाओं से धन प्राप्ति कहनी चाहिए।

उपरोक्त दोनों श्लोकों से यह स्पष्ट होता है कि लाभ भाव, भावेश तथा कुण्डली में योग कारक व धन कारक ग्रहों की दिशाओं के अनुसार ही धन लाभ की दिशा होती है।

यदि कुण्डली में लाभेश मेष राशि में स्थित है तो यह कहा जा सकता है कि जातक को पूर्व दिशा में धन लाभ होगा। यदि कुण्डली में धन कारक गुरू की दशा चल रही हो तो उत्तर पूर्व से धन लाभ होता है। इसी प्रकार लाभ भाव में जो राशि हो उसके अनुसार धन लाभ की दिशा भी जाननी चाहिए।

पाठक यदि श्री घनश्याम दास जी बिरला की कुण्डली को देखें तो आपकी कुण्डली में लाभ भाव में धनु राशि है। धन राशि की दिशा पूर्व होती है। आप भी राजस्थान से कलकत्ता ही व्यापार करने को गए तथा वहां पर से धन लाभ हुआ। इसको और समझने के लिए श्री धीरूभाई अम्बानी की कुण्डली को देखें तो आप की कुण्डली के लाभ भाव में तुला राशि है। तुला राशि की दिशा पश्चिम होती है। मुम्बई पश्चिम दिशा में ही है। अतः पश्चिम दिशा से ही आपको धन लाभ हुआ।

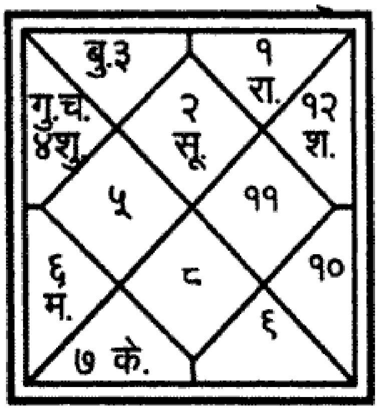

कुण्डली नं १५०

कुण्डली नं 150 का जातक एक व्यापारी है। इस जातक का जन्म जून 1967 को हुआ। यह जातक दिल्ली में व्यापार कर रहा है तथा वहां इसने छोटी सी ही आयु में अच्छा धन कमा लिया है। जातक के लाभ भाव में मीन राशि है तथा लाभेश गुरू कर्क राशि में है। कर्क तथा मीन दोनों की दिशा उत्तर ही है। यह उत्तर दिशा में ही धन लाभ अर्जित कर रहा है

15

धन लाभ समय परिज्ञान

द्रव्याप्तिरायेश्वर आयकारको लाभेक्षको लाभकरो ऽर्थपोऽर्थगः।
योऽर्थेक्षकश्चैष्वधिवीर्य्यवाञ्छुभसम्बन्ध वानस्य दशासुभुक्तिपु।।

लाभेश, लाभकारक, लाभदर्शी, लाभप्रद, धनेश, धनगत तथा धनदर्शी इन में से जो सबसे अधिक बली हो तथा जिस का शुभ ग्रहों के साथ सम्बन्ध हो उस ग्रह की दशा तथा अन्तरदशा में धन लाभ कहना चाहिए।

यदा गोचरे जन्मोऽगंज्जडांशो स्वदस्थानपा द्रव्यदागार केषु।
खगेन्द्राः स्थितास्तत्र यात्राः स्वमं चेदुतान्योन्यमस्थाः स्वदस्थानपानाम।।

स्वदगारके संयुतिर्गोचरेण स्वदस्थानमायाति परजन्यपूज्येः।
धनाप्ति वदेद्धनियोगानपीह बुधश्चिन्त्येत्त फलं तदभलेन।।

अर्थात जन्म लग्न एवं चन्द्र से धन पद स्थानों के स्वामी गोचर से जब धन प्रद स्थानों में आएं और वे धन प्रद स्थानों में स्थित ग्रह जब स्वराशि में प्राप्त हो तथा अन्योन्य राशि में हो तथा धन प्रद स्थान के स्वामियों का इन स्थानों से योग हो एवं उन ही स्थानों में गोचर गत गुरू के आने पर धन लाभ होता है।

प्रायः यह देखने में आता है कि जब योगकारक ग्रह की दशा अन्तरदशा चल रही हो तथा उपरोक्तानुसार गोचर गत गुरू या धनेश आदि ग्रह धन प्राप्ति की सूचना दे रहे हो तो अवश्य धन लाभ होता है। यहां पर पाठक अष्टक वर्गानुसार गुरू, सूर्य, धनेश, लग्नेश, लाभेश आदि की शुभ रेखाएं आदि देखकर भी सटीक समय निकाल सकत हैं। आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी ने "ज्योतिस्तत्त्वम्" में कहा है।

आद्योऽर्थस्थो वित्तदर्शी द्वितीयो वित्तस्थानड व्योमचारी तृतीयः।
तत्पाकै वा तध्दृतौ कारकस्य स्वस्य स्वाप्तिः प्रोच्यते वर्ग मूलात।।

धन स्थान में स्थित ग्रह, धन स्थान को देखने वाला ग्रह, धनेश इन तीनों की दशा अन्तरदशा में धन प्राप्ति होती है।

वृत्ति अध्याय

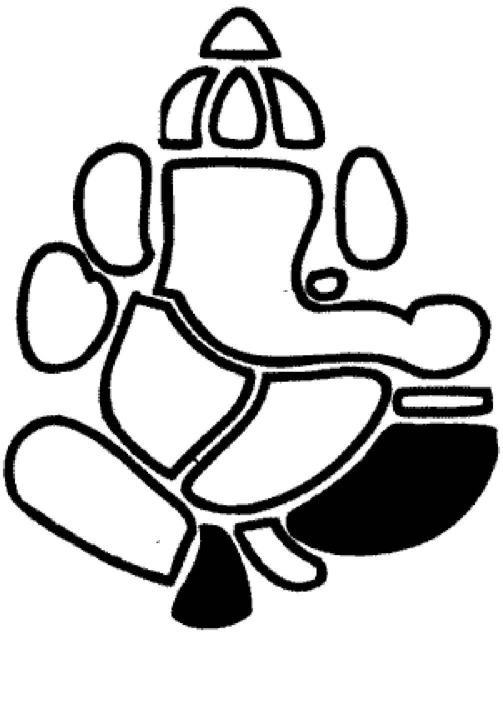

सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलं अर्थः।
वृत्ति मूलं अर्थः अर्थ मूलौ धर्मकामौ।।

(चाणक्य)

16

वृत्ति अध्याय

आयुः कर्म च वित्तं विद्या निधनमेव च।
पञ्चैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः।।
(चाणक्य)

अर्थात यह निश्चय है कि आयुर्दाय, कर्म, धन, विद्या और मरण ये पांचो जब जीव गर्भ में ही रहता है। तब ही लिख दिये जाते है।

इस प्रकार धन कमाने के लिए मनुष्य क्या वृत्ति अपनाएगा इसका तो पूर्व में ही तय हो चुका है। अब आवश्यकता यह है कि यह पता करे कि ज्योतिष शास्त्र द्वारा इसका पता कैसे हो पाएगा।

प्रायः सभी विद्वानों ने दशम भाव से ही विचार करने को कहा है। क्योंकि यह मनुष्य का कार्म भाव होता है।

रवे सत्सूर्वीशतो वृत्तिः स्यात्सिद्धिः सर्वकर्म्मणः।

अर्थात जन्म लग्न और चन्द्र लग्न इन दोनों के मध्य जो अधिक बली है। उनकी अधिष्ठित राशि से जो दशम स्थान हो वहीं कर्म स्थान होता है। उसी के स्वभाव के समान मनुष्य कर्म करता है। इस कर्म स्थान के स्वामी की वृद्धि और हानि से ही कर्म की वृद्धि एवं हानि होती है। यदि कर्म स्थान अपने स्वामी या शुभ ग्रहों से युक्त या द्रष्ट हो तो सुख जनक आजीविका होती है। यदि पाप ग्रह हो या पाप द्रष्ट हो तो कष्ट जन्य आजीविका होती है। यदि दशम में बहुत शुभ ग्रह हो तो राजा से आजीविका तथा समस्त कर्मो की सिद्धि होती है।

दशम भाव में कोई न कोई ग्रह होने पर जातक अपने कुल में विशेष नाम कमाता है। और यदि उच्च का ग्रह ही दशम में बैठा हो तो वह व्यक्ति ऐसी उन्नति करता है कि उसको स्वपन में भी इसकी कल्पना न की हो।

विज्ञान विद्यागम कर्म्म जीवन व्यापार संन्यास शांसि भूषणम्।
आज्ञां च मानं शयनांशुके कृषि विचिन्त येज्ज्ञेज्य शनीनखेशतेः।।

विज्ञान, विद्या, वेदान्त, कर्म, जीवन, व्यापार, सन्यास, यश भूषण शयन, आज्ञा, मान, वस्त्र, कृषि इन सब बातों को बुध, गुरू, शनि, सूर्य तथा दशमेश से विचारना चाहिए।

बहुग्रैर्दविणे दृष्टे तत्पतायबले ऽगंपे।
साधेत्रिके नो सुखेन जीवनं दुरितेऽर्थपे।।

स्वोच्चेऽधेक्षित संयुक्ते ऽबले ऽगेंशे सपामरे।
सहायो जीवनोपाये ऽनान्यो ऽधान्त्ये अरिपेसके।।

किम साहौ कृवृत्तिः स्याद्व सतिर्नुः परालये।।

धन स्थान में बहुत पाप ग्रह हों तथा वे पाप द्रष्ट हो, धनेश निर्वल हो ःवं त्रिक में पाप युक्त लग्नेश हो तो उक्त योग में उत्पन्न व्यक्ति की ाजीविका सुख से नहीं होती है। द्वितीयेश यदि पाप ग्रह हो तथा वह सर्वोच्च शि में हो तथा पाप युक्त, द्रष्ट हो एवं निर्बल लग्नेश पाप युक्त हो तो उक्त ागों में उत्पन्न पुरूष के जीवनोपाय मे अन्य सहायक नहीं होता। व्यय भाव में ष्ठेश हो और वह सूर्य अथवा राहू से युक्त हो तो उक्त योग में उत्पन्न व्यक्ति िन्दित वृत्ति वाला तथा पराये घर में वास करने वाला होता है।

धनोपार्जन के मुख्य साधन 1. नौकरी 2. व्यापार ही है। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता है कि जातक किस साधन द्वारा धनोपार्जन करेगा। यहाँ पर पाठक गणों को स्थूल रूप से जानने के लिए देखना चाहिए कि जन्म कुण्डली मे अधिक से अधिक ग्रह किन राशियों में स्थित है। अर्थात 1. **चर राशि** (मेष, कर्क, तुला, मकर) 2. **स्थिर राशि** (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) एवं 3. **द्विस्वभाव राशि** (मिथुन, कन्या, धनु, मीन)

(1) यदि चर राशि गत ग्रहों की संख्या अधिक है। तो जातक स्वतन्त्र व्यवसाय का करने वाला होता है। यह व्यवसाय ऐसा होने चाहिए जिसमें जातक को चतुराई, व्यवहार कुशल, युक्ति निपुणता आदि का प्रयोग करना पडे। प्रायः यह देखा गया है कि इस प्रकार के जातक अपने को सदा उच्च शिखर पर ले जाने के प्रयत्न करते है। देखो कुण्डली न. 1 श्री जे. आर. डी. टाटा

की कुण्डली में अधिक ग्रह चर राशी में है। बिरला जी की कुण्डली में भी चर राशि में ही अधिक ग्रह देखने को मिलेगें।

(2) यदि स्थिर राशिगत ग्रहों की संख्या अधिक हो तो जातक ऐसा कार्य करता है। जहां पर उसे सहनशीलता, धैर्य, द्रढता, आदि की आवश्यकता पड़े। ऐसे जातक सरकारी नौकरी या बड़े संस्थानों में कार्यरत होते है।

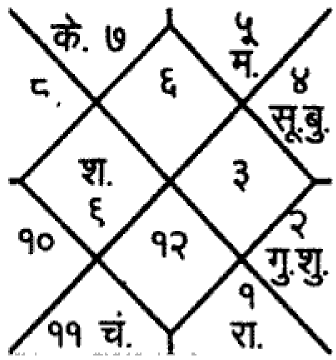

कुण्डली नं १५१

कुण्डली न. 151 एक बैरिस्टर की है जो कि एम पी भी रह चुके है। यहां पर स्थिर राशि में चार ग्रह है। आप का कार्य धैर्य, द्रढता एवं सहनशीलता का ही है। कई डाक्टर, वकील, आदि भी इस वर्ग में देखे गए है।

(3) द्विस्वभाव गत राशि में ग्रहों की संख्या अधिक होने पर अध्यापन क्षेत्र में या नौकरी, एजेन्ट, कमीशन का कार्य, दुकान दारी आदि को करते है।

इसी प्रकार जिस तत्व की राशि में ग्रहों की संख्या अधिक होती है। उसके स्वभावानुसार ही वृत्ति होती है जैसे कि **पृथ्वी तत्त्व** राशि गत ग्रह अधिक हों अर्थात वृष, कन्या, एवं मकर राशि में अधिक ग्रह हों तो जातक जो कार्य करेगा उसमें शारीरिक परिश्रम लगेगा। यदि **अग्नि तत्त्व** राशि (मेष, सिंह, धनु) में अधिक ग्रह हो तो जातक वह कार्य करेगा। जिसमें बुद्वि का प्रयोग होगा। **जल तत्त्व** वाले जातको का रोजगार स्थिर नहीं रहता है। अर्थात बदलते रहते है।

हमने मनुष्य की वृत्ति को सही प्रकार से जानने के लिए अपने शोध कार्य में पांच विभागों में डाला है।

(1) बुद्धि जीवी एवं स्वतंत्र व्यवसाय।

(2) आर्थिक क्षेत्र में कार्यरत।

(3) कलात्मक क्षेत्र में कार्यरत।

(4) शारीरिक परिश्रम में कार्यरत।

(5) वाणिज्य क्षेत्र में कार्यरत।

(1) **बुद्धिजीवी एवं प्रोफेशनल** :– इस क्षेत्र में डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, जज, प्रोफेसर, अध्यापक, ज्योतिषी, परामर्शकार आदि व्यवसाय आते हैं। इन सभी व्यवसायों में जातक अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है। प्रायः इस प्रकार के सभी व्यवसायों में बुध एवं गुरू का प्रभाव कुण्डली मे अवश्य होता है। यह इसको इस तरह भी कहा जा सकता है कि कुण्डली यदि बुध और गुरू प्रधान है तो जातक अपनी बुद्धि द्वारा वृत्ति पाता है।

(2) **आर्थिक क्षेत्र** :– इस क्षेत्र में प्रायः मुनीम, अकाउन्टेंट, राजनेता, राज्य, बैंक के अधिकारी, मिल मालिक इंश्योरेंस आदि व्यवसाय होते हैं। प्रायः सूर्य, चन्द्र एवं मंगल प्रधान व्यक्ति यह कार्य करते है।

(3) **कलात्मक क्षेत्र** :– इस क्षेत्र में प्रायः चित्रकार, गीतकार, संगीतकार, अभिनेता, गायक, कवि,नृतक आदि होते हैं। यह सभी प्रायः शुक्र प्रधान होते हैं।

(4) **शारीरिक परिश्रम के क्षेत्र** :– इसमें प्रायः मिल में या प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत, कलर्क, बैरा, बढई, दुकान में कार्य करने वाले सेल्समैन, खेती का कार्य करने वाले मजदूर, तृतीय श्रेणी एवं चतुर्थ श्रेणी के सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों में कार्य करने वाले होते हैं। यह सभी प्रायः शनि या राहु केतु के प्रभाव में पाये जाते हैं।

(5) **वाणिज्य क्षेत्र** :– दुकानदार, प्रैस, जर्नलिस्ट, कम्पनी के प्रतिनिधि, छोटे व्यापारी सभी प्रायः बुध के प्रभाव में देखे गए हैं।

जैसा कि कहा गया है जन्म लग्न या चन्द्रमा इन दोनों में से जो बली हो उससे दशम भाव को कर्म स्थान कहते हैं। यदि इस भाव में कोई ग्रह हो तो जातक उस ग्रह से सम्बन्धित क्षेत्र में प्रायः काम करते हुए देखे जा सकते हैं। दशम भाव में सूर्य के होने पर जातक सरकारी-अधिकारी होता है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं लेना चाहिए कि सभी जातक जिनकी कुण्डली में सूर्य दशम भाव में होगा सबके सब सरकारी सेवा करेंगे। यह जातक अपना निजि व्यवसाय भी कर सकते है परन्तु इनका व्यवसाय तो होगा सूर्य संचालित व्यवसाय जैसे दवाई की दुकान या वैद्य का कार्य या ऊन एवं कम्बल का व्यापारी आदि भी हो सकते हैं। इस विषय में आप ग्रहों के व्यवसाय पूर्व में जान चुके हैं।

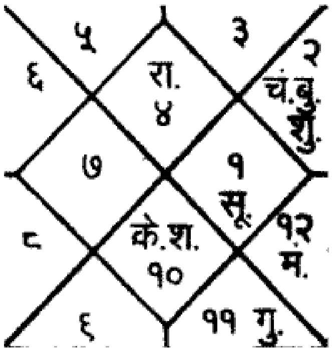

कुण्डली नं १५२

कुण्डली नं 152 के जातक का जन्म मई **1962 को हुआ** जातक राजस्थान राज्य में उच्च अधिकारी **है**। यहां पर दशम भाव में उच्च राशि गत सूर्य होने के कारण वश ही यह जातक सरकारी सेवा में आया।

कुण्डली नं १५२(अ)

कुण्डली नं 152 (अ) के जातक का जन्म नवम्बर माह 1939 में हुआ। यह जातक एक करोड़पति है। इसकी एक बहुत ही बड़ी दवाई बनाने की कम्पनी है जिसमें कई हजार लोग कार्यरत हैं। यहां पर वही सूर्य इन से दवाई का व्यापार करवा रहा है।

पाठक गण यह समझ गए होंगे कि दशम भाव में स्थित ग्रह के अनुसार ही मनुष्य कार्य करता है।

हमने हजारों कुण्डलियों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि कुण्डली में मात्र दशम भाव से ही नहीं किसी जातक की वृत्ति का पता चल सकता है। इनको समझने के लिए हमें कई अन्य तथ्यों द्वारा भी पता चगाना चाहिए। ज्योतिष एक जटिल शास्त्र है इस में कोई भी नियम ऐसा नहीं है कि मात्र एक ही सूत्र द्वारा किसी विषय का पता चल सके। जैसे कि कहा गया है कि दशम भाव में स्थित ग्रह कि वृत्ति अनुसार ही जातक कार्य करता है परन्तु साथ में यह भी कहा जाता है। कि जन्म लग्न या चन्द्रमा से दशम में जो बलवान हो उससे दशम भाव में स्थित ग्रह के अनुसार मनुष्य वृत्ति को पाता है। यदि इन दोनों स्थानों में कोई ग्रह न हो तो सूर्य से दशम स्थान में स्थित ग्रह

के अनुसार आजीविका को पाता है। पश्चिम के कई विद्वानों का मत है कि हमें नवम में स्थित ग्रह तथा एकादश में स्थित ग्रह यदि दशम भाव से 5° अंशों तक की दूरी पर है। तो इन ग्रहों के अनुसार भी वृत्ति हो सकती है। इसी प्रकार यह भी देखने में आया है। कि कुण्डली में जिस राशि में सर्वाधिक ग्रहों का प्रभाव हो उसके अनुसार भी जातक कार्य करता है। कई विद्वानों के अनुसार सुदर्शन चक्र द्वारा तीनों लग्नों एवं लग्नेशों पर पड़ रहे सर्वाधिक प्रभाव जिस ग्रह का है। उसके अनुसार मनुष्य की वृत्ति का पता लगाया जा सकता है।जैमनी मतानुसार तो आत्मकारक ग्रह के अनुसार वृत्ति होती है। नाड़ी शास्त्र द्वारा शनि पर पड़ रहे अन्य ग्रहों के प्रभाव को ध्यान देकर वृत्ति का पता लगाया जा सकता है। इसी प्रकार यदि दशम भाव में कोई ग्रह न हो तो दशमेश जिस नवांश में हो उस नवांश पति के अनुसार भी वृत्ति पाई जाती है। इनके अतिरिक्त लग्न, धन, भाव, लाभ भाव का भी वृत्ति में विशेष योग दान पाया जाता है। यह भी देखने में आता है। कि दशम भाव में यदि कई ग्रह स्थित हो या इनका प्रभाव पड रहा हो तो इनमें सबसे बली ग्रह के अनुसार वृत्ति होती है। हमारे शास्त्रों में दशम भाव में एक से अधिक ग्रह होने पर कुछ विशेष योग के बनने के कारण वृत्ति का पता चलाने को कहा गया है। इन का भी प्रभाव देखने को मिलता है तथा सत्य होते पाया गया है। अब प्रश्न यह उठता है कि किस विधि द्वारा मनुष्य की वृत्ति का पता लगाया जा सकता है। अतः हम यहां पर वृत्ति जानने के लिए दशम भाव को ही महत्व देने को कहते है। पाठकों की जानकारी के लिए उपरोक्त दी गई सभी विधियों पर अवश्यं चर्चा करेगें।

सितेन्दु सुनुसंयुते स्वराशिगे रसात्मजे।
तदीक्षिते नभः स्थले स्वकर्म्मण फलाल्पता।।

स्वराशि (1, 8) का मंगल यदि बुध तथा शुक्र से युक्त हो तथा दशम स्थान इस मंगल से द्रष्ट हो तो कर्मफल की स्वल्पता कहनी चाहिए।

सोग्रे ऽबले खेश उताघपे त्रिके यद्वा बहुत्वेऽघदृशां पदेकिमु।
दुःस्थे स्वगेहोच्च पदं बिनाऽघरे मानोशि वैकल्य मुशन्ति कर्म्मणाम्।।

निर्बल दशमेश यदि पाप युक्त हो या त्रिक़ में दशमेश, दशम में पाप दृष्टि अधिक हो, त्रिक में स्वराशि या उच्च राशि को छोड दशमेंश हो तो कर्मो में विफलता अर्थात व्यापार आदि में असफल होता है।

कुण्डली नं १५३

कुण्डली न. 153 के जातक का जन्म मई 1970 में हुआ जातक एक अच्छे पढे लिखे परिवार में होने पर भी पढ़ न सका तथा आवारा घूमता रहता था। पिता ने पकड़ कर व्यापार में डाला तो उसमें भी घाटा कर डाला। जातक मात्र 27 साल की आयु में कई व्यापार कर चुका है तथा सभी में घाटा ही खा रहा है। यहां पर दशमेश शनि नीच राशि का होकर व्यय स्थान में है। यह शनि सूर्य के साथ है। वैसे तो इस शनि को नीचभंग हो रहा है। यही एक आशा की किरण है। जो जातक को बचा रही है। परन्तु दशमेश का नीच होकर त्रिक स्थान में बैठना ही व्यापार या नौकरी में असफल बनाता है।

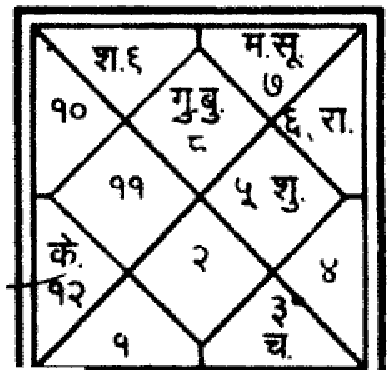

कुण्डली नं १५४

कुण्डली न. 164 के जातक का जन्म अक्टूबर 1959 में हुआ। यह जातक एक भारतीय कम्पनी जो कि विदेश में है उस में उच्च पद से निकाल दिया गया तदुपरान्त वहीं पर व्यापार आरम्भ करा परन्तु असफलता हाथ आई। स्वदेश लौटने पर कई प्रकार के व्यापार करे परन्तु सफलता नहीं मिली। शेयर बाजार में भी घूमें तो नुकसान ही मिला। आज कल ज्योतिष सीख रहे है तथा वास्तु शास्त्री बने हुए है। इनकी कुण्डली में दशमेश सूर्य नीच का होकर द्वादश भाव में स्थित है तथा मंगल युक्त है तथा साथ में भाग्येश भी अष्टम भाव में स्थित है।

कामस्थयोर्हे लिकलेशयोः शनिसंदृष्ट योर्वाडवजोऽपि नैच्यकृत।
वाचामधीशे विधुवैरिणान्विते निरीक्षिते दुर्बल खौकस तथा।।

सप्तम भाव में सूर्य चन्द्रमा हो और शनि से द्रष्ट हों तो ब्राह्मण कुल में जन्मा व्यक्ति भी नीच कर्म करता है। यदि गुरू राहु से युक्त हो और दुर्बल ग्रह से द्रष्ट हो तो नीच कर्म करने वाला होता है।

सौवस्तिको यज्ञभुजां सकाव्यः संवीक्ष्यतेऽघाभ्रसदा विधत्ते।
चण्डालतां देहभृतां गिरीशो नीचांशगों नीच भगस्तथैव।।

गुरू यदि शुक्र से युक्त हो और पाप दृष्ट हो तो चण्डालत्व को करता है। नीच का गुरू होने पर भी चण्डाल योग होता है।

चेदेकस्मिन खेचरे मित्रराशौ जातो जन्मी चान्य जीवी प्रसूतौ।
कोणः कोणेऽर्थे अंगपे खे क्षयेऽघेः स्याद जीवी पुरूषो नीच वृत्या।।

जिस मनुष्य के जन्म समय में मित्र राशि मे एक हीं ग्रह हो तो ऐसा प्राणी अन्य से जीविका वाला होता हैं। त्रिकोण या धन भाव में शनि, दशम में लग्नेश और अष्टम में पापग्रह हों तो उक्त योग में उत्पन्न पुरूष नीचवृत्ति की जीविका को करने वाला होता है।

यदि दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो दशमेश जिस नवांश में स्थित हो उस नवांश पति के अनुसार मनुष्य कार्य करता है।

(1) सूर्य की वृत्ति

भैषज्यावादोर्ण तृणाम्बुधान्य हरिण्य मुक्ता क्रय विक्रयेण।
मंत्रोपदेशेन रसौर्विनोदभार्गैरसौ जीवति भास्करांशे।।

यदि उक्त दशमेश के नवाशं राशि का स्वामी सूर्य हो तो चिकित्सा, वाद-विवाद, ऊन, तृण, जल, धान्य, सोना, मोती, आदि के क्रय विक्रय से जीविका होती है। अथवा मंत्रोपदेश के करने से, रसों से तथा विनोद के मार्गो से जीविका होती हैं।

सूर्य के दशम भाव में रहने पर जातक अपने कार्य (नौकरी या व्यापार) में सफल होता है। इस जातक को सभी प्रकार के सुख होते है। यह जातक सरकारी नौकरी या वड़े संस्थानों में कार्यरत होता है। इस को पैतृक धन भी मिलता है। यदि दशम भाव में सूर्य न हो परन्तु नवांश का स्वामी सूर्य ग्रह हो तो औषधी ऊन, घास, गेहूँ, माणिक, फर्नीचर, अनाज, नारियल, फल-फूल, से संबंधित कार्यो से वृत्ति को पाता है। यदि नौकरी में हो तो पायलट, बैंक, शेयर, बाजार, विदेशी, मुद्रा विभाग मौसम विभाग, वन विभाग, दूतावास की नौकरी

करता है। हमने कुछ जातकों को राज्य द्वारा संचालित लौटरी विभाग मे भी कार्य करते देखा है। मंत्रेशवर ने फलदीपिका में सूर्य की वृत्ति में कहा है।

" फलद्रुमैर्मन्त्र जपस्य शाठ्यादद्यूता नृतैः कंबलभेष जाद्यैः।

अर्थात फल, फल वृक्ष , मंत्र जाप, धोखा चालाकी, जूआ, झूठ बोलकर आदि वृत्ति को विचार करने को कहा है। प्रायः सूर्य की वृत्ति में सरकार द्वारा कोई न कोई संबंध अवश्य पाया गया है। कई सरकारी ठेकेदारों की कुण्डली में भी सूर्य ही नवांश पति है। कई बड़ी बड़ी कम्पनियों के मैनेजर आदि भी इस सूर्य के कारण बनते है। डाक्टरों की कुण्डली में भी सूर्य का प्रभाव देखने को मिल सकता है। कई मंत्रियों एवं राजनेताओं की कुण्डली में भी सूर्य का ही प्रभाव देखने को मिलता है।

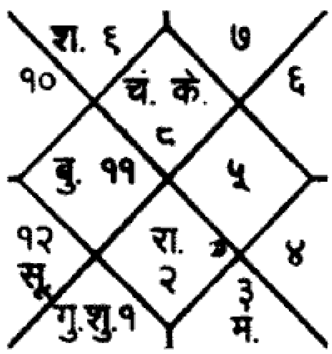

कुण्डली नं १५५

कुण्डली न. 155 के जातक का जन्म जून 1929 को हुआ। यह जातक उच्च सरकारी पद से रिटायर हुआ यहां पर चंद्रमा तथा जन्म लग्न दोनों से दशम स्थान में कोई ग्रह नहीं है। दशमेश सूर्य है तथा इसके नवाशं का स्वामी भी सूर्य है अतः जातक को सूर्य की वृत्ति का होना तय है। सरकारी कार्य सूर्य की वृत्ति में ही आते है।

(2) चंद्रमा की वृत्ति

वस्त्र क्रयाद्वारि समुध्द वानां व्यापार तो राजवधुश्रयेण।
विनोदमृद्वाद कृषि क्रियादे र्वामण्डलाशे कथयन्ति वृत्तिम।।

वस्त्र खरीदने, जलजन्य व्यापार से, राजा तथा स्त्रियों के आश्रय से, विनोद से, मिट्टी, के काम से, कृषि द्वारा जीविका होती है।

चंद्रमा से संबंधित अन्य व्यवसायों को जानने के लिए पूर्व में दिये गए प्रत्येक ग्रहो से संबधित व्यवसायों को देखे। खाने पीने की वस्तुओं तथा

प्लास्टिक का व्यवसाय भी चंद्रमा के ही अधिकार में होता है। चंद्रमा के नवांश पति होने पर यार्न (धागों) का कार्य करते हुए भी देखा है। मूल श्लोक में वस्त्र के क्रय विक्रय के बारे में कहा है। अतः वस्त्र बनाने के लिए जो धागा (यार्न) प्रयोग करा जाता है। वह भी इसी से संबंध रखता है। हमने कई ऐसे जातकों की कुण्डली भी देखी है। जो एक जगह से दूसरी जगह जाकर प्रदर्शनी लगा कर वस्त्रों का व्यापार करते है। चंद्रमा के कारण वृत्ति ऐसी हो सकती है। जिसमें घूमना पड़ सकता हो। प्रायः कई ग्वालों या दूधवालों की कुण्डली में आपको दशमेश का नवांशपति चंद्रमा देखने को मिल सकता है। प्रायः ऐसे लोग जिनका जनता से सम्पर्क होता है। ऐसे विभागों में भी प्रायः नौकरी करते देखा जा सकता है।

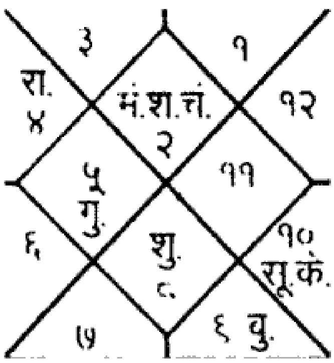

कुण्डली नं १५७

कुण्डली न. 157 के जातक का जन्म सन् 1944 में हुआ। इस जातक का बहुत बड़ा कारखाना है। यहां पर चंद्रमा तथा लग्न दोनों से दशम स्थान मे कोई ग्रह नहीं है इसके दशमेश को देखो जो कि नवांश कुण्डली में कर्क राशि में स्थित है।

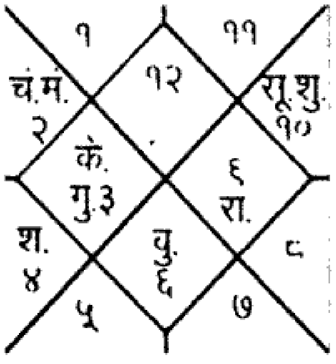

नवांश कुण्डली नं १५८

अतः चंद्रमा का कार्य करना चाहिए पूछने पर पता चला कि इस कारखाने में पार्टनर उनकी पत्नी है। तथा इनको खेती द्वारा भी आमदनी होती है। जातक अब निर्यात करने की भी सोच रहा है। निर्यात भी चंद्रमा की वृत्ति में ही आता है।

मंगल की वृत्ति (मंगल नवांश पति)

व्योमोल्मुकांशे समर प्रहारद्धाविर्भुजा साहस धातुमूलात।
विवादतः स्तब्धकलि प्रवृत्त्या जीवेदसौ मोषक वृत्तितो वा।।

मंगल के नवांश में युद्व तथा प्रहार से आग, साहस, धातु, स्तब्ध तथा, कलह की वृत्ति से, चोर वृत्ति से जीविका होती है।

युद्ध तथा प्रहार का अर्थ यहां पर फौज, पुलिस की नौकरी भी माना जा सकता है। साहस का अर्थ वह व्यवसाय हो सकते है जिनमें साहस की आवश्यकता पडती है। पेशेवर खिलाड़ी भी इस श्रेणी में रखे जा सकते हैं। ऐसे कार्य जहाँ अग्नि से संबंध हो जैसे फायर ब्रिगेड की नौकरी, अतिशबाजी बनाने का कार्य हो सकता है। माचिस का विक्रेता (डिस्ट्री ब्यूटर) भी हो सकता है। कारखाने एवं धातु से संबंधित कार्य हो सकते है। कई इजीनियर, ओवरसियर की कुण्डली में आपको मंगल नवांश पति मिल सकता है। कई सर्जन की कुण्डली में भी मंगल को देखा जा सकता है। मुखबिर करने वाले या जासूस लोग भी इस ग्रह की वृत्ति में आते है। ब्लड बैंक में कार्य करने वाले तथा पेशेवर रक्त देने वाले भी हो सकते हैं

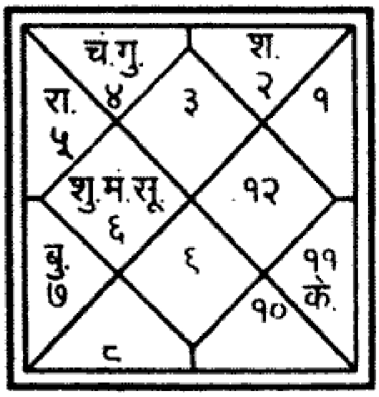

कुण्डली नं १५९

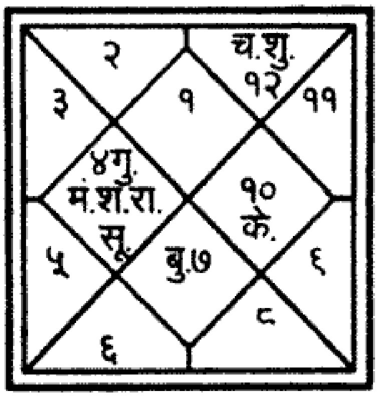

नवांश कुण्डली नं १६०

कुण्डली न. 159 के जातक का जन्म अक्टूबर **1942** में हुआ। यह जातक पुलिस में डी.सी.पी. है। देखिए कुण्डली में चंद्र लग्न बली है क्योंकि चंद्र गुरू कर्क राशि में है। वैसे भी जन्म लग्न एवं चंद्र लग्न से दशम में कोई ग्रह नहीं हैं। अब चंद्र लग्न से दशम भाव का स्वामी मंगल है। कुण्डली में दशम भाव पर मंगल का प्रभाव पड रहा है। नवांश कुण्डली में भी दशम भाव पर मंगल का प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार यह जातक पुलिस में कार्य कर रहा है।

बुध की वृत्ति

नवांश के चान्द्रमसस्य काव्य ज्ञानने शास्त्रागम मार्ग रूपात।
पुरोहितत्वेन जपात्प्रवृत्तिः पाठाच्छुतेः शिल्पकलादिभिः स्यात्।।

बुध के नवांश में काव्यज्ञान से, शास्त्र तथा वेदान्त मार्ग से, पुरोहिताई, जप, शिल्प कला आदि से जीविका होती है।

वह कार्य जहाँ पर चतुराई करनी पड़े या बुद्धि का प्रयोग करना पड़े उन **सभी व्यवसायों** में बुध का अधिकार होता है। कमीशन का कार्य, बहाने बाजी से, **समाचार** पत्र या प्रिंटिंग प्रेस के कार्य से, व्यापार द्वारा, भाषा द्वारा, पी एण्ड टी विभाग की नौकरी, दूरदर्शन एवं दूरसंचार की नौकरी, कोरियर का व्यवसाय, **कम्प्यूटर का व्यवसाय** भी इसी के द्वारा देखा जा सकता है।

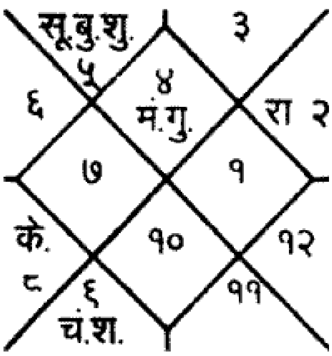

कुण्डली नं १६१

कुण्डली न. 161 के जातक का जन्म अगस्त 1872 में हुआ। यह जातक एक महान कवि था।

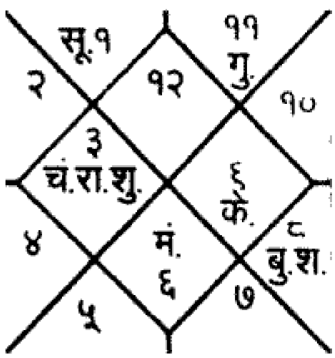

नवांश कुण्डली नं १६२

इनकी जन्म कुण्डली को देखें तो जन्म लग्न एवं चन्द्रमा से दशम भाव में कोई ग्रह नहीं है। जन्म लग्न बली है अतः इससे दशम भाव का स्वामी मंगल है जो कि नवांश कुण्डली नं 162 कन्या राशि में स्थित है। कन्या राशि का स्वामी बुध है। अतः इनकी वृत्ति काव्य द्वारा होना प्रमाणित होता है।

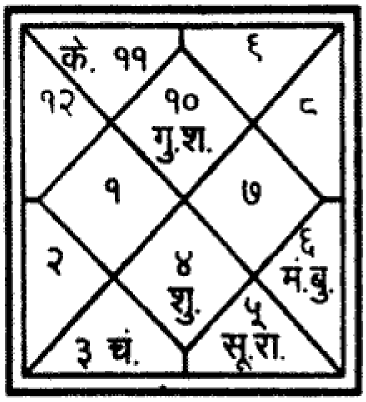

कुण्डली नं १६३

कुण्डली नं 163 के जातक का जन्म सितम्बर माह 1961 को हुआ जातक ने कम्प्यूटर में उच्च शिक्षा ग्रहण करी तथा वर्तमान में जयपुर की एक बड़ी प्रिंटिंग प्रेस के स्वामी भी है। इनकी कुण्डली में देखें तो चन्द्रमा जन्म एवं लग्न से दशम में कोई ग्रह नहीं है। लग्न बलवान है अतः इससे दशम भाव का स्वामी शुक्र है जो कि नवांश कुण्डली नं 164 में मिथुन राशि का है। इस राशि का स्वामी बुध है।

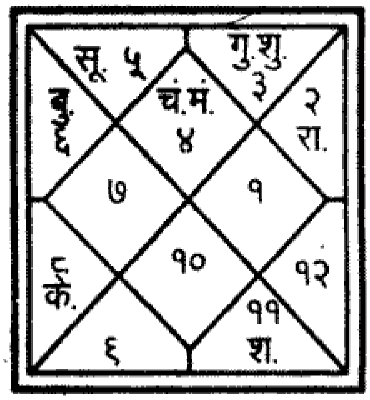

नवांश कुण्डली नं १६४

अतः बुध की ही वृत्ति द्वारा जातक धन कमा रहा है। यहां पर एक विशेष बात को देखें कि जन्म कुण्डली में जातक का चन्द्रमा मिथुन राशि का है तथा कुण्डली में बुध उच्च राशि का होकर भाग्य भाव में है। अतः कुण्डली को बुध का प्रभाव अधिक है। इस के कारण वश जातक ने कम्प्यूटर की भी उच्च शिक्षा ग्रहण करी

गुरू की वृत्ति

महामतेर्नन्दलवे पुराणशास्त्रा गमानां पठनात्स जीवेत।
देवद्विजोपा सकनीतिधर्म्मोपदेश तो अध्यापक मार्गरूपात्।।

गुरू के नवाशं में पुराण, शास्त्र तथा वेदान्त के पाठ से , देवता एवं ब्राह्मणों की सेवा से, नीति एवं धर्मोपदेश से अध्यापन से, जीविका होती है।

गुरू के अधिकार क्षेत्र में मात्र वेद पाठ ही नहीं है अपितु बैंक, कचहरी, भी इसमें आते है। यहाँ पर पाठकों को यह बताना भी उचित समझते है कि गुरू के द्वारा सूद (ब्याज) से भी वृत्ति देखी जा सकती है। फाइनेन्स कम्पनी का जो प्रचलन आजकल चल पडा है। उन कम्पनियों के स्वामियों की कुण्डलियों में भी

गुरू को देखा जा सकता है। मेनेजमेंट कन्सलटेंट या बडे मेनेजर भी गुरू के प्रभाव में पाये जाते है। बडा प्रकाशन भी गुरू के ही अधिकार में है। इसी प्रकार स्टाक एक्सचेंज पर भी गुरू का अधिकार देखा गया है। यहाँ पर हम एक जातक की कुण्डली दें रहे है जो कि स्टाक एक्सचेंज में डायरेक्टर है।

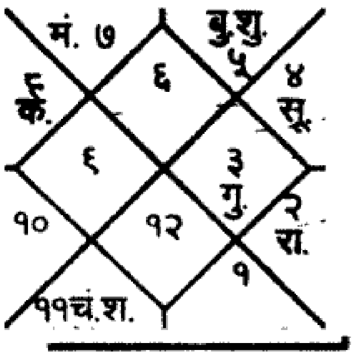

कुण्डली नं १६५

कुण्डली न. 165 के जातक का जन्म अगस्त 1965 का है। आप शेयर का व्यापार करतें है। तथा छोटी सी ही आयु में अच्छा धन कमाया है। आप स्टाक एक्सचेंज में डायरेक्टर है। यहाँ पर दशम भाव में गुरू को देखें। इस गुरू के प्रभाव से आप स्टाक एक्सचेंज के डायरेक्टर बने। स्टाक ब्रोकर तो आप बुध के कारण है। परन्तु उच्च पद आप को गुरू ने दिलवाया है।

कुण्डली नं १६६

कुण्डली न. 166 प्रसिद्व शेयर व्यापारी श्री हर्षद मेहता की है। आप का जन्म जुलाई 1954 को हुआ। यहाँ पर भी दशम भाव में गुरू को देख सकते है। अतः पाठक गणों को हम इस खोज को देना चाहते है। कि गुरू के अधिकार क्षेत्र में स्टाक एक्सचेंज भी होते है। इस पर हमने कई वर्षो की खोज करी है। तथा कई स्टाक एक्सचेंज से संबंधित लोगों कि कुण्डलीयों का अध्ययन करा इन व्यक्तियों पर हमने गुरू का प्रभाव पाया। शेयर बाजार पर ज्योतिषीय द्रष्टिकोण पर आप हमारी पूर्व प्रकाशित पुस्तक **"शेयर बाजार की तेजी मन्दी तथा ज्योतिष"** पढ कर हमारी इस खोज का ज्ञान ले सकते है।

शुक्र की वृत्ति

माणिक्य नागश्व सुवर्ण मूलात्त क्रौदनक्षार गुड क्रयेण।
लोभेन वध्वाः सुरभिक्रयेण जातो जनो जीवति भार्गवांशे।।

शुक्र के नवांश होने पर रत्न, हाथी, घोडे, सोना, चांदी से, छाछ, भात, नमक तथा गुड के खरीदने से, स्त्री के प्रलोभन से, गोवों के क्रय से जीविका होती है। इस ग्रह की वृत्ति में आज कल कई प्रकार की नई जीविकांए भी आ गई हैं। जैसे कि माडलिंग या सीरियल आदि में एक्टिंग हो या फिर मनोरजंन पार्क का व्यवसाय हो सकता है। आजकल आलीशान होटल व रिसोंट भी चलाने का व्यापार बहुत चल रहा है। ब्यूटी पार्लर भी जगह जगह खुल रहे है। रेडीमेड वस्त्र बनाने तथा बूटिक, फैशन डिजाइनिग, फैशन शो करना, यह सब शुक्र के अन्तरगत आते है। आजकल केबल टी.वी. का व्यवसाय भी जोरों पर चल रहा है। यह भी इसके अन्तरगत आता है।

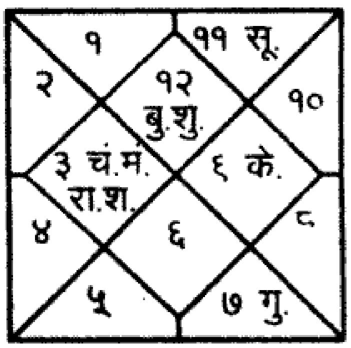

कुण्डली नं १६७

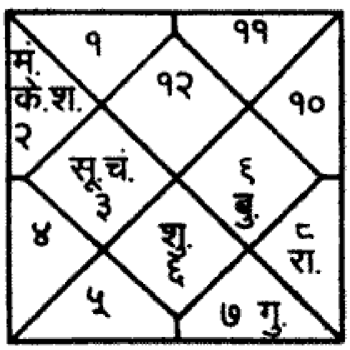

नवांश कुण्डली नं १६८

कुण्डली न. 167 एक सुप्रसिद्ध हालीवुड की अभीनेत्री की है। इनका जन्म मार्च 1946 में हुआ। इस कुण्डली मे लग्न एवं चद्र लग्न से दशम भाव के स्वामी गुरू है तथा वह नवांश कुण्डली में तुला राशि का है। तथा तुला राशि का स्वामी शुक्र होता है। अत: सिनेमा से इनका संबंध होना आवश्यक बनता है। यहाँ पर गुरू वर्गोत्तम है। कुण्डली में शुक्र का प्रभाव अधिक है। अतः सिनेमा एव कला के क्षेत्र में इनको सफलता मिलनी ही चाहिए।

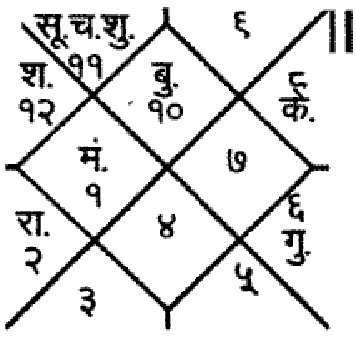

कुण्डली नं १६६

कुण्डली न. 169 एक फिल्म स्टूडियों के स्वामी की है। इनका जन्म सन् 1910 में हुआ। इस कुण्डली में दशम भाव में तुला राशि है। तथा इसका स्वामी शुक्र है। जो कि नवांश कुण्डली न. 170 में तुला राशि में है। अर्थात अपनी ही राशि में है। इस लिए इस जातक को सिनेमा से संबंध बना। कुण्डली में मंगल का प्रभाव दशम भाव से होने पर फिल्म स्टूडियों बनाया।

पाठक यह न समझलें कि नवांश कुण्डली में दशमेश के स्वामी स्थित राशि का स्वामी शुक्र के होने पर सभी जातकों का फिल्मों से संबंध होता है। ऐसा नहीं है अपितु शुक्र से संबंधित वृत्ति द्वारा जीविका अवश्य होती है।

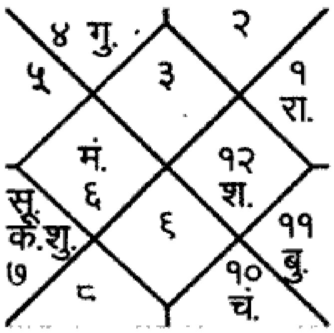

नवांश कुण्डली नं १७०

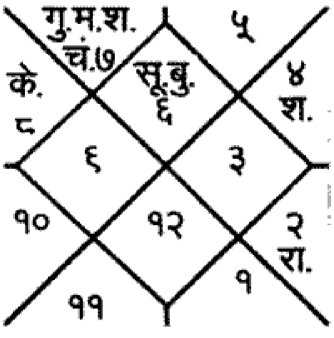

कुण्डली नं १७१

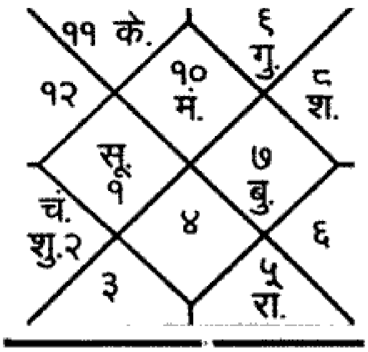

नवांश कुंण्डली नं १७२

कुण्डली न. 171 के जातक का जन्म सितम्बर 1946 का है। यह जातक एक बडे फोटो स्टूडियों का स्वामी है तथा अभी कुछ वर्षो से केबल टी. वी. का व्यवसाय भी आरम्भ करके अति सफल व्यापारी हो गया है। इनकी कुण्डली में दशम स्थान में कोई ग्रह नहीं है तथा दशमेश, नवांश कुण्डली में तुला राशि में है। तुला राशि का स्वामी शुक्र के कारण वश यह सज्जन फोटोग्राफी का व्यापार और केबल टी.वी. का व्यापार कर रहे है। देखो नवांश कुण्डली नं १७२

शनि की वृत्ति

मन्दांशके मार्गगमादिकेन मिथोविरोधोदभव बहेतुतोऽस्य।
वधादिकैः काष्ठमयैः सुनीचशिल्पैः प्रवृत्तिः श्रमभारवाहात।।

शनि के नवांश में, मार्ग के गमनागमन से, परस्पर विरोध जन्य कारणों से, काष्ठ से, वधादि से, नीच शिल्प से, परिश्रम तथा भार वहन से जीविका होती है।

शनि प्रायः परिश्रम से धन दिलवाता है। यह धन अन्याय, निन्दित मार्गों से भी हो सकता है। आजकल कई व्यापारी काला बाजारी व टैक्स की चोरी करते है यह भी इस शनि का ही कमाल है। आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी ने गमनागमन से एवं परस्पर विरोधजन्य कारणों से वृत्ति के लिए कहा है। इसकी सत्यता को हमने कुछ मोबाईल मैजिस्ट्रेट एवं कुछ मुबाईल पुलिस वालों की कुण्डली में देखा है। वैसे कई जजों की कुण्डली में दशम भाव में शनि का प्रभाव देखा जो सकता है। शनि को न्याय दिलाने वाला भी कहा जाता है। हमने कई बड़े वकीलों, की कुण्डलियो पर अध्ययन करा तो यह पाया कि जिन वकीलों की कुण्डली में दशम भाव या लग्न या लग्नेश पर शनि का प्रभाव है वह कम्पनी कानून, लेबर कानून, मुस्लिम कानून, भूमि संबंधित मुंकदमे आदि अधिक करते है। इनके अतिरिक्त शानि का अधिकार बडे भूमिहर तथा बड़े बड़े कारखानों से भी होता है। अर्थात बडे कारखानों के स्वामियों की कुण्डली में भी श.ानि का प्रभाव देखा जा सकता है। कई बड़े बड़े तेल के व्यापारियों की कुण्डली में शनि का प्रभाव मिलता है वैसे तो लोहा, कोयला, पैट्रोल पम्प, प्रिंटिग इंक, आदि का व्यवसाय भी इसके अधिकार क्षेत्र में आता है छाछ (मट्ठा), हलवाई, अचार, चटनी, खटाई आदि का व्यापार भी शनि के नवांश पति होने पर देखा जाता है। राजनीतिज्ञों की कुण्डली में भी शनि नवांश पति होता है। प्रायः जो भी व्यापार जातक करना है उसमें कई लोगों के परिश्रम की आवश्यकता पडती है। अर्थात यह जातक मैन्यूफैक्चरिंग का व्यवसाय करते है।

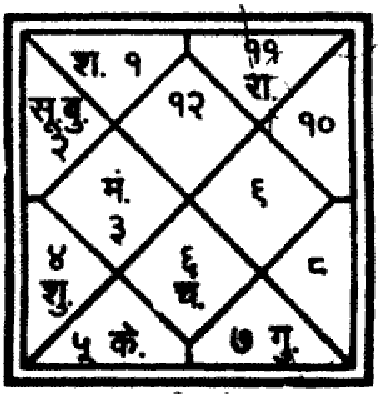

कुण्डली नं १७३

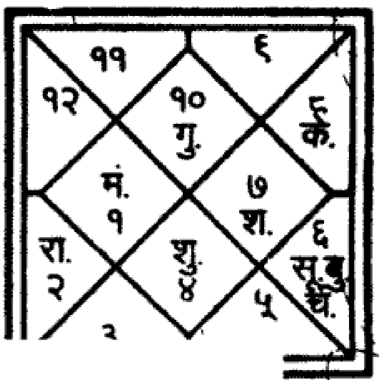

नवांश कुण्डली नं १७४

कुण्डली न. 173 के जातक का जन्म जून 1970 को हुआ। यह जातक एक बडी आटे की मिल मे अपने पिता के साथ व्यापार में कार्यरत है। जातक की कुण्डली में गुरु दशमेश होकर नवांश कुण्डली में मकर राशि में है। इस राशि का स्वामी शनि ग्रह है। अतः यह जातक कई मजदूरों को लगाकर व्यापार करता है। इन महाशय का विचार ट्रक आदि चलाने का भी है। यह हमसे अपने यह विचार व्यक्त कर रहे थे तो हमने इनको यह कार्य करने में अपनी सहमति भी दी कि शनि भार ढ़ोने का कार्य भी करवाता है अतः यह व्यापार इन को चल सकता है।

17

दशमस्थ द्विग्रह फल

पाठक गण इन सातों ग्रहों की वृत्ति के विषय में जान चुके होगें। यही ग्रह जब दशम भाव में होते है तो जीविका इन्हीं के अनुसार होती है। दशम भाव में (लग्न, चंद्र लग्न) से पड़ रहे ग्रहों के प्रभाव को जानना अति आवश्यक है क्योंकि इन मे से सबसे बली ग्रह के अनुसार ही मनुष्य वृत्ति को पाता है। कई बार दो या तीन ग्रह के एक साथ दशम भाव में होने पर कुछ और ही प्रभाव देने लगते है। अतः दशम भाव (लग्न या चंद्र लग्न) में स्थित दो व उससे अधिक ग्रहों का फलादेश जानने की चेष्ठा करते है।

सू-च :- यह युति दशम भाव में या किसी अन्य भाव में होने पर मकैनिक, यन्त्रों से संबंधित कार्य या पत्थरों से संबंधित किसी भी कार्य का करने वाला होता है। यह जातक सरकारी नौकरी में भी जाता है।

सू-म. :- ऐसा जातक उच्च स्तर में नहीं होता यह कुछ पाप कर्म भी करता है बुरी संगत में चला जाता है। नौकरी ही करता है। यह नौकरी सरकारी या किसी बड़े संस्थान की हो सकती है। परन्तु इस योग में यदि चंद्रमा आदि की द्रष्टि पड जाए ता जातक बड़ा व्यापार या उच्च पदासीन भी हो जाता है। सूर्य मंगल के कारण जातक विदेश से भी धन कमाता है।

सू-बु :- यह योग बुद्धिमानों को पाया जाता है। व्यक्ति प्रसिद्धि पाता है। यह व्यक्ति उच्च पद में या अच्छा व्यापार करता है। इस व्यक्ति का सरकार से किसी न किसी प्रकार का संबंध रहता है। इंजीनियर भी बन सकता है।

सु-गु :- ऐसा जातक नौकरी करने वाला होता है। परन्तु ऐसा जातक साधारण परिवार में होता हुआ भी उच्च स्तर तक अवश्य पहुचता है।

सू-शु :- यह जातक शस्त्र या रंग मचं, सिनेमा टी.वी. कलाकार होगा तथा राज्य से इसका संबंध होता है। इस जातक को ससुराल पक्ष से भी सहायता प्राप्त होती है।

सू-श :- यह जातक नौकरी करने वाला होता है। अपने जन्म स्थान से दूर रहकर जीविकोपार्जन करता है। इस जातक को माता पिता का सुख कम ही प्राप्त होता है। इस जातक को धातु खनिज आदि पदार्थो से संबंधित कार्यो से वृत्ति मिलती है। नौकरी में भी कोई विशेष उच्च पद नहीं मिलता है। यदि इनमें से कोई ग्रह उच्च या स्वाराशि का होतो ऐसा नही होता है।

च-मं. :- यह योग धन के लिए उत्तम होता है। जातक पानी से संबंधित किसी कार्य में अथवा बर्तनों के व्यापार में अथवा ऐसा कार्य जिसमें साहस का प्रयोग हो।

चं-बु :– यह होने पर जातक धन के कार्य में निपुण होता। यह जातक सर्व सम्मानीय, विद्वान, कीर्त्तिवान होता है। जातक बोलने में निपूण होता है। अतः अपनही इस क्षमता का प्रयोग कर वृत्ति को पाता है। यह जातक किसी वाक्य या गणित का अर्थ निकालने में भी निपुण होता है।

चं-गु :- यह योग व्यक्ति को प्रसिद्ध, उच्च पदासीन तथा अपने कुल में श्रेष्ठ बनाता है। ऐसा जातक वेदों एवं ज्योतिष विद्या का जानने वाला भी होता है। यह उच्च राजकीय सेवा में तथा कोर्ट–कचहरी से भी संबंध रखता है। अध्यापन में भी संबंध होता है।

चं-शु :- ऐसा जातक वस्त्रों के व्यवसाय, चांदी या रूई, कपास का व्यापारी, स्त्रियों से संबंधित व्यापार से धन कमाता है।

चं-श :- जातक विख्यात, शत्रुजीत, धनी दो स्त्री वाला होता है। कई बार जातक को व्यवसाय में संघर्ष करते भी देखा जा सकता है परन्तु यदि उच्च या स्वग्रही शनि या चंद्र के होने पर महाधनी भी बनते देखा है। और यदि इस को कुछ शुभ प्रभाव पड जाए तो जातक जे.आर.डी टाटा की तरह हो जाता है। पूर्व में दी गई कई कुण्डलियों में दशम भाव में चंद्र शनि देखा जा सकता है। हमारा अनुभव है कि जातक विदेश से धन भी कमाता है।

मं-बु:- जातक सेना या पुलिस से संबंधित विभागों की नौकरी या ऐसे कार्य जहाँ पर साहस की आवश्यकता है ऐसे कार्य भी करता है। जहाँ पर बुद्धि की आवश्यकता होती है वह कार्य भी करते देखा जा सकता है। कई वैज्ञानिक व तकनीकी विशेषज्ञों की कुण्डली में यह योग भी पाया गया है। जातक, जडी बूटी पोधे वृक्ष की छाल, तेल, घी आदि चिकने पदार्थो का व्यापार भी करता है।

मं-गु :- यह योग व्यक्ति को धनी बनाता है। यह जातक किसी नगर पालिका या किसी राजनीतिक संस्था का अध्यक्ष भी हो सकता है। सरकार या बड़े संस्थान में उच्च पदासीन भी हो सकता है। यह जातक अपने मित्रों से अथवा उनके आधीन रह कर जीविकोपार्जन करता है। यह जातक अनुसंधान में भी कार्यरत हो सकता है।

मं-शु :- जातक विदेश में व्यापारी बनता है। यह जातक सोने के आभूषण, कीमती रत्नों का व्यापारी भी हो सकता है। यह व्यक्ति क्षत्रियों के आश्रय में रहकर जीविकोपार्जन भी करता है। फिल्मों में भी यह जातक कार्य कर सकता है। यदि फिल्मों में कार्य करेगा तो वह वही रोल करेगा जिसमें साहस की आवश्यकता पड़ें। फिल्म स्टार संजय दत्त की कुण्डली में यह योग है। फलदीपिका के अनुसार किसी भी भाव में यह दो ग्रह एक साथ हो तो जातक पहलवानी, जुए से धन कमाता है। ऐसा जातक शस्त्र विद्या का जानकार भी होता है।

मं-श :- यह जातक ऐसा कार्य करता है। जिसमें झूठ बोलकर लोगों से पैसा एकत्र करे। जातक मशीन या धातु, से सम्बन्धित कार्य में लगता है। यह जातक भूमि से सम्बन्धित कार्य भी करता है तथा कई ऐसे कार्य भी करता है,जो छिप कर किये जाते हैं। जैसे भूमि माफिया, सुपारी के पैसे वसूलने का कार्य आदि।

बु. गु. :– यह योग इज्जतदार व धन कारक है। यह जातक सरकारी नौकरी में कार्य करता है। जातक लिखने पढने का कार्य करता है। व्यापार में यह जातक फाइनेंस कम्पनी, स्टॉक एक्सचेंज या बैंक आदि में भी कार्यरत होते हैं। फलदीपिका के अनुसार यह जातक नृत्य कला या स्टेज से भी धन कमाता है।

बु. शु. जातक विद्वान, धनी, कलाकार होता है। यह जातक राज्य मंत्री भी हो सकता है। लेखक भी होते हैं। फिल्मों के लिए भी लिख सकते हैं। बोलने में चतुर, गांव के मुखिया, पंचायत के प्रमुख, पत्नी से भी लाभ पाते हैं। कानूनी परमर्शकार भी होते हैं।

बु. श. :– जातक नौकरी करने वाला, चतुर एवं चालाक भी होता है। मिट्टी के बर्तन, बनाने वाला चित्रकार, कई लेखक भी इस योग में पाये जाते हैं। अकाउण्ट का कार्य, टाईपिस्ट आदि भी होते हैं। प्रायः बुध शनि के होने पर उच्च पद नहीं मिलता है वह किसी फैक्ट्री में का कार्य भी करते हैं। यह व्यक्ति प्रूफ रीडर या ड्राफ्ट्समैन भी हो सकते हैं।

गु. शु. :– यह उच्च पदासीन, धनी बनाता है। राजा की नौकरी करने वाला विद्वान होता है। सूर्य गुरू या चन्द्र गुरू की भांति यह भी प्रतिष्ठित व्यक्ति बनाता है।

गु. श. :– यह याग होने पर कचहरी से सम्बन्धित होता है। उत्तमकार्य करने वाला, विख्यात, राज्य मंत्री होता है। यह व्यक्ति किसी विदेशी संस्था मं भी उच्च पदासीन हो सकता है।

शु. श. :– लेखक, चित्रकार, पुस्तकों से सम्बन्धित कार्य, डॉक्टर, सुगन्धित पदार्थो का व्यापार, तेल का व्यापार, फिल्म गायन आदि का कार्य सोने व अन्य धातु का व्यापार महिलाओं से सम्बन्धित व्यापार द्वार ,प्रायः व्यापार या स्वयं के रोजगार द्वारा कार्य करता है।

18

जीविकोपार्जन के अन्य योग

व्यापारी योग

क्लेशोदवसितेशेन कलिते कण्ठमन्दिर
विक्रेता दृषदादीनां काष्ठाना जनितो जनः।

व्यापारी खे मृगधरजनौवाथ राज्यें शुभानां
दृष्टयाधिक्येऽथ दिवितनुपेऽथोदयाभ्रेशयोगे।

कि कृत्येशे मतिगुरुफले कण्टके धारूदृष्टे
तद्वत्खेशे नभासि सशुभे मानशीलस्तथा स्यात्।

- दशम में लग्नेश या बुध हो तो व्यक्ति व्यापारी होता है।
- दशम में कई शुभ ग्रहों की दृष्टि हो।
- लग्नेश तथा दशमेश का योग हो।

पंचम, नवम लाभ वा केन्द्र में दशमेश हो और वह शुभ ग्रैहों से द्रष्ट हो।

- तृतीय भाव में षष्ठेश हो तो पाषाण प्रभृति का एवं काष्ठो का विक्रेता होता है।
- इन सभी योगों में व्यक्ति वाणिज्य द्वारा जीविकोपार्जन करता है।

इन योगों के अतिरिक्त भी अन्य कई योग हैं।

- द्वितीयेश एकादश में हो तथा एकादशेश द्वितीयस्थ हो तो बहुत बड़ा व्यापारी बनता है।
- इन सब योगों में एक अन्य प्रमुख योग है कि तृतियेश का एकादश भाव एंव भावेश से सम्बन्ध होना।

दशम स्थान का स्वामी केन्द्र त्रिकोण या एकादश स्थान में गया हो तथा उसे शुभ ग्रह देखते हो तो मनुष्य व्यापारी होता है।

तृतीय, सप्तम, भाव एवं भावेशों का एकादश या धन भाव से सम्बन्ध होना चाहिए।

स्वतंत्र व्यवसायी योग

यदि चन्द्रमा से केन्द्र में बु, गु तथा शुक्र हो या इनमे से दो ग्रह भी हो तो जातक स्वतंत्र व्यवसाय करता है।

चन्द्रमा से द्वितीय एकादश गुरू व शुक्र हो।

चन्द्रमा से तृतीय एकादश गुरू या शुक्र के होने पर भी स्वतंत्र व्यवसाय करने वाला होता है।

राज्य कार्यकर्त्ता (सरकारी नौकरी)

अंशे संहसे किमु कण्टकेऽर्केवेन्दौ तपःकेन्द्रसुतेऽथवाऽऽये।
केन्द्रेखपे वा पुरूहूतपूज्ये पानीयपौरे नृपकार्यकर्त्ता।।

कारकांश लग्न में सूर्य हो।

केन्द्र में सूर्य हो।

केन्द्र त्रिकोण में चन्द्रमा हो।

लाभ व केन्द्र में दशमेश हो।

चतुर्थ भाव या लग्न में गुरू हो तो इन सभी योगों में मनुष्य राज्य कार्यकर्त्ता या सरकारी सेवक होता है। इनमें से मात्र एक योग के होने पर पाठक यह न समझ लें कि सरकारी नौकरी पक्की है। यह जातक अपने जीवन काल में कभी न कभी नौकरी अवश्य करता है। वह गैर सरकारी भी हो सकती है। इन योगों में कम से कम दो या तीन योग हो तथा जो ग्रह यहां पर दिये गए हैं वह उन स्थानों में हो उन पर उन्हें पाप ग्रहों कि द्रष्टि या युक्ति नहीं होने चाहिए।

पूज्ययज्ञयोगे किमुपूज्यदृष्टे पुण्याधिपेऽङ्गेयदि राजमान्यः।
पारावतादौ पथिपेऽथलाभे भदेश्वरे किं शुभवर्गयाते।।

- गुरू तथा बुध का योग हो।
- लग्न में भाग्येश हो तथा वह गुरू द्वारा दृष्ट हो।
- पारावातादि शुभ वर्ग में नवमेश हो।
- लाभ व शुभ वर्गो मे नवमेश हो तो उक्त रोगों में भी मनुष्य राज्य कार्य करता है।

इन सभी योगों में से कई योग आपको बड़े आई. ए. एस. अधिकारियों की कुण्डलियों में देख सकते हैं या फिर भारत के सभी प्रधानमंत्रियों या राष्ट्रपतियों की कुण्डली में देखे जा सकते हैं। यहां पर हम आपको कुछ कुण्डलियां उदाहरण के लिए दे रहे हैं।

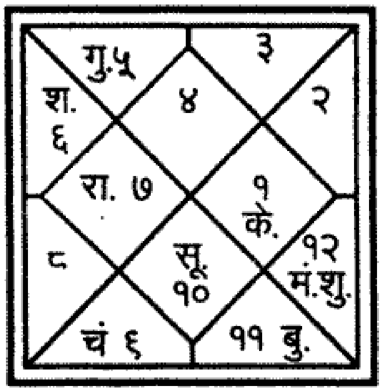

कुण्डली नं १७५

कुण्डली नं 175 के जातक हमारे वर्त्तमान राष्ट्रपति महामहिम श्री के. आर. नारायण है। आपकी कुण्डली मे देखे गुरू द्वितीय भाव में स्थित होकर बुध को देख रहा है। भाग्येश गुरू धन में स्थित है। दशमेश त्रिकोण भाव में स्थित है। लाभेश चतुर्थेश शुक्र उच्च राशि का होकर भाग्य भाव में स्थित है।

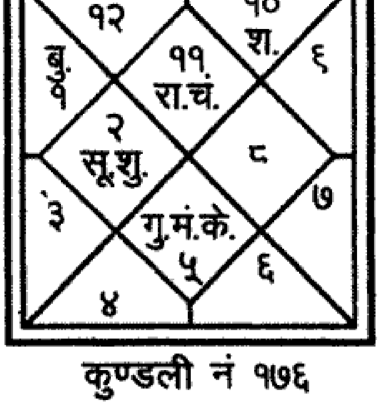

कुण्डली नं १७६

कुण्डली नं 176 के जातक पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच. डी. देवेगौड़ा जी की है। यहां पर देखें गुरू की द्रष्टि बुध पर है। अतः बुध गुरू का योग है। चं सू. दोनों केन्द्र में है। भाग्येश केन्द्र में है एवं दशमेश केन्द्र में है। यह सभी राज्य कार्यकर्त्ता योग है।

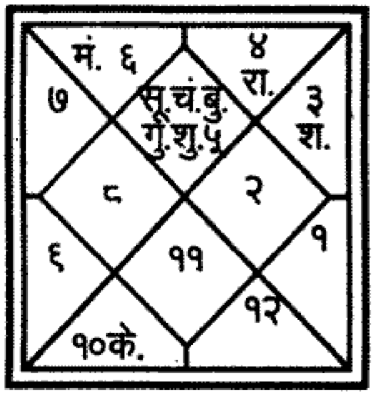

कुण्डली नं १७७

कुण्डली नं 177 स्व. प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी की है। यहां पर लग्न में बुध गुरू का योग है। भाग्येश मंगल धन भाव में स्थित है। दशमेश शुक्र लग्न में स्थित है। लग्न में ही सूर्य, चन्द्र गुरू आदि ग्रह यह सब राज्यकार्यकर्त्ता ही दर्शाते है।

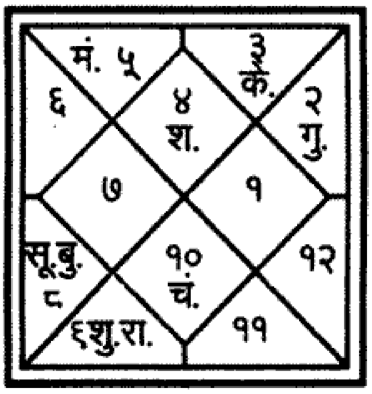

कुण्डली नं १७८

कुण्डली नं 178 स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी की है। यहां पर देखें। गुरू, बुध पर तथा बुध की गुरू पर पूर्ण द्रष्टि है। सूर्य एवं चन्द्र दोनों केन्द्र त्रिकोण में है। दशमेश धन स्थान में है। भाग्येश लाभ स्थान में है। यह सब राज्य कार्यकर्त्ता के योग हैं।

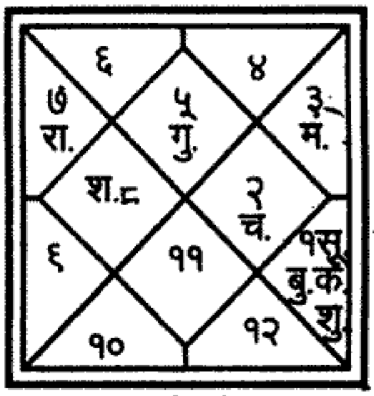

कुण्डली नं १७९

कुण्डली नं 179 के जातक का जन्म मई 1957 का है। यह जातक अति बुद्धिमान है तथा आई. ए. एस. अधिकारी है। इनकी कुण्डली में यदि दृष्टि दौड़ाएं तो गुरू लग्न में स्थित है तथा पूर्ण द्रष्टि से बुध को देख रहा है। भाग्येश मंगल एकादश भाव में है। चन्द्रमा केन्द्र में है। लग्नेश सूर्य नवम भाव में है। यह सभी योग राज्य कार्यकर्त्ता के हैं।

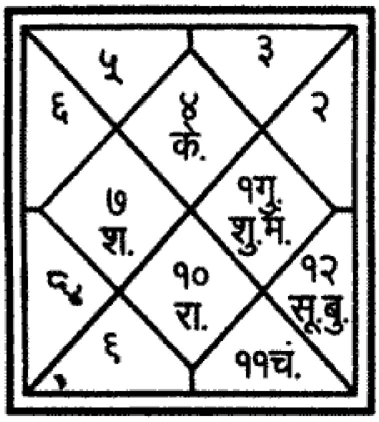

कुण्डली नं १८०

कुण्डली नं 180 के जातक का जन्म मार्च 1953 का है। यह भी एक आई. ए. एस अधिकारी की कुण्डली है। यहां पर गुरू एवं बुध का मात्र यह ही सम्बन्ध है कि बुध गुरू की राशि मीन में स्थित है। सूर्य त्रिकोण में है। दशमेश केन्द्रगत ही है। भाग्येश दशम भाव में है। एकादश का स्वामी शुक्र भी दशम भाव में है। यह सब राज्य कार्यकर्त्ता के ही योग हैं।

इनके अतिरिक्त और कई ऐसे विशिष्ट योगों से भी व्यवसाय आदि का पता चलता है जैसे कि सर्पयोग में उत्पन्न व्यक्ति सदा ही चन्दा मांग कर या उधार मांग कर, छोटी मोटी नौकरी या व्यापार कर के अपना गुजारा करते हैं। इस योग में सूर्य, शनि तथा मंगल, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव में हो तथा चन्द्र गुरू शुक्र एवं बुध इन स्थानों में न हो।

शर योग :- चतुर्थ स्था. से सप्तम भाव तक समस्त ग्रह होने पर यह योग बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति जेल, पुलिस, सेना आदि में कार्य करते हैं।

नौका योग

नौयोग उदगम गृहाद्विहगैः समस्तैः सप्तर्क्षगैः सविभवः सलिलो पजीवी।
ह्रष्टोबली च कृपण प्रचुरप्रयास युक्तश्चलो विदितकीर्त्ति रिहापि लुब्धः।।

लग्न से सप्तम भाव में लगातार सभी भावों में सातों ग्रह हो तो इस योग में उत्पन्न जातक नौ सेना में कार्यरत, या फिर जहाज की नौकरी में कार्यरत अथवा पानी सम्बन्धित किसी व्यवसाय में होता है।

चाप योग :- दशम भाव से आगे के सात भावों में अर्थात चतुर्थ भाव तक सभी ग्रह हो तो इस योग में उत्पन्न व्यक्ति जेलर, गुप्तचर, राजदूत, वन विभाग में कार्यरत होते हैं।

केदार योग :- चार राशियों में समस्त ग्रहों के होने पर केदार योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक कृषि या भूमि से सम्बन्धित कोई ने कोई कार्य अवश्य करते हैं।

व्यापार विचार

व्यापार के विचार के लिए सप्तम भाव, बुध, तृतीय एवं एकादश भाव से करना चाहिए। इन भावों एवं भावेशों के बलाबलानुसार फल कहना चाहिए।

- बुध यदि सप्तम भाव में हो तथा दशमेश धन भाव में हो।
- द्वितीयेश बुध के साथ सप्तम भाव में हो।
- सप्तमेश एवं धनेश का योग भाग्य भाव या एकादश भाव में हो।
- बुध एवं शुक्र इन दोनों का योग द्वितीय या सप्तम में हो तथा शुभ ग्रह इनको देख रहे हो।
- उच्च राशि का बुध सप्तम भाव में हो तथा धन भाव में धनेश की दृष्टि हो।
- गुरू पूर्ण दृष्टि से धनेश को देखता हो।
- द्वितीयेश शुभ ग्रह की राशि में हो तथा बुध या सप्तमेश द्वारा दृष्ट हो तो उक्त योगों में भी व्यापारी बनता है।

मरूद योग

कोणस्थः कवितो गुरूर्धिपणतः सोमः सुते सोमत
आदित्यो यदि कण्टकाल यगतो वाताख्योगः क्रये।
दक्षो विक्रयकेऽपि पीनजठरो वातोभ्दवः शास्त्रावित्‌
सम्पनः पृथुह्यन्नराधिपसमो वाग्म्मी क्षमानायकः।।

शुक्र से त्रिकोण में गुरू, उससे पंचम में चन्द्रमा और उससे केन्द्र में सूर्य हो तो मरूद योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति क्रय–विक्रय में चतुर होता है।

यह व्यक्ति ट्रेडर होते हैं। यह योग विधायकों की कुण्डली में भी देखे जा सकता हैं। प्रायः इस योग में उत्पन्न व्यक्ति किसी ने किसी आयोग के सदस्य भी बनते हैं।

सकट योग

वागीशो विधुतो वधारिगृहगः केन्द्रात्त नोरून्यगो
योगोऽयं शकटाभिधो बुध वैरर्गीतोऽत्रजातो नरः।
निर्दव्यो मनुजाधिनाथ कुलजोऽपिलाधिभूविप्रियः
क्लेशायासबशातसुतप्त हृदयो गर्गादिभिर्गीयते।।

चन्द्रमा से षष्ठ या अष्टम में स्थित गुरू यदि लग्नोत्थ केन्द्र से अन्य स्थान में हो तो मनुष्य बुरी अवस्था में होता है। परिश्रम करने पर भी धन की प्राप्ति नहीं होती।

बुध योग

गोरोऽंगे हिमगुश्चतुष्टयगतो गारा द्विधोर्बाहुगो
राजन्यौ वसुगोऽसुरो निगदितो योगो बुधाख्यो बुधैः।
विख्यातो बुधजोनरोऽतुलबलो दर्हद्वियुक्छास्त्रवित्
प्रज्ञावान नरनाथ वैभवयुतो दक्षः क्रये विक्रये।।

लग्न मे गुरू उससे केन्द्र में चन्द्रमा उस से तृतीय में सूर्य तथा मंगल और द्वितीय मे राहु हो तो बुध योग कहा गया है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति श्री युक्त होता है। इसे राज्य लाभ भी हो सकता है।

यह व्यापार में चतुर, क्रय-विक्रय करने वाला बुद्धिमान होता है। इस योग का फल प्रायः 28 वर्ष पश्चात ही देखने को मिलता है।

शकट योग

मार्त्तण्डमुख्याः खचरा नितान्तं कलेवरानंगनिकेतन्स्थाः।
प्रोक्तो बुधेन्दैः शकटाख्ययोगोऽनोवृत्तिरत्र प्रभस्य पुंसः।।

लग्न एवं सप्तम में समस्त ग्रह हो तो शकट योग कहा जाता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति ट्रांसपोर्ट का कार्य करते हैं। कई ड्राइवरों की कुण्डली में भी यह योग मिल सकता है।

19

कारकांश कुण्डली द्वारा आजीविका विचार

विहंगमो यः सकलाभ्रचारिणां मध्येऽधिकांशः सइहात्मकारकः।
तस्मात्खगो न्यूनलवः प्रकीर्त्यतेऽमात्यस्ततः सोदरकारक स्ततः।।
मातुश्च तातस्य सुतस्य कारको ज्ञात्यहव्यस्याथ कलत्रकारकः।
स्यातकारकैक्यं तनयाम्बयोस्तनर्यत्कारकांशे प्रथमस्य गोऽंशभम्।।

जन्म कुण्डली में सभी ग्रहों में से जिस ग्रह के अंश एवं कला सर्वाधिक हों वही ग्रह **आत्मकारक** ग्रह कहलाता है। इस ग्रह से कम अंश वाला ग्रह **अमात्यकारक** ग्रह कहलाता है। यहां पर पाठक यह समझ लें कि यदि दो ग्रहों के अंश एक हो तो जिसकी कला अधिक हो तो वह ग्रह ही आत्म कारक ग्रह होता है। इससे कम वाला अमात्यकारक तथा उससे कम वाला **भ्रातृकारक मातृकारक पुत्रकारक, जातिकारक, स्त्रीकारक** क्रमशः समझें।

सर्व प्रथम कारकांश कुण्डली का निर्माण करें। इसके लिए आप सबसे पहले आत्म कारक ग्रह को पहचानें। तदुपरान्त नवांश कुण्डली में इस आत्म कारक ग्रह को देखें कि यह किस नवांश में स्थित है। यही नवांश राशि कारकांश कुण्डली की लग्न राशि कहलाएगी तथा आत्म कारक ग्रह लग्न में स्थित हो जाएगा। अब नवांश कुण्डली के अनुसार स्थित ग्रहों को उन्हीं राशियों में इस कुण्डली में रखें। इसको समझने के लिए आइये पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी जी की कारकाश कुण्डली बनाते हैं।

आपका जन्म 20–8.1944 को प्रातः 7.56 मिनट पर बम्बई में हुआ। इसके अनुसार आपके ग्रह स्पष्ट तथा जन्म कुण्डली, नवांश कुण्डली तथा कारकांश कुण्डली इस प्रकार बनती है।

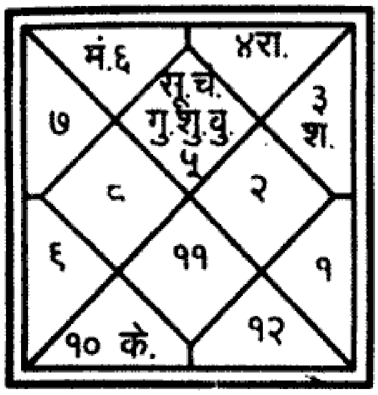

कुण्डली नं १८१
(स्व. श्री राजीवगांधी)

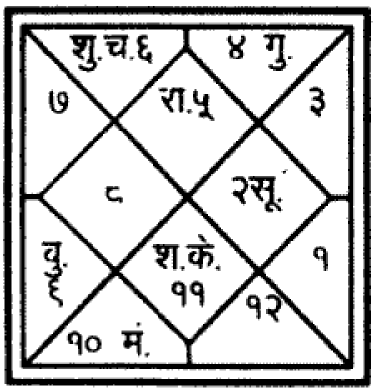

नवांश कुण्डली नं १८२

ग्रह स्पष्ट

लग्न – 4/14/39
सूर्य – 4/3/49
चन्द्र – 4/17/8
मंगल – 5/1/11
बुध – 4/28/33
गुरू – 4/12/0
शुक्र – 4/18/39
शनि – 2/14/12
राहु – 3/4/9

आइये अब इनकी कारकांश कुण्डली का निर्माण करें। सभी ग्रहों में बुध के अंश एव कला सर्वाधिक होने पर बुध ही आत्म कारक ग्रह कहलाएगा। इसके पश्चात शुक्र के अंश कला आते हैं तो शुक्र यहां पर अमात्य कारक ग्रह कहलाएगा फिर इसी क्रमानुसार अन्य ग्रहों को देखा जा सकता है।

अब आत्म कारक ग्रह बुध को नवांश कुण्डली में देखें तो यह धनु के नवांश में स्थित है। अतः कारकांश कुण्डली के लग्न में धनु राशि रख कर बुध वहां पर बिठा कर कुण्डली का निर्माण करें। मंगल नवांश कुण्डली में मकर राशि का हो तो कारकांश कुण्डली में भी इसको मकर राशि में ही रखें। शनि केतु कुम्भ राशि में स्थित है तो इनको इस कारकांश कुण्डली में कुम्भ राशि में ही रखे इस प्रकार सभी ग्रहों को नवांश कुण्डली की राशि अनुसार ही कारकांश कुण्डली में रखें। देखो कुण्डली नं 183 जो कि श्री राजीव गांधी जी की कारकांश कुण्डली बनती है।

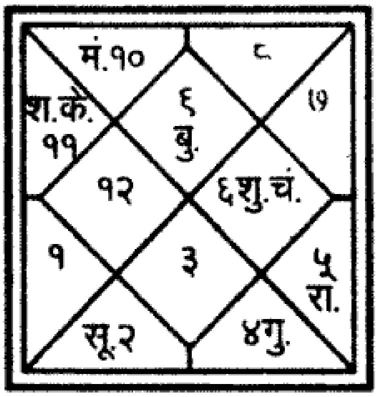

कारकांश कुण्डली नं १८३

आइये अब इस कारकांश कुण्डली द्वारा आजीविका का विचार करते हैं। सर्व प्रथम यह देखें कि इस कुण्डली के दशम भाव में किन ग्रहों का प्रभाव है। यदि शुभ प्रभाव दशम भाव में हो तो जातक स्थिर सम्पत्ति वाला, उच्च पदासीन व धनी होता है। यदि पाप प्रभाव हो तो जातक व्यापार में हानि एवं असफल रहता है।

इस स्थान पर सूर्य, चन्द्र एवं गुरू का प्रभाव पड़ने पर जातक उच्च पदासीन होता है। इस जातक का सम्बन्ध सरकार से अवश्य होता है। बुध एवं शुक्र का सम्बन्ध दशम भाव में होने पर जातक व्यापार द्वारा धन कमाता है। यह जातक बड़े–बड़े कार्य भी करता है।

कारकांश लग्न से केन्द्र व त्रिकोण में शुभ ग्रह रहने पर व्यक्ति सुखी व धनी रहता है। यहां पर पाप ग्रह होने पर मनुष्य बुरे कर्म द्वारा धन कमाता है। परन्तु दुखी भी रहता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

20

आत्म कारक ग्रह द्वारा फल विचार

प्रायः यह देखने में आया है कि आत्म कारक ग्रहों का मनुष्य की वृत्ति में विशेष प्रभाव होता है। कुण्डली में आत्मकारक ग्रह यदि शुभ राशि के नवांश में होगा तो मनुष्य सुखी धनी एवं उच्च पदाधिकारी होता है। यदि पाप ग्रहों के नवांश में हो तो मनुष्य छोटे एवं नीच कर्म करने वाला होता है।

हमने अपनी शोध में इस क्षेत्र में विशेष ध्यान रखकर जातक की वृत्ति का पता लगाया है। आइये प्रत्येक नवांश राशि में क्या फल मिलता है। उनको जानें।

मेष नवांश फल

ऐसा जातक डॉक्टर, न्यायिक वृत्ति, सेना, पुलिस या ऐसा कार्य जिसमें साहस की आवश्यकता पडे वह कार्य करता है। यही फल वृश्चिक नवांश में पडने पर भी देखा गया है। यदि आत्मकारक ग्रह मंगल हो तो भी यह फल पाया जाता है। हमने कई डॉक्टरों की कुण्डली में मंगल को ही आत्मकारक ग्रह पाया है। यदि इस मंगल का सम्बन्ध चन्द्र या सूर्य से बना हो तो जातक सरकारी अस्पताल में डॉक्टर होता है। वर्ना निज का नर्सिंग होम या वहां पर नौकरी करता है।

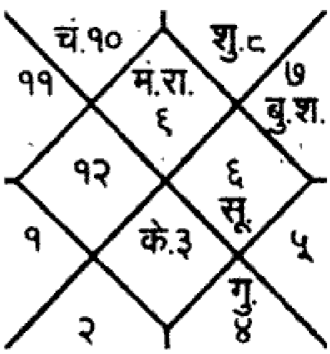

कुण्डली नं १८४

कुण्डली नं 184 की जातिका का जन्म अक्टूबर 1954 को हुआ। यह जातिका एम. डी. डॉक्टर है तथा एक सरकारी अस्पताल में कार्यरत है। इस जातिका की कुण्डली में कई राज योग भी हैं। अतः जातिका को उच्च पद प्राप्त होना स्वाभाविक है।

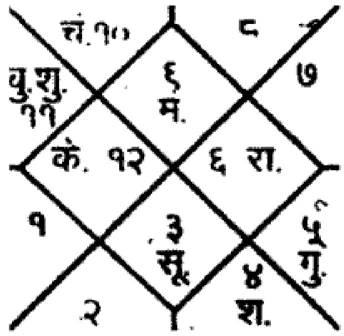

कारकांश कुण्डली नं १८५

कुण्डली न 185 तो कुण्डली नं 184 की जातिका की कारकांश कुण्डली है। इस कुण्डली में आत्म कारक ग्रह मंगल है जो कि धनु के नवांश में स्थित है। अतः कारकांश कुण्डली में धनु का मंगल हुआ। इस आत्म कारक ग्रह को कारकांश कुण्डली में सूर्य की पूर्ण दृष्टि पड़ रही है। जिसके कारण यह जातिका सरकारी डॉक्टर वनी। इस जातिका की नवांश कुण्डली तथा ग्रह स्पष्ट भी दे रहे हैं।

ग्रह स्पष्ट

लग्न – 8/11/59	गुरू – 3/4/1
सूर्य – 5/19/17	शुक्र – 7/0/31
चन्द्र – 9/1/45	शनि – 6/15/24
मगंल – 8/27/18	राहु – 8/26/47
बुध – 6/14/40	

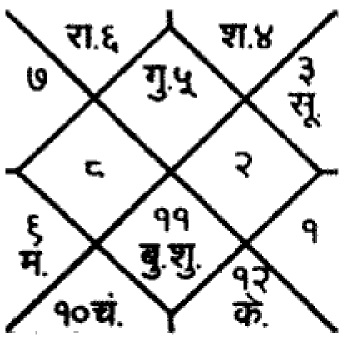

नवांश कुण्डली नं १८६

नं 186 कुण्डली नं 184 की जातिका की नवांश कुण्डली है। यहां पर उपरोक्त दिये गए इस जातिका के जन्म समय के ग्रह स्पष्ट भी दिये गए हैं। जिससे पाठक पुनः कारकांश कुण्डली को समझ सकें। इन ग्रहों के स्पष्ट से मंगल आत्मकारक ग्रह बनता है। यह मंगल कुण्डली नं 186 में दी गई नवांश कुण्डली में धनु राशि में स्थित है। अतः धनु राशि ही कारकांश कुण्डली की लग्न राशि हुई।

अब इस कुण्डली में सभी ग्रहों को नवांश कुण्डली के राशि अनुसार रख दिया तो हम देखतें हैं सूर्य बुध के नवांश में होने से सप्तम भाव में स्थित है जो पूर्ण द्रष्टि से आत्म कारक मंगल को देख रहा है। इस प्रकार मंगल का आत्म कारक ग्रह होने तथा शनि को पूर्ण द्रष्टि से देखना डाक्टरी द्वारा जीविका पाता है।

आइये आपको एक और उदाहरण देते हैं।

कुण्डली नं १८७

कुण्डली नं 187 के जातक का जन्म सितम्बर 1930 को हुआ। जातक एक सरकारी डॉक्टर है जो अब रिटायर है तथा प्राइवेट कार्य कर रहा है। इनकी कुण्डली में आत्म कारक ग्रह मंगल है जिस पर जन्म कुण्डली में शनि की द्रष्टि पड़ रही है। देखो ग्रह स्पष्ट। पाठक स्वयं इसकी नवांश कुण्डली तथा कारकांश कुण्डली बनाएं।

ग्रह स्पष्ट

लग्न – 2/28/45
सूर्य – 5/8/4
चन्द्र – 6/9/39
मंगल – 2/23/49
बुध – 5/2/52
गुरू – 2/24/35
शुक्र – 6/23/44
शनि – 8/12/33
राहु – 0/1/51

वृष नवांश फल :- प्रायः ऐसा व्यक्ति व्यापार द्वारा धन कमाता है। यही फल तुला नवांश का भी होता है। वृष नवांश में आत्मकारक ग्रह होने पर बस, कार, ट्रांसपोर्ट, पशुओं आदि का व्यापार करता है। तुला नवांश वाले व्यक्ति कपड़ों से सम्बन्धित व्यापार भी करते देखे गए हैं। यही फल प्रायः शुक्र के आत्म कारक ग्रह होने पर देखा गया है। हमने कई व्यापारियों की कुण्डली में बुध या शुक्र को ही आत्म कारक ग्रह होते देखा है।

कई इन्जीनियरों की कुण्डली में भी बुध या शुक्र ही आत्मकारक ग्रह पाया गया है। हमारे शोध में 70 प्रतिशत कुण्डलियों में यह पाया गया है।

ग्रह स्पष्ट

ल – 5/29/52
सूर्य – 11/9/12
चन्द्र – 1/3/2
मंगल – 5/8/44
बुध – 11/4/42
गुरू – 10/2/16
शुक्र – 9/24/29
शनि – 4/21/35
राहु – 11/14/37

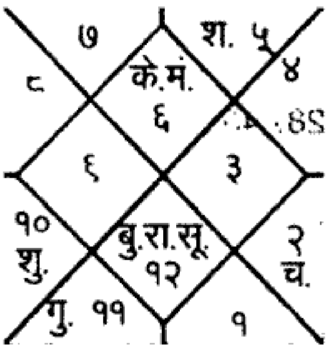

कुण्डली नं १९०

कुण्डली नं 190 के जातक का जन्म मार्च 1950 को हुआ। यह जातक एक करोड़पति व्यापारी है। इस जातक ने कई प्रकार के व्यापार करें। यहां पर आत्म कारक ग्रह शुक्र हैं। प्रायः वड़े व्यापारियों की कुण्डलियों में बुध व शुक्र आत्म कारक ग्रह पाये गए हैं।

मिथुन नवांश फल :- प्रायः ऐसे व्यक्ति वह कार्य करते हैं जिनमें बुद्धि का प्रयोग किया जाए। इस वर्ग में व्यापारी भी आते हैं। कई शिल्पज्ञ एवं कला से जुड़े व्यवसाय या कार्य भी इसमें देखे गए हैं। हमने कई चार्टेड अकाउन्टेंट इन्जीनियर, बड़े व्यापारी की कुण्डली में बुध को आत्मकारक ग्रह पाया है। प्रायः मिथुन एवं कन्या नवांश का फल एक ही होता है। यह नवांश विद्वानों की कुण्डली में प्रायः देखा जा सकता है।

कुण्डली नं १९१

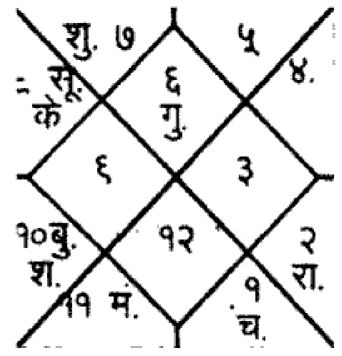

कारकाश कुण्डली नं १९२

कुण्डली नं 191 के जातक का जन्म अक्टूबर 1938 को हुआ। यह जातक एक प्रसिद्ध प्रोफेसर है। इनकी जन्म कुण्डली में सबसे अधिक अंश व कला गुरू के हैं। अतः गुरू आत्म कारक ग्रह हुआ। प्रायः गुरू का आत्मकाकर ग्रह होने पर जातक विद्वान होता है। कई ज्योतिषियों की कुण्डलियों में गुरू आत्म कारक ग्रह देखा गया हैं। इसी प्रकार अध्यापकों की कुण्डलियों में भी गुरू आत्म कारक ग्रह देखा जा सकता है। आत्म कारक ग्रह का सम्बन्ध गुरू से होने पर भी यह फल पाया जाता है। यहां पर गुरू कन्या के नवांश में है। अतः वह इस क्षेत्र में वृत्ति को पूर्णतः दर्शा रहा है। हमने अपने शोध में यह पाया है कि प्रायः 75 प्रतिशत सफल व्यक्तियों की कुण्डलियों में उत्तम कारक ग्रह मिथुन या कन्या नवांश में पाया गया है।

कर्क नवांश फल :- प्रायः इसका मिश्रित फल देखा गया है। यह जातक सरकारी नौकरी या सरकार से कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य होता है। कई व्यापारियों की कुण्डली में भी आत्म कारक ग्रह कर्क के नवांश में देखा गया है। ऐसे व्यक्तियों को पानी वाली जगह से खतरा भी बना रहता है। यहां पर हम पाठकों को यह बताना उचित समझते हैं कि आत्म कारक ग्रह यदि कर्क नवांश में हो तो पीने के पानी सदा स्वच्छ ही पियें तो बेहतर होगा क्योंकि कई ग्रन्थों में इस अवस्था में होने पर पानी से संबंधित बिमारियों के बारे में कहा गया है।

सिंह नवांश फल :- सिंह के नवांश में आत्मकारक ग्रह हो या आत्मकारक ग्रह के साथ सूर्य के होने पर एक ही फल मिलता है। यह जातक सरकारी सेवा में या सरकार में होते हैं। प्रायः ऐसे व्यक्ति उच्च पदों में देखे गए हैं। बैंक, पब्लिक सैक्टर आदि में भी यह लोग देखने को मिलते हैं। यदि निजी कम्पनियों में कार्य कर रहे हैं तो वह वहुत वड़ी–वड़ी कम्पनियों में कार्यरत होते हैं।

ग्रह स्पष्ट

ल. – 3/11/23
सू. – 5/25/43
चं. – 6/11/46
मं. – 7/18/50
बु. – 5/10/58
गु. – 10/4/38
शुक्र – 5/7/32
शनि – 5/2/49
राहु – 11/3/52

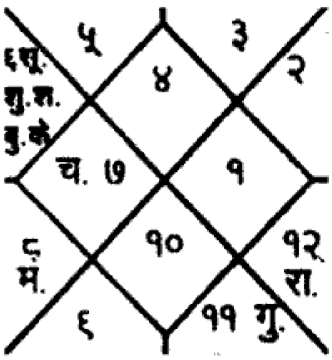

कुण्डली नं १९३

कुण्डली नं 193 के जातक का जन्म अक्टूबर 1950 को हुआ। यह जातक एक विद्वान व्यक्ति है तथा एक कॉलेज का प्रिंसिपल है। इनकी कुण्डली में सूर्य आत्मकारक ग्रह है तथा सिंह के नवांश में स्थित है। जैसा कि कहा गया है कि सिंह नवांश के जातक उच्च पद व सरकार से सम्बन्ध अवश्य रखते हैं तो यहां पर यह बात सत्य साबित होती है।

धनु नवांश फल :- इस नवांश तथा मीन नवांश में आत्मकारक ग्रह के होने पर उच्च पद प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति विद्वान, धनी होते हैं। प्रायः उच्च पदाधिकारियों की कुण्डली में आत्म कारक ग्रह मिथुन, कन्या नवाश धनु तथा मीन राशियों में पाये गए हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में सम्मानित तथा धनी होते हैं। यही फल आत्म कारक ग्रह गुरू के होने पर होता है।

ग्रह स्पष्ट

सूर्य – 4/3/49	चन्द्र – 4/17/8
मंगल – 5/1/11	बुध – 4/28/33
गुरू – 4/12/0	शुक्र – 4/18/39
शनि – 2/14/12	राहु – 3/4/9

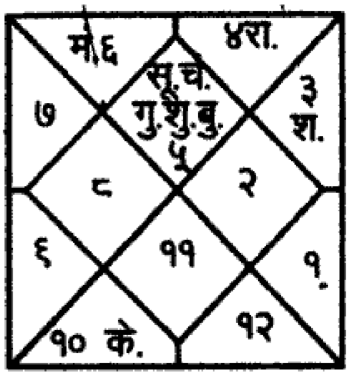

कारकांश कुण्डली नं १६४

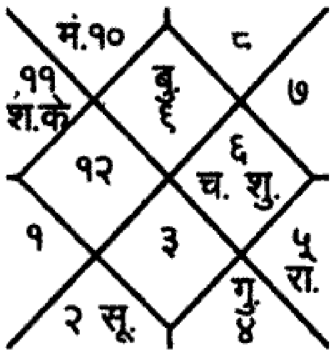

कारकांश कुण्डली नं १६५

कुण्डली नं 194 पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी जी की है। आपकी कुण्डली मे बुध आत्म कारक ग्रह हैं जो धनु नवांश में स्थित है। देखे कारकांश कुण्डली नं 195 यहां पर बुध धनु के नवांश में है तथा दशम भाव में चन्द्र के होने पर सरकार से सम्बन्ध बनता है। शुक्र के दशम भाव में होने या आत्मकारक ग्रह पर प्रभाव पड़ने पर राजनीति को भी दर्शाता है कई राजनीतिज्ञों की कुण्डली में शुक्र का प्रभाव आत्मकारक ग्रह में देखा गया है। श्रीमती इन्दिरा गांधी का आत्म कारक ग्रह ही शुक्र है जो कि तुला के नवांश में है।

मकर एवं कुम्भ नवांश फल :- इस में जन्में व्यक्ति या तो छोटी मोटी नौकरी करते देखे गए हैं या फिर व्यापारी होते हैं। पानी से प्राप्त वस्तुओं का व्यापार या एक्पोर्ट का व्यापार, नया व्यापार, ठेकेदारी, पत्थर, सिमेन्ट, लोहे, खनिज आदि से जुड़े व्यवसाय, फैक्ट्री में कार्यरत या उद्योग से जुड़े व्यापार में प्रायः देखा गया है। कई सिविल इंजीनियर, आर्किटेक्ट भी इस नवांश में पाये गए हैं। यही फल शनि के आत्मकारक ग्रह होने का भी देखा गया है।

* * * * * * *

21

आत्म कारक ग्रह युति फल

सूर्य युति फल :- ऐसा व्यक्ति सरकार से सम्बन्ध रखता है। कई मंत्रियों की कुण्डली में यह देखा जा सकता है। हमने यह पाया है कि ऐसे व्यक्ति की वृत्ति का सम्बन्ध जनता से अवश्य जुड़ा होता है।

चन्द्र युति फल :- प्रायः ऐसे व्यक्ति धनी व सुखी देखे गए हैं। इनको सरकार से भी लाभ मिलता है। शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति भी इस श्रेणी में पाये गए हैं। यहां पर पाठक गण इस बात का भी ध्यान रखें कि चन्द्रमा कैसा है। यदि बली है तो शुभ फल देता है।

मंगल युति फल :- प्रायः ऐसे व्यक्ति वह कार्य करते हैं। जहां पर साहस की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे व्यवसाय जहां पर आग, चीड़फाड़, शस्त्र आदि का सम्बन्ध हो। डॉक्टर, ट्रेन इंजन के ड्राइवर या होटलों के रसोइये भी इस श्रेणी में पाए गए हैं।

बुध युति फल :- ऐसे व्यक्ति व्यापार द्वारा या फिर कला के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र से या फिर अपनी बुद्धि द्वारा धन कमाते हैं। कई राजनीति में पड़े व्यक्तियों की कुण्डली मे भी यह युति पाई गई है। बुध यदि आत्मकारक ग्रह हो तो जातक उच्च पद पाता है। कई आई.ए.एस., इन्जीनियर य. व्यापारी, इनमें प्रायः बुध को ही आत्मकारक ग्रह देखा जा सकता है।

गुरू युति का फल :- ऐसे व्यक्ति धार्मिक प्रकृति के होते हैं। इन्हें वेद, शास्त्रों का ज्ञान होता है। कई वकील, जज, प्रोफेसर आदि की कुण्डली में यह देखा गया है। ऐसे व्यक्ति उच्च पदों पर रहते हैं। यदि गुरू के साथ युति होती है तो यह व्यक्ति उच्च पदासीन होता है। ऐसा व्यक्ति विद्या द्वारा या फाइनेन्स द्वारा धन कमाता है। कई बैंक एब चार्टेड अकाउन्टेंट की कुण्डली में भी ऐसा पाया है।

शुक्र युति फल :- ऐसे व्यक्ति बड़े अफसर, कलाकार या राजनीतिज्ञ होते हैं। इन व्यक्तियों का महिलाओं से सम्बन्ध भी होता है।

शनि युति फल :- ऐसे व्यक्ति अपने क्षेत्र में उच्च स्थान अवश्य पाते हैं। यह व्यक्ति यदि व्यापारी होते हैं तो बहुत बड़े उद्योगपति होते हैं। यदि लेखक होते हैं तो बहुत प्रसिद्ध लेखक बनते हैं। कई वैज्ञानिक भी इसी श्रेणी में देखे गए हैं।

राहु केतु युति फल :- यह व्यक्ति प्रायः व्यापार करते पाए गए हैं। ऐसे व्यक्ति बुरे कर्मों द्वारा धन कमाते हैं। झूठ बोलकर या चोरी द्वारा भी धन कमाते देखा गया है। यदि नौकरी में हो तो भी ऐसे ही क्षेत्र में नौकरी करते हैं। प्रायः रसायन, जहरीले पदार्थों या धातुओं से इनका सम्बन्ध होता है। कई मैकेनिकों की कुण्डली में भी इनको देखा गया है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

22

कारकांश लग्न से दशम भाव फल

कारकांश लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह रहने से व्यक्ति सुखी एवं धनी होता है। इस व्यक्ति के पास स्थिर धन रहता है। तथा सम्मान से जीवन व्यतीत करता है। पाप ग्रह होने पर व्यापार में धन हानि होती है। बुध एवं शुक्र का योग दशम भाव में होने पर एक सफल व्यापारी बनता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति बड़े–बड़े उद्योग लगाता है। तथा उसका नाम बड़े–बड़े उद्योगपतियों में गिना जाता है। दशम भाव में सूर्य एवं चन्द्रमा का योग होने पर उच्च सरकारी पदवी पाता है। कई वरिष्ठ आई. ए. एस. अधिकारियों की कण्डली में यह पाया गया है। कारकांश कुण्डली में पंचम या दशम भाव में शुक्र होने पर काव्य साहित्य की ओर झुकाव रहता है। यह व्यक्ति कला के क्षेत्र में भी रहते हैं। कई विज्ञापन कम्पनियों में कार्यरत तथा अनाउन्सरों के कारकांश कुण्डली में यह स्थिति देखी गई है। चन्द्र शुक्र के योग होने पर लेखन की ओर प्रेरित करता है। परन्तु कोई विशेष नाम नहीं कमाता है। गुरू के यहां पर रहने पर व्यक्ति शिक्षा क्षेत्र में जुड़ा होता है। वेद शास्त्रों का ज्ञाता होता है। आधुनिक विज्ञान का भी जानने वाला हो सकता है। यदि यह व्यक्ति लेखन के क्षेत्र में आता है तो वह बहुत नाम कमाता है। शनि के यहां पर रहने पर व्यक्ति उद्योग आदि लगाता है। शुक्र एवं शनि का योग होने पर व्यक्ति भीड़ में बोल नहीं सकता है अर्थात शर्माता है। यदि दशम भाव में सूर्य चन्द्र का योग हो तथा इनके साथ गुरू का भी योग हो जाए तो ऐसा व्यक्ति राजा के समान होता है।

गृहद्वये:ऽंशे निजवंशमुख्य एकः स्वराशौ निजवंशतुल्यः।
द्वौ व्योमवासौ निजराशियातौ यदा जनौ स्यादधिकः स्ववंशात्।।

कारकांश लग्न में शुभ व पाप कोई भी दो ग्रह हों तो अपने कुल (वंश) में विशेष नाम पाता है। यदि स्वराशि में एक ग्रह हो तो अपने कुल में समान और स्वराशि में दो ग्रह हो तो अपने कुल से अधिक होता है।

ग्रह स्पष्ट

सू. – 0/18/27
चं. – 1/16/29
मं. – 2/15/16
बु. – 0/24/7
गु. – 4/19/0
शु. – 0/23/0
श. – 7/19/51
रा. – 6/27/1

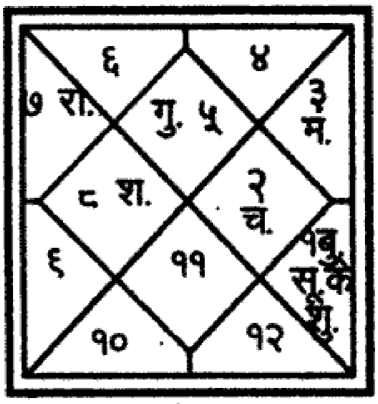

कुण्डली नं १९६

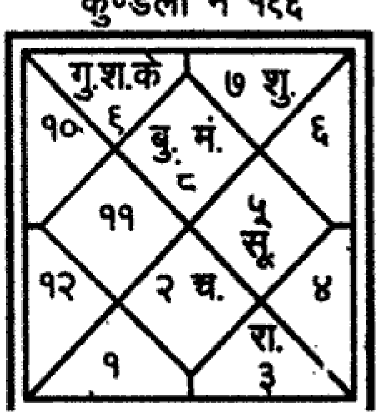

कुण्डली नं 196 को जातक का जन्म मई 1957 में हुआ। यह एक साधारण मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मा व्यक्ति आइ. ए. एस. की परीक्षा में सर्वोच्च अंकों से उत्तीर्ण हुआ तथा आज एक उच्च राज्य अधिकारी हैं। इनकी कुण्डली में बुध आत्मकारक ग्रह है तथा मंगल के नवांश में मंगल के साथ उपस्थित है। अतः कारकांश कुण्डली नं 197 को देखें तो लग्न में दो ग्रह स्थित हैं। तथा दशम भाव में सूर्य उच्च राजकीय पद को बता रहा है। इस कुण्डली में मंगल, सूर्य, गुरू तथा शुक्र चार ग्रह स्वराशि के हैं। चन्द्रमा उच्च राशि में है तथा आत्मकारक ग्रह पर पूर्ण द्रष्टि दे रहा है। यह कुण्डली उच्च राजकीय पदाधिकारी का पूर्ण उदाहरण है।

23

शनि एवं आजीविका

जीवन विपदं दासानायुर्निधन कारणम।
पग्डों पितमहं राहोः केतोर्मातामहं वदेत।।
(ज्योतिस्तत्त्वम)

शनि के कारकत्व परिज्ञान में ज्योतिस्तत्त्वय में आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी ने कारक प्रकरण में उपरोक्त श्लोक में शनि को वृत्ति का कारक माना है। कई नाडी ग्रन्थों में भी शनि पर पड रहे अन्य ग्रहों के प्रभाव से वृत्ति का ज्ञान बताया गया है। हमने इस विषय पर शोध करा है तथा यह पाया है कि मानव जीवन में कभी न कभी शनि पर पड रहे प्रभाव वाले ग्रहों के अनुसार वृत्ति अवश्य होती है। हमारी शोध में यह तथ्य अवश्य सामने आया है कि प्रायः सभी सफल व्यक्तियों की जन्म कुण्डली या नवांश कुण्डली में शनि बली पाया जाता है। यह शनि या तो मकर, कुम्भ एवं तुला राशि में होगा या फिर केन्द्र में पाया जा सकता है। इसको समझने के लिए पाठक कुण्डली न. 194 को देखें। यह कुण्डली श्री राजीव गांधी जी की है। इनकी नवांश कुण्डली में शनि, कुम्भ राशि में होकर सप्तम भाव में स्थित है। इसी प्रकार श्रीमति इन्दिरा गांधी जी की नवांश कुण्डली में शनि मकर राशि का होकर दशम भाव में है।

राशि गत शनि फल

मेष राशिगत शनि फल :- शनि यदि कुण्डली में मेष राशि में हो तो जातक को धातु से संबंध बना होता है। जैसे कि जातक किसी फैक्ट्री में कार्यरत हो या इन्जीनियर हो ऐसा जातक केन्द्र सरकार से भी संबंध रख सकता है। वह बडें संस्थानों में भी कार्यरत होता है। मेष राशि का स्वामी मंगल होता है। अतः मंगल

के अधिपत्य वाले व्यवसायों से भी आजीविका देखी जा सकती है। कई खिलाडियों के भी शनि मेष राशि में पाया गया है। परन्तु यह खिलाडी अधिक प्रसिद्ध नहीं माने जा सकते। कई पुलिरा एवं रोना में कार्यरत व्यक्तियों की कुण्डलियों में भी मेष राशि गत शनि देखा जा रांकता है।

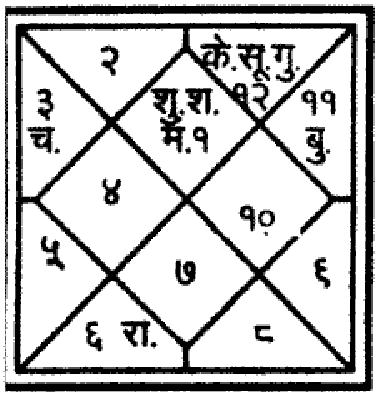

कुण्डली नं १९८

कुण्डली न. 198 एक रिटायर्ड आई.जी. पुलिस की है। आप राजस्थान में आई.जी. रह चुके है। यहाँ पर लग्न भाव में शनि तथा मंगल मेष राशि गत होकर दशम भाव को देख रहे है। इस कुण्डली में इसके अतिरिक्त पुलिस विभाग में कार्य करने के कई अन्य योग भी उपलब्ध है।

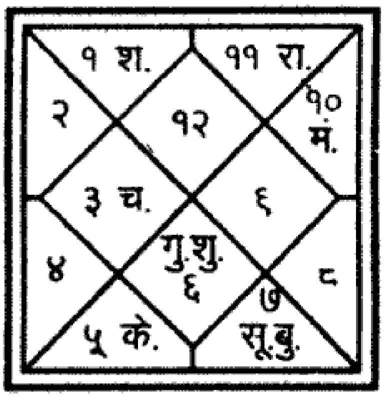

कुण्डली नं १९९

मंगल के प्रभाव के कारण वश कुण्डली न. 199 का जातक एक व्यापारी है। यह माचिस बनाने वाली कम्पनी का बहुत ही बडा वितरक है। जैसे कि पूर्व में कहा गया है कि र स्वामी का प्रभाव शनि पर पडता है। यहाँ पर मंगल एकादश भाव में है। तथा इसका और शनि में राशि परिवर्तन योग विशेष कार्य कर रहा है। तभी तो यह जातक आग से संबंधित कार्य कर रहा है। यह जातक अपना व्यवसाय को विस्तार करना चाह रहा था। हमने इनको बिजली से संबंधित वरतुओं के व्यापार में जाने को कहा। यह जातक इस कार्य में भी सफल है।

वृष राशि गत शनि फल :- ऐसा जातक कला के क्षेत्र में, व्यापार में, या फिर ऐसी जगह पर जहाँ पर अधिक परिश्रम न करना पडे वहाँ से आजीविका पाता है।

कुण्डली नं २००

कुण्डली न. 200 प्रसिद्व सिनेमा कलाकार श्री अमिताभ बच्चन की है। आप का जन्म 11 अक्टूबर 1942 को हुआ यहां पर वृष राशि पर शनि है। वृष राशि का स्वामी शुक्र होता है। अतः आप की वृत्ति भी शुक्र से संबंधित बनी अर्थात कला क्षेत्र आजीविका प्राप्त हुई। अतः आप व्यापार भी करते है। शुक्र आपकी कुण्डली में भाग्येश भी है।

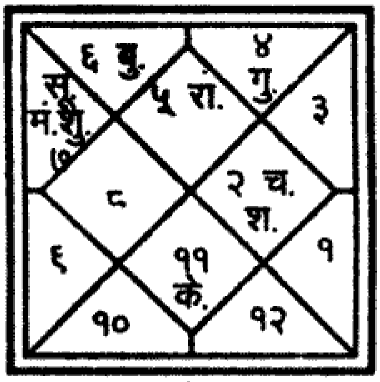

कुण्डली नं २०१

कुण्डली न. 201 के जातक का जन्म भी अक्टूबर 1942 को ही हुआ है। यहां पर भी शनि वृष राशि में है परन्तु यहां पर चन्द्रमा का शनि के साथ संबंध बना। यह जातक एक व्यापारी है। तथा आस्ट्रेलिया में रहता है। तथा भारत से आयात निर्यात का व्यवसाय करता है।

मिथुन राशिगत शनि फल :- प्रायः ऐसे व्यक्ति अपनी बुद्वि के कारण ही आजीविका करते है। व्यापारियों, इन्जीनियरों, अकाउन्टेन्ट, आदि को इस श्रेणी में देखा जा सकता है। कई समाज सेवक भी इस श्रेणी में देखे गए है। कई राजनेताओं का शनि भी मिथुन राशि में होता है। श्री राजीव गांधी की कुण्डली में शनि मिथुन राशि का है।

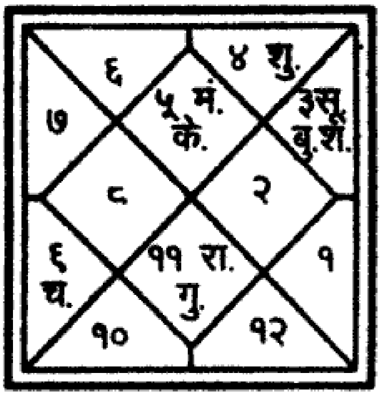

कुण्डली नं २०२

कुण्डली न.202 पश्चिमी बंगाल के मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु की है। इस कुण्डली में मिथुन राशि में शनि है। इस शनि पर सूर्य एव चन्द्र दोनों का ही प्रभाव पड रहा है। इसी कारण आप 15 वर्षो से अधिक लगातार मुख्यमंत्री बनते है।

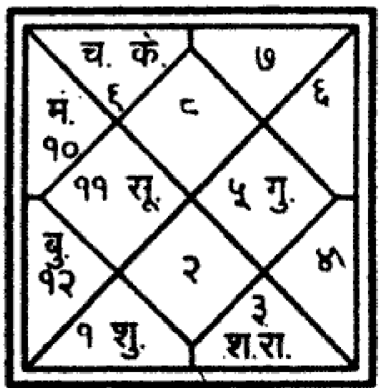

कुण्डली नं २०३

कुण्डली न. 203 श्री माधव राव सिंधिया जी की है। यहां पर शनि मिथुन राशि का है। इस शनि पर चन्द्रमा का प्रभाव पड रहा है। इसलिए इन का सरकार से संबंध बनता है।

कर्क राशि गत शनि फलः- प्रायः ऐसे व्यक्ति का कार्य सदा एक जैसा नहीं रहता है। उतार चढाव भी आते है। यह व्यक्ति कला, साहित्य के क्षेत्र में भी हो सकते है। इनको कार्यवश यात्राएं भी करनी पडती है। पानी से संबंधित वस्तुओं का व्यापार भी कर सकते हैं।

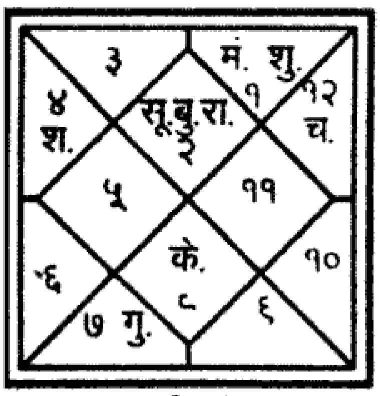

कुण्डली नं २०४

कुण्डली न. 204 श्री अजिताभ बच्चन की है। आप श्री अमिताभ बच्चन छोटे भाई है। आपकी कुण्डली में शनि कर्क राशि का है आपने एक शिपिंग कम्पनी में पार्टनर शिप भी की थी। आप वर्तमान में विदेश मै रहकर व्यापार कर रहे जिसके लिए आप को देश विदेश भी घूमना पडता है। वैसे यहां पर एकादश में चन्द्रमा जल तत्व राशि का है। इस कारण भी आपको जल से लाभ बनता है।

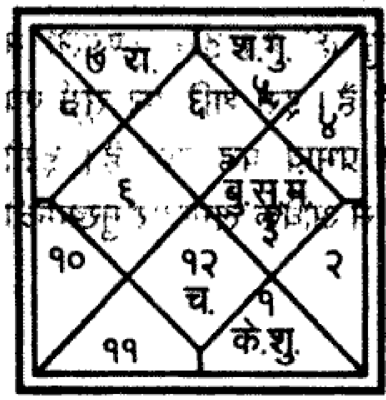

कुण्डली नं २०५

सिंह राशि गत शनि फल :- ऐसा व्यक्ति एक कुशल प्रशासक होता है। यह व्यक्ति सरकारी नौकरी या सरकार से इनका संबंध बनता है। यह मंत्री या प्रधान मंत्री भी बनते है। कुण्डली न. 205 हमारे देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री नरसिंह राव जी की है। इस कुण्डली में शनि सिंह राशि का है। इस कारणवश आप कई वर्षों तक मंत्री रहे तथा प्रधान मंत्री भी बनें।

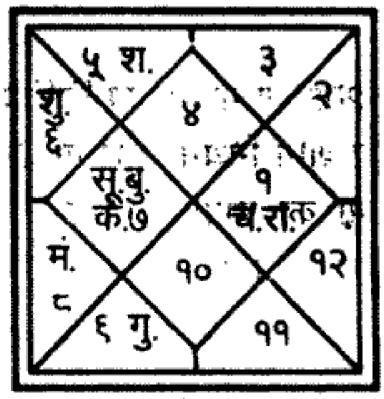

कुण्डली नं २०६

कुण्डली न. 206 प्रिंस चर्ल्स की है। आप की कुण्डली में भी शनि द्वितिय भाव में सिंह राशि का है। आप इंगलेड के उत्तराधिकारी है। अतः राज्य से संबंध बनता है। सिंह राशि का स्वामी सूर्य होता है। तथा सूर्य राजा का प्रतिनिधित्व करता है।

कन्या राशि गत शनि फल:- ऐसा शनि बुद्धि के उपयोग करने वाली वृत्ति दिलवाता है। इस क्षेत्र में अकाउन्टेन्ट, इन्जीनियर, व्यापाररिक संस्थानों में कार्य करने वाले, कमीशन का कार्य व सेल्स का कार्य करने वाले लोग होते है। या व्यापार द्वारा धन कमाने वाले लोग होते है। ऐसे लोग सम्पर्क द्वारा लाभ भी पाते है।

कुण्डली नं २०७

कुण्डली न. 207 के जातक का जन्म दिसमबर 1950 को हुआ। यह जातक एक मकैनिकल इन्जीनियर है। तथा एक व्यापारिक संस्थान में कार्यरत है। यहां पर कन्या राशि का शनि पंचम भाव में स्थित है। प्रायः कन्या या मिथुन राशि व्यक्ति को इस प्रकार के कार्य करवाता है।

कुण्डली नं २०८

कुण्डली न. 208 के जातक का जन्म जुलाई 1957 में हुआ। यह जातक एक चार्टेड अकाउन्टेन्ट है तथा इन्कम टेक्स व सेल्स टैक्स एडवाइजर है। यहां पर लग्न में कन्या राशि का शनि यह दर्शा रहा है। कि जातक को जीविकोपार्जन के लिए अपनी बुद्धि का प्रयोग करना पडता है।

तुला राशिगत शनि फलः- इस राशि के शनि वाले प्रायः व्यापार द्वारा, कला के क्षेत्र से राजनीति द्वारा यदि नौकरी कर रहे हों तो उच्च पद अवश्य पाते है। प्रायः इस शनि वाले व्यक्ति उच्च स्थान पाते है। यह व्यक्ति कोर्ट कचहरी से भी लाभ पाते हैं।

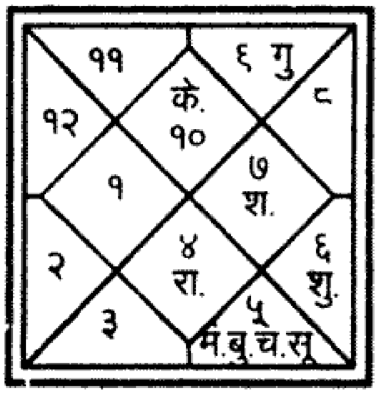

कुण्डली नं २०९

कुण्डली नं. 209 के जातक का जन्म अगरत 1925 को हुआ। यह जातक गुजरात का एक करोडपति व्यापारी है। यहां पर दशम भाव में तुला राशि का शनि स्थित है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है। कि कुण्डली में यदि शनि बली होगा तो व्यक्ति सफल ही रहता है। यह एक सफल व्यापारी की कुण्डली है।

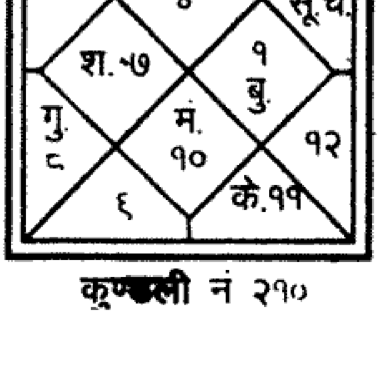

कुण्डली नं २१०

कुण्डली न. 210 का जातक तमिल नाडु के मुख्यमंत्री श्री करूणा निधी जी है। आप की कुण्डली में चतुर्थ स्थान में तुला राशि का शनि है। जैसा कि कहा गया है कि तुला राशि का शनि राजनीति में भी ले जाता है। आप राजनीति में आने से पहले फिल्मों में कहानी लिखते थे अतः कला के क्षेत्र से भी संबंध वना। कई राजनीतिज्ञों की कुण्डली में तुला राशि का शनि देखा जा सकता है।

वृश्चिक राशि गत शनि फल :- प्रायः इसमें जन्में व्यक्ति भूमि से संबंधित कार्यो से, धातु, बिजली, के उपकारणों से, कारखानों या फिर पुलिस या सेना से जीविका का पाते है।

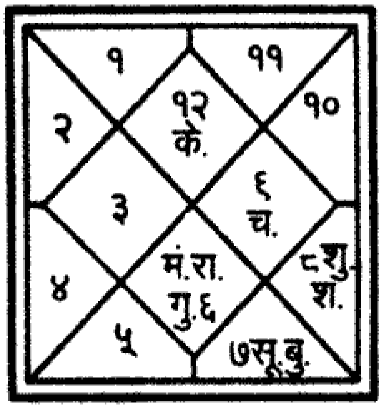

कुण्डली नं २११

कुण्डली न. 211 के जातक का जन्म अक्टूबर 1957 को हुआ। यह जातक बहुत सम्पत्ति का स्वामी है। तथा खेती द्वारा अच्छी खासी आमदनी भी है। यह व्यक्ति तहसीलदार भी है। वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल होता है। इसलिए वृत्ति में मंगल का प्रभाव देखा जा सकता है।

धनु राशि गत शनि फल:- ऐसे व्यक्तियों को प्रायः संघर्ष करना पड सकता है। इन व्यक्तियों को नौकरी द्वारा जीविका प्राप्त होती है। इन का संबंध किसी धार्मिक संस्थान से भी जुडता है। यह व्यक्ति लकडी, जंगलात, बैक आदि से भी जुडे हो सकते है। यदि यह व्यक्ति व्यापार का रहे हों तो छोटा व्यापार ही करते है। इसी प्रकार नौकरी में भी विशेष उच्च पद नहीं पाते।

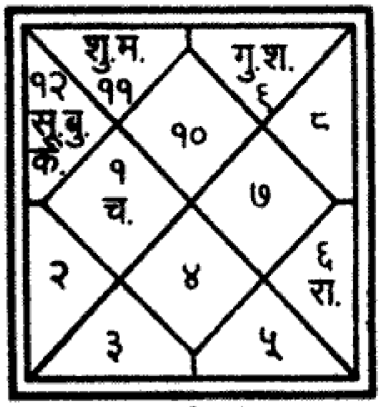

कुण्डली नं २१२

कुण्डली न. 212 के जातक का जन्म मार्च 1960 को हुआ यह जातक एक छोटा व्यापारी है। तथा प्लास्टिक का सामान बनाता है। जातक धनी नहीं कहा जा सकता। यहां पर धनु राशि का शनि है। इसलिए यह जातक संघर्ष ही करता रहा है।

मकर राशि गत शनि फल :- ऐसे व्यक्ति बोलने में चतुर होते है उच्च स्थान अवश्य पाते है। नौकरी द्वारा या ऐसे व्यापार से जिसमें घूमना पडता हो उसके द्वारा जीविकोपार्जन करते है। प्रायः यह व्यक्ति फैक्ट्री या मजदूरों के सहयोंग से व्यापार करते है।

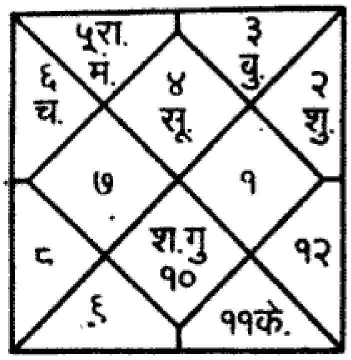

कुण्डली नं २१३

कुण्डली न. 213 के जातक का जन्म जुलाई 1961 को हुआ यह जातक एक व्यापारी है तथा इसको व्यापार के लिए कई शहरों में जाना पडता है। जातक एक पैट्रोल पम्प का भी स्वामी है। शनि यहाँ पर मकर राशि में है तथा शनि के अधिपत्य में पैट्रोंल पदार्थ भी आते है। अतः यहां पर शनि इस कार्य को दर्शा रहा है।

कुम्भ राशि गत शनि फलः- प्रायः यह व्यक्ति एक कुशल प्रशासक, बोलने में चतुर, एक अच्छा गुरू तथा बुद्धिमान होता है। इस शनि वाले व्यक्ति समाज में उच्च स्थान अवश्य पाते है। यदि व्यापारी है तो व्यापार में नाम भी कमाते है।

कुण्डली नं २१४

कुण्डली न. 214 के जातक का जन्म अगस्त 1965 को हुआ। यह जातक एक व्यापारी है। यहाँ पर शनि कुम्भ राशि का होकर छठे भाव में है। यह जातक बोलने में चतुर है तथा व्यापार में अच्छा नाम कमा रहा है।

मीन राशि गत शनिफलः- ऐसे व्यक्ति सज्जन प्रकृति के होंते है। इनका समाज में आदर मिलता है। इनको धर्म से भी जुडा रहना पड सकता है। यह व्यक्ति पानी से सम्बन्धित कार्यो से भी जीविका पाते हैं।

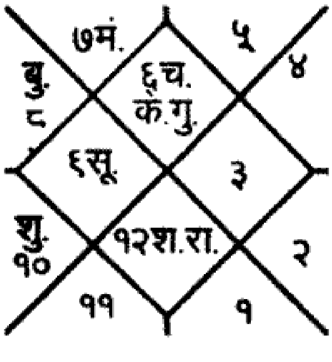

कुण्डली नं २१५

कुण्डली न. 215 के जातक का जन्म जनवरी 1969 में हुआ है। यह जातक वर्तमान में एक धार्मिक संस्थान में मैनेजर पद में कार्यरत है। यह व्यक्ति व्यपार करने को इच्छुक भी रहता है। यहां पर शनि मीन राशि में है। जिस कारण वश इनका अपने संस्थान में आदर भी है।

शनि युति व प्रतियुति फल

शनि सूर्य युति या प्रतियुति फल :- यह युति मनुष्य की वृत्ति के लिए शुभ होती है। प्रायः इस युति के व्यक्ति उच्च पदासीन होते है। यह युति प्राचीन काल के राजा महाराजाओं की कुण्डलियों में देखी जा सकती है। आजकल यह युति मंत्री या उच्च सरकारी अधिकारी गणों में भी देखी जा सकती है। यह युति या प्रतियुति व्यक्ति के रोजगार में सरकार से संबंध जोडती है। यदि व्यापार करता है तो भी सरकार से कोई न कोई संबंध होता है। आजकल चल रहे फाइनेंस कम्पनियों का व्यापार भी इसमें देखा जा सकता है। प्राचीनकाल में ब्याज द्वारा लाभ भी इसमें कहा जा सकता था। यह आज भी सत्य है। ऐसे व्यक्ति शेयर बाजार या बैंक आदि में भी कार्यरत हो सकते है। प्रायः इन व्यक्तियों को सफलता के लिए संघर्ष करना पडता है। इन व्यक्तियों को पैतृक सम्पत्ति या व्यवसाय भी करना पडता सकता है।

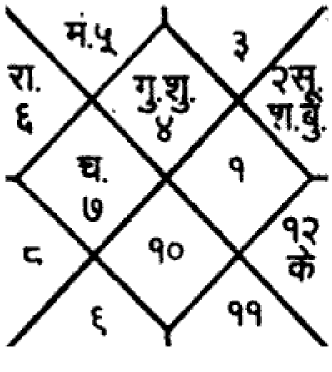

कुण्डली नं २१६

कुण्डली न. 216 के जातक का जन्म जून 1884 को हुआ। यह मैसूर राज्य के महाराजा श्री कृष्णराज वाडियार जी की कुण्डली है। यहां पर सूर्य व शनि की युति इन्हें शाही खानदान तथा राज्य दिलवा रही है। वैसे भी यह युति यदि एकादश भाव में बनती हो तो राज्यधिकार दिलाती है। इस कुण्डली में वैसे तो कई राज योग है। जिस कारण वश महाराजा कहलाए।

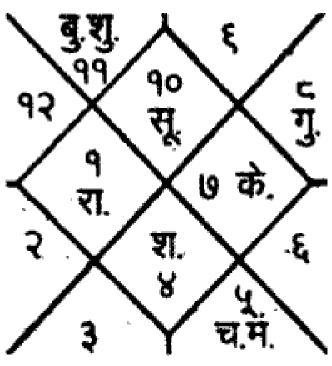

कुण्डली नं २१७

कुण्डली न. 217 के जातक का जन्म जनवरी 1948 को हुआ। इस कुण्डली में सूर्य एवं शनि की प्रतियुति बनी है। यह जातक सरकारी नौकरी तो नहीं कर रहा परन्तु रिर्जव बैंक आफ इन्डिया में उच्च पदाधिकारी अवश्य है। अतः इस जातक का सरकार तथा बैक से संबंध अवश्य बना। यों तो बैक में नौकरी के अन्य योग भी देखे जो सकते है।

शनि चन्द्र युति व प्रतियुति फलः- इस युति एवं प्रतियुति के जातक किसी एक नौकरी या व्यवसाय में नही रहते है। इन्हें कई बार नौकरी या व्यवसाय बदलना पड सकता है। यह लोग कला या साहित्य के क्षेत्र में भी पाए जा सकते है। यह लोग उच्च कोटि के लेखक भी बन सकते है। कई प्रसिद्व ज्योतिषी भी इस वर्ग में पाये जाते है। कई ऐसे जातक भी इस वर्ग में देखे जा सकते है जिनको अपनी नौकरी या व्यवसाय के लिए यात्रा करनी पडती है।

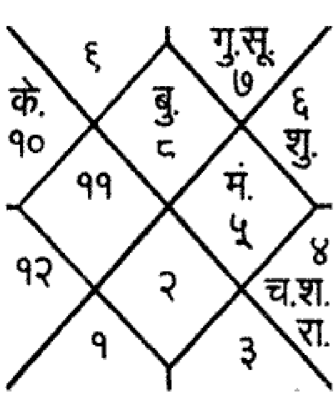

कुण्डली न २१८

कुण्डली न. 218 इस ग्रन्थ के प्रणेता स्व. आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी की है। आपने ज्योतिष के क्षेत्र में बहुत नाम कमाया तथा 50 से अधिक मौलिक ग्रन्थों की रचना करी। आप का संस्कृत काव्य एवं व्याकरण में ज्ञान अद्वितीय था इस कुण्डली में चंद्र शनि की युति इनको ज्योतिष साहित्य का प्रकाण्ड पंडित बनाती हैं। चंद्र शनि की युति या प्रतियुति कई ज्योतिषियों की कुण्डली में भी देखी जा सकती है। बैगलोर के विद्वान ज्योतिषी तथा ग्रन्थकार डा. बी. वी. रमन की कुण्डली में भी चंद्र शनि की युति देखी जा सकती है। इसी प्रकार अन्य व्यक्तियों के कुण्डलियों में भी यह युति मिलती है।

कुण्डली न. 219 के जातक का जन्म अगस्त 1954 को हुआ। यह जातक एक कुशल व्यापारी है। इस जातक ने नौकरी भी करी फिर व्यापार में प्रवेश करा। यह जातक एक शहर से दूसरे शहर जा कर व्यापार करता रहता है। इस जातक ने व्यापार भी कई प्रकार के करे तथ संघर्ष भी बहुत किया।

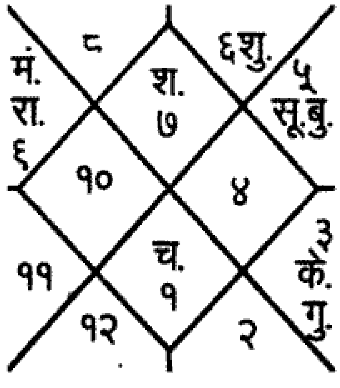

कुण्डली नं २१९

शनि मंगल युति व प्रतियुति फलः- ऐसे जातक इन्जीनियरिंग क्षेत्र से जुडे होते है। यदि व्यापार में हो तो मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में रहते है। नौकरी के क्षेत्र में या तो यह लोग पुलिस, सेना आदि में हो सकते हैं या किसी बडे कारखाने में कार्यरत हो सकते है। यह व्यक्ति प्रायः वह कार्य करते है जिनमें साहस की आवश्यकता पडती हो परन्तु यहां पर हम यह अवश्य बताते है। कि आजकल कई राजनेताओं की कुण्डली में भी यह योग देखने को मिलता है।

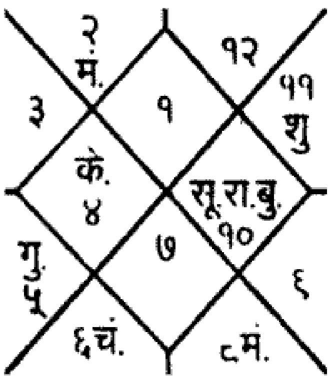

कुण्डली नं २२०

कुण्डली न. 220 नेताजी सुभाष चंद्र बोस की है। यहा पर मंगल और शानि के प्रतियुति देखी जा सकती है। शनि वृश्चिक राशि में है। अतः आप से बढकर साहसी कौन हो सकता है। आप ने अंग्रेजों से लडने के लिए सेना बनाई।

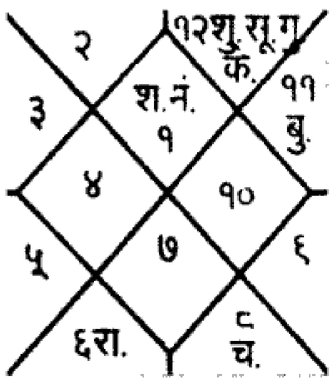

कुण्डली नं २२१

कुण्डली न. 221 एक सेवानिवृत पुलिस उच्च अणिकारी की है। यहां पर मेष लग्न में शनि मंगल की युति है। यह जातक राजस्थान पुलिस में उच्च पदाधिकारी रह चुका है। तथा इन्हें बहादुरी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

शनि बुध युति व प्रतियुति फल :- इस युति/प्रतियुति के व्यक्ति ऐसा कार्य करते है। जहां पर इन्हें अपनी बुद्दि का चमत्कार दिखाना पडता है। यह व्यापारियों की कुण्डली में भी देखा जा सकता है या फिर विद्वान पंडित, लेखके, जज, आदि भी हो सकते है। यहां पर पाठक गण यह भी देखे कि यह युति किस राशि में हो रही है। क्योकि राशि का प्रभाव भी वृति में अवश्य आएगा।

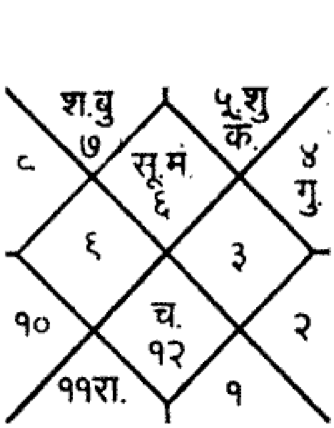

कुण्डली नं २२२

कुण्डली न. 222 के जातक का जन्म अक्टूबर 1895 में हुआ। आप एक विद्वान व्यक्ति थे। आप हाई कोर्ट में जज रह चुके है। यहा पर शानि बुध की युति धन भाव में हो रही है। यह युति तुला राशि न्याय को भी दर्शाती है अतः न्यायलय से संबंध बनता है। लाभ भाव में उच्च राशि का गुरू होना तथा शनि कि इस गुरू से द्रष्टि संबंध होना इनको जज बनाना और द्रढ करता है।

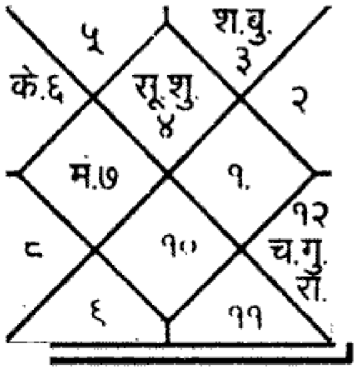

कुण्डली नं २२३

कुण्डली न. 223 एक प्रकाण्ड संस्कृत के विद्वान की है। आप का जन्म सन 1856 में हुआ। आप एक उच्च श्रेणी के लेखक कवि एवं चिंतक थे। इस कुण्डली में शनि बुध की युति वृत्ति के लिए वुद्धि का उपयोग बनता है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है। कि युति की राशि का वृर्ति पर विशेष प्रभाव पडता है। तो यहां पर मिथुन राशि में यह युति हो रही है जिसके कारण वश साहित्य की ओर झुकाव बनता है।

शनि गुरू युति व प्रतियुति फलः- यह युति प्रायः व्यक्ति की अपने क्षेत्र में यश दिलवाती है। कई प्रसिद्व व्यक्तियों की कुण्डलियों में यह युति एवं प्रतियुति पाई गई। इस युति के कारण न्याय, कोर्ट, कचहरी से संबंध भी बनता है। जातक पैसे के लेनदेन का व्यापार भी कर सकता है। पूर्व प्रधान मंत्री श्री नरसिहां राव जी की कुण्डली में यह युति देखी जा सकती है।

कुण्डली न. 224 के जातक का जन्म सितम्बर 1940 को हुआ। यह जातक एक हृदय रोग का डाक्टर है। इस जातक ने इस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करी है। इस कुंण्डली में डाक्टर बनने के तो अन्य कई योग है। जैसे की सूर्य राहु की युति होना, दशमेश का जन्म कुण्डली में मेष राशि में होना तथा नवाशं कुण्डली में

वृश्चिक राशि में होना। मंगल के प्रभाव के कारण डाक्टरी में जाना बनता है। यहां पर गुरू एवं शनि का मेष राशि में एक साथ होता यह दर्शाता है कि व्यक्ति मंगल से संबंधित कार्यों में अच्छा नाम कमा सकता है।

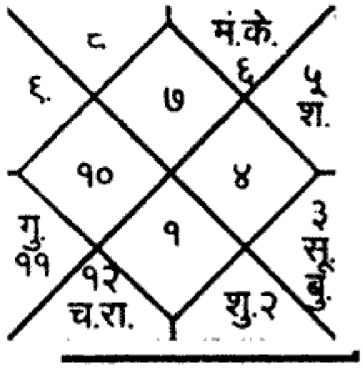

कुण्डली नं २२५

कुण्डली न. 225 के जातक का जन्म जुलाई 1950 को हुआ यह जातक एक बुद्धिमान तथा बहुत ही पढा लिखा है। जातक ने इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की तथा उसके पश्चात एम.बी.ए. भी करा तथा एल.एल.बी. भी पास की इस प्रकार जातक कई विभिन्न क्षेत्रों में विद्या प्राप्त करता रहा इस जातक को अच्छी प्रसिद्धि मिल रही है। यहां पर शनि गुरू की प्रतियुति बनी हुई है। इस के कारण वश ही यह जातक प्रसिद्ध हो रहा है। शनि गुरू का आपस में संबंध होने पर वकालत या कोंट कचहरी से संबंध बनता है।

शनि, शुक्र युति एवं प्रतियुति फल :- यह युति व्यक्ति को समृद्ध एवं सुखी बनाती है यह जातक प्रायः अपनी पत्नी या स्त्री द्वारा भाग्य को पाता है। प्रायः इस युति के व्यक्ति व्यापार, कला के क्षेत्र या अन्य क्षेत्र जहां विलासीता युक्त वातावरण हो वहां से धन पाता है। प्रायः ऐसे लोग विवाह पश्चात ही उच्च स्तर पाते हैं। इन व्यक्तियों के पास सुख सुविधा की वस्तुएं होती है। ऐसे व्यक्ति बैंक या बड़े संस्थानों में भी कार्यरत होते हैं। यह युति वृष या तुला राशि में होने पर स्वतंत्र व्यवसायी होते हैं। फिर कला के क्षेत्र में भी हो सकते हैं।

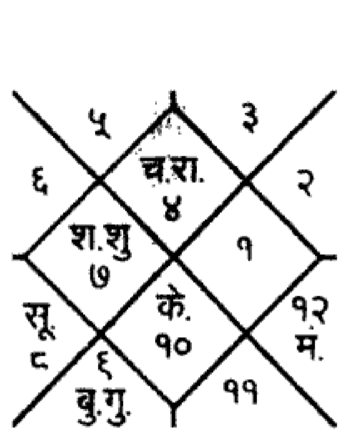

कुण्डली नं २२६

कुण्डली नं. 226 पूर्व में दी जा चुकी है। यह कुण्डली स्वर्गीय राजकपूर की है। आप हिन्दी सिनेमा के प्रमुख व्यक्ति थे। यहां पर शनि शुक्र की युति वह भी तुला राशि में होना तथा इस युति की दृष्टि दशम भाव में पड़ना इनके इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता को दर्शाता है। आपको सफलता भी विवाह पश्चात ही प्राप्त हुई थी।

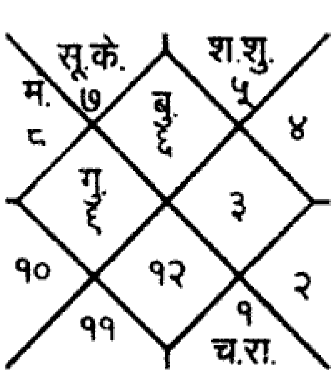

कुण्डली नं २२७

कुण्डली नं 227 के जातक का जन्म अक्टूबर 1948 में हुआ। जातक एक सिविल इंजिनीयर है। तथा सरकारी सेवा में उच्च पदस्थ है। इस जातक का विवाह भाग्य पश्चात चमका तथा जातक को स्त्री पक्ष की ओर से सहायता प्राप्त रहती है। वहां से इस जातक को भूमि संपत्ति भी मिली है।

शनि, राहु, केतु युति एवं प्रतियुति फल :- इस युति के व्यक्ति प्रायः अधिक भाग्यवान नहीं होते हैं तथा इनकी आजीविका भी अच्छी नहीं मानी जा सकती है। प्रायः इन लोगों को मजदूर वर्ग व नीच प्रकृति के लोगों के मध्य काम करना पड़ता है। इस प्रकार के व्यक्ति मोटर वाहन आदि फिल्म उद्योग, राजनीति से आजीविका पाते देखा गया है। यदि कुण्डली में अच्छे धन योग एवं राजयोग ना हो तो यह व्यक्ति ड्राईवर, मजदूर, चौकीदार, दर्जी, सिनेमा वर्कर्स, बस कन्डकटर, घड़ीसाज अर्थात छोटी मोटी नौकरी या नीच प्रकृति के कार्य करते पाये गए हैं।

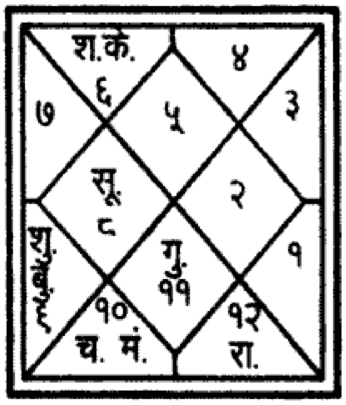

कुण्डली नं २२८

कुण्डली नं. 228 प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता रजनीकान्त की है। आपका जन्म दिसम्बर 1950 को हुआ था। आपकी कुण्डली में शनि की युति केतु के साथ बनी है। इसके कारण वश आप फिल्म उद्योग में हैं। कुण्डली में कई महाधनी योग तथा राजयोग है। जिसके कारणवश इस क्षेत्र में उच्च स्थान पा सके। कहा जाता है आप फिल्मों में आने से पहले बस कन्डक्टर थे।

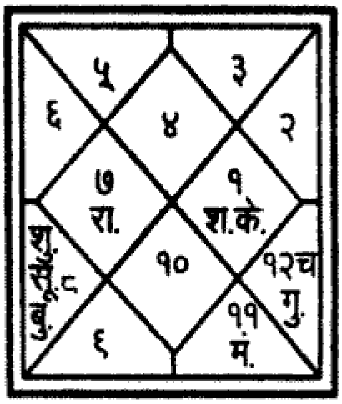

कुण्डली नं २२९

कुण्डली नं0 229 राजनेता श्री मुलायम सिंह यादव की है। आपका जन्म नवम्बर 1939 का है। इस कुण्डली में शनि की राहु केतु से युति प्रतियुति बनी है। यह युति आपको राजनीति में कार्य करवा रही है। कुण्डली में कई राजयोग होने के कारण आप मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय मंत्री बने हैं। इस प्रकार शनि की कुण्डली में स्थिति तथा इसकी युति एवं प्रतियुति का व्यक्ति की आजीविका पर प्रभाव अवश्य पड़ता देखा जा सकता है।

नाड़ी ग्रन्थों में तो शनि से दूसरे स्थान में स्थित ग्रहों का भी प्रभाव कहा गया है। इन ग्रन्थों में शनि द्वारा व्यक्ति की वृत्ति की जानकारी जानने का वर्णन मिलता है। अतः इस विषय में हम अपने पाठकों से यह कह सकते हैं कि मात्र शनि पर पड़ रहे प्रभाव से वृति का सही सही ज्ञान करने में कुछ सन्देह अवश्य है। अतः पाठक इसको अपने अनुभव से अवश्य पता लगा सकते हैं। यह अन्त में हम अवश्य कह सकते हैं कि सफल व्यक्ति के लिए कुण्डली में शनि का बली होना अति आवश्यक है।

दशम भावगत राशि फल

दशम भाव में स्थित राशि का जातक की वृति पर विशेष प्रभाव होता है। यह फल जातक के लग्न जन्म राशि एवं धन भाव में स्थित राशि द्वारा भी कहा जा सकता है। क्योंकि धन भाव में स्थित राशि एवं ग्रहों के अनुसार ही जातक को धन प्राप्ति होती है। इस भाव के बारे में जातक धन भाव प्रकारण में पूर्व में ही पढ़ चुके हैं। यहां पर हम मात्र दशम भाव स्थित राशि के द्वारा वृत्ति का पता करेंगे। यदि दशम भाव में कोई ग्रह स्थित होता है तो हमें यहां उस ग्रह के अनुसार तथा दशम भाव में स्थित राशि के अनुसार आजीविका मिलती है।

दशमभाव गत मेष राशि :- फौज, पुलिस, डॉक्टर, फायर ब्रिगेड, सिक्योरिटी सर्विस, कारखानों का कार्य, केमिस्ट एवं रसायन, लोहे से सम्बन्धित, मेकेनिक, ऐसा कार्य जहां पर साहस दिखाने की आवश्यकता हो बेकरी का कार्य, होटल, ढाबा, दर्जी का कार्य, घडी की दुकान एवं मरम्मत का कार्य, पेशेवर पहलवान एवं खिलाडी, चूने एवं ईट के भट्टे में कार्य, खेल का सामान, लाल रंग की वस्तुओं से आजीविका होती है।

दशमभाव गत वृष राशि :- खेती, नर्सरी, कला संगीत, सिनेमा, ड्रामा, रैवेन्यू एवं कृषि विभाग की नौकरी, ड्रेस डिजाइनर, पेन्टर, डेकोरेटर, इन्शयोरेन्स का कार्य, ट्रांसपोट का कार्य (माल वाहक नहीं), सेल्स टैक्स, इन्कम टैक्स की नौकरी, खजान्ची, स्टॉक ब्रोकर, सट्टेबाज, ज्वेलर, सिल्क का कार्य, शीशे का कार्य, प्लास्टिक का कार्य, आईसक्रीम, दूध दही पनीर, डेयरी, चमड़े के पर्स व बेग, केन फर्नीचर आदि।

दशम भावगत मिथुन राशि :- अकाउन्टेन्ट, कलर्क, सेल्समैन, एजेन्ट, पत्रकार, सम्पादक, अध्यापक, व्यापारी, अनुवादक, लेखक, स्टेशनरी की दुकान, पी. एण्ड टी. की नौकरी, बस रेलवे या एयर लाईन की नौकरी, इन्जीनीयर, सेक्रेट्री, ज्योतिषी, समीक्षक, ट्रेडिंग का व्यवसाय, कम्प्यूटर, कोरियर, प्रिंटिग का कार्य आदि।

दशमभाव गत कर्क राशि :- व्यापारी, अस्पताल का कार्य, पानी के जहाज में नौकरी, मौसम विभाग या जल विभाग में कार्य, जल सैना, होटल व सर्विस सेन्टर की नौकरी, रेस्टोरेन्ट, केटरिंग चाय कॉफी का कार्य, नारियल पानी की दुकान, कीमती पुराने सामान, ड्रिलिंग कम्पनी की नौकरी या कार्य, शीतल पेय का कार्य, यार्न मर्चेन्ट, प्लास्टिक का कार्य, चांदी की वस्तुएं, मशरूम, रबड़ आदि कार्य।-

दशमभाव गत सिंह राशि :- राज्य एवं बड़े संस्थानों की नौकरी, सैल्स मेनेजर, उच्च पदाधिकारी, सुनार, सट्टा, शेयर बाजार, बैंक का कार्य, वकालत, दवाई एवं रसायन, तांबा एवं सोने की वस्तुएं, वन विभाग की नौकरी, फाइनेन्स डिपार्टमेन्ट में कार्य, प्रशासन का कार्य, सिनेमा, सिरियल व ड्रामा का निदेशक।

दशमभाव गत कन्या राशि :- नोटरी पब्लिक, टी.वी. एवं रेडियो उदघोषक, सम्पादक, पत्रकार, कम्प्यूटर का कार्य करने वाले कैशियर, अकाउन्टेन्ट, टाईपिस्ट, कलर्क, ड्राईवर, पोरटमैन, लाईब्रेरियन, स्टेशनरी का कार्य, टेक्स डिपार्टमेन्ट की नौकरी, सैल्समेन, कमीशन का कार्य, व्यापारी, इन्जीनीयर, अध्यापन, ऐसा कार्य जहां बुद्धि की आवश्यकता हो।

दशमभाव गत तुला राशि :- कोर्ट, कचहरी, सिनेमा मनोरंजन क्षेत्र में कार्य, मौडलिंग, फोटोग्राफी, टैक्सटाईल का कार्य, एडवाईजर, इन्टीरियर डेकोरेशन, पब्लिक रिलेशन व राजदूत, व्यापारी, फर्नीचर का कार्य, ब्यूटीपार्लर, जज, कम्पनी सैकेट्री, लॉ आफिसर, समाज सेवा, फास्ट फूड रेस्टोरेन्ट आदि।

दशमभाव गत वृश्चिक राशि :- ज्योतिषी व तांत्रिक जासूस, नर्स, कैमेस्ट, डॉक्टर, दांत का डॉ, मैकेनिक, पुलिस एवं फौज की नौकरी, इन्श्योरेन्स की नौकरी, खदानों की नौकरी, भू सर्वेक्षण, रिसर्च, लेबर डिपार्टमेन्ट, बड़े बांधों में कार्य, कारखानों में कार्य, लोहे आदि से संबंध, चाय कॉफी, तम्बाकू का कार्य, पान की दुकान आदि।

दशमभाव गत धनु राशि :- अध्यापक, जज, वकील, कोर्ट कचहरी से संबंध दार्शनिक, धर्मप्रचारक, प्रबन्धक, जुआरी, जुतों का कार्य, होलसेल, किराने की दुकान, प्रकाशन, सम्पादक का कार्य, सैल्समैन, बैंक एवं फाइनेन्स कम्पनी की नौकरी, कम्पनी सैकेट्री, विज्ञापन आदि क्षेत्रों का कार्य।

दशमभाव गत मकर राशि :- भूमि से संबंधित कार्य, राजनीति, लकड़ी से संबंध, म्यूनिसपिल्टी की नौकरी, होलसेल का व्यापार, खान, खनिज पदार्थ, बडे उद्योग, किराया द्वारा भी आजीविका पाई जाती है।

दशम भावगत कुम्भ राशि :- नयी खोज एवं मशीनरी से संबंध, एडवाईजर, कानून एवं सामाजिक क्षेत्र से सम्बन्ध, इलेक्ट्रिीसिटी, परमाणु शक्ति, कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी, ऑटो मोबाईल, ऐरोनोटिक इन्जीनियरिंग, ज्योतिष एवं भविष्य वक्ता, वैज्ञानिक एवं इन्जीनियर, दार्शनिक एवं एक्सरे का कार्य, अस्पताल आदि मे लगने वाली मशीनों का कार्य, बड़े उद्योगों से सम्बन्ध होता है।

दशमभावगत मीन राशि :- पानी से संबंधित कार्य, आयात निर्यात, साधु सन्यासी, ज्योतिषी, शिपिंग या क्लीयरिंग एजेन्ट, कस्टम विभाग में कार्य, कोर्ट कचहरी से संबंध, ट्रेवल एजेन्ट, अध्यापन, लाईजन का कार्य, जेलर या जेल से संबंधित कार्य, डॉक्टर, नर्स, प्रबंधक, बैंक आदि क्षेत्रों में कार्य।

24

नक्षत्र एवं आजीविका

जैसा की हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक राशि के अन्तर्गत तीन नक्षत्र पाये जाते हैं। अतः सूक्ष्म फलादेश जानने के लिए राशि से अधिक नक्षत्र द्वारा फलादेश सटीक होता है। जिस प्रकार प्रत्येक राशि का कोई न कोई स्वामी ग्रह होता है उसी प्रकार प्रत्येक नक्षत्र का भी स्वामी ग्रह होता है। जातक के जन्म समय में जो नक्षत्र होता है। उसका भी जातक की आजीविका पर प्रभाव पड़ता है। यहां पर हम प्रत्येक नक्षत्र के द्वारा आजीविका का वर्णन कर रहे हैं। हम अपनें समस्त पाठकगणों को पुनः याद दिलाते हैं कि दशम भाव में स्थित ग्रह जिस नक्षत्र में वह स्थित है। उसके स्वामी ग्रह का विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः इस ग्रह से संबंधित व्यवसाय करता है।

अश्विन :- मिल कारखानों में कार्य या उद्योगपति, धातु एवं लोहे आदि द्वारा आजीविका, पुलिस, सैना आदि की नौकरी, रेस्टोरेन्ट, ढाबा, बिजली से संबंधित व्यवसाय, डॉ. सर्जन, दांतों का डॉ. जेल, कचहरी, आदि की नौकरी, ऐसे कार्य जहां पर साहस की आवश्यकता पड़े।

भरणी :- मनोरंजन, कला, संगीत, एडवरटाईजिंग, माडलिंग, प्रदर्शनी आदि लगाना, सिनेमा व टी.वी. से संबंध, चांदी का सामान, सिल्क के कपड़े फर्टीलाईजर का व्यवसाय, रैवेन्यू विभाग की नौकरी, चमड़े पर्स, बेग आदि का व्यापार, सेक्स के डॉ. आदि।

कृतिका :- पैतृक व्यवसाय, सरकारी नौकरी, विदेशों से संबंधित व्यवसाय, कवि, आर्टिस्ट, फोटोग्राफर, ऊन का व्यापार, मेडिकल क्षेत्र से संबंध होता है।

रोहिणी :- ऐसा व्यवसाय जहां घूमना फिरना पड़ता हो। जलिय पदार्थ या वाटर वर्क्स की नौकरी, शिपिंग कम्पनी की नौकरी, तैराक, दूध, डेयरी फार्म, होटल रेस्टोरेन्ट, खाने के पदार्थ, आईसक्रीम, शीशा, प्लास्टिक, ईत्र, रंग, साबुन आदि का व्यवसाय, यार्न के व्यापारी, राजनीतिज्ञ, सरकारी उच्च अधिकारी, मीठे पदार्थ, शादी विवाह करने का व्यवसाय, मिनरल वाटर या नारीयल पानी का कार्य।

मृगशिरा :- जमीन जायदाद, मकान आदि का कार्य, मशीनरी से संबंधित कोई भी कार्य, आग एवं बिजली से संबंधित कार्य, चीड–फाड से संबंधित कार्य, टेलीफोन, वायर एवं केबल का कार्य, पुलिस सेना की नौकरी, ठेकेदार, रेडियो टेप रिकार्डर का कार्य, सेल्समैन।

आर्द्रा :- एडवरटाईज़िंग, पब्लिसिटी का कार्य, लेखक, अकाउन्टेन्ट का कार्य, सेल्समैन का कार्य, स्टेशनरी, पुस्तकों का व्यवसाय, प्रिंटिंग प्रेस, रिसर्च से संबंध, कमीशन एजेन्ट, परमाणु उर्जा से संबंध, ट्रांसपोर्ट की नौकरी या व्यवसाय

पुनर्वसु :- सम्पादन, पत्रकार, अध्यापक, प्रकाशन, निरिक्षक, प्रूफ रीडर, लेखक, कानूनी सलाहकार, साहित्य से संबंध, इंश्योरेन्स, टेक्स, फाइनेन्स की नौकरी या व्यवसाय, अकाउन्टेन्ट या बैंक की नौकरी, सिविल इंजिनियर, ज्योतिषी, ऊन के व्यापारी, व्यापारी, कमीशन एजेन्ट, सेल्स मेनेजर या प्रशासनिक

अधिकारी, धर्म संस्थानों से संबंध, कलर्क, पोस्टमैन, सैक्रेट्री, उच्च पदाधिकारी व शहर के मेयर या काउंसलर।

पुष्य :- पैट्रोल, केरोसिन आदि के व्यापारी, इन्जीनियर, गैस एजेन्सी, कोयला, लोहा, काली वस्तुओं का व्यापार, भूमि से संबंधित कार्य, मशीनों, बड़े उद्योग, मजदूरों से संबंध, ठेकेदार, पुल व बांध का निर्माण करने वाले, खादानों एवं खनिज से संबंध।

आश्लेषा :- लेखन, सम्पादन, पत्रकार, सेल्समैन, कमीशन एजेन्ट, अध्यापन, कलर्क, पेन्ट व इंक का व्यापार, ट्रेवल एजेन्ट, एयर होस्टेस, ज्योतिषी, टैक्सटाईल इंजीनियर, यार्न के व्यापारी, कागज व स्टेशनरी से संबंधीत कार्य, नर्स आदि।

मघा :- औषधि व रसायन से संबंधित कार्य, मेडिकल क्षेत्र से संबंध, सरकारी नौकरी, बनावटी जेवर, इलेक्ट्रोप्लेटिंग का कार्य, बडे संस्थानों की नौकरी, सरकार को सप्लायर, वकालत, सैना विभाग का कार्य

पूर्वाफाल्गुनी :- कला के क्षेत्र से संबंध, जानवरों के डॉ., रैवेन्यू विभाग की नौकरी या पुरातत्व विभाग से संबंध, फोटोग्राफर, कैसेट का कार्य, कपडे का व्यवसाय, मोबाईल टेलीफोन का व्यवसाय, सरकारी विभागों की नौकरी, चमड़े के पर्स व वेग, महिला विद्यालय में नौकरी, सिगरेट के व्यापारी, शीशे के व्यापारी।

उत्तरा फाल्गुनी :- सरकारी नौकरी, मेडिकल विभाग, सेना, शिपिंग, वैक, स्टॉक एक्सचेंज की नौकरी या इससे संबंध, हृदय रोग के डॉ., ज्योतिषी, पब्लिक रिलेशन, एजेन्ट, वन विभाग की नौकरी, टयूरिस्ट विभाग, प्रेस से संबंध, अध्यापन, पत्रकार, दूर संचार व पी. एण्ड टी. की नौकरी या इनसे संबंधित व्यवसाय।

हस्त :- वकालत, जल से संबंधित विभागों की नौकरी, दूर संचार, कामर्स व ओवरसीज विभागों से संबंध, टेक्सटाईल उद्योग से संबंध, सेल्समैन, इंजीनियर, आयात निर्यात का कार्य, कला से संबंध, राजनीति व राजदूत एवं कोरियर का कार्य।

चित्रा :- मैकेनिकल इंजीनियर, ठेकेदार, मशीनरी एवं लोहे से संबंधित कार्य, बिजली विभाग की नौकरी, सैना व पुलिस विभाग की नौकरी, टैक्स

विभाग, जेल एवं कचहरी की नौकरी या इनसे संबंधित व्यवसाय, डॉ. वैज्ञानिक, मोटर पार्टस का व्यापार, संगीत कला से संबंध।

स्वाति :- संगीत, कवि, जज, एक्सरे, विभाग, जहरीले व रसायनों से संबंध, महिलाओं के कपड़ों का व्यपार, फैन्सी सामान, प्लास्टिक, यार्न, इत्र, गर्म पानी का गीज़र या ब्लोवर आदि का कार्य, ट्यूबलाईट व पंखों का कार्य, चमड़े का सामान, कटाई बुनाई का कार्य, घरेलू कर्मचारी व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी।

विशाखा :- ऐसा कार्य जहां यात्रा करनी पड़े या घूम फिरकर करने वाला कार्य, ट्रेवल एजेन्सी, राट्टा, जुआ, रैवेन्यू विभाग, साझें का व्यापार, एडवरटाईजिंग, रंगीन कागज, अध्यापन, जज, एवं बैंक की नौकरी, आयुर्वेद डॉक्टर, हर्बल दवाई का व्यापार।

अनुराधा :- मेडिकल क्षेत्र, पुलिस सेना से संबंध, लोहे मशीनरी से संबंधित व्यवसाय, या कारखानों में नौकरी, भूमि से संबंधित कार्य, मैकेनिकल इंजिनियर, व मैकेनिक, मजदूरों से संबंध, जेल व कचहरी से संबंध, ऊनी वस्त्रों का व्यापार, बिजली विभाग व इन वस्तुओं का व्यापार।

ज्येष्ठा :- इश्योरेंस एजेंट, टैक्सटाईल कम्पनी में नौकरी, मैकेनिकल इंजीनियर, प्रैस की नौकरी, पम्पसेट का व्यापार, बिजली उत्पादन के क्षेत्र से संबंध, सर्जन, सेना विभाग में अकाउन्टेन्ट का कार्य, सेशन जज।

मूल :- समाज सेवक, आयुर्वेद, वेद पुराणों से संबंध, वकील, जज, अध्यापक, पुरोहित, बडे उद्योगपति, विदेशों से व्यापार, राजदूत, शेयर बाजार, व ऐसे अन्य क्षेत्रों से संबंध, बैंक व फाइनेन्स कम्पनी की नौकरी, फूल व बीज का व्यवसाय

पूर्वाषाढ :- रैवेन्यू विभाग, टैक्स, बैंक, कचहरी, फाइनेन्स, शुगर मिल आदि में नौकरी, शेयर बाजार से संबंध, विदेश व्यापार, वेल फेयर आफिसर, ट्रेवल एजेन्सी, सांझे का व्यापार, महिलाओं एवं बच्चों, से संबंधित कोई भी कार्य, संगीत सिनेमा से संबंध, रेस्टोरेन्ट, गेस्ट हाऊस, आयुर्वेद व दवाईयों का व्यापार।

उत्तराषाढ़ :- आयकर विभाग, वित्त विभाग, पुरातत्व विभाग, जेल विभाग

की नौकरी, ऊन का व्यापारी, हौम्योपैथी डॉ., इंजिनियर, कस्टम विभाग व पोर्ट की नौकरी, आयात निर्यात से संबंध, धर्माथ संस्थान में कार्यरत।

श्रवण :- भूमि से संबंधित कार्य व जलीय पदार्थ, खुदाई का कार्य, कूलर का व्यापार, फ्रिज व आईसक्रीम का व्यापार, खेती, मछली पकड़ने वाले, राजनीति से संबंध होता है।

घनिष्ठा :- भूमि व लोहे से संबंधित कार्य, लेबर अधिकार या वेलफेयर अधिकारी, मिल कारखानों की नौकरी, शराब बनाने के भट्टे व कारखाने, पोस्टमार्ट करने वाले, ठेकेदार, टेलीविजन, टेलीफोन, बिजली, परमाणु शक्ति, शोध संस्थानों से संबंधित कार्य, जूट का व्यवसाय, झगड़े, मारपीट व चोरी डकेती करने वाले।

शतभिषा :- सेन्सर विभाग व गणना करने वाले, भविष्य वक्ता, स्टाक एक्सचेंज, राजनीति, राशन विभाग, बिजली व परमाणु उर्जा से सम्बन्ध कारखानों में नौकरी मजदूरों व चतुर्थ श्रेणी की नौकरी या ठेकेदार, वैज्ञानिक या इतिहासकार।

पूर्वभाद्रपद :- जासूस विभाग, बैंक, विदेशी मुद्रा, ट्रेवल एजेन्ट, अकाउन्टेन्ट, अध्यापक, प्लानिंग कमीशन से सम्बन्ध, शेयर ब्रोकर, बड़े संस्थानों की नौकरी, वित्त विभागों की नौकरी रिजर्व बैंक की नौकरी, इंश्योरेंस की नौकरी, दवाई की दुकान, वकील व जज।

उत्तराभाद्रपद :- जेल विभाग, अस्पताल, क्लब व सामाजिक संस्थानों के नौकरी, आयात, निर्यात, स्टोर कीपर, छातों के व्यापारी।

रेवती :- प्रकाशन, बैंक, कोर्ट कचहरी, पुरोहित, अध्यापक, प्रेस, ज्योतिषी, शेयर ब्रोकर, राजनीतिज्ञ, राजदूत, प्रतिनिधी, दलाल आदि।

पाठकगण नक्षत्रों द्वारा आजीविका का ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं। अब आप के समक्ष कुछ उदाहरण देकर इस विषय को और आसान करने के चेष्टा कर रहे हैं।

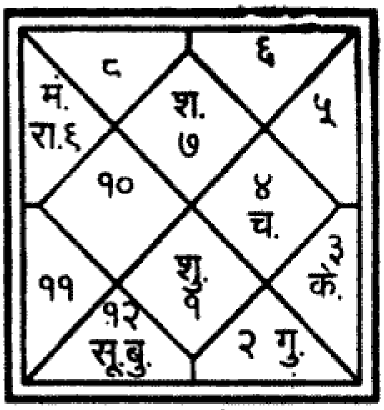

कुण्डली नं २३०

कुण्डली नं 230 के जातक का जन्म अप्रेल 1954 को हुआ। इस कुण्डली में दशम भाव में कर्क राशि है तथा इसका स्वामी चन्द्रमा वहीं पर स्थित है। प्रायः यह माना जा सकता है कि जातक की आजीविका ऐसी होगी जिसमें उसको यात्रा करने पड़ती है। या फिर जल से सम्बन्धित कोई कार्य हो चन्द्रमा के कारण सरकारी नौकरी भी बनती है। परन्तु यह जातक एक कॉलेज में प्रोफेसर हैं।

अब पाठक चिंतित हो सकते हैं कि ऐसा क्यों हुआ। इसको समझने के लिए हमें यह जानना आवश्यक है कि इस जातक के दशम भाव में चन्द्रमा किस नक्षत्र में है। इस कुण्डली में जातक पुनर्वसु नक्षत्र में पैदा हुआ। अतः चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र में है। पुनर्वसु नक्षत्र का स्वामी गुरू ग्रह होता है। इस नक्षत्र के स्वामी के प्रभव पड़ने पर ही यह जातक अध्यापन के क्षेत्र में गया। यदि आप पुनर्वसु के अन्तर्गत आजीविका को देखें तो अध्यापन भी इसक अधिकर क्षेत्र में पाया जाता है। इस प्रकार पाठक अब समझ सकते हैं कि दशम भाव में स्थित नक्षत्र या जन्म नक्षत्र का आजीविका पर कितना प्रभाव पड़ता है।

ग्रह स्पष्ट

सू. 10/23/48
च. 1/4/18
मं 0/29/29
बु. 10/12/36
गु. 5/4/53
शु. 10/14/17
श. 7/20/50
रा. 6/29/58

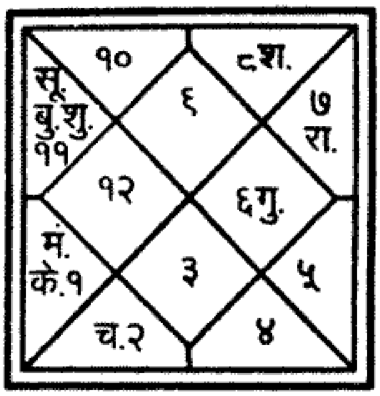

कुण्डली नं २३१

कुण्डली नं 231 के जातक का जन्म मार्च 1957 को हुआ। यहां पर दशमभाव में कन्या राशि है। तथा गुरू इसमें स्थित है। यह गुरू उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में है। इस नक्षत्र का स्वामी सूर्य है अतः यह बात तो निश्चित है कि जातक सरकारी या बड़े संस्थान से जुड़ा होना चाहिए। इस कुण्डली में बैंक की नौकरी के कई योग बनते हैं। दशम भाव में कन्या राशि से अकाउन्टेंट का कार्य, गुरू के दशम भाव में होने पर बैंक या फाइनेंस से सम्बन्ध भी बनता है। तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के होने पर भी बैंक से आजीविका बनती है। लग्नेश भी गुरू है।

अतः गुरू के क्षेत्र से आजीविका तथा सूर्य नक्षत्र के स्वामी होने के कारणवश सरकारी या बडे संस्थान में कार्यरत होना बनता है। यह जातक भारत के सबसे बड़े बैंक स्टेट बैंक में उच्च अधिकारी है। यहां पर हम अपने पाठको को यह अवश्य बतायेंगे कि दशम भाव का गुरू व्यक्ति को उच्च पद दिलाता है। तथा उसका सम्बन्ध बैंक, फाइनेंस, शैयर आदि से अवश्य होता है। ऐसे जातक ज्योतिषी भी बनते हैं।

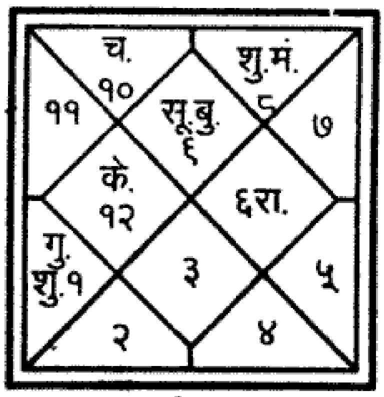

कुण्डली नं २३२

कुण्डली नं 232 के जातक का जन्म दिसम्बर 1940 को हुआ। यह जातक एक माना हुआ चार्टड अकाउन्टेन्ट है। यहां पर दशम भाव में कन्या राशि का होना ही अकाउन्टेन्ट की नौकरी दर्शाता है तथा राहु का चित्रा नक्षत्र में होना इनकी आजीविका को दर्शाता है। यह जातक एक माना हुआ टेक्स सलाहकार है। इस प्रकार पाठक यह समझ चुके होंगे कि मात्र दशम भाव में स्थित ग्रह द्वारा ही आजीविका का पता नहीं चल सकता। अपितु इस ग्रह पर नक्षत्र स्वामी का प्रभाव भी देखा जाना अवश्य होता है।

25

शनि भाव स्थिति द्वारा विचार

प्रथमभावफल (लग्न) शनि यदि तुला, मकर, कुम्भ, वृष,कन्या राशि का होतो ऐसे जातक नौकरी करते है तथा उच्च पद प्राप्त करते है। यदि व्यवसाय में हो तो बडी फर्मों या मिलों के मालिक व अधिकारी होते है। कल्याण वर्मा तथा अन्य विद्वानों के मतानुसार स्वराशि व सर्वोच्च राशि का शनि व्यक्ति को राजा के समान बनाता है।

स्वोच्चस्वकीय भवने क्षितिपालतुल्ये लग्नेऽर्कजे भवति देशपुराधिनाथः।
शेषेषु दुःखगद पीडित एवं बाल्ये दरिद्रयक्रम वश गोम लिनोऽलश्च।।
(कल्याण वर्मा)

अर्थात स्वराशि एवं सर्वोच्च राशि का शनि हो तो व्यक्ति राजा के समान देश व नगर का स्वामी होता है। यदि अन्य राशियो में स्थित हो तो जातक दुःखी व आलसी होता है।

उपरोक्त श्लोक के अनुसार हमने लग्न में उच्च व स्वराशि का शनि जातक को उच्च पदस्थ बनाते देखा है। यहां पर इस शनि पर पड रहे अन्य ग्रहों का प्रभाव भी महन्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

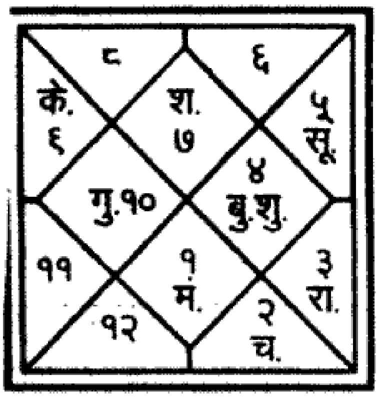

कुण्डली नं २३३

कुण्डली न. 233 श्री राम कृष्ण हेगडे जी की है। आप कनार्टक के मुख्यमंत्री भी रह चुके है तथा भूतपर्व अध्यक्ष प्लानिंग कमीशन भी रह चुके है। आप की कुण्डली में लग्न में उच्च राशि का शनि इसी बात को दर्शा रहा है। उधर उच्च राशिस्थ राहु की पूर्ण द्रष्टि भी इस पर पड रही है। यह राजनीति में उच्च पद को दर्शता है।

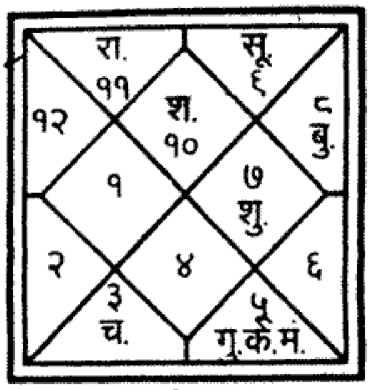

कुण्डली नं २३४

कुण्डलीन. 234 श्री टी.एन.शेषन की है। आप मुख्य निर्वाचन अधिकारी रह चुके है तथा केन्द्र सरकार में महत्व पूर्ण पदों में रह चुके है। आपकी कुण्डली में लग्न में स्व राशि का शनि स्थित है। वैसे कुण्डली में शुक्र भी स्वराशि का होकर दशम भाव में स्थित है। इस प्रकार कुण्डली में दो पंचमहापुरूष योग बन रहे है। शानि के कारण शश योग बनता है। तथा शुक्र के कारण मालव्य योग बन रहा है। श्रीमति इन्दिरा गांधी की कुण्डली में लग्न में शनि बैठा है परन्तु कर्क राशि का है पर वहां पर लग्नेश व सप्तमेश में राशि परिवर्तन योग भी है।

मेष सिंह, धनु कर्क वृश्चिक एवं मीन राशि का शनि लग्न में होने पर जातक व्यापार में अधिक सफलता नहीं पाते पर यदि इस शनि पर बली ग्रहों का प्रभाव पड रहा हो तो व्यापार में सफल भी हो सकते है। कन्या राशि का शनि लग्न में बुध के साथ होने पर व्यापार द्वारा या उच्च पदासीन बनता है। कई चार्टेड अकाउन्टेटे व इन्जीनियर की कुण्डली में हमने बुध व शनि को इस अवस्था में पाय है। प्रायः उपरोक्त राशि गत शनि के व्यक्ति नौकरी से आजीविका पाते है यह व्यक्ति धीरे धीरे ही अपनी स्थिति सुदृढ कर पाते है।

धन भावगत शनि फलः- धन भााव में स्थित शनि व्यक्ति को अपनी आजीविका के लिए संघर्ष करना पडता है। यह व्यक्ति अपने घर से दूर रहता है। या जन्म स्थान छोड कर अन्य स्थान में व्यवासय आदि करता है। यह व्यक्ति विदेश भी जाते हैं। इस प्रकार का शनि यदि कुण्डली में हो तो उन्हें अपने व्यवसायको सोच समझ कर ही चुनना चाहिए। इनको लोहे, मशीनरी, भूमि, सट्टे, संग्रह करके, मजदूरों द्वारा, कोयला, लकडी, खनिज खदान आदि से आजीविका मिलती है। यदि शनि निर्बल है। तो इन क्षेत्रों में भारी नुकसान भी उठाना पडता है। तुला व मकर का शनि होने पर जातक प्रायः धनी होता है। तथा फाईनेस से किसी न किसी प्रकार जुडे होते है। यह लोग दूसरों का धन हडप ने वाले भी होते है। शेयर बाजार, या व्यापार द्वारा यह लोग धन भी

कमाते है। प्रायः यह व्यक्ति स्वतन्त्र कार्य ही करना पसन्द करते है। भृगु सूत्र के अनुसार यह व्यक्ति मठाधीश भी हो सकते है। इसको परखने के लिए हमने कुछ इस प्रकार के व्यक्तियों की कुण्डलियों देखी तो कई में कुम्भ राशि का शनि देखा गया हमने अपने अनुभव में इस प्रकार के कुछ व्यक्तियों को धर्म व ज्योतिष आदि के क्षेत्रों में भी पाया है।

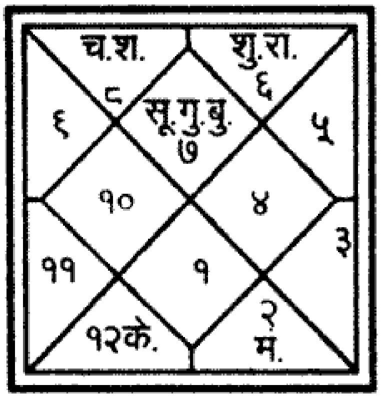

कुण्डली नं २३५

कुण्डली न. 235 के जातक का जन्म अक्टूबर 1958 में हुआ यह जातक बैंक में अधिकारी है। परन्तु इसके अतिरिक्त व्यापार भी करता है। यह जातक अपने जन्म स्थान से दूर रहकर आजीविका पा रहा है तथा इन्होनें अपने जीवन के आरम्भ में बडा संघर्ष भी करा है। अभी कुछ वर्ष पहले इन्होंने शेयर बाजार में बहुत नुकसान उठाया। यहां पर शनि द्वितीय भाव में शत्रु राशि का है तथा अपने शत्रु चन्द्रमा के साथ स्थित है तथा अन्य शत्रु मंगल द्वारा द्रष्ट है। यह स्थिति इनको धन नुकसान करवा रही है।

जातक मंगल के कारण वश अब भूमि से संबंधित कार्य कर रहा है यह जातक मकान बना कर बेचने का व्यवसाय भी कर रहा है। इस प्रकार शनि जो कि वृत्ति का कारक है उस पर मंगल का प्रभाव अधिक होने पर जातक नौकरी के साथ साथ यह कार्य कर रहा है। धन भाव में शनि यदि बली नही हो तो धन नाश ही करता है। तुला राशि का शनि का प्रभाव आप पूर्व में दी गई श्री हर्षद मेहता की कुण्डली में देख सकते है हमारा यह अनुभव है कि शनि यदि बली भी हो तो भी जातक को कभी न कभी धन नाश अवश्य करवाता है।

तृतीय भावगत शनि फल :- तृतीय भाव का शनि व्यापार में हानि कारक होता है। यह व्यक्ति नौकरी में अधिक पाये जातक है। यदि वृष, मिथुन का शनि तृतीय स्थान में हो तो व्यापार में भी आ सकते है। इसके लिए कुण्डली में अन्य योग भी ऐसे हो जिनसे व्यापार में सफलता बने। कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में होने पर विदेश में रहकर व्यवसाय करते देखा गया है। वैसे तृतीयस्थ शनि चन्द्रमा या शुक्र का प्रभाव पडने पर जातक सफल देखे जा सकते है। प्रायः इस

भाव में स्थित शनि वाले जातक साझे के व्यापार में असफल होते है। हमार अनुभव में जातक राज्य नौकरी में सफल हो सकते है यदि कुण्डली में शनि बलवान हो अर्थात तृतीय भाव में तुला, मकर या कुम्भ राशि हो या शुभ द्रष्ट हो अथवा नवाशं कुण्डली में शनि बली हो तो यह व्यक्ति सरकार में उच्च स्थान पाते है।

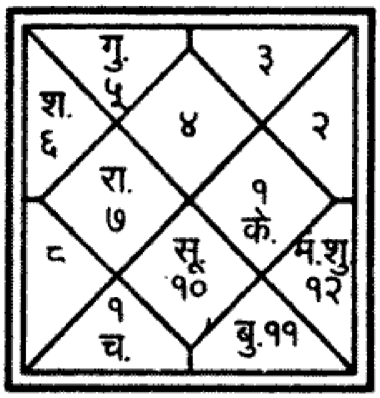

कुण्डली नं २३६
(श्री के.आर.नारायणन)

कुण्डली न. 236 भारत के राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन जी की है। आप की कुण्डली में तृतीय भाव में कन्या राशि का शनि है। इस शनि पर उच्च राशि के शुक्र की पूर्ण द्रष्टि है। आप की नवांश कुण्डली में शनि बली है तथा जन्म कुण्डली में मित्र राशि का है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है। कि सफल व्यक्तियों की कुण्डली में या नवांश कुण्डली में शनि बली पाया जाता है। अतः यहां पर भी शनि बलीहै। स्व. डायना की कुण्डली में भी तृतीय भाव में मकर राशि का शनि है। यह शनि गुरू से युक्त है।

चतुर्थ भावगत शनि फलः- प्रायः ऐसे व्यक्ति अपने पैतृक सम्पति नहीं पाते है और व्यवसाय में भी सफलता नही पाते है। यदि कुण्डली में तुला, मकर, कुम्भ राशि का शनि हो तो ऐसा नहीं होता है तथाा इनको भूमि से संबंधित लाभ भी होता है। अन्य राशि वाले शनि को ऐसे व्यवसाय नही करने चाहिए। प्रायः यह देखा गया है कि कन्या मकर एवं कुम्भ को छोडकर अन्य राशि वाले व्यक्ति नौकरी करते है। यह व्यक्ति सरकारी नौकरी करते है। कन्या, मकर व कुम्भ वाले व्यक्ति व्यापार करते है। यह व्यक्ति व्यापार करते हुए तुरन्त धनी नही होते। तुला राशि के शनि वाले व्यक्ति सरकार में उच्च पद अवश्य पाते हैं। पूर्व में दी गई श्री करूण निधी, तमिल नाडू के मुख्यमंत्री की कुण्डली में भी देख सकते है।

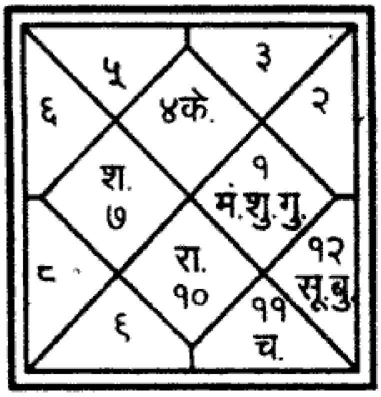

कुण्डली नं २३७

कुण्डली न. 237 एक आई.ए.एस जातिका की है। जिनका जन्म मार्च 1953 को हुआ। यहां पर चतुर्थ भाव में उच्च राशि का शनि स्थित है। इस शनि को दशम भाव में स्थित मंगल, गुरू तथा शुक्र की द्रष्टि पड रही है। इस प्रकार चतुर्थ भाव में उच्च राशि का शनि वश योग भी बनता है। जिसके कारण वश जातक अधिकार प्राप्त करता है। तथा ऐसा व्यक्ति उच्च पदारीन अवश्य होता है।

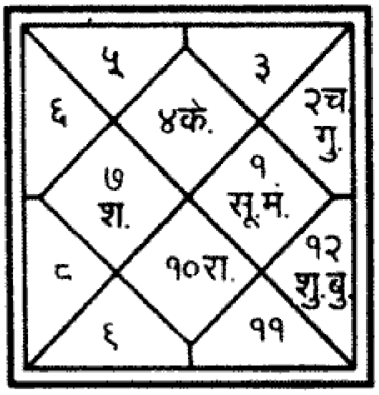

कुण्डली नं २३८

कुण्डली न. 238 के जातक का जन्म अप्रेल 1953 में हुआ यह जातक एक उच्च सरकारी पदाधिकारी है। तथा जातक डाक्टर है। यहां पर भी उच्च राशि का शनि चतुर्थ भाव में देखा जा सकता है। दशम भाव में उच्च का सूर्य व स्व राशि का मंगल होने पर इस जातक उच्च पदारीन बनने में और सहायता मिल रही है। अभी तो जातक को और अधिक पद प्रप्ति होने है।

पंचम भाव शनिफल:- पंचम भाव का शनि शेयर बाजार या सट्टे आदि व्यवसायें में हानि देता है। इस प्रकार का शनि यदि कुण्डली में हो तो इन से दूर ही रहना चहिए। यदि स्वराशि या मित्र राशि का सूर्य चन्द्रा द्वारा द्रष्ट हो तो भूमि से प्राप्त वस्तुओं के व्यवसाय अदि से लाभ भी करवाता है।ऐसे जातक लोहे के व्यापर, फैक्ट्री आदि के व्यवसाय में सफल भी होते है। जल तत्व वाली राशि अर्थात कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि गत शति पंचम भाव में होन पर रेल्वे, बीमा, कस्टम, नेवी, शिपिंग, कारखाने, म्युनिसीपल्टी, जिला परिषद आदि में कार्य करते है। वायु तत्व वाली राशियों अर्थात मिथुन, तुला, व कुम्भ राशि वाले शनि व्यापार द्वारा या कोंट कचहरी से संबंधित कार्य करते है। पंचम भाव में स्थित शनि काफी संघर्ष के उपरान्त ही सफल बनाता है। शनि के पंचम भाव में रहने से इसकी द्रष्टि सप्तम भाव, एकादश भाव तथा धन भाव में होती है। अतः व्यापार आदि में या वैसे भी धन हानि के योग अधिक होते है।

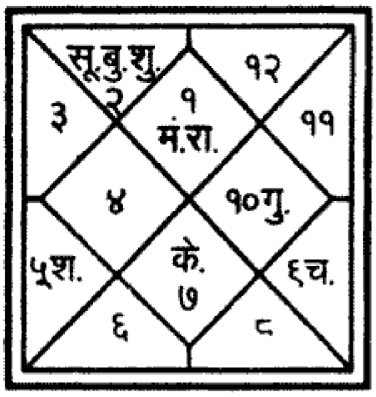

कुण्डली नं २३६

कुण्डली न. 239 के जातक का जन्म मई 1949 में हुआ यह जातक इन्जीनियरिंगे है। तथा स्पेस इंजीनियर में डाक्टरेट भी करी है। तथा अमेरिका में नासा में उच्च पदासीन रह चुके है।इस जातक को कुछ वर्षे पहले व्यापार करने का मन बनाया। इन्होंने व्यापार में घाटा बहुत उठाया। इनको हमने पूर्व में ही सचेत कर दिया था कि आव को घाटा होगा परन्तु इन्होंने इस और ध्यान नहीं दिया। यहां पर शनि पंचम भाव में स्थित है तथा इसकी द्रष्ट्रि लाभ पर सप्तम तथा धन भाव में पड रही है। शुक्र यहां पर सप्तमेश तथा धनेश होकर धन भाव में स्थित है। तथा शनि द्वारा द्रष्ट होने पर भी ही इनको भारी नुकसान उठाना पड़ा।

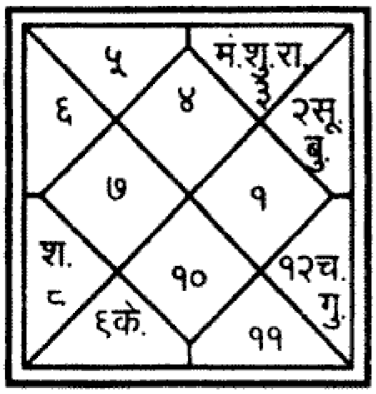

कुण्डली नं २४०

कुण्डली न. 240 को जातक एक रिटायर्ड व्यक्ति है। आप के पंचम भाव में शनि वृश्चिक राशि का है। आप ने भारतीय नौ सेना में इंजीनियर के पद में कार्य करा। वहां से रिटायर होकर एक बहुत ही बडे कारखाने में नैकरी भी करी। अतः जलीय राशि में शनि होने तथा वृश्चिक राशि का शनि होने पर इन्होने नेवी तथा कारखाने में नौकरी भी की।

हमने उत्सुकता वश उन से पूछा लिया कि आपने कभी व्यापार करने की सोची ? क्या आप ने नुकसान उठाया तो आप ने बताया कि आज से तीस पैतीस वर्ष पूर्व आप ने किसी चिटफड कम्पनी में बहुत पैसा लगाया था। उनका सारा पैसा डूब गया तथा उन्हें भारी नुकसान उठाना पडा था। इस प्रकार पंचम भाव में शनि यदि पाप प्रभाव में हो तो धन की हानि करवाता है। तुला राशि का शनि व्यक्ति को लाभ भी कराता है। यह व्यक्ति सरकार में या व्यापार में उच्च स्थान पाते है। इसको समझने के लिए पूर्व में दी गई श्री मुरारजी देसाई जी की कुण्डली देखे श्री सुख राम पूर्व मंत्री की कुण्डली में भी पंचम भाव में उच्च

का शनि है। श्री बिल गेटस, अमरीका के तथा विश्व में प्रसिद्व कम्पयूटर के बताज बादशाह कहलाने वाले, आप की कुण्डली में भी पंचम भाव में उच्च का शनि है। इस भाव में इस शनि के साथ सूर्य व शुक्र भी है। जो कि एक ऐसा योग बना रहा है। जिससे कम्पयूटर में प्रसिद्वि बनती है।

षष्ठ भाव गत शनि फल:- षष्ठ भाव में शनि कि स्थिति व्यापारियों के लिए अच्छी नही मानी जा सकती। प्रायः ऐसे व्यापारियों को अपने नौकरी के प्रति सजग रहना चाहिए। ऐसा माना जाता है। कि षष्ठ भाव का शनि नौकरो द्वारा धोखा व विश्वासघात कराता है। इसी प्रकार नौकरी पेशा व्यक्तियों को भी अपने सहयोगियों के प्रति सजग रहना चाहिए। वैसे भी षष्ठ स्थान को नौकरी का स्थान माना जाता है। यहां पर शनि की उपस्थिति नौकरी के लिए अच्छी नही मानी जाती भृगु सूत्र के अनुसार तो उद्योग करने में भी असफलता मिलती है। हमारे विचार से ऐसे व्यक्ति जानवरों (गाय, भैसे, घोडा) के व्यापार में सफल होतें है। या फिर लोहे के व्यापार में भी सफलता पाते है। नौकरी में इनको अन्त में परेशनियों को सामना करना पड सकता है। शनि यदि शुभ द्रष्ट हो या स्वराशि व उच्च का हो तो जातक ठेकेदारी, भूमि, लोहे सीमेंट पत्थर चूने आदि से लाभ कमाता है।

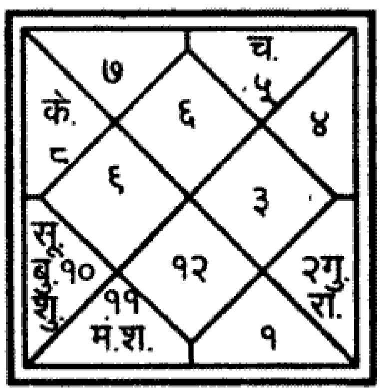

कुण्डली नं २४१

कुण्डली न. 241 का जातक सन् 1966 का जन्म है। यह जातक एक सरकारी अधिकारी है। यहां पर स्वराशि का शनि षष्ठ भाव में मंगल के साथ है। जातक की आयु अभी अधिक नही है। फिर भी जातक को नौकरी में परेशनी उठानी पड गई। जातक को चार्ज शीट प्राप्त हुई है। तथा सस्पैंड भी हो गया है। प्रायः षष्ठ भाव में शनि नौकरी में परेशानी डालते पाया गया है। या फिर व्यापार में भी नुकसान उठाते हुए देखा गया है।

सप्तम भाव गत शनि फल :- सप्तम भाव में यदि शनि पाप प्रभाव में हो तो उस व्यक्ति का साझे का व्यापार नहीं करना चाहिए। ऐसा व्यापार वह भी साझेदारी में नुकसान दिलाता है। यदि पाप प्रभाव अधिक हो तो व्यापार में घाटे के अतिरिक्त मुकदमा व शत्रुता भी करता है। प्रायः ऐसे व्यक्ति नौकरी ढूंढ ढूंढ कर भी परेशान होते देखे गए है। तुला राशि या स्व राशि का शनि साझे के व्यापार में लाभ दिलाता है। तुला राशि का शनि कपड़े के व्यापार या शुक्र से संबंधित व्यापार में लाभ भी कराता है। कई कचहरी आदि से जुडे व्यक्ति के सप्तम भाव में शनि तुला राशि का देखा गया है।शनि यदि शुभ प्रभाव में हो तो जातक उच्च पदासीन भी देखा गया है। व्यापार में यह लोग ठेकेदारी आयात, निर्यात, भूमि से संबंधित कार्यो में भी सफल होते है। द्विस्वभाव राशिगत शनि होने पर अध्यापन या प्रशासक भी बनते है।

कुण्डली नं २४२

कुण्डली न. 242 की जातिका का जन्म अप्रैल 1960 का है। यह जातिका इलेक्ट्रोनिक इंजीन्यिरिंग में डिप्लोमा प्राप्त कर आज एक बहुत ही बड़ें टेलिविजन कम्पनी में उपमहाप्रबन्धक के पद मे कार्यरत है। यहां पर सप्तम भाव में स्वराशि के गुरू के साथ शनि की युंति है। सूर्य उच्च राशि का लाभ स्थान में है। इस जातिका ने बहुत ही कम वेतन से अपनी नौकरी आरम्भ करी तथा धीरेधीरे ही इस पद पर पहुँची।

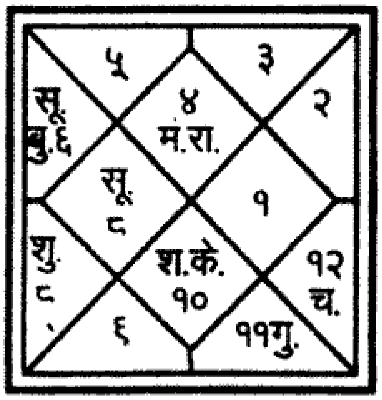

कुण्डली नं २४३

कुण्डली न. 243 के जातक का जन्म अक्टूबर 1962 को हुआ। यह जातक एक व्यवसायी है। तथा अच्छा धन कमा रहा है। इस जातक ने आरम्भ में साझे का व्यापार किया तथा उसमें इन को घाटा उठाना पड़ा। हमनें इनको पूर्व में भी साझे के व्यापार के लिए मना किया था। इस जातक को भूमि से संबंधित कार्य करने को कहा गया। आज कल यह जातक एक प्रसिद्व भवन निर्माता है।

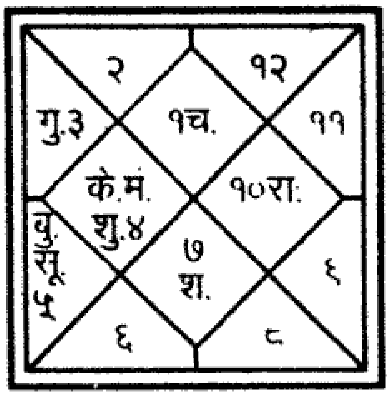

कुण्डली नं २४४

कुण्डली न. 244 के जातक का जन्म अगस्त 1954 को हुआ। यहॉ पर सप्तम भाव मे तुला राशि का शनि है। जो कि इस कुण्डली में दशमेश तथा लाभेश होकर केन्द्र में बैठा है। यह शनि शश योग बना रहा है। जैसा कि पूर्व मे कहा गया है। कि कुण्डली में शनि बली होने पर जातक उच्च पदासीन होता है। यह जातक एक वरीष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी है। तथा इनका संबंध न्याय से भी रहता है।

अष्टम भाव गत शनि फलः- प्रायः इस स्थान में शनि यदि बली न हो तो आजीविका के लिए अच्छा नहीं है। जातक के जीवन में उतार चढाव आते है। व्यापरियों का साझे के व्यापार में हानि होती है। प्रायः ऐसे व्यक्ति स्वतन्त्र व्यवसाय करते है। नौकरी में भी परेशानी आती रहती है। व्यापार में अर्थिक तंगी बनी रहती है। तुला, मकर, कुम्भ, का शनि शादी के पश्चात लाभ देता है। इन्हें वारिस के रूप में भू सम्पति का लाभ होता है। प्रायः अष्टम गत शनि नौकरी ही करते है। इन को धन हानि के योग बने रहते है।

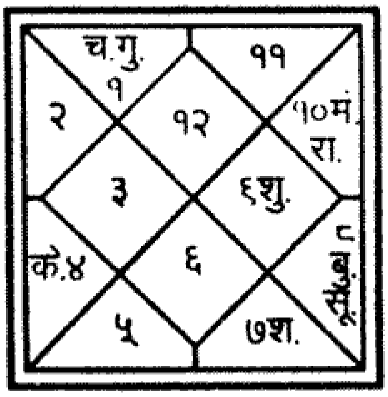

कुण्डली नं २४५

कुण्डली न. 245 के जातक का जन्म नवम्बर 1945 को हुआ जातक की कुण्डली में धनेश एवं भाग्येश होकर मंगल उच्च राशि का शनि स्थित है। यह जातक पिछले कई वर्षो से एक उद्योग चाल रहा है।इस जातक ने अच्छा धन भी कमाया परन्तु कुछ वर्षो से जातक अर्थिक द्रष्टि से परेशान है। इसको वित्त आभाव के कारण वश अपनी फैक्ट्री को बन्द करना पडा है।

नवम भावगत शनि फल:- इस भाव में शनि होने पर व्यक्ति दाशर्निक,वेदान्ती, ज्योतिषी, कानून का जानने वाला या पुरातत्व विभाग आदि से संबंध बना कर आजीविका दिलाता है। यह व्यक्ति भू संर्वेक्षण विभाग तथा भूमि से संबंधित व्यवसायों में जुडे होते है। यह लोग विदेश में रह कर भी आजीविका करते है। प्रायः इन व्यक्तियों को वृत्ति में सफलता 36 वें वर्ष में जाकर मिलती है। इनके जीवन में उतार चढाव भी आते रहते है। व्यापार की द्रष्टि में भी हम कह सकते है। कि इनको स्थिर लाभ नहीं मिलता है।

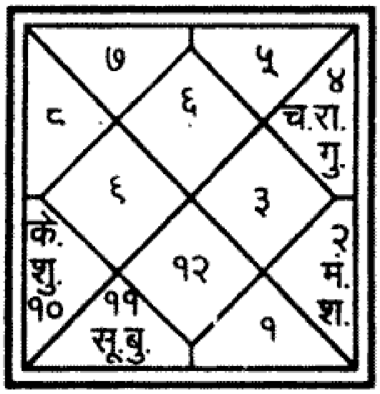

कुण्डली नं २४६

कुण्डली न. 246 के जातक का जन्म मार्च 1944 को हुआ यह जातक अप्रवासी भरतीय है। तथा अमेरिका में रहता है। इन को वहा पर रहते हुए 25 वर्ष हो गए है। यह जातक वहां पर आजकल इलैक्ट्रोनिक्स क्षेत्र में कार्यरत है। अनको ज्योतिष का भी ज्ञान है। तथा वह इस विद्या का गुढ अध्ययन कर रहा है। जैसा कि कहा गया है। नवम भाव में शनि ज्योतिष से संबंध जोडता है। पूर्व में दी गई इस ग्रन्थ के प्रणेता की कुण्डली में भी नवम भाव में शनि है। जो कि मंगल के साथ है। जिस कारण वश ही आपने इस क्षेत्र में इतना कार्य करा।

दशम भावगत शनि फल:- दशम भाव गत शनि का फल प्रायः सभी विद्वानों ने अच्छा ही कहा हमारे अनुभव में वृत्ति के लिए तो दशम भव का शनि यदि नीच या शत्रु राशि में हो या पाप प्रभाव में हो तो बहुत ही कष्ट कारक होता है। ऐसे जातक को जीविका के लिए कठोर परिश्रम करना पडता है। प्रायः यह लोग असफल, दरिद्र, अपमानित होते है। यह फल, प्रायः मेष, कर्क, वृश्चिक, एवं मीन के शनि में देखे जा सकते है। इस प्रकार के व्यक्तियों को हमने सदा अनैतिकता से ही सफल होते देखा है। जैसे कि राजनीती में है तौ वह षडयंत्रों द्वारा ही सफल होता है यदि व्यापार में है। तो कर चोरी से धनी होता है। यदि शनि तुला, मकर, कुम्भ, धनु, मिथुत या कन्या में हो तो व्यक्ति उच्च स्थान पाता है। प्रायः यह लोग सरकार से जुडे होते है। जज और वकीलों की कुण्डली में इस प्रकार का शनि होता है। वडे जमीदार, वड़े उद्योग पति के दशम भाव में

इस प्रकार का शनि होता है। अन्य व्यकित प्रायः कारखानों में नौकरी या छोटा मोटा व्यवसाय या ऐसा कार्य जहां पर मजदूरों व नीच प्रकृति के लोग से संबंध बने। दशम भाव का शनि राजनीतिज्ञ बनाता है। तो अध्यात्म के क्षेत्र में भी ले जा सकता है। कई सन्यासियों की कुण्डली में दशम भाव में शनि का प्रभाव देखा जा सकता है।

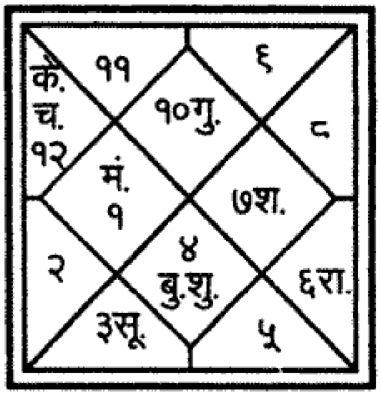

कुण्डली नं २४७/२४८

कुण्डली न. 247/248 की जातिका का जन्म जुलाई 1866 में हुआ यह कुण्डली स्वर्गीय महारानी मैसुर की है। आप मैसूर के महाराजा के देहान्त के पश्चात 11 वर्ष तक राज्य का सचांलन करती रही। आपके काल मे शासन सुचारू रूप से चला। आपने बाद में सिंहासन अपने पुत्र को सोंप कर धार्मिक जीवन व्यतीत करा।

यह कुण्डली पूर्व में भी दी जा चुकी है। इस जातक का जन्म अगस्त 1925 में हुआ। यह जातक एक करोड़पति व्यवसायी है। यहां पर दशम भाव उच्च राशि का शनि है। पूर्व में दी गई एक और कुण्डली को देखें कुण्डली न. एक श्री जे. आर. डी. टाटा की कुण्डली में दशम भाव में मकर राशि का शनि है। इस प्रकार दशम भाव में शुभ प्रभाव का शनि जातक को उच्च वर्गीय बनाता है। हमारे इस उदाहरण कुण्डली का जातक कपडे का व्यापार करता है। तुला राशि कपडे को भी दर्शाती है। कन्या राशि का शनि भी व्यापार करवाता है। परन्तु यदि नौकरी कोई कर रहा हो तो उसका संबंध अध्यापन से अवश्य होता है।

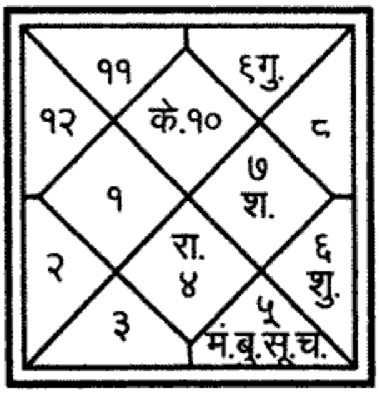

कुण्डली नं २४९

एकादश भाव गत शनि फलः- एकादश भाव में शनि का फल अच्छा माना गया है। प्रायः सभी विद्वानों ने लाभ स्थान का शनि भाग्यवान माना है। यह व्यक्ति स्थान का शनि भाग्यवान, सम्पतिवान माना है। यह व्यक्ति राजकार्य से जुडा होता है। यह व्यक्ति भूमि से प्राप्त धन भी पाता है। मिथुन, सिंह, तुला, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, का शनि उच्च पद दिलाता है। व्यापार में सफल बनाता है। तुला या मकर, कुम्भ राशि का शनि शेयर बाजार की ओर भी आकृषित करता है। तथा धन भी कमाता है। ऐसे व्यक्ति उद्योग भी लगाते है। मेष राशि का शनि को यदि सूर्य देख रहा हो तो ऐसे व्यक्तियों को मित्रों द्वारा नुकसान होता है।

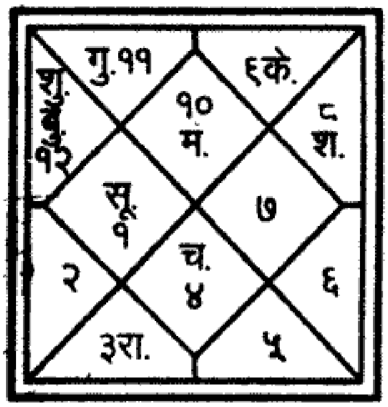

कुण्डली नं २५०

कुण्डली न. 250 की जातिका इग्लैड की महारानी एलीजाबेथ द्वितिय की है। यहा पर लाभ स्थान में वृश्चिक राशि का शनि है जो कि लग्नेश व धनेश है। जैसा कि कहा गया है। कि लाभ स्थान का शनि सत्ता से जोडता है। श्री राजीव गाधी की कुण्डली में भी लाभ स्थान में मिथुन राशि का शनि है। महारानी ऐलीजाबेथ की कुण्डली में चार ग्रह उच्च के है। तथा चन्द्रमा स्वराशि का है। एवं बुध को नीच भंग योग प्राप्त है।

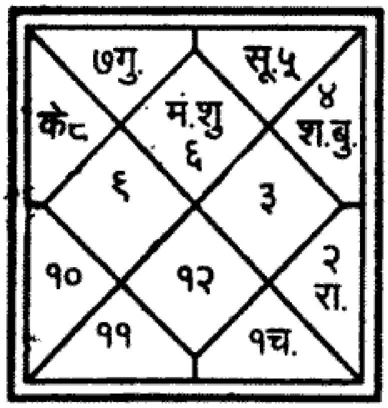

कुण्डली नं २५१

कुण्डली न. 251 के जातक वर्तमान मे विश्व के सबसे प्रभावशली व्यक्ति की है। इस कुण्डली का स्वामी अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन की है। यहां पर भी लाभ भाव मे शनि स्थित है। अतः शनि का लाभ भाव में होना सत्ता से जोडता है तथा समृद्वशाली बनाता है।

द्वादश भाव गत शनि फलः- प्रायः इस स्थान में शनि आजीविका के लिए अच्छा नहीं माना जाता है। इस शनि वाले व्यक्ति कठिन परिश्रम करके आजीविका पाते है। व्यापार में भी यह लोग कोई विशेष लाभ नहीं कमाते। वृष, कन्या, तुला, मकर और कुम्भ का शनि वकील, राजनीनिज्ञ व अध्यापक भी बनाते है। व्यवसाय में यह लोग ऐसा व्यवसाय करते है जिनमें लोगों से विशेष संबंध न बनता हो। यह लोग प्रायः गुप्तरीति से धन का संचय करते देखे गए है कई बार अपनी आजीविका को छूपाते भी है।

26

दशमेश स्थिति द्वारा आजीविका विचार

दशमेश की विभिन्न भावों में स्थिति द्वारा हम यह पता लगा सकते है कि जातक की वृत्ति किस प्राकर की हो सकती हैं कुण्डली में धनेश दशमेश, लग्नेश तथा लाभेश यदि बली है तो जातक का स्तर उचां रहता है। यदि वह नौकरी करता है तो उच्च पद पाता है व्यापार करता है तो धनी व्यापारी होता है। राजनीति में होता है। तो मंत्री पद पाता है। आजकल आजीविका के साधन अनेक प्रकार के हो चुके है तथा यह पता लगान हो जाता है कि जातक किस प्रकार के कार्य से आजीविका कठिन पाएगा। प्राचीन काल में तो यह साधन सीमित होते थे जैसे कि शनि का प्रभाव यदि कुण्डली के दशम भाव धन भाव या लाभ भाव आदि में पड रहा हो ता यह माना जो सकता था कि कृषि द्वारा या लोहं के व्यापार से आजीविका प्राप्त होगी यह बात तो आज भी सत्य है परन्तु लोहे के व्यापार में बडे कारखाने भी आते है। या मकैनिक का कार्य भी आता है। इसी प्रकार भूमि से संबंधित कार्य में कृषि भी आता है। ठेकेदारी भी आता है। तो प्रोपर्टी डीलर का कार्य भी आता है। इस लिए आजीविका का पता लगााने के लिए हमें मात्र एक भाव या ग्रह द्वारा पता नहीं चल सकता। यहां पर हम दशमेश की विभिन्न भावों में स्थिति द्वारा आजीविका का विचार पर चर्चा कर रहे अन्य ग्रहों का प्रभाव हमें सूक्ष्मना से जातक के कार्य का ज्ञान दे सकता है।

लग्नगत दशमेश फलः- ऐसे व्यक्ति प्रायः स्वतत्र व्यावसाय करते है यह ाकेर स्वयं का रोजगार पाते है। यह प्रायः सेल्फ मेड होते है। यहां पर यदि लग्नेश के साथ हो तो बहुत प्रसिद्दि भी पाते है। नौकरी में यह प्रायः सरकारी नौकरी में सफलता पाते है। यह व्यक्ति समाज सेवा में भी जुडे होते है। इन्हें सरकार तथा माता का सहयोग भी मिलता है। इसको समझाने के लिए पूर्व में दी गई कुण्डली न. 59 को देखे। यहां पर दशमेश लग्न में स्थित है। यह एक भूतपूर्व मुख्य न्यायधीश की कुण्डली है। जातक ने अपने ही बल बूते से यह पद प्राप्त किया।

धनभावगत दशमेश फलः- ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में उच्च स्थान पाता है तथा धनी होता है। यह व्यक्ति अपने पैतृक व्यवसाय में रहते है। यह व्यक्ति सरकार में उच्च पद प्राप्त करते है। या बडे उद्योग पति भी बनते है। इसको समझने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी की कुण्डली देखे वहां पर दशमेश मंगल धन भाव मे है। ऐसे ही कुण्डली न. 80 में श्री एच. डी. देवगोडा की कुण्डली में भी दशमेश धन स्थान में है। कुण्डली न. 137 को भी देखे यह पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई जी की है। वहां पर भी दशमेश ध ान भाव में स्थित है।

तृतीय भावगत दशमेश फलः- ऐसे जातक लेखन, प्रकाशन, दूरसंचार, आदि क्षेत्रों से जुडें होते है। या इन लोगों को कार्य के लिए छोटी यात्राएं भी करनी पडती है। इनको अपने भाई या साझेदार के संबंधी से लाभ होता है। यह लोग सरकार या बडें संस्थानों में सम्पर्क द्वारा भी कमीशन आदि प्राप्त करते है। इसकों समझने के लिए कुण्डली न. 75 को देखें वहां पर तृतीय भाव में दशमेश मंगल हो जो कि तृतीयेश भी है। यह जातक अपने सम्पर्को द्वारा लोगों का काम बनाता है।

चतुर्थ भावगत दशमेश फलः- यह व्यक्ति बहुत भाग्यशाली व बुद्विमान होते है। यह व्यक्ति प्रायः सम्मानीय भी होते है। यह व्यक्ति यदि व्यावसाय में हो तो भूमि से संबंधित व्यवसाय में जुडे होते है। राजनीति में हो तो उच्च पद पाते है। प्रायः आर्केटेक्ट, पुरातत्व, खादान, खनिज, सहकारी संस्थाए आदि से जुडे हुए भी होते है। कई वडे भवन निर्माता भी इस श्रेणी में पाये जाते है। देखे कुण्डली न. 120

पंचम भावगत दशमेश फल :- यह स्थिति सट्टे व जुए में जुडे हुए व्यक्तियों के लिए है। हमने तो कई शेयर बाजार से जुडे व्यक्तियों की कुण्डली में यह योग देखा है। प्रायः व्यापारियों की कुण्डली में जो कि दलाली आदि करते है। उनके भी यह योग होता है। आजकल तो सिनेमा, टी. वी., पेशेवर खिलाडी, आदि भी इस में देखे जा सकते है। देखें कुण्डली न. 56 जो की प्रसिद्ध फिल्म निदेशक स्व श्री सत्यजीत रे की है। यहां पर दशमेश शुक्र पंचम भाव में है। मेरे विचार से सिनेमा बनाना भी एक प्रकार का सट्टा ही है। यही योग आप को श्री रजनी कांत फिल्म कलाकार की कुण्डली में भी देख सकते है। यहां पर आपको हम प्रसिद्ध खिलाडी श्री अजहरूद्दीन की कुण्डली भी दे रहे है।

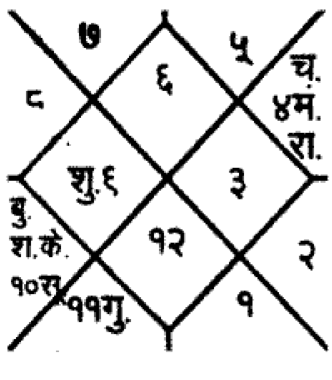

कुण्डली नं २५२

कुण्डली न. 252 के जातक का जन्म फरवरी 1963 को है। यह प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाडी श्री अजहरूदीन की है। यहांपर लग्नेश व दशमेश बुध है। जो कि पंचम भाव में दशमेश का होना व्यक्ति को उच्च स्थान दिलाता है। यहां पर दशमेश बुध की युति पंचामेश शनि के साथ हो रही है। जों कि एक अच्छा योग है।

षष्ठ भाव गत दशमेश फलः- प्रायः ऐसे व्यक्ति नौकरी अधिक करते है। सेना, नेवी, अस्पताल, या जेल की नौकरी या प्राईवेट नर्सिंग होम का व्यसाय या कोर्ट कचहरी से संबंधित कार्य करते है। इस दशमेश पर शनि या राहु का प्रभाव हो तो छोटी मोटी नौकरी करते है। यदि इस दशमेश पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक उच्च पद की नौकरी भी कराता है। इसको समझने के लिए पूर्व में दी गई कुण्डली न. 114 को देखें। यहां पर दशमेंश गुरू षष्ठ भाव में स्थित है। यह जातक नेवी में उच्च पदाधिकारी रह चुका है। व्यवासय में ऐसे व्यक्ति अणिक सफल नहीं हो पाते।

सप्तम भावगत दशमेश फलः- यह व्यक्ति व्यापार में सफल होते है। यह लोग सहकारी संस्थानों से भी जुडे होते है। इनको पत्नि का भी सहयोग प्राप्त होता है। यह व्यक्ति यदि नौकरी भी करे तों इनका जनता से सम्पर्क होत

है। यह व्यक्ति अपनी आजीविका के लिउ यात्राए भी करते है। कई राजदूत भी इस श्रेणी में पाये जाते है। इन व्यक्तियों को साझेदारी के व्यापार में भी सफलता मिलती है। इस योग को समझने के लिए देखें कुण्डली न. 74 जा कि उद्योग पति श्री अनिल अम्बानी की है। यहा पर दशमेश शुक्र सप्तम भाव में स्थित है।

अष्टम गत दशमेश फल :- प्रायः यह व्यक्ति आजीविका के प्रति चिन्तित ही रहते है। इनको नौकरी में बाधांए बहुत आती है। इसी प्रकार व्यवसाय में भी मेहनत अधिक तथा लाभ कम मिलता है। यह व्यक्ति किसी द्रष्ट्रि से भी जुडे होते है। इंशेरेस, मुकदमे, या वारिस आदि मामलों से भी संबंध बनता है। यदि दशमेश पर शुभ प्रभाव हो तो जातक एक बार अवश्य उच्च स्थान पाते है। यदि इस दशमेश पर पाप प्रभाव अधिक हो तोजातक बुरे कर्म करता है। यह जातक चोरी तथा गैर कानूनी कार्य भी करते है। प्रायः दशमेश का अष्टम भाव में ाहेना आजीविका के प्रति सन्तुष्ट नहीं रखता है।

नवम भावगत दशमेश फलः- प्रायः ऐसे व्यक्तियों को अपनी आजीविका के लिए यात्रांए करनी पडती है। यह व्यक्ति विदेश भी जाते है। इन व्यक्तियों को पैतृक व्यवसाय भी करना पड सकता है। यह व्यक्ति धर्म से भी जुडे होते है। यह उपदेश देने वाले, अध्यापक भी होते है। इनको लेखन, प्रकाशन, शोध, क्षेत्र में देखा जा सकता है। यह लोग जिस क्षेत्र में भी रहते है। अपना उक स्थान बना लेते है। देखें कुण्डली न. 61 जो कि प्रसिद्व फिल्म कलाकार श्री राज कपूर की है। यहां पर नवम भाव में दशमेश है।

दशमगन दशमेश फलः- यह आजीविका के लिए एक उत्तम योग है: इस में उत्पन्न व्यक्ति चाहे नौकरी करें या व्यवासय यदा उच्च स्थान्र पाते है। इन की आजीविका यहां पर दशमेश कौन सा निर्भर करते है। सूर्य के दशमेश हो कर दशम भाव में रहने पर जातक सरकार से अवश्य जुडा होता है। यहां पर इस दशमेश पर जितना शुभ प्रभाव होगा जातक उतना ही सफल व्यक्ति होगा देखें कुण्डली नं 139। यह कुण्डली प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव जी की है। यहां पर दशमेश बुध दशम में है जो कि सूर्य रो युति बनाय हुआ है। इसी प्रकार देखें कुण्डली नं 140 जो कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री लालबहादुर शास्त्री जी की

है। यहां पर भी दशमेश बुध कन्या राशि का होकर दशम में सूर्य के साथ युति बना रहा है।

एकादश भाव गत दशमेश:- यह योग धनी होने के लिए उत्तम है। प्रायः बड़े उद्योगपति, व्यापारी व बड़े राजकीय कार्य करने वाले इस योग में उत्पन्न होते हैं। इस योग में दशमेश यदि सूर्य या चन्द्र हो का एकादश में बैठा हो तो राजकीय कार्य में उच्च पद मिलता है। देखें कुण्डली नं 142 जो कि उद्योगपती विष्णु हरि डालमियां जी की है। कुण्डली नं 104 को भी देखें जो की श्री चर्चिल की है।

द्वादस भाव गत दशमेश :- यह भी आजीविका के लिए अच्छा योग नहीं। जातक नौकरी करता है तो नौकरी भी छोड़नी पड़ती है। व्यवसाय भी बहुत अच्छा नहीं चल पाता है। प्रायः ऐसे जातक अपने जन्म स्थान से दूर रहकर ही आजीविका पाते हैं। यह व्यक्ति अध्यात्मिक ज्योतिषी तान्त्रिक आदि भी हो सकते हैं।

27

व्यवसाय में सफलता तथा असफलता के कारण एवं निवारण

व्यवसाय में सफलता एवं असफलता के लिए हमें कुण्डली में भाग्येश, लग्नेश, दशमेश, के साथ–साथ शनि एवं गुरू का विचार करना चाहिए । जैसा कि पूर्व मे कहा जा चुका है कि शनि वृत्ति का कारक ग्रह है इसका जन्म कुण्डली में या नवांश कुण्डली में बली होने पर व्यक्ति सफलता पूर्वक आजीविका पाता है । इसी प्रकार गुरू के बली होने पर व्यक्ति कुशल प्रशासक बनता है । यह राज्य कृपा कारक भी माना गया है । यह धन का कारक ग्रह भी है अतः जब लग्न व लग्नेश आदि पर प्रभाव डालता है तो व्यापार का भी कारक बनता है । इस प्रकार कुण्डली में यह दोनों ग्रह तथा उपरोक्त भावाशों के बली होने पर व्यक्ति सफल रहता है । इन के अतिरिक्त धनेश व लाभेश के बली होने पर सफलता के साथ–साथ धनी भी होता है । व्यापारियों की कुण्डली में यदि यह दानों भावेश बली हों तो यह धनी व्यापारी बनते हैं । इस लिए सफलता के लिए इन ग्रहों व भावेशों का कुण्डली में उच्च राशि या स्वराशि का होना तथा केन्द्र त्रिकोण या लाभ व धन भाव में होना आवश्यक है । यदि यह ग्रह या भावेश कुण्डली में षष्ठ,अष्टम, व द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक अपने व्यवसाय में असफल होता है। यदि यह जातक नौकरी करते हैं तो नौकरी छोड़नी पडती है या सदा परेशान ही रहते हैं तथा यदि व्यापार में हो तो घाटा व हानि सहनी पड़ती है । इस स्थिति के साथ यदि यह ग्रह व भावेश नीच राशि या शत्रु राशि में स्थित हो तो भी असफलता ही मिलती है। व्यापारियों को कुण्डली में धन भाव या लाभ भाव में पाप ग्रहों की दृष्टि या स्थिति होने पर हानि की संभावना बनती है । यह हानि इन ग्रहों या भावेशों की दशा अन्तरदशा तथा गोचर गत ग्रहों की इन पर दृष्टि या स्थिति द्वारा पता लगाई

जा सकती है । इस अध्याय में हम कुछ सफल एवं असफल व्यक्तियों की कुण्डलियों का अध्ययन करेंगे तथ जानने की कोशिश करते है कि किन कारणों से यह व्यक्ति अपने व्यवसाय में सफल या असफल हुए ।

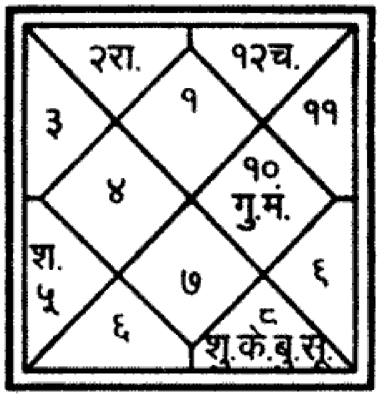

कुण्डली नं २५३

कुण्डली न.253 फ्रांस के भूतपूर्व राष्ट्रपति जनरल डिगाल की है । इस कुण्डली में लग्नेश उच्च राशि का होकर दशम भाव में भाग्येश गुरू के साथ स्थित है । भाग्येश गुरू मकर राशि में स्थित है जो कि इसकी नीच राशि होती है परन्तु यहाँ पर गुरू व मंगल एक साथ स्थित हैं तो गुरू को नीच भंग राज योग बन रहा है क्योंकि जब कोइ उच्च व नीच ग्रह एक साथ होते है तो नीच राशि वाला ग्रह नीच नहीं रहता अपितु और बलवान हो जाता है । इसकी इन दोनों की युति कुण्डली में दशम भाव में होने पर योगकारक बन रही है । यदि इनकी नवांश कुण्डली का अध्ययन करें तो हम पाएंगें कि शनि कुम्भ राशि में स्थित है अतः बलवान हो गया है । इस प्रकार उपरोक्त बताए गए सभी ग्रह व भावेश कुण्डली में बली होने पर जातक सफल हुआ ।

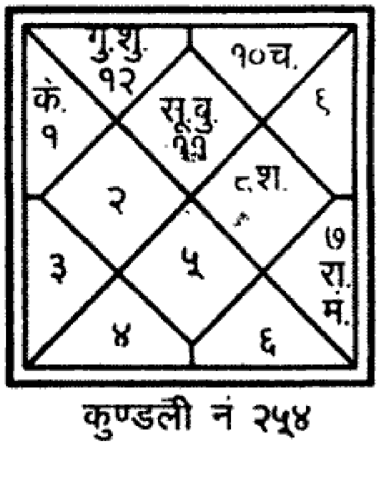

कुण्डली नं २५४

कुण्डली न. 254 अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की है । इस कुण्डली में भाग्येश शुक्र उच्च राशि का होकर धन भाव में स्थित है। लग्नेश शनि दशम भाव में स्थित है अतः वली है । वैसे भी नवांश कुण्डली में यह स्वराशि का है । इस कुण्डली में गुरू स्वराशि का होकर भाग्येश शुक्र के साथ धन भाव में है । इसी प्रकार आप पूर्व में दी गई श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की कुण्डली पर भी द्रष्टि डालें तो पाते हैं दशमेश बुध उच्च का होकर दशम में

स्थित है तथा भाग्येश सूर्य के साथ स्थित है । कुण्डली में लग्नेश मित्र राशि का होकर पचम भाव में स्थित है तथा लग्न को देख रहा है । शनि स्व राशि का होकर धन भाव में स्थित है । इस प्रकार इन सभी ग्रहों के बली होने पर जातक सफल रहता है ।

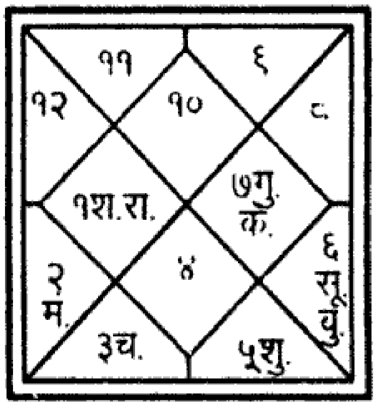

कुण्डली नं २५५

कुण्डली न.255 प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री अशोक कुमार की है । इस कुण्डली में भाग्येश बुध अपनी उच्च राशि कन्या मे ही स्थित है। लग्नेश शनि देखने में तो नीच राशि में है परन्तु नवाशं कुण्डली में वली है । गुरू की शनि पर द्रष्टि तथा लग्नेश की लग्न को द्रष्टि पड रही है ।

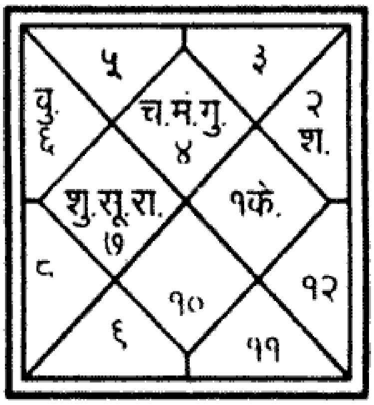

कुण्डली नं २५६

कुण्डली न. 256 मैसुर स्टेट के भुतपूर्व प्रधान तथा जयपुर स्टेट के प्रधान मंत्री सर मिर्जा इस्माईल जी की हैं । यह कुण्डली सफल व्यक्तियों का एक उत्तम उदाहरण है । यहा पर भाग्येश गुरू उच्च राशि का होकर लग्न में स्थित है लग्नेश चन्द्रमा स्व राशि का होकर लग्न में स्थित है । इस प्रकार इन दोनो कि युति भी वनी हुई है । यहॉं पर चन्द्र मगंल गुरू की युति इन्हें महा धनी बना रही है । इस कुण्डली में कई राज योग व धन योग देखे जा सकते है । यहाँ पर मगल को नीच भंग राज योग प्राप्त है । सूर्य को भी नीच भंग राज योग प्राप्त है । शुक्र स्वराशि का होकर केन्द्र मे स्थित है अतः मालव्य पंच महापुरूष योग वन रहा है । यह कुण्डली सभी विद्यार्थियों के लिए अध्ययन का अच्छा उदाहरण है ।

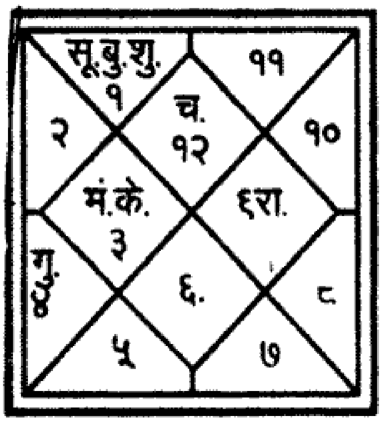

कुण्डली नं २५७

कुण्डली न. 257 विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की है इस कुण्डली में लग्नेश गुरू उच्च राशि का होकर पचंम भाव में स्थित है। यहाँ पर स्थित इस गुरू की लग्न को पूर्ण द्रष्टि प्राप्त है कुण्डली मे सूर्य भी उच्च राशि का है । इस प्रकार कुण्डली में गुरू के उच्च का होना तथ लग्नेश का उच्च का होना इन्हें प्रसिद्धि तथा सफलता दिला रहा है । यहाँ पर भाग्येश व धनेश शत्रु राशि में है अतः धन की द्रष्टि से बहुत अच्छा नहीं माना जा सकता ।

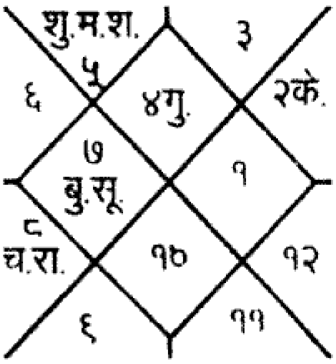

कुण्डली नं २५८

कुण्डली न.258 परशिया के शाह की है। यहाँ पर भाग्येश गुरू उच्च राशि का होकर लग्न में स्थित है तथा वहाँ से पूर्ण द्रष्टि से लग्नेश चन्द्र को देख रहा है । यह लग्नेश इस कुण्डली में देखने पर तो नीच राशि में है परन्तु इसे नीच भंग राज योग प्राप्त है । इसके अतिरिक्त कुण्डली में सूर्य धनेश होकर केन्द्र मे नीच भंग राज योग प्राप्त है । इस प्रकार यह सफल व्यक्तियों की एक उत्तम कुण्डली मानी जा सकती है ।

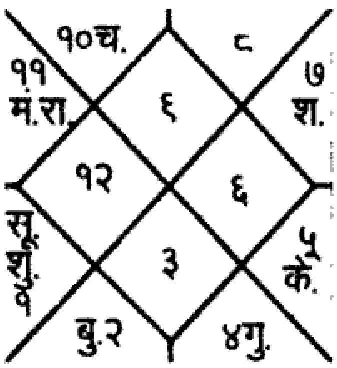

कुण्डली नं २५६

कुण्डली न. 259 भूतपूर्व रक्षा मंत्री श्री बी.के. कृष्णा मेनन की है । इस कुण्डली में भाग्येश सूर्य उच्च राशि का होकर पंचम भाव में स्थित है । लग्नेश भी उच्च का है । इस कुण्डली में शनि भी उच्च का होकर लाभ में स्थित है । इस प्रकार यहां पर लग्नेश, भाग्येश, गुरू तथा शनि सभी उच्च राशि में होने पर जातक को सफल बना रहा है ।

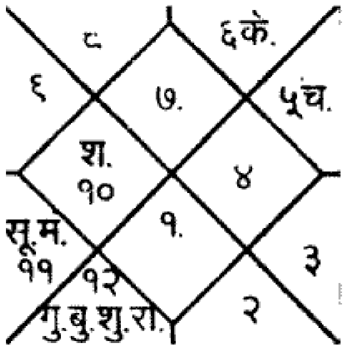

कुण्डली नं २६०

कुण्डली न. 260 एक प्रसिद्ध हालीवुड की अभिनेत्रीं एलीजाबेथ टेलर की है । यहां पर लग्नेश शुक्र उच्च राशि का है भाग्येश बुध को नीच भंग राज योग प्राप्त है । गुरू व शनि स्वराशि के है। लग्नेश व भाग्येश में युति भी बनी हुई है । इस प्रकार जातिका अपने व्यवसाय में सफल पाई गई है ।

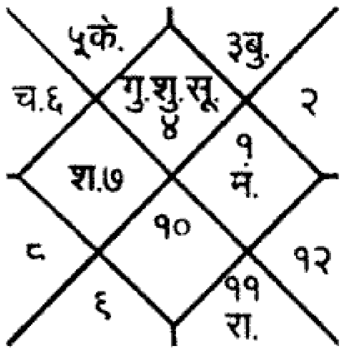

कुण्डली नं २६१

कुण्डली न. 261 एक स्वर्गीय डाक्टर की है । यह जातक एक साधारण परिवार से उठ कर मशहूर डाक्टर बना तथा बहुत प्रसिद्धि पाई। यहां पर भाग्येश गुरू उच्चराशि का होकर लग्न में स्थित है । दशमेश स्व राशि का होकर दशम में है तथा शनि भी कुण्डली में उच्च का है । इस प्रकार कुण्डली में गुरू शनि के उच्च होने तथा भाग्येश के उच्च के रहने पर तथा लग्न या लग्नेश के उच्च के रहने पर तथा लग्न या लग्नेश पर उच्च ग्रहों के प्रभाव से जातक अपने व्यवसाय में सफल रहता है । कुण्डली में षष्ठेश गुरू है अतः इस ज़ातक को नौकरी में उच्च पद मिलना संभव होता है ।

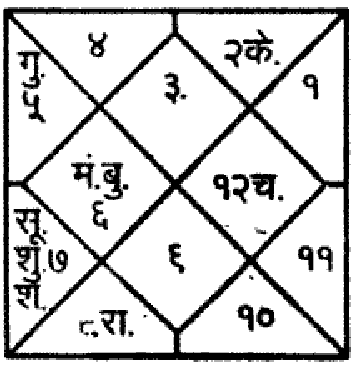

कुण्डली नं २६२

कुण्डली न. 262 व्यवसाय में सफलता का एक अच्छा उदाहरण है । यह कुण्डली और किसी की नहीं अपितु कम्पयूटर किंग अमरीका के विलगेटस की है । यहॉं पर लग्नेश बुध उच्च राशि में है भाग्येश शनि उच्च का होकर पचंम भाव में है । इस प्रकार लग्नेश भाग्येश, शनि एवं गुरू के बली होने पर जातक अपने व्यवसाय में सफल होता है । यहां पर एक बात को और देखें कि जातक का सप्तम भाव का स्वामी गुरू है । सप्तम भाव व्यापार को भी दर्शाता है ।

अतः इसके स्वामी गुरू का तृतीय भाव में होना, लेखन, संचार आदि के क्षेत्र में व्यापार करवाता है । कम्पयूटर भी इन दोनों का मिश्रण ही हैं गुरू को हम कम्पयूटर का कारक भी मान सकते हैं । हमने अपने शोध में कम्पयूटर के व्यवसाय से जुड़े कई जातकों को गुरू के प्रभाव में या तृतीय भाव से कुछ न कुछ सम्बन्ध होते देखा है । इस कुण्डली में मंगल व बुध का सम्बन्ध दशम भाव में पड़ना कम्पयूटर हार्डवेयर को दर्शाता है ।

कुण्डली नं २६३

कुण्डली न. 263 एक अप्रवासी भारतीय इंजीनियर की है । यह अमरीका में केमीकल का व्यापार करता है। जातक बहुत ही समृद्धशाली व सफल है । यहाँ पर भाग्येश उच्च राशि का होकर सप्तम भाव में स्थित है । इस कुण्डली में गुरू भी उच्चराशि का होकर भाग्य भाव में है वहाँ से इसकी पूर्ण द्रष्टि लग्न पर पड़ रही है इस प्रकार लग्न को वल मिल रहा है । गुरू इस कुण्डली में धनेश व पंचमेश है इस लिए जातक को धनी वना रहा है ।

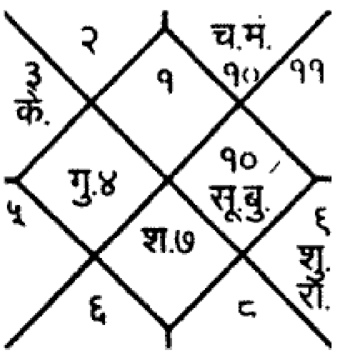

कुण्डली नं २६४

कुण्डली न. 264 के जातक का जन्म जनवरी 1955 को हुआ यह जातक एक सफल व्यापारी है । इस जातक की कुण्डली में भाग्येश गुरू उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित है कुण्डली में दशमेश व लाभेश शनि उच्च का होकर सप्तम भाव में स्थित है । इस शनि पर मंगल की पूर्ण द्रष्टि पड़ रही है । इस लिए जातक को लोहे मशीनरी से सम्बन्ध बनता है। जातक एक फैक्ट्री का स्वामी है । यहाँ पर धनेश व व्यापारेश शुक्र की तृतीय स्थान की द्रष्टि पड़ने पर जातक की प्रिंटिग प्रैस भी है । दशम भाव में बुध स्थित है तथा यहाँ पर गुरू का भी प्रभाव पड़ रहा है । यह जातक इस प्रकार प्रिंटिंग में भी सफल रहा ।

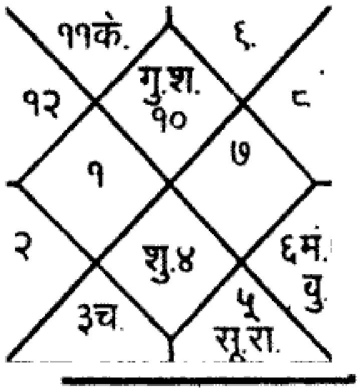

कुण्डली नं २६५

कुण्डली न.265 के जातक का जन्म सितम्बर 1961 में हुआ यह जातक बहुत ही कुशल व्यापारी है । इस जातक की प्रिन्टिंग प्रैस है । इस कुण्डली में भाग्येश बुध है जो कि उच्च राशि का होकर भाग्य भाव में है । लग्नेश एवं धनेश शनि जो कि स्वराशि का होकर लग्न में स्थित है । कुण्डली में गुरू नीच राशि का है परन्तु नवांश कुण्डली में यह उच्च का है अतः यह भी बली हुआ इस प्रकार जातक के यह दोनों ग्रह तथा भावेश बली है जो कि व्यवसाय में सफल होने को दर्शा रहे हैं ।

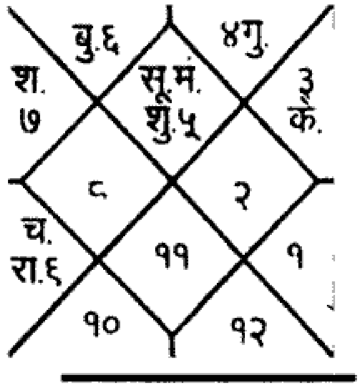

कुण्डली नं २६६

कुण्डली न. 266 के जातक का जन्म अगस्त 1955 में हुआ यह जातक एक बडा उद्योगपति है । यहाँ पर देखें तो शनि उच्च राशि का है, गुरू भी उच्च राशि का है लग्नेश सूर्य स्व राशि का होकर लग्न में स्थित है यहाँ पर इसकी युति भाग्येश जो कि मित्र राशि में है उसके तथा दशमेश एवं तृतीयंश शुक्र के साथ बनी है ।

इस कुण्डली में धनेश व लाभेश बुध भी उच्च का होकर धन भाव में स्थित है । यह एक उच्च श्रेणी का धन योग है । यह जातक कुछ वर्षो से हमारे सम्पर्क में है । इसने शेयर बाजार में घाटा भी उठाया है । यहाँ पर पचंम भाव में राहु के होने के कारण इनको प्रायः सभी सट्टे द्वारा धन की प्राप्ति कहेंगे । इस जातक ने अच्छा समृद्ध व्यापार इन शेयरों के चक्कर में गवांया । जब यह हमारे सम्पर्क में आया तो हमने इसे तुरन्त इसको शेयर का काम बन्द करने को कहा । इसकी कुण्डली को देखें तो पंचमेश जो कि सट्टे द्वारा धन आदि का भी सूचक है। उच्च राशि में है

इस कुण्डली में यह अष्टमेश भी है तथा यह उच्च राशि का होकर द्वादश भाव में स्थित है यही कारण है कि इस गुरू का द्वादश भाव में बैठना इनको नुकसान पहॅचाया । वर्तमान में जातक एक बहुत ही सफल उद्योग को चला रहा है। हमारे कहने पर इन्होंने जैली युक्त टेलीफोन केबल का कारखाना लगाया तथा इसमें इनको भारी सफलता मिली तथ जातक आज सफल व्यापारियों में से है । यहॉ पर पाठक देखें कि सप्तमेश जो कि उच्च का होकर तृतीय भाव में है, तृतीय भाव का सम्बन्ध लेखन, प्रकाशन, दूर संचार आदि से है इसके अतिरिक्त नवाशं कुण्डली में दशमेश शुक्र,बुध के नवांश में स्थित है । इस प्रकार इस जातक को बुध के प्रभाव के अनुसार ही धन लाभ होना बनता है यहॉ पर हम पाठक गणों को पुनः बताते है कि ज्योतिष शास्त्र में मात्र एक सूत्र द्वारा कोई भी फलादेश नहीं कहना चाहिए । इसके लिए हमें सभी पक्षों को देखकर ही निर्णय लेना चाहिए ।

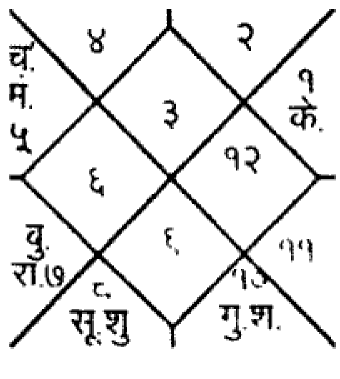

कुण्डली न २६७

कुण्डली न. 267 के जातक का जन्म नवम्बर 1902 का है । यह जातक एक उच्च स्तरीय नौकरी करते थे । इनकी कुण्डली में लग्नेश बुध मित्र राशि का होकर पंचम भाव में स्थित है तथा भाग्येश शनि स्वराशि का है । इस जातक को अपनी नौकरी छोड़नी पडी तथा बहुत अधिक परेशनी से भी गुजरना पड़ा ।

स्वतन्त्रता के बाद इनको कुछ वर्षो तक रोजगार प्राप्त हुआ परन्तु कुछ वर्षो उपरान्त इन्हें नोकरी छोडनी पड़ी । फिर एक व्यापार आरम्भ करा जिसमें भी हानि उठानी पड़ी । यहॉ पर कुण्डली का अध्ययन करने पर हम यह पाते है कि जातक का सप्तमेश व दशमेश नीच राशि का होकर अष्टम भाव में स्थित है। इन दोनों भावेशों को षष्ठ,अष्टम व द्वादश भाव में आने पर जातक को व्यवसाय में परेशानी आती है ।

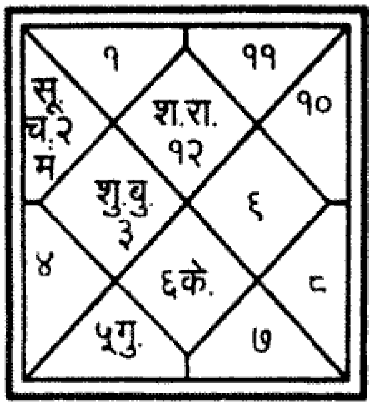

कुण्डली नं २६८

कुण्डली न. 268 के जातक का जन्म मई 1968 को हुआ । यह जातक एक व्यापारी है । इस कुण्डली में लग्नेश गुरू षष्ट भाव में स्थित है तथा दशम भाव में शनि की पूर्ण द्रष्टि है । राहु भी लग्न में स्थित है तथा भाग्य भाव को देख रहा है । इस जातक को व्यापार में बहुत घाटा उठाना पडा । इनको व्यापारियों के बीच अपमानित भी होना पड़ा । अन्ततः इनको स्थान परिवर्तन करना पडा । जातक को हमने गुरू का उपाय वताया इसमें इन्हें गुरूवार का व्रत तथा दान एवं गुरू का यन्त्र अभिमंत्रित करके सदा अपने पास रखने को कहा । यह जातक अव कुछ वर्षो से व्यापार में अच्छा चल रहा है ।

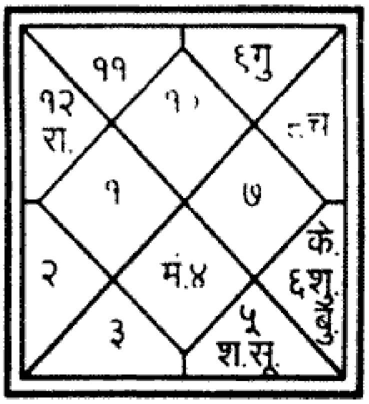

कुण्डली नं २६९

कुण्डली न. 269 के जातक का जन्म सितम्वर 1949 में हुआ । यह जातक एक प्रतिष्ठित नौकरी करता था । कुछ वर्षो पूर्व इन्हें नौकरी से निकाल दिया गया तथा कुछ समय के लिए जातक एक दम खाली था । जातक को अपनी नौकरी में कई बार विदेश भी जाना पड़ता था । इस कुण्डली को यदि देखें तो लग्नेश व धनेश शनि बहुत ही खराव स्थिति में है । यहॉ पर यह शत्रु राशि में स्थित तथा सूर्य द्वारा अस्त है । यह अष्टम भाव में भी है जिस कारण वश जातक की प्रतिष्ठा को आधात लगा । यहॉ पर दशमेश के नीच राशि मे होना तथा दशम भाव पर पीड़ित शनि की द्रष्टि भी इनको नौकरी से निकाल रही है ।

कुण्डली में भाग्येश बुध उच्च राशि में है तथा योग कारक ग्रह शुक्र से इसकी युति होने पर शुक्र को नीच भंग राज योग भी प्राप्त है अतः जातक का पुनः अच्छी स्थिति में आने को दर्शा रहा है । इस जातक को शनि की शान्ति करवाने को बोला गया तथा शनि का यंत्र पूजने को कहा गया । जातक को यह भी बताया गया कि इन को विदेश व्यापार वह भी कपड़ों से सम्बन्धित व्यापार करने में लाभा बनता है । वर्तमान में जातक शुक्र की दशा भोग रहा है जो कि कुण्डली में योगकारक ग्रह है इस शुक को नीच भंग राज योग भी प्राप्त है इस प्रकार इस आने वाली दशा को ध्यान में रखते हूए जातक को इस व्यापार का सुझाव दिया। यह जातक आज गारमेंट एक्सपोर्टरस का व्यापार कर रहा है । इस प्रकार पाठक सफलता एवं असफलता को ज्ञात कर समाधान ढूंढ सकते हैं ।

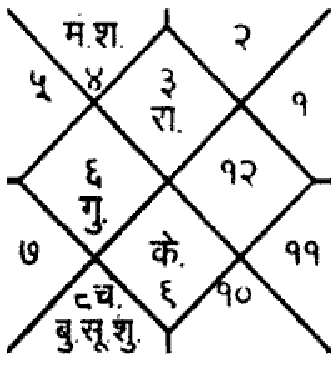

कुण्डली नं २७०

कुण्डली न. 270 के जातक का जन्म दिसम्बर 1945 में हुआ । यहाँ पर चार ग्रह षष्ठ भाव में स्थित है धनेश चन्द्र तथा षष्ठेश एवं लाभेश मंगल द्वारा स्थान परिवर्तन भी हो रहा है । लाभेश नीच राशि में है तो भाग्येश शत्रु राशि में शत्रु के साथ स्थित है । लग्नेश व सखेश षष्ठ भाव मे स्थित है । इस प्रकार ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं । यह जातक एक नौकरी कर रहा था तथा व्यापार करने का बहुत इच्छुक रहता था ।

नौकरी में जातक ने अनैतिक ढग से पैसा भी कमाया जब हमारे सम्पर्क में आया तब यह नौकरी छोड कर व्यापार आरम्भ करना चाह रहा था । हमने इनको बहूत समझाया कि वह ऐसा न करें तथा नौकरी न छोडे । परन्तु इन्होंने नौकरी छोड़ कर एक फैक्ट्री आरम्भ करी जिसमें इन्हें काफी नुकसान उठाना पडा । जातक को अब हमने मगंल एवं शनि का उपाय करने को कहा है । जातक को वर्तमान में मंगल की दशा चल रही है । जो कि वर्ष 98 तक रहेगी । अतः इस अवधि मे हमने जातक को भूमि से सम्बन्धित कार्य करने को कहा है । यह जातक अब भवन निर्माण का कार्य तथा सरकारी ठेकेदारी का

व्यवसाय आरम्भ करने जा रहा है । जातक को अब राहु की दशा आरम्भ होने जा रही है तथा राहु कुण्डली में उच्च राशि का होकर लग्न में स्थित है इसलिए इसको ध्यान में रखते हुए इन्हें ठेकेदारी व भूमि सम्बन्धित कार्य करने को कहा है ।

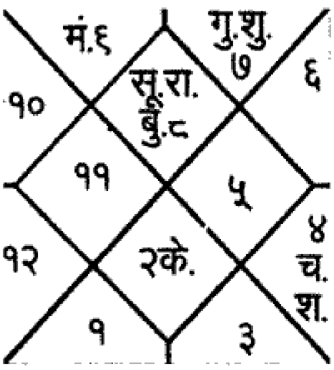

कुण्डली नं २७१

कुण्डली न. 271 के जातक का जन्म दिसम्बर 1946 में हुआ । यह जातक एक टेक्सटाईल इन्जीनियर है तथा आरम्भ में यह बड़े औद्यौगिक संस्थनों में कार्यरत था । इनको भी नौकरी नहीं करने की इच्छा हुई तथा व्यापार करने की सोची हमने जातक को उस समय इनको सचेत भी करा था कि आप नौकरी में अधिक सफल रह सकते हैं यहाँ पर षष्ठेश मंगल व लग्नेश मंगल जो कि धन स्थान में स्थित है इनको नौकरी से लाभ बताता है । षष्ठ भाव से नौकरी का विचार भी किया जाता है। व्यापार का विचार सप्तम भाव से करें । यह जातक शुक्र की दशा में एक फैक्ट्री को आरम्भ कर कई वर्षो तक इसमें जूझता ही रहा तथा कुछ विशेष नहीं कर पाया । जातक अब कई वर्षो उपरान्त हमारे सम्पर्क में पुनः आया है । हमने अब इनको ॐ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री लक्ष्मी मम गृहे, धन परे चिन्ता दूरे दूरे स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन 108 बार जाप करने को कहा है । यह मंत्र जातक कुछ समय से कर रहा है तथा अब वह अपने आप में एक विश्वास को पा गया है तथा व्यापार में अब इसकी रूचि पुनः आ गई है । वर्तमान में जातक को सूर्य की दशा चल रही है तथा इसके पश्चात वर्ष 98 में चन्द्रमा की दशा आरम्भ होने जा रही है । इस जातक का विचार अब प्लास्टिक का व्यवसाय करने का है जिसको हमने ही करने के लिए सुझाया है ।

कुण्डली न. 272 के जातक का जन्म मार्च 1960 में हुआ यह जातक अच्छे परिवार से सम्बधित है । इनके धर में सभी व्यक्ति उच्च स्तरीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं परन्तु जातक ऐसा नहीं कर पा रहा है । यहां पर भाग्येश बुध नीच का है, लग्नेश व धनेश द्वादश भाव में स्थित है । इस प्रकार इस जातक को अब तक असफलता ही प्राप्त हुई है । इस जातक ने नौकरी करी तो उसको छोड़ दिया । कई वर्षो तक अपने घर वालों पर ही निर्भर रहा तथा व्यापार करता तो उसमें घाटा ही खाता रहा इस जातक को सदा घर वालों से वित्तीय सहायता मिलती रहती है ।

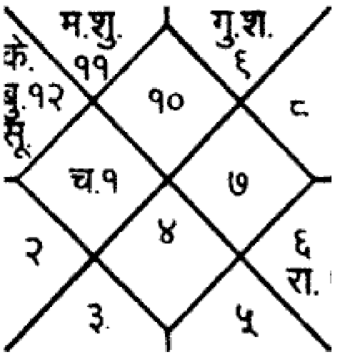

कुण्डली नं २७२

वर्तमान में जातक एक छोटा सा स्वरोजगार का कार्य कर रहा है । हमारे पास अभी कुछ समय पहले ही सम्पर्क में आया है । जातक को वतर्मान में मंगल की दशा चल रही है हमने जातक को निम्न मंत्र पढने को दिया है।

ॐ श्रीं श्रीं परमां श्रीं श्रीं ॐ

यह मंत्र कोई भी व्यक्ति संध्या के समय में करे तो उसको व्यापार में वृद्धि एवं धन धान्य में वृद्धि होती है । इस मत्र का कुल मिलाकर एक लाख जाप करें । व्यापारियों को इस मंत्र का जाप सदा ही करना चाहिए ।

कुण्डली न. 273 के जातक का जन्म दिसम्बर 1957 का हुआ यह जातक एक डाक्टर है । यहॉ पर लग्नेश मंगल व्यय भाव में है भाग्येश गरू षष्ठ भाव में है । दशमेश व लाभेश शनि यहॉ पर अष्टम भाव में है अतः हम यह कह सकते है कि जातक व्यवसाय के मामले में अधिक सफल नही रह सकता ।

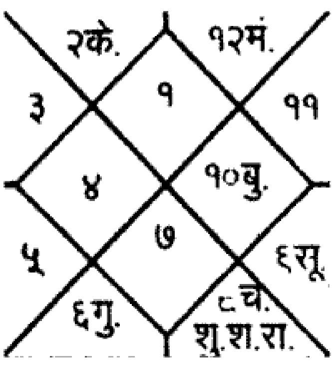

कुण्डली नं २७३

षष्टेश का दशम भाव में होना तथा इन दोनो भावों में आपस में सम्बन्ध होना तथा यहाँ पर शनि की इन दोनों षष्टेश व दशम भाव में पीडित द्रष्टि इनको नौकरी में भी अड़चने डाल रही है । यह जातक एक बार सस्पैड भी हो चूका है तथा अब वहाँ से नौकरी भी छोडने वाला है । अभी मात्र कुछ समय पहले यह हमारे सम्पर्क मे आया है । हमने इनको सर्वप्रथम पुखराज व मौती पहनने को कहा है । यहाँ पर सबसे पहले यह देखें कि सुखेश नीच राशि में होकर अष्टम भाव में स्थित है अतः जातक को सुखी रहने पर वंचित करता है वैसे भी जातक मात्र अच्छी विद्या से ही सुखी नहीं हो सकता यहाँ पर यह जातक पारिवारिक द्रष्टि से भी दुखी रहता है । यहाँ पर सप्तमेश व शुक्र अष्टम भाव में है तथा मगंल की सप्तम भाव में द्रष्टि भी इस भाव को पीड़ित कर रही है । इस प्रकार कुण्डली के सूक्ष्म अध्ययन से हम जातक को हमने दुर्गा जी की आराधना के लिए कहा है । तथा नवरात्रों में उपवास तथा कन्याओं को जीमाने के लिए भी कहा है इसके अतिरिक्त दुर्गा सप्तशती का पाठ भी कहा गया है।

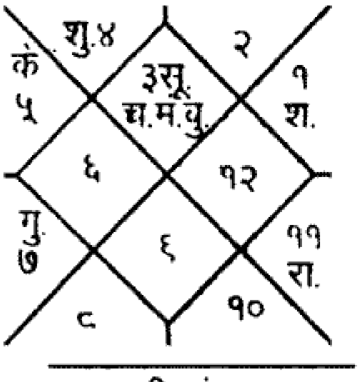

कुण्डली नं २७४

कुण्डली न. 274 के जातक का जन्म जुलाई 1970 का है । इस कुण्डली में भाग्येश शनि नीच राशि का होकर लाभ स्थान मे है । लग्नेश बुध भी अपने शत्रु चन्द्रमा के साथ पाप प्रभाव में अधिक है । गुरू भी शत्रु राशि में स्थित है । यह जातक एक व्यापारी परिवार से सम्बन्धित है ।

इस जातक ने विद्या भी अच्छी प्राप्त नहीं करी तथा बहुत ही गन्दी संगती में रहता है तथा गन्दे कर्म करता है। घर वालों ने इन्हें पारिवारिक व्यवयाय में रखा तो वहाँ पर भी नहीं बैठता है । घर वालों ने हम से सम्पर्क करा तो हमने उनको आगाह कर दिया था कि जातक कुछ जुआ व लाटरी में धन गवा सकता है । इस जातक ने लौटरी से शीघ्र धनी बनने के लिए अपने घर से बहुत रुपया लेकर इसमें गवां बैठा । अभी इसके पश्चात भी यह जातक इस प्रकार से धन कमाने के लिए उत्सुक रहता है। अब इन के पिता व अन्य घर वाले जब हम से मिले तो हमने इनको शनि की शान्ति के लिए कहा है तथा पन्ना का धारण व बुधवार को दान व उपवास करने को कहा है । जातक

का बुध की दशा आरम्भहोने वाली है। इनकी रूचि अब पैतृक व्यवसाय में कुछ बनने लगी है । वैसे हमने इनके घर वालों को स्पष्ट रूप से भी बता दिया है कि जातक अभी कुछ वर्षो तक पूर्णरूप से व्यापार में नहीं लगेगा क्योंकि जातक को 32 वें वर्ष से ही कुछ समय आने के योग है।

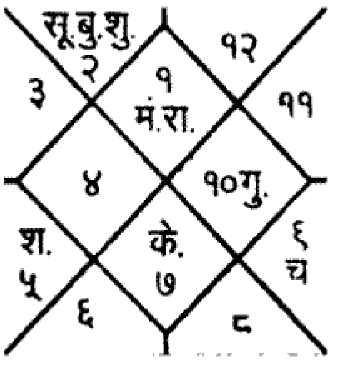

कुण्डली नं २७५

कुण्डली न. 275 के जातक का जन्म मई 1949 में हुआ । यह जातक आई.आई. टी. से इन्जीनियरिंग में एम.ई. की शिक्षा प्राप्त की तथा अमरीका में इस क्षेत्र में डाक्टरेट की । यह जातक मंगल की दशा में विदेश प्रस्थान कर गया तथा राहु की दशा में 18 वर्षो तक वहीं रहा तथा बहुत ही सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करा। जातक को जब गुरू की महादशा आरम्भ हुई तो जातक को नौकरी छोड़नी पडी ।

कई समय तक विदेश में खाली बैठना पडा तब जाकर व्यापार आरम्भ करने की सोची यहाँ पर पाठक ध्यान दें के इस कुण्डली में भाग्येश गुरू नीच का होकर दशम भाव में है । यह गुरू व्ययेश भी है इस लिए जातक को और दुखी कर रहा है । जातक ने भारत में एक बहुत ही बडे औद्योगिक घराने के साथ यहाँ पर सोलर तथा विन्ड (वायु) एनर्जी द्वारा बिजली उत्पादन का व्यापार दक्षिण क्षेत्र में लगाने का आरम्भ करा । इस सिलसिले में जातक को भारत व अन्य देशों में भ्रमण करना पड़ता रहा । यह जातक जब हमारे सर्म्पक में आया तो हमने इनको साफ शब्दों इस व्यापार से दूर रहने को कहा तथा यह भी कहा कि हो सके तो सलाहकार का कार्य करें तो लाभ मिल सकता है। परन्तु उस समय इन्होंने हमारे सुझाव को नहीं माना। अब एक दो वर्ष से यह पुनः हमारे सर्म्पक में तथा हमारे सुझाओं को मान कर अब 'नासा' तथा अन्य स्पेस कम्पनियों का सलाहकार का कार्य कर रहा है तथा जातक इस कार्य में अब अपने आप को पुनः स्थापित कर चुका है। हमने जातक को पुखराज पहनने को कहा तथा गुरूवार का उपवास एवं माथे में चन्दन का तिलक लगाने को कहा। इन्होंने तिलक को छोड़ अन्य बातों को अपनाया। तिलक की जगह हमने इनको कोई न कोई पीले रंग की वस्तु सदा पहनने की सलाह दी जैसे कि यदि टाई

पहने तो पीले रंग की पहनें घड़ी का फीता पीले रंग का पहनें, रूमाल हो सके तो पीले रंग का प्रयोग करें। इस प्रकार अमरीका में रहते हुए अब यह जातक हमारे सुझाओं को मान रहा है तथा आज पुनः उसी स्तर में आ गया है। इस प्रकार पाठक गण यह समझ गए होंगे कि व्यवसाय में सफलता व असफलता किन कारणों से होती है तथा इनका समाधान किस प्रकार से किया जा सकता है।

28

साझे का व्यापार

प्रायः यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या साझे के व्यापार में मुझे लाभ होगा या नहीं। इसके समाधान के लिए हम पाठक समक्ष कुछ स्व अनुभव योग प्रस्तुत कर रहे हैं। सप्तम भाव से व्यापार एवं साझेदार का विचार करना चाहिए।

(1) सप्तम भाव के स्वामी का सम्यबन्ध यदि धनेश से हो तो साझेदारी में लाभ होता है।

(2) सप्तमेंश यदि धन भाव में हो तो भी साझेदारी से धन मिलता है यह साझा पत्नि के संग हो तो अच्छा धन मिलता है प्रायः एसे में ससुराल पक्ष से लाभ होता है।

(3) सप्तम भाव तथा लाभ में सम्बन्ध होने पर भी व्यापार में साझेदारी से लाभ मिलता है।

(4) सप्तम भाव का सम्बन्ध तृतीय भाव में होने पर भाई के साथ साझेदारी होती है यहाँ पर हम यह भी अवश्य कहना चाहेंगे कि सप्तमेश तृतीय भाव में होने पर सार्वजनिक कम्पनी की भागेदारी भी होती है। हमने कई बड़े उद्योग घरानों के चेयनमेन व प्रबन्ध निदेशकों की कुण्डली में यह योग देखा है। इसको समझने के लिए कुण्डली नं 2 की जो श्री घनश्यामदास

का बुध की दशा आरम्भहोने वाली है। इनकी रूचि अब पैतृक व्यवसाय में कुछ बनने लगी है । वैसे हमने इनके घर वालों को स्पष्ट रूप से भी बता दिया है कि जातक अभी कुछ वर्षो तक पूर्णरूप से व्यापार में नहीं लगेगा क्योंकि जातक को 32 वें वर्ष से ही कुछ समय आने के योग है।

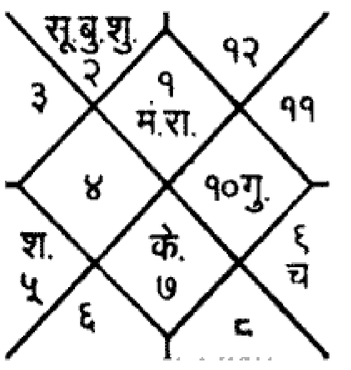

कुण्डली नं २७५

कुण्डली न. 275 के जातक का जन्म मई 1949 में हुआ । यह जातक आई.आई. टी. से इन्जीनियरिंग में एम.ई. की शिक्षा प्राप्त की तथा अमरीका में इस क्षेत्र में डाक्टरेट की । यह जातक मंगल की दशा में विदेश प्रस्थान कर गया तथा राहु की दशा में 18 वर्षो तक वहीं रहा तथा बहुत ही सुखी एवं समृद्ध जीवन व्यतीत करा। जातक को जब गुरू की महादशा आरम्भ हुई तो जातक को नौकरी छोडनी पडी ।

कई समय तक विदेश में खाली बैठना पडा तब जाकर व्यापार आरम्भ करने की सोची यहाँ पर पाठक ध्यान दें के इस कुण्डली में भाग्येश गुरू नीच का होकर दशम भाव में है । यह गुरू व्ययेश भी है इस लिए जातक को और दुखी कर रहा है । जातक ने भारत में एक बहुत ही बडे औद्योगिक घराने के साथ यहाँ पर सोलर तथा विन्ड (वायु) एनर्जी द्वारा बिजली उत्पादन का व्यापार दक्षिण क्षेत्र में लगाने का आरम्भ करा । इस सिलसिले में जातक को भारत व अन्य देशों में भ्रमण करना पड़ता रहा । यह जातक जब हमारे सर्म्पक में आया तो हमने इनको साफ शब्दों इस व्यापार से दूर रहने को कहा तथा यह भी कहा कि हो सके तो सलाहकार का कार्य करें तो लाभ मिल सकता है। परन्तु उस समय इन्होंने हमारे सुझाव को नहीं माना। अब एक दो वर्ष से यह पुनः हमारे सर्म्पक में तथा हमारे सुझाओं को मान कर अब 'नासा' तथा अन्य स्पेस कम्पनियों का सलाहकार का कार्य कर रहा है तथा जातक इस कार्य में अब अपने आप को पुनः स्थापित कर चुका है। हमने जातक को पुखराज पहनने को कहा तथा गुरूवार का उपवास एवं माथे में चन्दन का तिलक लगाने को कहा। इन्होंने तिलक को छोड़ अन्य बातों को अपनाया। तिलक की जगह हमने इनको कोई न कोई पीले रंग की वस्तु सदा पहनने की सलाह दी जैसे कि यदि टाई

पहने तो पीले रंग की पहनें घड़ी का फीता पीले रंग का पहनें, रूमाल हो सके तो पीले रंग का प्रयोग करें। इस प्रकार अमरीका में रहते हुए अब यह जातक हमारे सुझाओं को मान रहा है तथा आज पुनः उसी स्तर में आ गया है। इस प्रकार पाठक गण यह समझ गए होंगे कि व्यवसाय में सफलता व असफलता किन कारणों से होती है तथा इनका समाधान किस प्रकार से किया जा सकता है।

28

साझे का व्यापार

प्रायः यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या साझे के व्यापार में मुझे लाभ होगा या नहीं। इसके समाधान के लिए हम पाठक समक्ष कुछ स्व अनुभव योग प्रस्तुत कर रहे हैं। सप्तम भाव से व्यापार एवं साझेदार का विचार करना चाहिए।

(1) सप्तम भाव के स्वामी का सम्वबन्ध यदि धनेश से हो तो साझेदारी में लाभ होता है।

(2) सप्तमेश यदि धन भाव में हो तो भी साझेदारी से धन मिलता है यह साझा पत्नि के संग हो तो अच्छा धन मिलता है प्रायः एसे में ससुराल पक्ष से लाभ होता है।

(3) सप्तम भाव तथा लाभ में सम्बन्ध होने पर भी व्यापार में साझेदारी से लाभ मिलता है।

(4) सप्तम भाव का सम्बन्ध तृतीय भाव में होने पर भाई के साथ साझेदारी होती है यहॉं पर हम यह भी अवश्य कहना चाहेंगे कि सप्तमेश तृतीय भाव में होने पर सार्वजनिक कम्पनी की भागेदारी भी होती है। हमने कई बडे उद्योग घरानों के चेयनमेन व प्रबन्ध निदेशकों की कुण्डली में यह योग देखा है। इसको समझने के लिए कुण्डली नं 2 की जो श्री घनश्यामदास

विरला जी की है। वहां पर सप्तमेश सूर्य उच्च राशि का होकर तृतीय भाव में है। इसी प्रकार पूर्व में दी गई श्री विल गेटस की कुण्डली को देखें वहां पर सप्तमेश गुरू तृतीय भाव में स्थित है। आइये अब आप को पूर्व में दी गई एक और कुण्डली नं 15 का अध्ययन कराते हैं।

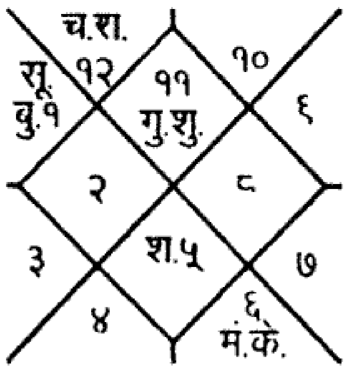

कुण्डली नं २७६

कुण्डली नं 276 के जातक का जन्म अप्रैल 1950 में हुआ। यहां पर भाग्येश शुक्र अपनी उच्च राशि की ओर अग्रसर है तथा लग्न में स्थित है। यह ग्रह कुण्डली में सबसे शुभ ग्रह है तथा योगकारक है। धनेश व लाभेश गुरू लग्न में स्थित है। सप्तमेश जो कि व्यापार का स्वामी है। उच्च का होकर तृतीय भाव में स्थित है। यह जातक आज तक एक बहुत बड़ी सार्वजनिक (लि) कम्पनी का चेयरमेन है। तथा अपने छोटे भाई को साझेदार भी बनाया हुआ है। इस जातक ने जो भी धन कमाया है वह इस जातक ने अपने ही दम पर कमाया है। यहां पर लग्नेश का सम्बन्ध धनेश तथा लाभेश गुरू से होना स्वार्जित धन को दर्शा रहा है। आज यह जातक एक बड़ी दवाई बनाने वाली कम्पनी का स्वामी है।

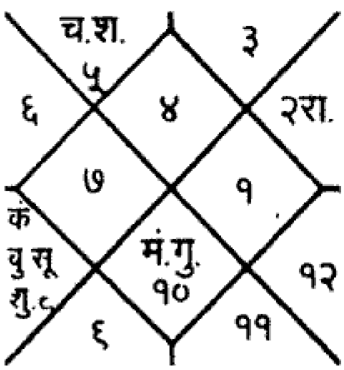

कुण्डली नं २७७

यह कुण्डली पूर्व में भी विचरित की गई है। यहां पर पुत्र के द्वारा साझेदारी का विचार कर रहे हैं। यहां पर सप्तमेश शनि धन भाव में है, धनेश सूर्य पंचम भाव में तथा पंचमेश मंगल सप्तम भाव में होना तथा धन भाव तथा सप्तमेश को देखना पुत्र के साथ साझेदारी से धन लाभ को दर्शा रहा है। इस प्रकार पाठक सबसे पहले यह देखें कि कुण्डली

में साझेदारी के योग हैं या नहीं। यदि कुण्डली में सप्तमेश नीच या शत्रु राशि का दुष्ट भावों में गया हो तो सांझेदारी का व्यापार नहीं करना चाहिए।

साझेदार का विचार

1. यदि सूर्य स्थित राशि एक की हो तथा वही राशि साझेदार की जन्म राशि हो तो शुभ रहती है।
2. साझेदारों के सप्तमेश में मित्रता हो तो शुभ रहती है।
3. गुरू जिस राशि में हो तो साझेदार की सूर्य या चन्द्र राशि भी वही हो तो शुभ रहता है।
4. शुक्र जिस राशि का हो वही राशि साझेदार की जन्म या सूर्य राशि हो।
5. लग्न या दशम भाव में जो राशि हो वही राशि का गुरू या शुक्र साझेदार का हो तो भी शुभ है।
6. साझेदार का आपस में लग्न राशि व चन्द्र राशि भी यदि मित्र हो तो भी शुभ माना जा सकता है।

वाणिज्य विचार

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि वाणिज्य का विचार सप्तम भाव से भी करना चाहिए। बुध को वाणिज्य कारक ग्रह कहा जाता है। अतः वाणिज्य विचार में इन दोनों का विचार आवश्यक है। प्राचीन ग्रन्थों में बेचने का विचार धन भाव के लिए कहा गया है तथा क्रय करने का विचार सप्तम भाव में कहा गया है। दैनिक रोजगार व आमदनी का विचार भी सप्तम भाव से करना चाहिए। अतः सप्तम भाव व भावेश के अनुसार वाणिज्य का विचार करना चाहिए। यदि सप्तमेश या सप्तम भाव में सूर्य हो तो वाणिज्य प्रायः स्थित तथा बड़ा होता है। देखो कुण्डली नं 2 जो कि बिड़ला जी की है। यदि सप्तम भाव में चन्द्रमा हो या सप्तमेश चन्द्रमा हो तो व्यापार प्रायः बदलते रहते हैं। यह जातक कभी कोई

दशा मञ्जरी

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ द्वारा रचित यह ग्रन्थ सर्वप्रथम सन् **1922 ई. में प्रकाशित** हुआ। यह ग्रन्थ प्रायः लुप्त ही हो गया था। इसको पुनः संशोधित कर प्रकाशित किया गया है। इस ग्रन्थ में मात्र 80 मौलिक श्लोकों द्वारा देश में प्रचलित सभी प्रमुख दशाओं एवं अन्तरदशाओं का साधन किया है। इस ग्रन्थ की हिन्दी टीका उदाहरण समेत स्वयं आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ जी द्वारा ही की गई है। इस ग्रन्थ में दशा फलादेश के साथ निजनिर्मित सारणियां भी दी गई है। इस पुस्तक में दशा साधन दो प्रकार से दिया गया है। सभी के लिए उपयोगी यह ग्रन्थ अब उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान :

मुकुन्द प्रकाशन

जे–69, टैगोर नगर, अजमेर रोड़

हीरापुरा, जयपुर– **303011**

फोन : **0141-350345**

ज्योतिष शब्दकोष

प्रणेता आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ

तीस वर्ष पुराना यह अनूपम ग्रन्थ आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ के कई वर्षों के परिश्रम की देन हैं। यह शब्द कोष सर्वप्रथम इनके द्वारा ही रचित किया गया है। इस कोष को प्रकाशित करने के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय का सहयोग प्राप्त हुआ है ।

प्रत्येक पुस्तकालय, शोध संस्थान एवं
विद्वानों के संग्रह करने योग्य
यह ग्रन्थ चार सौ पृष्ठों से भी अधिक का हैं ।

मूल्य 200/- रु.

प्राप्ति स्थान-

मुकुन्द प्रकाशन

जे 69, टैगोर नगर, अजमेर रोड़
हीरापुरा, जयपुर (राज.) पिन कोड़ 303011
फोन 0141 – 350345

"ज्योतिस्तत्त्वम्"

मूल ग्रन्थकार आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ

यह ज्योतिष शास्त्र का रहस्यमय स्कन्धत्रयात्मक ग्रन्थ दो भागों में हैं। प्रत्येक भाग 800 पृष्ठ का है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में 8000 के लगभग मूल श्लोक है। इसमें ज्योतिष शास्त्र के 250 ग्रन्थों का सार है। इस ग्रन्थ का निर्माण ऐसे सरल ढंग से किया गया है कि इ एकमात्र ग्रन्थ के पास होने से अन्य ग्रन्थों की आवश्यकता नहीं इस में दिए गए योग एकदम सटीक बैठते हैं तथा ज्योतिषी के सम्मान में प्रतिष्ठा बढ़ातें हैं। पचास वर्षो से भी अधिक प्राचीन इस ग्रन्थ, जिससे प्रेरणा प्राप्त कर आज कई ग्रन्थों की रचना हो चुकी हैं। सभी पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने वाला, जिज्ञासुओं का कामधेनु, विद्वानों का स्नेह पात्र हैं संग्रहणीय ग्रन्थ अब उपलब्ध हैं।

मूल्य 1600/ रू. (दो भागों में)

प्राप्ति स्थान-

मुकुन्द प्रकाशन

जे 69, टैगोर नगर, अजमेर रोड़

हीरापुरा, जयपुर (राज.) पिन कोड़ 303011

फोन 0141 - 350345